विषय सूचि

क़ुर्आन मजीद तिलावत करने की फ़ज़ीलत

क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है, और सारे कलामों से अफ़ज़ल और बढ़कर है, इसकी बड़ाई सारी बातों पर उसी तरह है जिस तरह अल्लाह तआला की फ़ज़ीलत उसकी सृष्टि पर है, मुंह से निकलने वाली तमाम बातों में सब से उत्तम बात इसकी तिलावत है।

❀ क़ुर्आन सीखने सिखाने और पढ़ने वालों की फ़ज़ीलत में बहुत सी हदीसें आई हैं, जिन में से कुछ हदीसें यह हैं :

✿ क़ुर्आन सिखाने की फ़ज़ीलत (सवाब) : नबी ﷺ का फ़र्मान है :
(خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ) ''तुम में बेहतर वह है जो क़ुर्आन सीखे और सिखाए।'' (बुख़ारी)

✿ क़ुर्आन पढ़ने की फ़ज़ीलत : नबी ﷺ का फ़रमान है :
(مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا) **''जिस ने अल्लाह की किताब का एक ह़र्फ़ (अक्षर) पढ़ा उस के लिए एक नेकी है, और एक नेकी दस गुन्ना नेकियों के बराबर है''।** (तिर्मिज़ी)

✿ क़ुर्आन सीखने, उसे याद करने और तिलावत में महारत की फ़ज़ीलत : नबी ﷺ का फ़र्मान है:
(مَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ وَمَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ وَهُوَ يَتَعَاهَدُهُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَدِيدٌ فَلَهُ أَجْرَانِ)
''उस आदमी की मिसाल जो क़ुर्आन पढ़ता है और वह उसका हाफिज़ भी है, मुकर्रम और नेक लिखने वाले (फरिश्तों) जैसी है, और जो आदमी क़ुर्आन बार-बार पढ़ता है और उसके पढ़ने में उसे कठिनाई होती है तो उसके लिए दो गुना सवाब है।'' (बुख़ारी व मुस्लिम)

और नबी ﷺ ने यह भी फ़रमाया :
(يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: اقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا)
"क़ुर्आन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : क़ुर्आन पढ़ता जा और चढ़ता जा, और उसी तरह से ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि संसार में पढ़ा करता था, क्योंकि तेरा मक़ाम अन्तिम आयत के पास है जिसे तू पढ़ेगा। (तिर्मिज़ी)

ख़त्ताबी कहते हैं कि असर में यह बात आई है कि : क़ुर्आन की आयतें जन्नत की सीढ़ियों के बराबर हैं, अतः क़ारी को कहा जाएगा : क़ुर्आन की जितनी आयतें तू पढ़ता है उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ता जा, तो जो पूरा क़ुर्आन पढ़ लेगा वह आख़िरत में जन्नत की सब से ऊँची सीढ़ी पर पहुँच जाएगा, और जो कुछ हिस्सा पढ़ेगा वह उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ेगा, तो सवाब की सीमा वह होगी जहाँ उसकी क़िराअत का अन्त होगा।

✿ उस व्यक्ति का सवाब जिसके बच्चे ने क़ुर्आन की ता'लीम हासिल की: नबी ﷺ का फ़र्मान है :
(من قرأ القرآن وتعلمه وعمل به ألبس يوم القيامة تاجا من نور ضوءه مثل ضوء الشمس، ويكسى والداه حلتين لا يقوم بهما الدنيا فيقولان : بم كسينا ؟ فيقال : بأخذ ولدكما القرآن) الحاكم.
''जिसने क़ुर्आन पढ़ा, उसे सीखा और उसके अनुसार अमल किया तो उसके वालिदैन को क़ियामत के दिन नूर का ताज पहनाया जाएगा, जिसकी प्रकाश सूरज की किरण की जैसी होगी, और उन्हें दो ऐसे जोड़े पहनाए जाएंगे जिनकी बराबरी संसार नहीं कर सकती, तो वे पूछेंगे : यह हमें किस अमल के कारण पहनाया गया है? तो जवाब दिया जाएगाः तुम्हारी औलाद के क़ुर्आन सीखने के कारण।" (हाकिम)

✿ आख़िरत में क़ुर्आन पढ़ने वालों के लिए क़ुर्आन की शिफ़ाअत : नबी ﷺ का फ़र्मान है :
(اقْرَءُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ) مسلم ''क़ुर्आन पढ़ा करो, इसलिए कि वह क़ियामत वाले दिन अपने पढ़ने वाले के लिए सिफ़ारिशी बन कर आएगा।'' (मुस्लिम)

और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया : (الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ) أحمد والحاكم
''रोज़ा और क़ुर्आन बन्दे के लिए क़ियामत के दिन सिफ़ारिश करेंगे।'' (अह्मद और हाकिम)

✿ क़ुर्आन पढ़ने और सीखने के लिए इकट्ठा होने वालों का सवाब : नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ) أبوداود

''जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं, और एक दूसरे को उसका दर्स देते हैं तो उन पर (अल्लाह की ओर) से शान्ति नाज़िल होती है, और रहमत उन्हें ढांप लेती है, और फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास मौजूद फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र फ़रमाता है।'' (अबूदाऊद)

❁ **क़ुरआन की तिलावत के आदाब :** इब्ने कसीर رحمه الله ने कई एक आदाब बताए हैं जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : **1-** क़ुरआन पढ़ने वाला व्यक्ति पाकी के बिना न तो क़ुरआन छुए और न पढ़े, **2-** तिलावत करने से पहले मिस्वाक करे, **3-** अच्छा कपड़ा पहने, **4-** का'बा की ओर चेहरा करे, **5-** जमाही आने लगे तो क़ुरआन पढ़ने से रुक जाए, **6-** तिलावत करते समय बिना ज़रूरत बात न करे, **7-** ध्यान के साथ पढ़े, **8-** वादे की आयतों पर ठहर कर अल्लाह से मांगे और सज़ा वाली आयतों के पास पनाह चाहे, **9-** क़ुरआन खुला हुवा न छोड़े और न ही उस पर कोई चीज़ रखे, **10-** तिलावत करते समय क़ारी एक दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करें, **11-** और बाज़ार, शोर और हल्ला वाली जगह पर क़ुरआन की तिलावत न करे।

❁ **क़ुरआन की तिलावत कैसे की जाए :** अनस رضي الله عنه से नबी ﷺ की क़िराअत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया : आप तिलावत करते समय अपनी आवाज़ को खींचा करते थे, जब आप بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ते तो بِسْمِ اللهِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, الرَّحْمَنِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, और الرَّحِيمِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते।

❁ **तिलावत के सवाब का कई गुना बढ़ना :** जो व्यक्ति इख़्लास के साथ क़ुरआन पढ़ेगा वह सवाब का हक़दार है, लेकिन उसका यह सवाब उस समय कई गुना बढ़ जाता है जब वह दिल को हाज़िर करके ध्यान देकर और समझ कर पढ़ता है, तो हर हर्फ़ (अक्षर) के बदले एक से लेकर सात सौ गुना तक उसे नेकी मिलती है।

❁ **दिन और रात में क़ुरआन की तिलावत की मात्रा :** सहाबए किराम رضي الله عنهم ने हर दिन के लिए एक हिस्सा मुक़र्रर (नियुक्त) कर रखा था, और उनमें से किसी ने सात दिन से पहले क़ुरआन ख़तम करने की पाबन्दी नहीं की, बल्कि तीन दिन से कम में क़ुरआन ख़तम करने से रोका गया है।

इसलिए मेरे भाई क़ुरआन की तिलावत के लिए आप अपना समय लगाइए और हर दिन के लिए एक हिस्सा नियुक्त कर लीजिए जिसकी हर हाल में पाबन्दी किजिए, क्योंकि थोड़ा सा काम जिसे बराबर किया जाए ज़्यादा करने से बेहतर है जिसकी पाबन्दी न की जाए। यदि आप भूल गए या सो गए तो उसे दूसरे दिन पढ़ लीजिए, आप ﷺ का फ़र्मान है :

(مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَقَرَأَهُ فِيمَا بَيْنَ صَلاةِ الْفَجْرِ وَصَلاةِ الظُّهْرِ كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْلِ)

''जो अपने मुक़र्रर हिस्से या उसमें से कुछ को बिना पढ़े सो जाए फिर उसे अगले दिन फ़ज्र और ज़ुह्र के बीच पढ़ ले तो वह उसके लिए उसी तरह लिखा जाता है गोया कि उसने उसे रात ही में पढ़ी हो'' (मुस्लिम)

और आप उन में से न होजाएं जिन्हों ने क़ुरआन को छोड़ दिया या उसे भुला दिया, यह छोड़ना किसी भी प्रकार का क्यों न हो, जैसे तिलावत छोड़ देना, या तर्तील छोड़ देना, या ध्यान न देना, या उसके अनुसार काम न करना, या उस के माध्यम से शिफ़ा न चाहना।

सूरतुल फातिहा

(1) अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

(2) सब तारीफें सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए हैं।

(3) बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(4) बदले के दिन (क़ियामत) का मालिक है।

(5) हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

(6) हमें सीधा (सत्य) रास्ता दिखा।

(7) उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आम किया, उन का नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों का।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣﴾ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٤﴾ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿٥﴾ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

सुरतुल् मुजादिला। - 58

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबीन बहुत रहम करने वाला है।

(1) अवश्य अल्लाह तआ़ला ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने शौहर के बारे में झगड़ रही थी [1] और अल्लाह के आगे शिकायत कर रही थी, अल्लाह तआ़ला तुम दोनों के प्रश्न व उत्तर को सुन रहा था [2], अवश्य अल्लाह सुनने देखने वाला है।

(2) तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं [3]। (अर्थात उन्हें मां कह बैठते हैं) वह हक़ीक़त में उनकी माएं नहीं बन जातीं [4] उनकी माएं तो वही हैं जिन के पेट से वह पैदा हुए [5], अवश्य यह लोग ना पसन्दीदा और झूठी बात कहते हैं [6], बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला और बखशने वाला है [7]।

(3) जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात को वापस ले लें [8] तो उनके जिम्मे आपस में एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले [9] एक गर्दन आजाद करना है[10], इसके द्वारा [11] तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह तुम्हारे सभी कामों को जानता है [12]।

(4) हां जो व्यक्ति न पाए उस के ज़िम्मे एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले दो महीनों के लगातार रोजे हैं [13], और जिस व्यक्ति को इस की भी ताक़त न हो [14] उस पर साठ गरीबों को खाना खिलाना है [15], यह आदेश इस लिए है कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ [16], यह [17] अल्लाह तआ़ला की मुक़र्रर की हुई हदें (सीमाएं) हैं [18] और काफिरों के लिए ही [19] दुखदायी अज़ाब [20] है।

---

[1] अर्थात वह अपने शौहर के बारे में आप से जो झगड़ा कर रही थी उसे अल्लाह ने सुन लिया। उम्मुल् मुमिनीन आइशा ﷺ रिवायत करते हुए फर्माती हैं : बड़ी बर्कत वाला है अल्लाह जो हर चीज सुन लेता है, मैं खौला बिन्ते सा'लबा की बात जो वह अपने शौहर के बारे में नबी ﷺ से कह रहीं थीं सुन रही थी, कुछ बातें मैं नहीं सुन पारही थी, वह अल्लाह के रसूल से अपने शौहर की शिकायत कर रही थीं और कह रही थीं : "अल्लाह के रसूल वह मेरी जवानी खागए, मैं ने अपना पेट उन के लिए फैलाया यहां तक कि जब मेरी उम्र ढल गई और बच्चे होने बन्द होगए तो उन्होंने मुझ से ज़िहार कर लिया, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से शिकायत करती हूँ। आइशा फर्माती हैं अभी वह आप के पास से हटी भी नहीं थीं कि जिब्रईल वह्य लेकर उतरे : उनके शौहर एक अन्सारी सहाबी थे जिन का नाम औस बिन सामित था।

[2] अल्लाह तुम दोनों का झगड़ा सुन रहा था।

[3] ज़िहार का मतलब है आदमी का अपनी बीवी से कहना : (أنت علي كظهر أمي) (तू मुझ पर मेरी मां की पीठ की तरह है)। इस के ज़िहार होने में कोई विवाद नहीं है।

[4] अर्थात उन्की पत्नियां उन्की माएं नहीं हो जाती हैं, यह उन्की ओर से झूटी बात है, इस में ज़िहार करने वालों के लिए फटकार है।

[5] उन्की माएं तो मात्र वही हैं जिन्होंने उन्हे जनम दिया है।

[6] यक़ीनन ज़िहार करने वाले यह कह कर कि उन्की बिवीयां उन्की मां समान हैं बहुत ही नापसन्दीदा बात कह रहे हैं, यह उनकी माताओं के लिए बहुत अपमान जनक बात है। جور जूर का अर्थ है : हक़ीक़त के खिलाफ बात।

[7] عفو एवं غفور दोनों मुबालगा के सेगे हैं, अर्थात वह बहुत ही ज्यादा क्षमा करने वाला और बख्श्ने वाला है, क्योंकि उसने कफ़्फ़ारा के जरिए इस नापसन्दीदा बात से छुटकारे का रास्ता पैदा कर दिया।

[8] अर्थात जो बात उन्होंने कही थी उसे वापस लेकर अपनी पत्नी से संभोग करना चाहें।

[9] तो उस बात के कारण जो उन्होंने कही उन पर एक गर्दन आजाद करना है, चाहे दास हो या दासन, और एक राय यह भी है कि आयत में लौटने का अर्थ ज़िहार के बाद तलाक़ की ताकत रखने के बावजूद उसे पत्नी बना कर रखना है।

[10] दोनों के एक दूसरे को हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है, इसलिए ज़िहार करने वाले के लिए उस समय तक सुह़बत करना जायज़ नहीं है जब तक कि वह कफ़्फ़ारा न दे दे सुहबत करना जायज़ नहीं।

[11] ऊपर बताए हुए आदेश द्वारा।

[12] अर्थात इसी का तुम्हें आदेश दिया जाता है, अथवा इस द्वारा ज़िहार करने से तुम्हें रोका जाता है।

[13] अर्थात जिस के पास गुलाम या लौंडी न हो और न ही इतना पैसा हो कि उस से वह कोई गुलाम या लौंडी लेकर आजाद कर सके तो उस पर लगातार दो महीने के रोज़े हैं, इन दोनों महीनों में वह एक दिन का भी रोज़ा नहीं तोड़ सकता, और यदि बिना किसी मजबूरी के उसने किसी दिन का रोजा नहीं रख्खा तो उसके पिछले सभी रोजे भंग होजाएंगें और उसे फिर से लगातार दो महीने रोजे रख्ने पड़ेंगे, और यदि उस ने इन दो महीनों के बीच जान बूझ कर दिन में या रात में संभोग कर लिया तो भी शुरू से फिर यह रोजे रखने पड़ेंगे।

[14] अर्थात जिसे लगातार दो महीने रोजे रखने की ताक़त न हो।

[15] हर गरीब को आधा सा'अ् गेहूँ, खजूर, चावल या इसी तरह की कोई दूसरी खाने की चीज दे, उन्हें पकाकर खिलाना कि उनका पेट भर जाए या इतना देना जो उनका पेट भर दे दोनों जायज है।

[16] अर्थात हमने यह आदेश इसलिए दिए हैं ताकि तुम इस बात को स्विकार करो कि अल्लाह ने इसी का आदेश दिया है, और इसी को शरीअत बनाया है इसलिए शरीअत की सीमाओं के पास आकर रुक जाओ और उस से आगे न बढ़ो और फिर दोबारा ज़िहार न करो जो कि नापसन्दीदा और हक़ीक़त के खिलाफ बात है।

[17] यह बताए हुए आदेश।

[18] इसलिए तुम इस से आगे न बढ़ो क्योंकि उस ने तुमहें यह बता दिया कि ज़िहार गुनाह है, और उस का कफ़्फ़ारा जो ऊपर बताया गया क्षमा और बख्शिश का माध्यम है।

[19] जो अल्लाह की सीमाओं पर नहीं रुकते।

[20] अर्थात जहन्नम का अज़ाब है।

سُورَةُ المُجَادلَةِ
ترتيبها ٥٨ — آياتها ٢٢

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ ٱللَّهُ قَوْلَ ٱلَّتِي تُجَٰدِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيٓ إِلَى ٱللَّهِ
وَٱللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَآ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعُۢ بَصِيرٌ ﴿١﴾ ٱلَّذِينَ يُظَٰهِرُونَ
مِنكُم مِّن نِّسَآئِهِم مَّا هُنَّ أُمَّهَٰتِهِمْ ۖ إِنْ أُمَّهَٰتُهُمْ إِلَّا ٱلَّٰٓـِٔي
وَلَدْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنكَرًا مِّنَ ٱلْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ
ٱللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾ وَٱلَّذِينَ يُظَٰهِرُونَ مِن نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ
لِمَا قَالُوا۟ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَآسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ تُوعَظُونَ
بِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَآسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ
مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ ٱللَّهِ ۗ
وَلِلْكَٰفِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحَآدُّونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ كُبِتُوا۟
كَمَا كُبِتَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ ۚ وَلِلْكَٰفِرِينَ
عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُم بِمَا
عَمِلُوٓا۟ ۚ أَحْصَىٰهُ ٱللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾

5 बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत[1] करते हैं वह अपमानित किए जाएंगे, जैसे उन से पहले के लोग किए गए थे[2], और बेशक हम खुली आयतें उतार रहे हैं और काफिरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।
6 जिस दिन अल्लाह उन सब को दोबारा उठाएगा[3], फिर उन्हे उनके किए हुए अमल की जानकारी देगा[4] जिसे अल्लाह ने गिन रखा है[5], और जिसे यह भूल गए थे[6], और अल्लाह तआ़ला हर चीज से अवगत (बाखबर) है[7]।
7 क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती की हर चीज़ को जानता है[8], तीन व्यक्तियों की कानाफूसी नहीं होती मगर अल्लाह उनका चौथा होता है[9], और न पाँच[10] की मगर वह उनका छठा होता है, और न उस से[11] कम की और न उस से ज्यादा की मगर वह उनके साथ ही होता है[12], जहां भी वह हों[13] फिर क़ियामत के दिन उन्हें उनके अमल की जानकारी देगा[14], अवश्य अल्लाह हर चीज़ का जानकार है।
8 क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था[15]? वह फिर भी उस मना किए हुए काम को दोबारा करते हैं, और आपस में पाप की[16] और नाइंसाफी की और रसूलों की नाफरमानी की[17], कानाफूसियां करते हैं। और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह ने नहीं कहा[18], और अपने दिल में[19] कहते हैं कि अल्लाह (तआ़ला) हमें हमारे इस कहने पर सजा क्यों नहीं देता[20]? उनके लिए नरक काफी है[21], जिसमें ये जाएंगे[22], तो वह कितना बुरा ठिकाना है[23]।
9 हे ईमानवालो! जब तुम कानाफूसी करो तो यह कानाफूसी पाप, उद्दण्डता और रसूल की नाफरमानी की न हो[24], बल्कि नेकी और तक़्वा की बातों पर कानाफूसी करो[25], और उस अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम सब इकट्ठा किए जाओगे[26]।
10 कानाफूसी[27] तो शैतान का काम है[28], जिस से ईमान वालों को दुःख हो[29], परन्तु अल्लाह की मर्जी बिना वह[30]

---

[1] मुहाद्दह् का अर्थ दुश्मनी और मुख़ालफ़त के हैं।
[2] यह उसी तरह अपमानित किए जाएंगें जैसे उन से पहले के लोग अपमानित किए गए थे।
[3] एक साथ एक ही हालत में उठाएगा, कोई ऐसा नहीं बचेगा जो न उठाया जाए।
[4] अर्थात वह उन्हे उनके घिनाउने कर्तूत से जो उन्होंने दुनिया में किए उन्हें अवगत करे ताकि उन पर दलील पूरी होजाए।
[5] अल्लाह ने उन सब को गिन्ती कर रख्खी है ऐसा नहीं होगा कि कोई छूट जाए।
[6] जिसे वह लोग भूल चुके हैं उसे भी वह लोग मौजूद और अपने नामए आमाल में लिखा हुआ पाएंगे।
[7] अर्थात हर चीज से बाखबर है क्योंकि सभी चीजें उस की नजरों के सामने है।
[8] उस का ज्ञान आकाशों और धरती की सारी चीज़ों को घेरे है, इस तरह से कि इन दोनों में जो चीज़ें भी हैं उन में से कोई भी उस से छुपी नहीं है।
[9] जो इस कानाफूसी को जानने में उनका साझी होता है।
[10] क्योंकि वह हर संख्या के साथ होता है कम हो या ज़्यादा, छिपे और ज़ाहिर सभी को जानता है उस से कोई भी बात छिपी नहीं रहती।
[11] अर्थात उल्लिखित संख्या से न कम, जैसे एक और दो, और न ही उस से ज़्यादा, जैसे छः और सात।
[12] अर्थात वह जो कानाफूसी करते हैं उसे उसका ज्ञान होता है, उस में से कोई भी चीज़ उस से छुपी नहीं रहती।
[13] अर्थात जिस जगह भी हों।
[14] जानकारी देगा ताकि वह जान लें कि उनकी कानाफूसियां उस से छुपी नहीं थीं, और ताकि उस का बताना उन लोगों के लिए फटकार हो जो बुरी और नाहक कानाफूसीयां करते हैं। और उनके खिलाफ प्रमाण और हुज्जत हो।
[15] यहूद के पास से कोई मुसलमान गुज़रता तो वह आपस में कानाफूसी करने लगते यहाँ तक कि मुसलमान बुरा गुमान करने लगता तो अल्लाह तआ़ला ने उन यहूदियों को ऐसा करने से रोका लेकिन वह नहीं रुके तो यह आयत उतरी।
[16] अर्थात ईमानवालों की पीठ पीछे बुराई करना उन्हें तकलीफ देना और इसी तरह की चीज़ें जैसे : झूठ और अन्याय वाली कानाफूसियां।
[17] अर्थात अल्लाह के रसूल विरोधी कानाफूसियां।
[18] इस से मुराद यहूद हैं वे जब नबी ﷺ के पास आते तो अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह् न कह कर अस्सामु अलैक (अर्थात : तुम पर मौत आए) कहते, और ज़ाहिर यह करते कि वह आप को सलाम कर रहे हैं, पर उनके हृदय में यह होता कि आप की मृत्यु हो, इसके जवाब में नबी ﷺ मात्र (व अलैकुम) कहते। (अर्थात तुम ने जो कहा वह तुम्हें ही आए)।
[19] अर्थात आपस में।
[20] अर्थात यदि मुहम्मद अवश्य नबी होते, तो उनके बारे में हमारी अपमान जनक बातें करने पर अल्लाह हमें ज़रूर अज़ाब देता। और एक राय अनुसार इसका अर्थ यह है कि यदि वह नबी होते तो हमारे बारे में जो वह (व अलैकुम) कहते हैं ज़रूर क़बूल किया जाता और उसी समय हमें मौत आ जाती।
[21] अर्थात उन्हें तुरन्त मारने और हलाक करने के बजाए अज़ाब के लिए नरक ही काफी है।
[22] अर्थात घुसेंगे।
[23] मसीर का अर्थ ठिकाना है। और वह नरका है।
[24] जैसा कि यहूद और मुनाफिकीन किया करते हैं।
[25] अर्थात फरमाबर्दारी की और पाप न करने की कानाफूसी किया करो।
[26] और वह तुम्हारे आमाल का बदला देगा।
[27] अर्थात पाप, अन्याय और रसूल की नाफरमानी की कानाफूसियां।
[28] शैतान की ओर से हैं किसी और की तरफ से नहीं, वही उन चीजों को सुन्दर बनाकर लोगों पर पेश करता और उन्हें गुम्राह करता है।
[29] ताकि वह ईमानवालों को भ्रम में लाकर दुःखित कर सके, कि वह छल कपट के निशाने पर हैं और उनके विरूद्ध साज़िशें हो रही हैं।
[30] अर्थात शैतान उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, अथवा यह कानाफूसियां जो जिन्हें वह सुन्दर बनाकर पेश करता है ईमान वालों को कुछ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ
مِن نَّجْوَىٰ ثَلَٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ
وَلَآ أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَآ أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا۟ ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم
بِمَا عَمِلُوا۟ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ
نُهُوا۟ عَنِ ٱلنَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا۟ عَنْهُ وَيَتَنَٰجَوْنَ بِٱلْإِثْمِ
وَٱلْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ ٱلرَّسُولِ وَإِذَا جَآءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ
بِهِ ٱللَّهُ وَيَقُولُونَ فِىٓ أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا ٱللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ
جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٨﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا
تَنَٰجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَٰجَوْا۟ بِٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ ٱلرَّسُولِ وَتَنَٰجَوْا۟
بِٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِىٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا ٱلنَّجْوَىٰ
مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ لِيَحْزُنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا
إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى ٱلْمَجَٰلِسِ فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ
ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُوا۟ فَٱنشُزُوا۟ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟
مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

उन्हे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें [1]।
(11) हे ईमानवालो। जब तुम से कहा जाए कि सभाओं में थोड़ा फैल कर बैठो, तो तुम जगह कुशादा करदो [2], अल्लाह तुम्हें कुशादगी (विस्तार) देगा [3], और जब कहा जाए उठ खड़े होजाओ, तो तुम उठ खड़े होजाओ [4], अल्लाह तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गए हैं पद ऊँचे कर देगा [5], और अल्लाह तआ़ला हर उस काम को जो तुम कर रहे हो अच्छी तरह जानता है।
(12) हे मोमिनो! जब तुम अकेले में रसूल से बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कुछ दान कर दिया करो [6], यह [7] तुम्हारे हक़ में अच्छा है और पाक है [8], हाँ यदि न पाओ तो अवश्य अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है [9]।
(13) क्या तुम अपनी अकेले की बातों से पहले दान करने से डर गए [10]? तो जब तुम ने यह न किया [11] और अल्लाह ने भी तुम्हें माफ कर दिया [12], तो अब परिपूर्ण नमाजों को कायम रखो, ज़कात देते रहा करो और अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबर्दारी करते रहो [13], तुम जो कुछ करते हो उन सब से अल्लाह अच्छी तरह अवगत (बाखबर) [14] है।
(14) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने उस समुदाय से दोस्ती की [15] जिन पर अल्लाह गुस्सा हो चुका है [16], न ये मुनाफिक़ तुम्हारे ही हैं न उन के हैं [17], और जानने के बावजूद [18] ये झूट पर कस्में खा रहे हैं [1]।

नुक़सान नहीं पहुँचा सकतीं, परन्तु यदि अल्लाह की यही मर्ज़ी हो।

[1] अर्थात ईमान वाले अपने सभी काम अल्लाह के हवाले करदें, अल्लाह से शैतान की पनाह चाहें और उन कानाफूसियों की यकदम परवाह न करें जिन्हें वह सुन्दर बनाकर पेश करता है। बुख़ारी और मुस्लिम वग़ैरह ने इब्ने मस्ऊद ﵁ से रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया : “जब तीन लोग हों तो उनमें से दो आदमी तीसरे को छोड़कर कानाफूसी न करें क्योंकि यह चीज़ उसे दु:खित और उदास कर देगी।

[2] इसमें अल्लाह तआ़ला ने अच्छे अदब की शिक्षा दी है कि वह सभा में एक दूसरे के लिए फैलाव पैदा करें और उसमें तंगी न करें। क़तादा और मुजाहिद कहते हैं, वह नबी ﷺ की सभा में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे, तो उन्हें आदेश मिला कि वे खुल कर बैठें, अर्थात सभा का दायरा फैला हुआ रखें ताकि पीछे आने वालों के लिए बैठने की जगह रहे।

[3] अर्थात तुम फैलाव पैदा करो अल्लाह जन्नत में तुम्हें कुशादगी अता करेगा, और यह हर उस सभा को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करने के लिए इकट्ठा हुए हों, जन्ग का सभा हो या ज़िक्रा व अज़्कार और जुमुआ का, हर व्यक्ति अपनी उस जगह का ज़्यादा हक़दार है जहाँ वह पहले से बैठा हो, लेकिन उसे चाहिए कि वह अपने भाई के लिए कुशादगी पैदा करे, नबी ﷺ से मरवी है कि आप ने फरमाया : "**لا يقم الرجل الرجل من مجلسه ثم يجلس فيه ولكن تفسحوا وتوسعوا**" “कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को उसकी जगह से उठाकर न बैठे, लेकिन तुम कुशादगी और फैलाव पैदा करो”।

[4] अर्थात जब सभा में बैठने वालों से अपनी जगह से उठ जाने के लिए कहा जाए ताकि उस जगह ज्ञानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठ सकें तो उन्हें उठ जाना चाहिए।

[5] अर्थात जो तुम में ज्ञानी हैं अल्लाह उनके पद ऊँचे कर देगा, अर्थात संसार में प्रतिष्ठा देगा और आख़िरत में सवाब देगा और पद ऊँचा करेगा, तो जो व्यक्ति मोमिन हो और ज्ञानी भी हो तो अल्लाह उसके ईमान के कारण उसके पद ऊँचा करेगा। फिर उसके ज्ञान के कारण उसके पद अधिक ऊँचा करेगा।

[6] इसका अर्थ यह है कि जब तुम अपने किसी काम में अल्लाह के रसूल से अकेले में बात करना चाहो तो अपनी इस अकेले की बात से पहले दान और सद्क़ा कर दिया करो, अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी तो भ्रष्टाचारी कानाफूसी करने से रुक गए, इसलिए कि वह अपनी कानाफूसियों से पहले सदक़ा नहीं कर सकते थे, और यह चीज़ मूमिनों के लिए भी परेशानी का कारण हो गई और उन्हें भी अकेले बात करने से रुक जाना पड़ा; क्योंकि उनमें से बहुत से लोग ग़रीब थे, सद्क़ा नहीं कर सकते थे, तो इसके बाद वाली आयत उतार कर अल्लाह ने उनके लिए आसानी कर दी।

[7] अर्थात अकेले बात करने से पहले सदक़ा करना।

[8] क्योंकि इसमें अल्लाह के आदेश का पालन है।

[9] अर्थात उनमें से जिस के पास कुछ भी सदक़ा करने के लिए न हो तो सदक़ा किए बिना भी अकेले में बात कर सकता है, ऐसा करने से वह पापी नहीं होगा।

[10] अर्थात क्या तुम अकेले में बात करने से पहले सदक़ा करने के कारण फक़ीरी से डर गए, मुक़ातिल कहते हैं, यह आदेश मात्र दस रातों तक रहा फिर उठा लिया गया।

[11] अर्थात अकेले में बात करने से पहले जिस सदक़े का तुम्हें आदेश मिला है उसके भारी होने के कारण जब तुमने उसे नहीं किया।

[12] और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया इस तरह से कि सदक़ा न करने की तुम्हें छूट दे दी।

[13] अर्थात अकेले में बात करने से पहले सदक़ा करने को यदि तुम बोझ समझ रहे हो तो नमाज़ क़ायम करने, ज़कात देने और अल्लाह और उस के रसूल की फरमाबर्दारी और उनके आदेशों का पालन करो।

[14] अर्थात वह तुम्हें उसका बदला देने वाला है।

[15] (**الذين تولوا**) से मुनाफिक़ीन मुराद हैं।

[16] और (**قوماً غضب الله عليهم**) से मुराद यहूद हैं, अर्थात मुनाफिकीन ने यहूद से दोस्ती की।

[17] जैसा कि अल्लाह ने उनके बारे में फरमाया : (**مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ**) और सम्भव यह भी है कि यह यहूद हों, अर्थात अल्लाह मोमिनों से कह रहा है कि यहूदी तुम में से नहीं हैं और न मुनाफिक़ीन में से हैं, तो मुनाफिकीन उन से दोस्ती क्यों नहीं कर लेते।

[18] अर्थात जिस बात पर वह कस्में खा रहे हैं उस के बातिल होने के बारे में

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا نَٰجَيۡتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُواْ بَيۡنَ يَدَيۡ نَجۡوَىٰكُمۡ
صَدَقَةٗۚ ذَٰلِكَ خَيۡرٞ لَّكُمۡ وَأَطۡهَرُۚ فَإِن لَّمۡ تَجِدُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٞ رَّحِيمٌ
(١٢) ءَأَشۡفَقۡتُمۡ أَن تُقَدِّمُواْ بَيۡنَ يَدَيۡ نَجۡوَىٰكُمۡ صَدَقَٰتٖۚ فَإِذۡ لَمۡ تَفۡعَلُواْ
وَتَابَ ٱللَّهُ عَلَيۡكُمۡ فَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِيعُواْ ٱللَّهَ
وَرَسُولَهُۥۚ وَٱللَّهُ خَبِيرُۢ بِمَا تَعۡمَلُونَ (١٣) ۞ أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ تَوَلَّوۡاْ قَوۡمًا
غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِم مَّا هُم مِّنكُمۡ وَلَا مِنۡهُمۡ وَيَحۡلِفُونَ عَلَى ٱلۡكَذِبِ
وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ (١٤) أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمۡ عَذَابٗا شَدِيدًاۖ إِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُواْ
يَعۡمَلُونَ (١٥) ٱتَّخَذُوٓاْ أَيۡمَٰنَهُمۡ جُنَّةٗ فَصَدُّواْ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ فَلَهُمۡ
عَذَابٞ مُّهِينٞ (١٦) لَّن تُغۡنِيَ عَنۡهُمۡ أَمۡوَٰلُهُمۡ وَلَآ أَوۡلَٰدُهُم مِّنَ ٱللَّهِ
شَيۡـًٔاۚ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ (١٧) يَوۡمَ يَبۡعَثُهُمُ
ٱللَّهُ جَمِيعٗا فَيَحۡلِفُونَ لَهُۥ كَمَا يَحۡلِفُونَ لَكُمۡۖ وَيَحۡسَبُونَ أَنَّهُمۡ عَلَىٰ شَيۡءٍۚ أَلَآ
إِنَّهُمۡ هُمُ ٱلۡكَٰذِبُونَ (١٨) ٱسۡتَحۡوَذَ عَلَيۡهِمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ فَأَنسَىٰهُمۡ ذِكۡرَ
ٱللَّهِۚ أُوْلَٰٓئِكَ حِزۡبُ ٱلشَّيۡطَٰنِۚ أَلَآ إِنَّ حِزۡبَ ٱلشَّيۡطَٰنِ هُمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ
(١٩) إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحَآدُّونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُوْلَٰٓئِكَ فِي ٱلۡأَذَلِّينَ (٢٠)
كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغۡلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِيٓۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٞ (٢١)

15 अल्लाह ने उन के लिए कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है [2], और अवश्य ये लोग जो कुछ कर रहे हैं [3] बुरा कर रहे हैं।
16 इन्हों ने तो अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है [4], और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं [5], तो इनके लिए अपमानजनक अज़ाब है [6]।
17 उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आएंगे, यह तो जहन्नमी हैं, सदा ही उस में रहेंगे।
18 जिस दिन अल्लाह तआला उन सब को उठा खड़ा करेगा तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं अल्लाह तआला के सामने भी क़स्में खाने लगेंगे [7] और समझेंगे कि वे भी किसी प्रमाण पर हैं [8], यक़ीन करो कि अवश्य वही झूठे हैं,
19 उन पर शैतान ने ग़ल्बा हासिल कर लिया है [9], और उनसे अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया है[10] यह शैतानी सेना हैं [11] कोई शक नहीं कि शैतानी सेना ही घाटा उठाने वाला है [12]।
20 अवश्य अल्लाह तआला और उसके रसूल के जो विरोधी हैं [13] वही लोग अधिक अपमानितों में हैं [14]।
21 अल्लाह तआला लिख चुका है [15] कि अवश्य मैं और मेरे रसूल ही विजयी रहेंगे, यक़ीनन अल्लाह तआला ताक़तवर और ग़ालिब है [16]।
22 अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उसके रसूल के विरोधियों के साथ महब्बत रखते हुए कभी भी नहीं पाएंगे [17] चाहे वे उनके पिता, या पुत्र, या भाई, या समुदाय के सम्बन्धी ही क्यों न हों [18], यही लोग हैं [19] जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान को लिख दिया है [20], और जिन की पुष्टि अपनी रूह से की है [21], और जिन्हें उन जन्नतों में प्रवेश करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, और जहां यह सदा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश [22] है और यह अल्लाह से खुश हैं [23], यही अल्लाह के सेना हैं [24], और जान लो कि अवश्य अल्लाह के सेना ही सफल हैं [25]।

वह जानते हैं, और जानते हैं कि वह झूठ है उस की कोई वास्तविकता नहीं।

1 अर्थात क़स्में खा खा कर कह रहे हैं कि वह मुसलमान हैं, अथवा वे क़स्में खा खा कर कह रहे हैं कि उन्हों ने यहूदियों को खबरें नहीं बताई हैं।

2 इस दोस्ती और बातिल पर उन के क़सम खाने के कारण।

3 बुरे कर्तूतों में से।

4 यह वही झूठ है जिस पर कुफ्र के कारण क़त्ल कर दिए जाने से बचने के लिए वे क़स्में खा खा कर कहते थे कि वे मुसलमानों में से हैं, अपने उन क़स्मों को उन्होंने अपने लिए ढाल और बचाव का माध्यम बना लिया था, चुनांचे क़त्ल किए जाने से बचने के लिए ज़ुबान द्वारा ईमान ज़ाहिर करते जबकि उन के दिल मोमिन नहीं होते थे।

5 अर्थात वे लोगों को अपनी इन करतूतों के कारण इस्लाम से रोकते हैं।

6 जो उन्हें अपमानित कर देगा।

7 अर्थात वे झूठ पर क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने अल्लाह की क़स्में खाएंगे जैसे कि वे तुम लोगों से संसार में क़स्में खाते हैं। और कहेंगे क़सम है अल्लाह की ऐ हमारे रब हमने यह नहीं किया, और यह उनकी बहुत ही बड़ी बद बख़्ती होगी क्योंकि क़ियामत के दिन हक़ीक़तें स्पष्ट होजाएंगी, और मसले देखकर जान लिए जाएंगे।

8 अर्थात वे यह समझेंगे कि क़ियामत के दिन भी इन झूठी क़स्मों के द्वारा कुछ लाभ उठा लेंगे या किसी घाटे से बच जाएंगे जैसे वे संसार में झूठी क़स्मों के द्वारा कुछ देर के लिए कुछ लाभ उठा लिया करते थे।

9 अर्थात उन पर शैतान ने ग़लबा पा लिया है और उन्हे घेरे में ले लिया है।

10 तो उन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार काम करना छोड़ दिया।

11 अर्थात यही उसके अनुकारी ही उस के ग्रुप के लोग हैं।

12 क्योंकि उन्होंने जन्नत का जहन्नम से, हिदायत का गुमराही से सौदा कर लिया है, और अल्लाह और उस के नबी के बारे में झूठी बातें कही हैं, और झूठी क़स्में खाई हैं, वह दुनिया और आख़िरत दोनों में घाटे में रहेंगे।

13 अल्लाह और उस के रसूल से विरोध करने का अर्थ इस सूरत के शुरू में बीत चुका है।

14 यह भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्हें अल्लाह दुनिया और आख़िरत दोनों में अपमानित करेगा।

15 अर्थात अल्लाह अपने पिछले ज्ञान की रोशनी में यह निर्णय कर चुका है कि मैं और मेरे रसूल ही प्रमाण तथा ताक़त में ग़ालिब रहेंगे।

16 अर्थात अपने औलिया की सहायता पर क़ादिर और शत्रुओं पर ग़ालिब है उसे कोई पछाड़ नहीं सकता।

17 अर्थात तुम मोमिनों को ऐसे लोगों से जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी और विरोध कर रखा हो, दोस्ती करने वाला नहीं पाओगे।

18 गर्चि अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करने वाले, दोस्ती करने वालों के बाप ही हों; क्योंकि ईमान उन्हें इस से रोकता है, और ईमान का पास रखना पिता, पुत्र, भाई और समुदाय के सम्बंधों का पास रखने से मज़बूत है।

19 अर्थात जो लोग उन लोगों से दोस्ती नहीं करते जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से विरोध किया है।

20 **كَتَبَ** का अर्थ **أَثْبَتَهُ** है : (पुख़्ता कर दिया) और एक विचार यह है कि इसका अर्थ है : (कर दिया), और एक विचार के अनुसार इसका अर्थ है (जमा कर दिया)।

21 अर्थात उन के दुश्मनों पर उनकी सहायता करके संसार में उन्हें ताक़त बख़्शी है, और अपनी इस सहायता का नाम रूह रखा है; क्योंकि इसी सहायता द्वारा उनके मसले में जीवन आता है।

22 अर्थात उसने उनके कर्मों को स्वीकार कर लिए हैं और उन पर अपनी दुनिया और आख़िरत की रहमत की वर्षा बरसा दिया है।

23 और वे उन चीज़ों से खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें दुनिया और आख़िरत में दिए हैं।

24 यही लोग अल्लाह के सेना हैं जो उसके आदेशों का पालन करते हैं, उसके दुश्मनों से लड़ते हैं और उसके दोस्तों की सहायता करते हैं।

25 अर्थात दुनिया और आख़िरत में सफलता उन्हें मिलने वाली है, इब्ने अबी हातिम, तब्रानी और हाकिम ने रिवायत की है कि अबू उबैदा बिन जर्राह ﷺ

لَّا تَجِدُ قَوۡمٗا يُؤۡمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ يُوَآدُّونَ مَنۡ
حَآدَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَوۡ كَانُوٓاْ ءَابَآءَهُمۡ أَوۡ أَبۡنَآءَهُمۡ
أَوۡ إِخۡوَٰنَهُمۡ أَوۡ عَشِيرَتَهُمۡۚ أُوْلَٰٓئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ
ٱلۡإِيمَٰنَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٖ مِّنۡهُۖ وَيُدۡخِلُهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي
مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَاۚ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ
عَنۡهُۚ أُوْلَٰٓئِكَ حِزۡبُ ٱللَّهِۚ أَلَآ إِنَّ حِزۡبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ٢٢

سُورَةُ الحَشۡرِ

ترتيبها ٥٩ — آياتها ٢٤

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ
١ هُوَ ٱلَّذِيٓ أَخۡرَجَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ مِنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ مِن دِيَٰرِهِمۡ
لِأَوَّلِ ٱلۡحَشۡرِۚ مَا ظَنَنتُمۡ أَن يَخۡرُجُواْۖ وَظَنُّوٓاْ أَنَّهُم مَّانِعَتُهُمۡ
حُصُونُهُم مِّنَ ٱللَّهِ فَأَتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِنۡ حَيۡثُ لَمۡ يَحۡتَسِبُواْۖ وَقَذَفَ
فِي قُلُوبِهِمُ ٱلرُّعۡبَۚ يُخۡرِبُونَ بُيُوتَهُم بِأَيۡدِيهِمۡ وَأَيۡدِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ
فَٱعۡتَبِرُواْ يَٰٓأُوْلِي ٱلۡأَبۡصَٰرِ ٢ وَلَوۡلَآ أَن كَتَبَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِمُ
ٱلۡجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمۡ فِي ٱلدُّنۡيَاۖ وَلَهُمۡ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ عَذَابُ ٱلنَّارِ ٣

सूरतुल् हश्र – 59

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) बयान करती है, और वह गालिब हिक्मत वाला है।
(2) वही है जिसने अहले किताब में से काफ़िरों को [1] उनके घरों से, पहले हश्र के समय निकाला, तुम्हारा गुमान भी न था कि वे निकलेंगे [2] और वे स्वयं इस भ्रम में थे कि उनके मजबूत क़िले उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे [3], तो उन पर अल्लाह का अज़ाब ऐसी जगह से आ पड़ा कि उन्हें गुमान भी न था [4], और उनके दिलों में अल्लाह ने भय [5] डाल दिया, वे अपने घरों को स्वयं अपने ही हाथों से उजाड़ रहे थे, और मुसलमानों के हाथों बर्बाद करवा रहे थे [6], तो ऐ आँखो वालो! नसीहत हासिल करो [7]।
(3) और यदि अल्लाह तआला उन पर देश-निकाला न लिखा होता तो अवश्य उन्हें संसार ही में अज़ाब देता [8], और आखिरत में उनके लिए आग का अज़ाब तो है ही।
(4) यह इसलिए हुवा कि उन्होंने अल्लाह तआला और उसके रसूल का विरोध किया[9] और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह तआला भी कठोर अज़ाब देने वाला है।
(5) तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले या जिन्हें तुमने उनकी जड़ो पर बाक़ी रहने दिया यह सब अल्लाह तआला के आदेश से थे [10], और इसलिए भी कि कुकर्मियों को अल्लाह तआला अपमानित करे [11]।

का बाप चाहता था कि वह उसकी तलवार तले आजाएं ताकि वह उन्हें क़त्ल करदे, और स्वयं अबू उबैदा के तलवार तले जब वह आता तो अबू उबैदा कतरा जा रहे थे, मगर जब उन्होंने देखा कि वह इनका खयाल नहीं कर रहा है और इन्हें क़त्ल कर देना ही चाहता है तो इन्हों ने भी उसका कोई खयाल नहीं किया और उसे क़त्ल कर दिया तो यह आयत उतरी।

[1] इस से मुराद बनू नज़ीर हैं, यह यहूदियों का एक समुदाय था, जो हारून عليه السلام के संतान में से थे, बनू इस्राईल के कठोर दिनों में वह मदीना में आकर बस गए थे, नबी से उनका ऐग्रीमेंट था, परंतु आगे चलकर इन्होंने ऐग्रीमेंट तोड़ दिया और मक्का के मुशरिकों के साथ हो गए, तो अल्लाह के रसूल ने उनका घेराव किया यहाँ तक कि वे मदीना छोड़ने पर तैयार होगए।
कलबी का कहना है कि अहले किताब में से सबसे पहले यही लोग अरब महाद्विप से निकाले गए, फिर उनमें से जो लोग बच गए थे उन्हें उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه के समय निकाल दिया गया, इस तरह पहले हश्र के समय उनकी जलावतनी मदीना से हुई, और उनकी अन्तिम जलावतनी अहदे फारूक़ी में हुई, और एक राय अनुसार आखिरी हश्र से मुराद हश्र के मैदान में सभी लोगों का इकट्ठा किया जाना है।

[2] अर्थात ऐ मुसलमानो! बनू नज़ीर के गल्बा और उनकी आन-बान के कारण तुम्हें यह गुमान न था कि यह अपने घरों से निकाल दिए जाएंगे, क्योंकि यह मज़बूत क़िलों वाले और भूमिपति थे, और इनके पास बड़े बड़े खजूर के बागीचे थे, और संतान वाले भी थे और सभी तरह के हथियार भी इनके पास थे।

[3] अर्थात स्वंय बनू नज़ीर भी इसी भ्रम में थे कि उनके मज़बूत क़िले उन्हे अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे।

[4] अर्थात ऐसी तरफ से उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पड़ा कि उनके दिल में भी यह खयाल नहीं आया था कि यहाँ से भी उन पर अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, और वह यह था कि अल्लाह ने अपने नबी को उन से लड़ने और उन्हें देश-निकाला करने का आदेश दे दिया था, वे कभी भी यह नहीं समझ रहे थे कि हालत यहाँ तक पहुँच जाएगी, बल्कि वे अपने को ताक़तवर और ग़ालिब समझ रहे थे।

[5] रोब से मुराद बहुत ज़्यादा भय है, नबी ﷺ का फरमान है : **نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ مَسِيرَةَ شَهْرٍ** मेरी सहायता ऐसे भय से की गई है कि मेरा शत्रु एक महीने की बराबरी की दूरी पर होता है तभी से उस पर मेरा डर बैठ जाता है।

[6] ऐसा उस समय हुवा जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि अब उनका देश-निकाला होगा, तो वे इस डाह में कि मुसलमान उनके घरों में न रह सकें और यह उनके रहने के काबिल न रह सकें, वे अन्दर से अपने घरों को स्वंय उजाड़ने लग गए, और मुसलमान बाहर से उजाड़ने लगे। और ज़ोह्री और उर्वा बिन ज़ुबैर का कहना यह है कि जब नबी ﷺ ने उनसे इस बात पर सुलह कर ली कि जितना सामान वे अपने ऊँटों पर लाद कर ले जा सकते हों ले जाएं, तो उन्हें जो लकड़ियां और शहतीर अच्छे लगते उन्हें उजाड़कर अपने ऊँटों पर लाद लेते और जो बचा रहता उन्हें मुसलमान नष्ट कर देते।

[7] अर्थात यह जान लो कि जो लोग अल्लाह का वादा तोड़ते हैं और उस से दुश्मनी करते हैं उनके साथ वह ऐसा ही करता है।

[8] यदि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह न लिख दिया होता और उनके बारे में यह निर्णय न कर दिया होता कि यह अपने घरों से निकाल दिए जाएंगे तो उन्हें इस तरह अज़ाब देता कि या तो वे क़त्ल कर दिए जाते या बन्दी बना दिए जाते, जैसा कि बनू क़ुरैज़ा के साथ किया गया कि उनके जवानों को क़त्ल कर दिया गया और बाक़ी को बन्दी बना लिया गया, और उनका माल मुसलमानों के लिए ग़नीमत बना दिया गया।

[9] अर्थात उनका देश-निकाला इसलिए हुवा कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया और नबी के साथ वादा तोड़ा।

[10] बनू नज़ीर की लड़ाई में कुछ मुसलमानों ने उन्हें कृोधित करने के लिए उनके ख़जूरों के पेड़ों को काटना शुरू किया तो बनू नज़ीर के लोग जो अहले किताब में से थे कहने लगे कि मुहम्मद! क्या आप यह नहीं कहते थे कि : “आप अल्लाह के नबी हैं, और दंगा के बजाए अम्न व शान्ति और भलाई चाहते हैं, तो क्या खजूर के पेड़ों को काटना और उन्हें जलाना भलाई है? क्या आप पर जो चीज़ें उतारी गई हैं उन में यह है कि ज़मीन में फसाद फैलाना जायज़ है?”

[11] और इसलिए भी हुवा है कि अल्लाह उन लोगों को जो कुकर्मी हैं उन्हें अपमानित करे, और उनके कुछ पेड़ों को काटकर और कुछ को छोड़कर क्रोधित करे, क्योंकि जब वह देखेंगे कि मुसलमान उनके मालों में अपनी मर्ज़ी कर रहे हैं तो यह चीज़ उन्हें और क्रोधित करेगी और उनकी अपमानित्ता और बेइज़्ज़ती को और बढ़ा देगी।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ ۖ وَمَن يُشَآقِّ ٱللَّهَ فَإِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ
ٱلْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُم مِّن لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَآئِمَةً
عَلَىٰٓ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ ٱللَّهِ وَلِيُخْزِىَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٥﴾ وَمَآ أَفَآءَ ٱللَّهُ
عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ
وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُۥ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيرٌ ﴿٦﴾ مَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ
وَلِذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ كَىْ لَا يَكُونَ
دُولَةًۢ بَيْنَ ٱلْأَغْنِيَآءِ مِنكُمْ ۚ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا
نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٧﴾
لِلْفُقَرَآءِ ٱلْمُهَٰجِرِينَ ٱلَّذِينَ أُخْرِجُوا۟ مِن دِيَٰرِهِمْ وَأَمْوَٰلِهِمْ
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ ٱللَّهِ وَرِضْوَٰنًا وَيَنصُرُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ﴿٨﴾ وَٱلَّذِينَ تَبَوَّءُو ٱلدَّارَ وَٱلْإِيمَٰنَ مِن قَبْلِهِمْ
يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِى صُدُورِهِمْ حَاجَةً
مِّمَّآ أُوتُوا۟ وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ
وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٩﴾

(6) और उनका जो माल अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ के हाथ लगाया है जिस पर तुमने अपने घोड़े दौड़ाए हैं [1] और न ऊँट बल्कि अल्लाह तआला अपने रसूल ﷺ को जिस पर चाहे प्रभावशाली करदेता है, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर ताकत रखने वाला है।

(7) बस्तियों वालों का जो धन अल्लाह तआला तुम्हारे लड़े भीड़े बिना अपने रसूल के हाथ लगाए [2] वह अल्ला का है [3] और रसूल का [4], और रिश्तेदारों का [5], और अनाथों का [6], गरीबों का [7] और यात्रियों का है [8], ताकि यह धन तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही घूमता न रह जाए [9], और तुम्हें जो कुछ रसूल दें उसे ले लो, और जिस से रोक दें उससे रुक जाओ [10]। और अल्लाह तआला से डरते रहा करो, अवश्य अल्लाह कठोर यातना वाला है।

(8) (फ़ै का धन) उन मुहाजिर गरीबों के लिए है जो अपने घरों [11] और अपने धनों से निकाल दिए गए हैं, वे अल्लाह के फ़ज़्ल और खुशी के इच्छुक हैं [12], और अल्लाह और उस के रसूल की सहायता करते हैं [13], यही सच्चे लोग हैं [14]।

(9) और उन के लिए जिन्होंने इस घर में (मदीना में) और ईमान में इस से पहले जगह बना ली है [15]। और अपनी तरफ हिज्रत करके आने वालों से महब्बत करते हैं [16], और मुहाजिर को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने दिलों में कोई तंगी नहीं रखते [17], बल्कि स्वंय अपने ऊपर उनको प्राथमिकता (तर्जीह) देते हैं [18], चाहे उनको स्वंय उनको कितनी ही अधिक ज़रूरत हो [19], बात यह है कि जो अपने नफ़्स की कंजूसी से बचाया गया वही कामयाब है [20]।

(10) और (उनके लिए) जो उनके बाद आएं [21] जो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी जो

---

[1] ईजाफ का अर्थ सवार के घोड़े दौड़ाने के हैं, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल को बनू नज़ीर के माल में से जो दिया है, उसे लेने के खातिर न तो तुम्हें घोड़ों और ऊँटों पर सवार होकर सफर की परेशानी उठानी पड़ी हैं, और न ही लड़ाई करनी पड़ी है, उनका गाँव मदीना से मात्र दो मील दूर था, इसलिए अल्लाह ने उनके मालों को अपने रसूल के लिए खास कर दिया है; क्योंकि तुम ने सुलह के माध्यम से उसको जीता है, और तुम्हारे लड़े बिना यह माल रसूल के हाथ आए हैं, यही कारण है कि उसे गनीमत के बजाए फय् कहा गया और उसे गानिमीन में बांटा नहीं गया।

[2] इस आयत में यह स्पष्ट करने के बाद कि यह धन अल्लाह के रसूल के लिए खास है, इसमें गानिमीन का कोई हिस्सा नहीं फय् के मसारिफ को स्पष्ट किया गया है कि किस किस में अल्लाह के रसूल उसे खर्च करें, और यही हर उस बस्ती का हुक्म है जिसे अल्लाह के रसूल और क़ियामत तक आप के बाद जो मुसलमान भी आने वाले हैं लड़े बिना सुलह सफाई के माध्यम जीत लें, और मुसलमानों को उन पर घोड़े और ऊँट दौड़ाने न पड़ें, और उन्हे यात्रा की दिक़्क़ते न उठानी पड़ें।

[3] अर्थात वह उसमें जैसा चाहे निर्णय करे।

[4] अर्थात उसके मालिक रसूल होंगे फिर आप के बाद मुसलमानों के लाभ की खातिर उसे खर्च किया जाएगा।

[5] अर्थात इस से मुराद बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब हैं, अर्थात उनके मुहताज लोगों के लिए है, क्योंकि वह सद्क़ा नहीं खा सकते, तो उसके बदले फय् में उनके लिए हिस्सा रखा गया।

[6] अर्थात उन बालक-बालिकाओं का है जिन के पिता उनके बालिग़ होने से पहले मर गए।

[7] इस से मुराद गरीब और जरूरतमंद लोग हैं।

[8] इस से मुराद वह यात्री हैं जो यात्रा कर रहे हों और यात्रा के समय उनके पैसे खतम हो गए हों।

[9] कि धनी उस पर प्रभावशाली रहें और गरीबों और जरूरतमंदों के हाथ न आ सके।

[10] अर्थात फय् के धन में से जो तुम्हें वह दें उसे ले लो और जिसे लेने से वह तुम्हें रोक दें उस से रुक जाओ, उसे मत लो।

[11] इससे मुराद मक्का है, अर्थात मक्का वालों ने उन्हें मक्का से निकलने पर मजबूर कर दिया जिस के कारण उन्हें मक्का छोड़ना पड़ा, इसलिए इस फ़ै में उनका भी हिस्सा रखा गया, ताकि यह धन उनके काम आए, और उन्हें बेनियाज़ (निःस्पृह) कर दे।

[12] अर्थात वह दुनिया में रोज़ी और आखिरत में अल्लाह की खुशनूदी के इच्छुक हैं।

[13] काफ़िरों से जिहाद करके।

[14] अर्थात यही सच बोलने और सच्चाई में पुख़्ता और मज़बूत लोग हैं।

[15] इस से मुराद मदीना के अन्सार हैं जो मुहाजिरीन के मदीना आने से पहले ही से वहां बसे हुए थे, और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ला चुके थे।

[16] क्योंकि उन्होंने मुहाजिरीन से अच्छा बर्ताव किया और अपने धनों और घरों में उन्हें हिस्सा दिया।

[17] अर्थात मुहाजिरीन को फ़ै का धन देने और अन्सार को न देने से अन्सार अपने दिलों में जलन, हसद, डाह, गुस्सा और दुःख नही करते, बल्कि उन्हें इस से खुशी होती है, शुरू में मुहाजिरीन, अन्सारियों के घरों में ही रह रहे थे, फिर जब नबी को बनू नज़ीर का धन मिला तो आप ने अन्सारियों को बुला कर उनका शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने मुहाजिरों को अपने घरों में बसाया, और उन्हें अपने माल-धन में शामिल किया फिर आप ने फरमाया : यदि तुम चाहो तो अल्लाह ने बनू नज़ीर का जो धन मुझे दिया उसे मैं तुम में और मुहाजिरीन में बांट दूँ और मुहाजिरीन का हिस्सा तुम्हारे घरों में उसी तरह बाक़ी रहे, जैसे अभी है, और यदि चाहो तो मैं यह सब उन्हीं को दे दूं और वह तुम्हारे घरों को छोड़ दें, तो वह उसे मुहाजिरीन ही में बांट देने पर राज़ी हो गए और वह उस पर खुश रहे।

[18] अर्थात दुनियावी हिस्से में वह अपने आप पर उन्हें प्राथमिकता देते हैं।

[19] 'खसासा' का अर्थ अधिक हाजत और ज़रूरत के हैं।

[20] अर्थात जिसे उसके नफ्स के लालच और बख़ीली से अल्लाह काफी हूवा, और शरीअत ने उसके माल में जो ज़कात वाजिब की है उसे उसने उसका हक़ समझ कर अदा किया तो वह कामयाब है, और जिसने बखीली की और अल्लाह का हक़ अदा नहीं किया तो वह नाकाम है।

[21] इससे मुराद क़ियामत तक आने वाले वह सारे लोग हैं जो इख़्लास के साथ उनकी पैरवी करने वाले हैं।

وَالَّذِينَ جَاءُو مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا
غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾ ۞ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ
أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ
﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ
وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾
لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى
مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ
جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾
كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ
قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

हमसे पहले ईमान ला चुके हैं [1], और ईमानदारों के बारे में
हमारे दिल में कपट [2] और दुश्मनी न डाल, हमारे रब!
अवश्य तू प्रेम और मेहर्बानी करने वाला है।
(11) क्या तूने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा [3] कि अपने अहले किताब
काफिर भाइयों से कहते हैं यदि तुम देश से निकाल दिए गए तो
हम भी तुम्हारे साथ ज़रूर निकल जाएंगे, और तुम्हारे बारे में हम
कभी भी किसी की बात स्वीकार नहीं करेंगे [4], और यदि तुम से
युद्ध कीया जाए तो हम तुम्हारी ही सहायता करेंगे [5], लेकिन
अल्लाह तआला गवाही देता है कि यह बिल्कुल झूठे हैं।
(12) यदि देश से निकाले गए तो उनके साथ कभी भी न जाएंगे
और यदि उन से युद्ध किया जाए तो यह उनकी सहायता भी न
करेंगे [6] और यदि सहायता के लिए आ भी गए तो पीठ फेर
कर [7] भाग खड़े होंगे, फिर मदद न किए जाएंगे [8]।
(13) (मुसलमानों विश्वास करो) कि तुम्हारा भय इनके दिलों
अल्लाह के भय के मुक़ाबले बहुत अधिक है [9], यह इसलिए
कि यह नासमझ लोग हैं [10]।
(14) यह सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, हां यह और
बात है कि क़िलों के अन्दर हों या दीवारों की आड़ में हों[11],
उनकी लड़ाई तो आपस ही में बहुत कठोर है[12], यद्यपि (अगरचि)
आप इन्हें इकट्ठा समझ रहे हैं, लेकिन इनके दिल आपस में एक
दूसरे से अलग हैं [13], इसलिए कि यह नासमझ लोग हैं [14]।
(15) उन लोगों की जो उनसे कुछ ही पहले बीते हैं [15]
जिन्होंने अपने कर्तूत का मज़ा चख लिया [16], और जिन के
लिए दुखदायी अज़ाब तैयार है।
(16) शैतान की [17] तरह कि उसने इन्सान से कहा कुफ्र कर
और जब वह कुफ्र कर चुका तो कहने लगा : मैं तुझ से
अलग हूँ, मैं तो संसार के रब से डरता हूँ।
(17) तो (शैतान और इस इन्सान) दोनों का परिणाम यह हुवा
कि (नरक की) आग में सदा के लिए गए, और ज़ालिमों के
लिए यही दण्ड है [18]।
(18) ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो [19], और सभी
व्यक्ति देख-भाल ले कि कल (प्रलय) के लिए उसने (कर्तव्यों

---

1 जो इस्लाम में पहल करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार से महब्बत करते और उनके लिए बख़्शिश की दुआ करते रहते हैं।

2 ग़िल से मुराद खोट, हसद और जलन है, और (لِلَّذِينَ آمَنُوا) में सब से पहले सहाबा किराम शामिल हैं, क्योंकि ईमान वालों में सबसे अशरफ और अफ़ज़ल यही लोग हैं, और आयत का सियाक़ भी इन्हीं के बारे में है, तो जो अपने दिल में इनके बारे में कपट और डाह रखे जैसे रवाफ़िज़ रखते हैं तो उसका अर्थ है कि वह शैतान के जाल में फंस चुका है, और उसे उसका अधिक हिस्सा पहुंच चुका है, क्योंकि वह अल्लाह का नाफरमान है और उसके औलिया और उसके नबी की उम्मत के अच्छे और बेहतरीन व्यक्ति से दुश्मनी रखता है, ऐसे लोगों का फ़ै के माल में कोई हिस्सा नहीं और न ही ऐसे लोगों का है जो उन्हें गालियाँ दें और दुःख पहुँचाएं और उन्हें बुरा कहें।

3 इससे मुराद अब्दुल्लाह बिन उबै और उसके साथी हैं जिन्होंने बनू नज़ीर को यह पैग़ाम भेजा कि तुम लोग जमे रहो और बहादुरी से मुक़ाबला करो, हम तुम्हें असहाय नहीं छोड़ेंगे, यदि तुम से युद्ध किया गया तो हम भी तुम्हारे साथ मिलकर लड़ाई करेंगे और यदि तुम्हें घरों से निकाला गया तो हम भी अपने घर बार छोड़ कर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे।

4 अर्थात जो हमें तुम्हारे साथ निकलने से रोकना चाहेंगे हम उनकी बात कभी नहीं मानेंगे चाहे कितना ही लम्बा समया क्यों न बीत जाए।

5 अर्थात यदि तुम्हें अपने दुश्मनों से लड़ना पड़ा तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे, इसके बाद अल्लाह ने उनको झुठलाया और फरमाया कि यह जो उनके साथ निकल जाने और सहायता करने का वादा कर रहे हैं, उसमें वे झूठे हैं।

6 और ऐसे ही हुवा बनू नज़ीर और उनके साथी यहूदियों को देश से निकाला गया तो मुनाफ़िक़ीन उनके साथ नहीं गए और न उन्होंने बनू क़ुरैज़ा और ख़ैबर के यहूदियों की मदद की जिन से युद्ध हुवा था।

7 अर्थात हार कर।

8 अर्थात उन मुनाफ़िकों की फिर कोई सहायता नहीं करेगा, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित कर देगा, और उनका निफ़ाक़ उन्हें कुछ भी काम न देगा।

9 अर्थात इन मुनाफ़िक़ों या यहूदियों के दिल में अल्लाह से अधिक तुम्हारा भय है।

10 अर्थात यदि उनमें समझ होती तो यह अच्छी तरह जान लेते कि उन पर तुम्हें ग़ालिब करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए वह ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरा जाए।

11 वह सब इकट्ठा होकर भी तुम से नहीं लड़ सकते, मगर यह कि वह तहखानों और घरों में छुपकर या दीवारों की आड़ से तुम पर हमले करें, क्योंकि यह अधिक ही डरपोक लोग हैं।

12 अर्थात वे स्वंय आपस में एक दूसरे के लिए बड़े कठोर और बेरहम हैं।

13 अर्थात उनकी यह एकता मात्र दिखावे का है वास्तव में वह एक दूसरे के कठोर शत्रु हैं, सब के विचार अलग अलग हैं।

14 अर्थात उनमें समझ होती तो वह हक़ को ज़रूर जान लेते और सब इकट्ठा होकर उसकी पैरवी करते और उनमें आपस में भिन्नता न होता।

15 अर्थात मक्का के अधर्मियों की तरह।

16 इस से मुराद उनके कुफ्र का वह बुरा परिणाम है जिससे उन्हें बदर के युद्ध में दोचार होना पड़ा था, और बनू नज़ीर के युद्ध से मात्र ६ महीने पहले हो चुका था।

17 अर्थात उनका उदाहरण उन्हें अकेले छोड़ देने में और उनकी सहायता न करने में शैतान की तरह है, कि वह इन्सान को कुफ्र करने पर उकसाता है और उसे इस के लिए खूबसूरत बनाकर पेश करता है और उस पर उभारता है, फिर जब वह शैतान की मान कर और उसके बहकावे में आकर उसे कर बैठता है तो वह कहता है कि अब मैं तुझ से अलग थलग हूँ।

18 यह शैतान की बात है जिसे वह इन्सान से अपना नाता तोड़ते हुए कहता है।

19 अर्थात जिन बातों का वह तुम्हें आदेश दे उन्हें करो, और जिन से रोके उनसे रुक कर उसकी सज़ा से डरते रहो।

فَكَانَ عَٰقِبَتَهُمَآ أَنَّهُمَا فِي ٱلنَّارِ خَٰلِدَيۡنِ فِيهَاۚ وَذَٰلِكَ جَزَٰٓؤُاْ
ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٧﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَلۡتَنظُرۡ
نَفۡسٞ مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٖۖ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرُۢ بِمَا تَعۡمَلُونَ
﴿١٨﴾ وَلَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ نَسُواْ ٱللَّهَ فَأَنسَىٰهُمۡ أَنفُسَهُمۡۚ أُوْلَٰٓئِكَ
هُمُ ٱلۡفَٰسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسۡتَوِيٓ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِ وَأَصۡحَٰبُ
ٱلۡجَنَّةِۚ أَصۡحَٰبُ ٱلۡجَنَّةِ هُمُ ٱلۡفَآئِزُونَ ﴿٢٠﴾ لَوۡ أَنزَلۡنَا هَٰذَا
ٱلۡقُرۡءَانَ عَلَىٰ جَبَلٖ لَّرَأَيۡتَهُۥ خَٰشِعٗا مُّتَصَدِّعٗا مِّنۡ خَشۡيَةِ
ٱللَّهِۚ وَتِلۡكَ ٱلۡأَمۡثَٰلُ نَضۡرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُونَ
﴿٢١﴾ هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ عَٰلِمُ ٱلۡغَيۡبِ وَٱلشَّهَٰدَةِۖ
هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ
ٱلۡمَلِكُ ٱلۡقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلۡمُؤۡمِنُ ٱلۡمُهَيۡمِنُ ٱلۡعَزِيزُ
ٱلۡجَبَّارُ ٱلۡمُتَكَبِّرُۚ سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشۡرِكُونَ
﴿٢٣﴾ هُوَ ٱللَّهُ ٱلۡخَٰلِقُ ٱلۡبَارِئُ ٱلۡمُصَوِّرُۖ لَهُ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰۚ
يُسَبِّحُ لَهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

سُورَةُ المُمْتَحَنَة

آياتها ١٣ — ترتيبها ٦٠

का) क्या भंडार भेजा है [1]? और (सदा) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाहों तुम्हारे सारे कर्तूतों से अवगत है।
19 और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह के आदेश को भुला दिया[2], तो अल्लाह ने भी उन्हें अपने आप से भुला दिया[3], और ऐसे ही लोग नाफर्मान होते हैं[4]।
20 जहन्नमी (नरकवाले) और जन्नती (स्वर्गवाले) (आपस में) बराबर नहीं, जो जन्नती हैं वही सफल हैं [5]।
21 यदि हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता के अल्लाह के डर से [6] वह झुक कर टुकड़े टुकड़े हो

---

1 अर्थात वह प्रलय के दिन के लिए कैसे काम कर रहा है।
2 अर्थात उसके आदेशों को ठुकराया और उसकी इताअत की कुछ भी परवाह न की।
3 अर्थात उसने भी उन्हें भुला दिया, जिसके कारण वह ऐसे काम नहीं कर सके जो उन्हें उसके अज़ाब से बचाता, और एक विचार यह है कि उन्होंने अल्लाह को अपनी खुशहाली (समपन्नता) के दिनों में भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें उनकी परेशानी और दुःख के दिनों में भुला दिया।
4 अल्लाह के आदेशों का पालन नहीं करते हैं।
5 अर्थात हर उस अच्छी चीज़ को पाएंगे जिसकी वह इच्छा करेंगे, और हर बूरी चीज़ से बच निकलेंगे।
6 अर्थात यह अपनी शान और बड़ाई में, स्पष्टता और बलाग़त में, और सदुपदेश और नसीहत की ऐसी बातों को समोने में जिन से दिल नरम पड़ जाते हैं इस सीमा को पहुँचा हुवा है कि यदि यह पहाड़ों में से किसी पहाड़ पर उतार दिया जाता, तो तुम इसे देखते कि वह अपनी कठोरता, मज़बूती, चौड़ाई, और लम्बाई के बावजूद अल्लाह के भय से, और उसकी पकड़ से बचने के भय से और इस डर से कि वह अल्लाह के कलाम की वह बड़ाई नहीं कर सकेगा जो उसके लिए ज़रूरी है, फट कर कण-कण हो जाता।

जाता, हम इन उदाहरणों को लोगों के सामने बयान करते हैं, ताकि वह सोच-फ़िक्र करें [7]।
22 वही अल्लाह जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, छिपे[8] और खुले [9] का जाननेवाला, बड़ा मेहर्बान और बहुत दयालू है।
23 वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं [10], राजा, बहुत ही पवित्र, सभी बुराइयों से साफ़[11], शान्ति देने वाला [12], रक्षक [13], ग़ालिब [14], ताक़तवर [15], और बड़ाईवाला है [16], है उन चीजों से जिन्हें यह उसका साझी बनाते हैं [17]।
24 वही अल्लाह है पैदा करनेवाला, बनाने वाला [18], रूप देनेवाला [19], उसी के लिए बहुत अच्छे नाम हैं [20], हर चीज़ चाहे आकाशों में हो या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती है [21], और वही ग़ालिब हिकमत वाला है।

सूरतुल् मुम्तहिना। - 60

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 ऐ वह लोगों जो ईमान लाए हो! मेरे और स्वंय अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ [22], तुम तो दोस्ती से तरफ संदेश भेजते हो [23], और वह इस हक़ का जो तुम्हारे आचुका है इन्कार करते हैं [24], रसूल को और स्वंय तुम्हे भी मात्र इस कारण निकालते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान रखते हो [26], यदि तुम मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी खुशी की खोज में निकलते हो (तो उन से दोस्ती न करो) [27]

---

7 उन चीज़ों में जिन में सोच-वीचार करना ज़रूरी है, ताकि वह उसके सदुपदेशों से नसीहत हासिल कर सकें, और उसकी फटकार से बच सकें।
8 अर्थात जो चीज़ आंखों से देखी जाने के क़ाबिल नहीं हैं।
9 अर्थात जो चीज़ आंखों से देखी जाने के क़ाबिल हैं।
10 इसका चर्चा दोबारा मज़बूती पैदा करने के लिए किया गया है।
11 क़ुद्दूस का अर्थ है जो हर बुराई से पाक, और हर कमी से पवित्र हो, और एक विचार अनुसार क़ुद्दूस वह है जिस के अन्याय से सृष्टि सुरक्षित हो।
12 मोमिन जो अपने भक्तों को अन्याय से सुरक्षित रखनेवाला हो, और एक विचार अनुसार मोमिन वह है जो चमत्कार दिखा करके अपने रसूलों की तस्दीक़ करने वाला है।
13 अर्थात जो अपने भक्तों के आमाल का गवाही देनेवाला और उनका रक्षक हो।
14 ऐसा क़ाहिर और विजेता जो कभी पराजित न हो।
15 अल्लाह की जबरूत से मुराद उसकी बड़ाई है। और एक विचार अनुसार : जब्बार वह है जिस के क़हर को सहा न जा सके।
16 अल्लाह के लिए प्रशंसित विशेषता है, जबकि सृष्टि के लिए निंदनीय विशेषताओं में से है।
17 जो हर कमी से उच्चतर और उन सभी चीज़ों से पाक और बरतर हो जो उसकी शान के लायक़ नहीं।
18 अपनी मशीअत तथा इरादा के अनुसार चीज़ों को पैदा करने वाला उन्हें बनाने वाला।
19 सूरतों को बनाने वाला और उन्हें अनेक रूप देनेवाला।
20 अस्माए हुसना का विवरण सुरतुल् आ'राफ़ आयत न० १८० में बीत चुका है।
21 अर्थात अपनी स्तिथि या अपनी ज़ुबान द्वारा भी।
22 यह आयतें हातिब बिन अबी बल्तआ ﷺ के बारे में उस समय उतरीं जब वह एक चिट्ठी द्वारा मक्का के मुशरिकों को यह खबर दे रहे थे कि नबी ﷺ उन पर आक्रमण करने वाले हैं, यह फ़त्हे मक्का की युद्ध की बात है जो ८ हिजरी में हुई।
23 अर्थात इस दोस्ती के कारण जो तुम्हारी उन से है नबी ﷺ की बातें तुम उन्हें पहुँचा रहे हो।
24 और हाल यह है कि वे अल्लाह के रसूल के और इस क़ुरआन और ईश्वरीय संदेशा (इलाही हिदायत) के इन्कारी हैं जिसे रसूल तुम्हारे पास लेकर आए हैं।
25 रसूल के तुम्हारे पास लाए हुए हक़ के अपने इसी इन्कार के कारण, उन लोगों ने उन्हें और तुम्हें मक्का से निकाला फिर तुम उनसे क्योंकर दोस्ती करते हो?
26 वह तुम्हें इस कारण निकाल रहे हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो।
27 अर्थात यदि तुम ऐसे ही हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ عَدُوِّى وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَآءَ تُلْقُونَ
إِلَيْهِم بِٱلْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا۟ بِمَا جَآءَكُم مِّنَ ٱلْحَقِّ يُخْرِجُونَ ٱلرَّسُولَ
وَإِيَّاكُمْ ۙ أَن تُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ رَبِّكُمْ إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَٰدًا فِى سَبِيلِى
وَٱبْتِغَآءَ مَرْضَاتِى ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِٱلْمَوَدَّةِ وَأَنَا۠ أَعْلَمُ بِمَآ أَخْفَيْتُمْ
وَمَآ أَعْلَنتُمْ ۚ وَمَن يَفْعَلْهُ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ ٱلسَّبِيلِ ﴿١﴾ إِن
يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا۟ لَكُمْ أَعْدَآءً وَيَبْسُطُوٓا۟ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم
بِٱلسُّوٓءِ وَوَدُّوا۟ لَوْ تَكْفُرُونَ ﴿٢﴾ لَن تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُمْ ۚ
يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣﴾ قَدْ
كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥٓ إِذْ قَالُوا۟ لِقَوْمِهِمْ
إِنَّا بُرَءَٰٓؤُا۟ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمُ ٱلْعَدَٰوَةُ وَٱلْبَغْضَآءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَحْدَهُۥٓ إِلَّا
قَوْلَ إِبْرَٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ ۖ
رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٤﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَٱغْفِرْ لَنَا رَبَّنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٥﴾

तुम उनके पास प्रेम-संदेश छुपा-छुपा कर भेजते हो [1], और मैं अच्छी तरह जानता हूँ जो तुमने छुपाया और वह भी जो तुमने ज़ाहिर किया [2], तुम में से जो भी इस

(2) यदि वे तुम पर कहीं क़ाबू पालें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन होजाएं [3], और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें और बुरे शब्द कहने लगें [4] और दिल से चाहने लगें कि तुम भी कुफ़्र करने लग जाओ [5]।

(3) तुम्हारी नातेदारियां और औलाद तुम्हें क़ियामत के दिन काम न आएंगीं [6], अल्लाह तआला तुम्हारे बीच फैसला करदेगा [7], और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

(4) (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए इब्राहीम (عليه السلام) में और उनके साथियों में अच्छा नमूना है, जब्कि उन सभों ने अपनी क़ौम से खुले शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और[8] जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो उन सभों से पूरी तरह से विमुख हैं [9], हम तुम्हारे अक़ीदे (आस्थाओं) का इन्कार करते हैं [10], जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ [11] हम में तुम में हमेशा के लिए दुश्मनी और कपट पैदा होगई [12], लेकिन इब्राहीम (عليه السلام) की इतनी बात अपने पिता से हुई थी [13] कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा याचना (इस्तिग़्फ़ार) जरूर करुंगा, और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के सामने किसी चीज का कुछ भी इख्तियार नहीं [14], ऐ हमारे रब! तुझ पर हमने भरोसा किया है, और तेरी ही तरफ पलटते हैं, और तेरी ही तरफ लौटना है।

(5) ऐ हमारे रब! तू हमें काफ़िरों के इम्तिहान में न डाल [15], हमारे पालने वाले! हमारी गलतियों को माफ़ करदे, अवश्य तू ही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

(6) अवश्य तुम्हारे लिए उनमें [16] अच्छा नमूना है, (और अच्छी पैरवी है खास कर) हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की और क़ियामत के दिन की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो [17], और यदि कोई मुंह मोड़ले [18] तो अल्लाह तआला पूरी तरह से बेनियाज़ है [19], और बड़ाई और प्रशंसा के लायक़ है [20]।

(7) क्या तअज्जुब कि क़रीब ही अल्लाह तआला तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम डाल दे [21], अल्लाह को सभी

---

1 अर्थात अपनी इनसे दोस्ती के कारण तुम चुपके चुपके इन्हें खबरें भेजते हो।

2 अर्थात मैं हर व्यक्ति के हर उस कर्म को जानता हूँ जिसे वह उन्हें खबरें भेजने के लिए करता है।

3 अर्थात यदि वे तुम पर क़ाबू पा लें तो अपने दिलों में तुम्हारे विरूद्ध जो दुश्मनी छुपाए हुए हैं उसे ज़ाहिर कर दें।

4 अर्थात वे तुम्हें मारने पीटने और बुरा भला कहने जैसी बुरी चीजें करने लगें।

5 अर्थात तुम्हारे इस्लाम से फिर जाने और कुफ़्र की तरफ पलट जाने के इच्छुक होजाएं।

6 अर्थात तुम्हारी औलाद और तुम्हारी नातेदारियां जिन के लिए तुम काफ़िरों से दोस्ती का दम भरते हो क़ियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम न आ सकें गी, जैसे कि हातिब बिन अबी बल्तआ के घटना में हुआ, बल्कि काफ़िरों से दुश्मनी रखना, उन से जिहाद करना और उनसे दोस्ती न करना जिसका अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है, यही तुमहारे काम आएगा।

7 अर्थात तुम में जुदाई करदेगाः आज्ञाकारियों को जन्नत में और अवज्ञाकारियों को जहन्नम में दाखिल करेगा।

8 अर्थात प्रशंसा योग्य विशेषता है जिसकी तुम अनुकरण करो, इस आयत में गोयाकि हातिब बिन अबी बल्तआ से कहा जा रहा है कि तुम ने इब्राहीम और उनके साथियों का अनुकरण क्यों न किया, अतः तुम भी अपने बाल-बच्चों से उसी तरह विमुखता बरतते जैसे इब्राहीम ने अपने समुदाय के लोगों से की थी।

9 अर्थात अल्लाह के साथ तुम्हारे कुफ़्र करने के कारण हम तुम से विमुख हैं, हमारे और तुम्हारे बीच कोई सम्बंध नहीं। وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ से मुराद अस्नाम (बुत) हैं।

10 अर्थात हम तुम्हारे धर्म, या तुम्हारे कर्मों का इन्कार करते है।

11 अर्थात जब तक तुम कुफ़्र करना नहीं छोड़ोगे तुम्हारे साथ हमारा यही बर्ताव रहेगा।

12 और जब शिर्क करना छोड़ दोगे तो हमारी दुश्मनी दोस्ती में और कीना और कपट प्यार और महब्बत में बदल जाएगी।

13 अर्थात इब्राहीम (عليه السلام) की सभी बातें ही ऐसी हैं जिन में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है, सिवाए इस एक बात के जो उन्होंने अपने पिता से कही थी, तुम उसे अपने लिए नमूना न बनाना कि तुम भी मुशरिकों के लिए क्षमा-याचना करने लग जाओ, क्योंकि उन्होंने ऐसा उस वादे के कारण किया था जिसे उन्होंने अपने पिता से किया था, तो जब यह बात खुलकर सामने आगई कि उनका पिता अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विमुख होगए।

14 अर्थात मैं तुम से अल्लाह का अज़ाब थोड़ा सा भी नहीं टाल सकता।

15 इसकी तफ़्सीर में मुजाहिद कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि हमें इनके हाथों से किसी यातना में न डाल, और न हमें अपनी तरफ से किसी अज़ाब में डाल कि उन्हें यह कहने का अवसर मिल जाए कि यदि यह हक़ पर होते तो इस अज़ाब से क्यों दोचार होते।

16 अर्थात इब्राहीम (عليه السلام) और उनके साथियों में तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है।

17 अर्थात यह नमूना मात्र उन लोगों के लिए है, जो दुनिया और आख़िरत में अल्लाह से भलाई की उम्मीद रखते हैं।

18 अर्थात मुँह फेरकर।

19 अपनी मख़्लूक़ से।

20 अर्थात प्रशंसा के योग्य है, और उसके औलिया भी तारीफ के क़ाबिल हैं।

21 अर्थात तुम्हारे और मक्का के मुश्रिकों के बीच, और वह इस तरह से कि वे इस्लाम स्वीकार कर लें तो वे तुम्हारे ही धर्म के मानने वाले होजाएं, चुनांचि उनमें से कुछ लोग फत्हे मक्का के बाद इस्लाम ले आए और अपने इस्लाम में

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ
وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦﴾ ۞ عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ
﴿٧﴾ لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ
﴿٨﴾ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ
مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ
فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم
مَّا أَنفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ
وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوا مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنفَقُوا ۚ
ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِن فَاتَكُمْ
شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ
أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

कुदरतें हैं [1], और अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला (दयालु) है।

(8) जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा बर्ताव [2] और न्याय करने से [3] अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता, बल्कि अल्लाह तआला तो न्याय करने वालों से [4] प्रेम करता है।

(9) अल्लाह तआला तुम्हें मात्र उन लोगों की महब्बत से रोकता है जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में युद्ध किए, और तुम्हें तुम्हारे देश से निकाले [5], और देश से निकालने वालों का सहायता किया [6], जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें [7] वही (अवश्य) अत्याचारी हैं [8]।

(10) ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिना औरतें हिज्रत करके आएं [9] तो तुम उनका इम्तिहान लो [10], वास्तव में उनके ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है [11], परन्तु यदि वह तुम्हें ईमानदार लगती हों [12] तो अब तुम उन्हें काफिरों की तरफ वापस न करो [13], यह उनके लिए हलाल (वैध) नहीं और न ही वह इनके लिए हलाल हैं [14], और जो खर्च उन काफिरों का हुवा हो वह उन्हें दे दो [15], और उन औरतों को उनका महर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं [16], और काफिर औरतों के

मुख़्लिस रहे, और उनसे और पहले इस्लाम लाने वालों से खूब दोस्ती भी होगई, इन लोगों ने उनके साथ मिलकर जिहाद भी किया और नेकी और अल्लाह से कुर्बत के बहुत से काम किए, यहाँ तक कि नबी ﷺ ने अबू सुफ्यान ؓ की बेटी उम्मे हबीबा ؓ को अपने निकाह में आने का शर्फ बख़्शा, लेकिन यह महब्बत उनसे उस समय हुई जब वह मक्का फतह होने या उसके बाद इस्लाम ले आए, और अबू सुफ्यान ؓ ने अल्लाह के रसूल से दुश्मनी छोड़ दी, अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है कि उन्हों ने कहा, अल्लाह के दीन को मज़बूत करने के लिए मुर्तद होने वालों से सब से पहले अबू सुफ्यान बिन हर्ब ؓ ने युद्ध किया, और उन्ही के बारे में यह आयते करीमा उतरी: (عسى الله أن يجعل بينكم وبين الذين عاديتم منهم مودة)

[1] अर्थात वह सारी चीज़ों पर अपार शक्तिशाली है, दुश्मनों के दिलों को फेर कर उन्हें अपनी माफी और दया के अन्दर ले आने की भी शक्ति रखता है।

[2] अर्थात तुम्हें उनके साथ नेकी वाले काम करने जैसे नातेदारी जोड़ने, पड़ोसियों को लाभ पहुँचाने और मेहमान नवाज़ी इत्यादि से नहीं रोकता।

[3] अर्थात उनके साथ न्याय करने से, जैसे उनके अधिकारों को अदा करना, उनसे किए गए वादों का लिहाज़ रखना, उनकी अमानतों को लौटाना, और उनसे खरीदे गए सामानों का उन्हें पूरा दाम देना इत्यादि।

[4] अर्थात न्याय पसंद करने वालों से, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला तुम्हें ऐसे काफ़िरों से जिन्होंने मुसलमानों से युद्ध न करने, उन के विरूद्ध काफिरों की सहायता न करने का वचन कर रखा है, उनके साथ नेकी करने से नहीं रोकता, और न उनके साथ कोई न्यायिक बर्ताव करने से रोकता है।

[5] इससे मुराद काफिरों के सरदार और उन जैसे लोग हैं, जो काफिर थे और मुसलमानों से भिड़े रहते थे।

[6] अर्थात जिन लोगों ने तुम से युद्ध किया, और तुम्हें देश से निकालने वालों की मदद की, और इन से मुराद सारे मक्का वाले, और उनके साथी हैं जो उनके साथ मुआहदे (प्रतिज्ञा) में उनके साझी थे।

[7] अर्थात उन्हें अपना दोस्त बनाएं और उनकी सहायता और मदद का सिलसिला बाक़ी रखें।

[8] क्योंकि उन्होंने ऐसे लोगों से दोस्ती की है, जो अल्लाह, उसके रसूल, और उसकी किताब से दुश्मनी के कारण, दुश्मनी के लायक़ हैं।

[9] अर्थात काफिरों के पास से, दरअसल बात यह है कि जब नबी ﷺ ने हुदैबिया के दिन क़ुरैश के लोगों से इस बात पर समझौता किया कि काफिरों में से जो मुसलमान होकर उनके पास आएगा वह उसे काफिरों को लौटा देंगे, तो जब कुछ औरतें हिजरत करके आपके पास आईं तो अल्लाह ने उन्हें मुश्रिकों को लौटाने से रोक दिया, और उनके आज़माने और परीक्षा लेने का हुक्म दिया।

[10] अर्थात उन्हें आज़माओ ताकि तुम जान लो कि उन्हें इस्लाम से कितना लगाव है, चुनांचि कहा गया है कि उनसे क़सम लिया जाता था कि वे अपने पतियों से नाराज़ होकर तो नहीं आई हैं, और न ही उन्हें जायदाद (भूसंपत्ति) की तलब है, और न कोई और सांसारिक इच्छा है, बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत और दीने इस्लाम की रग़बत है, तो जब उनसे यह क़सम ले लिया जाता तो नबी उनके काफ़िर पतियों के उनके महर और खर्च दे देते थे, और उन्हें काफिरों को नहीं लौटाते थे।

[11] क्योंकि यह स्पष्ट है कि उनकी वास्तविक हालत को अल्लाह ही बेहतर जानता है, उसने तुम्हें इसकी ज़िम्मादारी नहीं सौंपी है, बल्कि तुम्हारी ज़िम्मेदारी मात्र इतनी है कि तुम उन्हें आज़मा लो ताकि तुम पर वह बातें स्पष्ट होजाएं जो उनके इस दावे की सत्यता की पुष्टि करती हों कि वह वास्तव में इस्लाम से चाहत रखती हैं, और मात्र इस्लाम की खातिर ही हिजरत करके आई हैं।

[12] अर्थात आज़माने के बाद जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया था, वह ज़ाहिर में तुम्हें मोमिना लगती हों।

[13] तो तुम उन्हें उनके काफिर शौहरों के पास मत लौटाओ।

[14] कोई मोमिना औरत किसी काफिर मर्द के लिए हलाल (वैद्ध) नहीं, औरत के इस्लाम लाने से उसके शौहर से उसकी जुदाई वाजिब होती है, मात्र उसकी हिजरत से नहीं।

[15] अर्थात उन हिजरत करने और इस्लाम स्वीकार करके आने वाली औरतों के शौहरों ने उन्हें जो महर दिया है, तुम उन्हें वापस लौटा दो, इमाम शाफिई कहते हैं कि यदि शौहर के सिवा उसके नातेदारों में से कोई दूसरा बिना किसी बदले के यदि महर मांगे तो वह उसे रोक ले और न दे, क्योंकि महर मात्र शौहर का हक़ है।

[16] अर्थात इद्दत के पश्चात उनसे निकाह कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि अब वह भी तुम्हारे धर्म में आ गई हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِذَا جَآءَكَ ٱلْمُؤْمِنَٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰٓ أَن لَّا يُشْرِكْنَ
بِٱللَّهِ شَيْـًٔا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَٰدَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ
بِبُهْتَٰنٍ يَفْتَرِينَهُۥ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ
فِى مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُنَّ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ
﴿١٢﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ
قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿١٣﴾

ترتيبها ٦١ — سُورَةُ الصَّفِّ — آياتها ١٤

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ
﴿١﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾
كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ أَن تَقُولُوا۟ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ
ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلَّذِينَ يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِهِۦ صَفًّا كَأَنَّهُم
بُنْيَٰنٌ مَّرْصُوصٌ ﴿٤﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ يَٰقَوْمِ لِمَ
تُؤْذُونَنِى وَقَد تَّعْلَمُونَ أَنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا
زَاغُوٓا۟ أَزَاغَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٥﴾

विवाह बन्धन को अपने क़ब्ज़े में न रखो [1], और जो कुछ
तुमने खर्च किया हो मांग लो [2], और जो कुछ उन काफ़िरों ने
खर्च किया हो वह भी मांग लें [3], यह [4] अल्लाह का फैसला
है [5], जो तुम्हारे बीच कर रहा है, अल्लाह तआला बहुत
जानने वाला और हिक्मत वाला है।
(11) और यदि तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाए[6]
और काफ़िरों के पास चली जाए फिर तुम्हें उसके बदले का
समय मिल जाए, तो जिनकी पत्नियाँ चली गई हैं उन्हें उनके
खर्च के बराबर दे दो [7], और उस अल्लाह तआला से डरते
रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो [8]।
(12) हे नबी! जब मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर
बै'अत करने आएं [9] कि वह अल्लाह के साथ किसी को [10]
साझी नहीं बनाएंगी, चोरी नहीं करेंगी, ज़िनाकारी (व्यभिचार)
नहीं करेंगी, न ही अपनी औलाद को मार डालेंगी [11], और न
कोई ऐसा आक्षेप (बुहतान) लगाएंगी जो स्वंय अपने हाथों और
पैरों के सामने गढ़ लें [12], और किसी पुण्य के काम में [13] तेरी
नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बै'अत कर लिया करें,
और उनके लिए अल्लाह से क्षमा-याचना करें [14], अवश्य
अल्लाह तआला माफ करने वाला रहम करने वाला (दयालु) है।
(13) ऐ मोमिनो! तुम उस क़ौम से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह
का अज़ाब आचुका है[15], जो आखिरत से इस तरह निराश हो चुके
हैं [16], जैसे कि मुर्दे क़ब्र वालों से काफ़िर निराश हैं [17]।

सूरतु स्सफ़् । - 61

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

(1) आकाशों और धरती की अल्लाह की पवित्रता (पाकी) बयान
करती है, और वही ग़ालिब (प्रभावशाली) हिक्मत वाला है।
(2) ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं [18]?

---

1 अर्थ यह है कि जिस मुसलमान के पास कोई काफ़िर औरत हो तो वह उसकी पत्नी नहीं रही, क्योंकि धर्म बदलने के कारण उसका निकाह खत्म होगया। पहले काफ़िरों और मुसलमानों के बीच शादी विवाह जायज़ था, काफ़िर मुसलमान औरतों से शादी करते थे और मुसलमान काफ़िर और मुश्रिक औरतों से, इस आयत के उतरने के बाद यह हुक्म उन काफ़िर औरतों के बारे में खत्म होगया जो मुश्रिका हैं, रहीं काफ़िर किताबिया औरतें तो वह इस हुक्म में दाखिल नहीं, मुसलमान अब भी उन से निकाह कर सकते हैं।

2 अपनी पत्नीयों के महर मांग लो जब वह इस्लाम से फिर कर उनके पास चली गई हों।

3 मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि कोई मुसलमान औरत इस्लाम से फिर कर उन काफ़िरों के पास चली जाती जिनका मुसलमानों से प्रतिज्ञा (संधि) थी तो उन काफ़िरों से कहा जाता कि तुम इसकी महर वापस कर दो, और यदि कोई काफ़िर औरत इस्लाम क़बूल करके मुसलमानों के पास आ जाती तो मुसलमान उसकी महर उसके काफ़िर शौहर को वापस लौटा देते।

4 अर्थात दोनों ओर से महरों की वापसी का यह हुक्म।

5 उन मुश्रिकों के साथ जिनसे हुदैबिया में समझौता हुवा, परन्तु उन मुश्रिकों के अतिरिक्त जिन से कोई समझौता नहीं, और एक क़ौल यह है कि यह हुक्म खत्म हो चुका है, क़ुर्तुबी कहते हैं कि महरों के लौटाने का यह हुक्म उसी ज़माने के साथ खास था, परन्तु पति पत्नी में से जब कोई इस्लाम स्वीकार कर ले तो उनके बीच जुदाई का हुक्म हमेशा के लिए बाक़ी है।

6 वह इस तरह से कि इस्लाम से मुंह मोड़कर काफ़िरों के मुल्क में चली जाए, चाहे वे किताब वाले ही क्यों न हों।

7 अर्थात उन काफ़िरों से जिहाद में जो ग़नीमत के माल तुम्हें मिले हों उन्हें बाँटने से पहले उन मुसलमानों को जिनकी पत्नीयाँ काफ़िर मुल्कों में चली गई हैं और मुश्रिकों ने उनके महर उन्हें नहीं लौटाए हैं तो इस फ़ै और ग़नीमत के माल में से उनके खर्च के बराबर दे दो ताकि उनके नुक़्सान की भरपाई होजाए।

8 अर्थात कोई ऐसा काम न करो जिस से तुम अल्लाह की पकड़ में आजाओ।

9 अर्थात इस्लाम पर आप से बै'अत करने के इरादे से आएं।

10 चाहे वह कोई भी हो। और यह फ़त्हे मक्का के दिन की बात है, क्योंकि मक्का वालों की औरतें आ-आकर आप से बै'अत कर रही थीं, तो अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया कि आप उनसे इस बात पर बै'अत करें कि अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगी।

11 जैसे वह जाहिलियत में करती थीं कि लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करती थीं।

12 अर्थात अपने शौहर की तरफ उन औलाद की निसबत नहीं करेंगी जो उनसे नहीं हैं, फ़र्रा कहते हैं : औरत किसी पड़े हुए नौ-मौलूद बच्चे को उठा लेती और अपने शौहर से कहती के यह मेरा बच्चा है जो आपके वीर्य से है। इब्ने अब्बास कहते हैं कि, औरत बच्ची जनती थी तो उसके बदले कोई बच्चा ले लेती थी।

13 अर्थात किसी भी काम से जिस में अल्लाह का अनुकरण हो, जैसे मृतक पर विलाप (नौहा) करने, कपड़े फाड़ने, सर के बाल नोचने, गला फाड़ने, चेहरा पीटने, और तबाही और बर्बादी इत्यादि का विलाप करने से रुक जाने में।

14 अर्थात उनसे यह बै'अत लेने के बाद आप अल्लाह से उनकी माफी और क्षमा की याचना करें।

15 इसमें काफ़िरों के सभी ग्रुप शामिल हैं, और एक राय यह है कि इससे मात्र यहूदी मुराद हैं।

16 अर्थात उन्हें अपने कुफ़्र के कारण आखिरत पर यकदम विश्वास नहीं।

17 जैसे मृत्यु पश्चात दोबारा न उठाए जाने पर आस्था रखने के कारण उन्हें अपने मृतकों के दोबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं।

18 इब्ने अब्बास رضي الله عنهما फ़रमाते हैं कि कुछ मुसलमान जिहाद फ़र्ज़ होने से पहले कहते थे कि हम चाहते हैं कि अगर अल्लाह हमें बता देता उसे सबसे अधिक प्रिय अमल कौनसा है? तो हम उसे करते, तो जब अल्लाह ने उन्हें बता दिया कि सबसे प्रिय अमल जिहाद है तो उनमें से कुछ लोगों ने उसे नापसंद किया, और जिहाद का हुक्म उन्हें मुश्किल लगा तो यह आयत उतरी।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ يَـٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُولٍ يَأْتِى مِنۢ بَعْدِى ٱسْمُهُۥٓ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا
جَآءَهُم بِٱلْبَيِّنَـٰتِ قَالُوا۟ هَـٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٦﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ
عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰٓ إِلَى ٱلْإِسْلَـٰمِ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّـٰلِمِينَ
﴿٧﴾ يُرِيدُونَ لِيُطْفِـُٔوا۟ نُورَ ٱللَّهِ بِأَفْوَٰهِهِمْ وَٱللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِۦ وَلَوْ كَرِهَ
ٱلْكَـٰفِرُونَ ﴿٨﴾ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَرْسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلْهُدَىٰ وَدِينِ ٱلْحَقِّ لِيُظْهِرَهُۥ
عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ هَلْ أَدُلُّكُمْ
عَلَىٰ تِجَـٰرَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُجَـٰهِدُونَ
فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ بِأَمْوَٰلِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ وَمَسَـٰكِنَ
طَيِّبَةً فِى جَنَّـٰتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ ٱلْعَظِيمُ ﴿١٢﴾ وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ
مِّنَ ٱللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُونُوٓا۟
أَنصَارَ ٱللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّـۧنَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ
قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ۖ فَـَٔامَنَت طَّآئِفَةٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ
وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا۟ ظَـٰهِرِينَ ﴿١٤﴾

(3) तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह को बहुत नापसंद (अप्रिय) है [1]।
(4) अवश्य अल्लाह तआला उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके रास्ते में पंक्तिबद्ध (सफ़ बस्ता) होकर जिहाद करते हैं[2] जैसे कि वह सीसा पिलाई हुई इमारत हैं [3]।
(5) और (याद करो) जब्कि मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा [4] हे मेरे समुदाय के लोगो! तुम मुझे क्यों सता रहे हो [5]
जब्कि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ [6], तो जब वे टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को (और अधिक) टेढ़ा कर दिया[7], और अल्लाह तआला नाफ़र्मान क़ौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।
(6) और जब मर्यम के पुत्र ईसा ने कहा ऐ (मेरे समुदाय) इस्राईल की औलाद! मैं तुम सभों की ओर अल्लाह का रसूल हूँ, अपने से पहले की किताब तौरात की मैं पुष्टि करने वाला हूँ[8], और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ जिन का नाम अहमद है[9], फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे यह तो खुला जादू है[10]।
(7) और उस व्यक्ति से अधिक अन्यायी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूट गढ़े? जब्कि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है[11], और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता [12]।
(8) वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूंक से बुझादें [13], और अल्लाह अपने नूर को परिपुर्ण करने वाला है [14] काफ़िर बुरा ही क्यों न मानें।
(9) यह वही अल्लाह है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म देकर भेजा, ताकि उसे दूश्रे सारे धर्मों पर गालिब करदे [15], मुणतपूजक नाखुश ही क्यों न हों [16]।

---

[1] अर्थात अल्लाह तआला ऐसी बातों से अधिक नाराज़ होता है, और एक क़ौल यह है कि यह ऐसे लोगों के बारे में है जो नबी ﷺ के पास आते तो उनमें से एक कहता कि मैं अपनी तलवार लेकर लड़ा, और मैं ने इतने इतने लोगों को मार गिराया, परन्तु न तो वह लड़ा होता और न किसी को उसने मारा होता।

[2] अल्लाह तआला यहाँ उनसे यह बयान कर रहा है कि अल्लाह को अपने बन्दों के आमाल में से सब से अधिक प्रिय अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना है, और हदीस शरीफ़ में है : "सारी चीज़ों का सार : इस्लाम है, और उसका खम्बा : नमाज़ है, और उसकी चोटी : अल्लाह के रास्ते में जिहाद है।"

[3] अर्थात वह आपस में एक दूसरे से मिल जाते हैं यहाँ तक कि वह एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और ऐसा अल्लाह के दीन पर उनकी मज़बूती के कारण होता है, इस सम्बन्ध में वह ज़रा भी लेट नहीं करते, तुरन्त एक जुट हो जाते हैं, दुश्मन उनमें घुस नहीं सकता।

[4] जब अल्लाह तआला ने यह बताया कि वह अपने रास्ते में जिहाद करने वालों को पसंद करता है, और उनसे महब्बत करता है, तो उसने यह बात भी स्पष्ट करदी कि मूसा (عليه السلام) और ईसा (عليه السلام) दोनों ने लोगों को तौहीद का आदेश दिया और दोनों ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने इनका विरोध किया वह अल्लाह की सज़ा के हक़दार हुए, ताकि मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत आप के साथ वह सब कुछ करने से डरे जो मूसा (عليه السلام) और ईसा (عليه السلام) की क़ौम ने उनके साथ किया।

[5] उन बातों का विरोध करके जिनका मैं तुम्हें आदेश दे रहा हुँ, उन शरी'अतों में जो अल्लाह ने तुम पर अनिवार्य किया है, या गालियाँ देकर और बुराइयाँ बयान करके मुझे क्यों सता रहे हो? विस्तार से इसका चर्चा सुरतुल् अह्ज़ाब आयत न० ६९ में हो चुका है।

[6] अर्थात तुम मुझे क्योंकर सता रहे हो जबकि तुम्हें इसकी जानकारी है कि मैं अल्लाह का रसूल हुँ, और रसूल का आदर-भाव किया जाता है, और उसका मान-मर्यादा होता है, मेरे रसूल होने में तुम्हें कुछ भी शंका नहीं क्योंकि तुम उन मो'जज़ों (चमत्कारों) को अपनी आँखों से देख रहे हो, जो मेरी रिसालत स्वीकार करने पर तुम्हें विवश कर रहे हैं, और जो तुम्हें दृढ़ विश्वास का लाभ दे रहे हैं।

[7] अर्थात जब उन लोगों ने सत्य को छोड़ दिया और अपने नबी को सताया तो अल्लाह ने उनके इस पाप के बदले उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और वह सत्यता से विमुख होगए।

[8] अर्थात मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारे पास इन्जील लेकर आया हूँ कोई ऐसी चीज़ लेकर नहीं आया हूँ जो तौरात के प्रतिकूल हो, बल्कि इसमें ऐसी बातें हैं जिनकी मैं तुम्हें ख़ुश-ख़बरी देने वाला हूँ, फिर क्योंकर तुम मुझ से नफ़रत और घृणा करते हो और मेरा विरोध कर रहे हो।

[9] तो जब बात ऐसी है तो कोई कारण नहीं कि तुम मुझे झुठलाओ। अहमद हमारे नबी ﷺ का नाम है, इसके अर्थ वास्तव में ऐसी व्यक्तित्व के हैं जिसकी गुणों के कारण उसकी इतनी प्रशंसा होती हो कि उतनी किसी और की न की जाती हो।

[10] अर्थात ईसा (عليه السلام) जब उनके पास मो'जज़ों को लेकर आए तो उन्होंने उसे जादू ठाना और कहने लगे : यह जो हमारे पास लेकर आए हैं वह तो खुला जादू है, और एक क़ौल यह है कि इस से मुराद नबी ﷺ हैं, जब आप मो'जज़ों (चमत्कारों) को लेकर आए तो मक्का के काफिर कहने लगे यह तो खुला जादू है।

[11] जो सारे धर्मों में उत्तम और सर्व श्रेष्ठ है, तो जब इसका हाल यह है तो वह दूसरों पर झूठ बांध ही नहीं सकता तो अपने रब के विरूद्ध झूठ क्यों गढ़ेगा।

[12] और जिनका ऊपर चर्चा हुवा वे भी उन्हीं अत्याचारियों में से हैं।

[13] अर्थात उनका हाल इस्लाम का अपमान करने और अपनी झूठी बातों के द्वारा लोगों को उसकी हिदायत से रोकने के लिए प्रयास करने में उस व्यक्ति के हाल की तरह है जो महान नूर को अपने मुंह से फूँक कर बुझाना चाहता हो।

[14] इस्लाम धर्म को पूरे संसार में ग़ालिब करके और उसे दूसरे धर्मों पर बुलन्द करके।

[15] ताकि उसे सारे धर्मों पर गालिब कर दे और उनपर उसे श्रेष्ठता और उत्तमता प्रदान करदे।

[16] अर्थात हर अवस्था में ऐसा होकर रहेगा।

(10) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बतलादुं जो तुम्हें दुःखदायक अज़ाब से बचा ले [1]।
(11) अल्लाह तआ़ला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर यदि तुम में ज्ञान हो।
(12) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे पाप माफ़ करदेगा [2], और तुम्हें उन जन्नतों में पहुँचाएगा, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, और साफ़ सुथरे घरों में जो अद्न के जन्नत में होंगे [3], यह बहुत बड़ी सफलता है [4]।
(13) और तुम्हें एक दूसरा उपहार भी देगा जिसे तुम चाहते हो [5], वह अल्लाह की सहायता और तुरन्त फ़तह है [6], ईमान्दारों को खुशखबरी देदो [7]।
(14) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बन जाओ [8], जिस तरह मर्यम (عليها السلام) के बेटे ईसा (عليه السلام) ने हवारियों (मित्रों) से कहा : कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने [9]? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं[10], तो इस्राईल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया [11], और एक गुट ने कुफ्र किया [12], तो हमने मोमिनों को उनके दुश्मनों के विरोध में सहायता की [13] तो वो विजयी होगए [14]।

---

1 अर्थात अमल को तिजारत की जगह में रखा गया, इसलिए कि इसमें भी उन्हें व्यापार की तरह ही लाभ होगा, और वह लाभ जन्नत में जाना और नरक से बचना है, यही व्यापार है जिसकी व्याख्या अगली दोनों आयतों में आई है, क्योंकि इन दोनों आयतों का अर्थ यह है कि ईमान और जिहाद का मूल्य अल्लाह के यहाँ जन्नत है और यह बहुत लाभदायक बिक्री है।
2 पहले उस सामान का चर्चा हुवा जिस से वह व्यापार कर रहे हैं, और यहाँ उस मूल्य का चर्चा हुवा है जिसका उसने उनसे वादा किया है, अर्थात यदि तुम ईमान लाओ गे तो वह तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा।
3 हमेशगी वाले बाग़ों में होंगे, जहाँ न मौत आएगी कि यह उपहार ख़त्म होजाए और न वहाँ से निकलना ही होगा।
4 अर्थात यह माफ़ी जिसका चर्चा हुवा और जन्नत में जाना इतनी बड़ी सफलता है कि उससे बढ़कर कोई सफलता नहीं, और ऐसी कामयाबी है कि कोई भी कामयाबी उसकी बराबरी नहीं कर सकती।
5 अर्थात वह तुम्हें एक और उपहार भी देगा जो तुम्हें पसन्द है और जिसे तुम चाह रहे हो।
6 और यह अल्लाह की ओर से तुम्हारी मदद और ऐसी जीत है जो बहुत जल्द होने वाली है, वह तुम्हें विजेता बनाएगा, अर्थात क़ुरैश के ख़िलाफ़ तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम उन को जीत लोगे, अता कहते हैं इससे मुराद फ़ारस और रूम की जीत है।
7 आयत का अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद! आप ईमानवालों को संसार में मदद और जीत और परलोक में जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दी जिए।
8 अर्थात धर्म की इस सहायता पर जमे रहो जिस पर तुम हो।
9 अर्थात अल्लाह के धर्म की इसी तरह सहायता करो, जिस तरह ईसा (عليه السلام) के हवारियों ने की थी, जब ईसा (عليه السلام) ने उन से कहा था : कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने? तो उन्होंने कहा : हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं।
10 अर्थ यह है कि तुम में से कौन है जो उन चीजों में जो अल्लाह से क़रीब करने वाली हैं मेरी मदद करे? और यह हवारी ईसा (عليه السلام) के मददगार और उनके मुख़्लिस साथी थे जो सब से पहले उन पर ईमान लाए, यह टोटल १२ आदमी थे।
11 एक गुट ईसा (عليه السلام) पर ईमान लाया।
12 और एक गुट ने उनके साथ कुफ्र किया।
13 अर्थात हमने सत्यपंथियों को असत्यपंथियों पर शक्ति प्रदान की।
14 तो उन्होंने उन पर विजय प्राप्त कर ली, क़तादः ने अल्लाह तआ़ला के क़ौल : **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ** के बारे में उल्लेख किया है कि : अल्लाह की कृपा से यही हुवा, आप के पास ७० लोग आए और "अ़क़्बा" में आप से बै'अत की और आप को पनाह दिया, और आप की मदद की यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने अपने धर्म को ग़ालिब कर दिया, अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन लोगों से जो आप से अक़्बा में मिले थे फ़र्माया : तुम अपने में से १२ लोगों को निकालो, जो अपनी क़ौम में मेरे कफ़ील होंगे जिस तरह हवारी ईसा बिन मर्यम (عليهما السلام) के कफ़ील थे, फिर अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन नुक़बा से कहा : तुम लोग अपनी क़ौम पर (मेरे) कफ़ील होगे, जैसे ईसा बिन मर्यम (عليهما السلام) के कफ़ील उनके हवारी थे, और मैं अपनी क़ौम का कफ़ील हूँ। तो उन लोगों ने कहा : ठीक है।

سُورَةُ الجُمُعَةِ
ترتيبها ٦٢ — آياتها ١١

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ٱلْمَلِكِ ٱلْقُدُّوسِ ٱلْعَزِيزِ
ٱلْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلْأُمِّيِّـۧنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟
عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟
مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾ وَءَاخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا۟ بِهِمْ ۚ
وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَٰلِكَ فَضْلُ ٱللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ
ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ ٱلَّذِينَ حُمِّلُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ ثُمَّ لَمْ
يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ ٱلْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًۢا ۚ بِئْسَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ
ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ۚ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥﴾
قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ هَادُوٓا۟ إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلَّهِ مِن
دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُا۟ ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُۥٓ
أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ
ٱلْمَوْتَ ٱلَّذِى تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُۥ مُلَٰقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ
إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

सुरतुल् जुम'आ - 62

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) सारी चीजें जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी करती हैं, जो बादशाह, बहुत पाक [15], ग़ालिब और हिक्मत वाला है।
(2) वही है जिसने अनपढ़ [16] लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है [17], और उनको पाक करता है [18], और उन्हें किताब और हिक्मत सिखाता है [19], अवश्य यह इससे पहले स्पष्ट गुम्राही में थे [1]।

---

15 क़ुद्दूस वह हस्ती है जो हर ऐब से पवित्र हो।
16 उम्मीईन से मुराद अरब हैं, जिन में कुछ तो अच्छी तरह लिखना पढ़ना जानते थे और कुछ ऐसे थे जो अच्छी तरह पढ़ नहीं सकते थे, क्योंकि वह अहले किताब नहीं थे, उम्मी वास्तव में ऐसा व्यक्ति है जो न लिख सकता हो, और न लिखी हुई कोई चीज़ पढ़ सकता हो, और अरब लोग आम तौर से ऐसे ही थे।
17 अर्थात क़ुर्आन पढ़ कर सुनाता है, बावजूद इसके कि वह अनपढ़ है, लिख पढ़ नहीं सकता, और न ही उसने लिखना पढ़ना किसी से सीखा है।
18 अर्थात उन्हें कुफ्र, पाप और बूरे अख़्लाक़ से पवित्र करता है, और एक क़ौल यह है कि ईमान द्वारा उनके दिलों को पवित्र करता है, और उन्हें पाक-दिल बना देता है।
19 किताब से मुराद क़ुर्आन और हिक्मत से मुराद सुन्नत है, और एक क़ौल यह भी है कि किताब से क़लम की लिखावट मुराद है, और सुन्नत से मुराद धर्म की समझ है, जैसा कि मालिक बिन अनस ने कहा है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوۡمِ ٱلۡجُمُعَةِ
فَٱسۡعَوۡاْ إِلَىٰ ذِكۡرِ ٱللَّهِ وَذَرُواْ ٱلۡبَيۡعَۚ ذَٰلِكُمۡ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُمۡ
تَعۡلَمُونَ ﴿٩﴾ فَإِذَا قُضِيَتِ ٱلصَّلَوٰةُ فَٱنتَشِرُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ
وَٱبۡتَغُواْ مِن فَضۡلِ ٱللَّهِ وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ كَثِيرٗا لَّعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ
﴿١٠﴾ وَإِذَا رَأَوۡاْ تِجَٰرَةً أَوۡ لَهۡوًا ٱنفَضُّوٓاْ إِلَيۡهَا وَتَرَكُوكَ قَآئِمٗاۚ قُلۡ
مَا عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٞ مِّنَ ٱللَّهۡوِ وَمِنَ ٱلتِّجَٰرَةِۚ وَٱللَّهُ خَيۡرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ﴿١١﴾

سُورَةُ المُنَافِقُونَ

ترتيبها ٦٣ — آياتها ١١

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا جَآءَكَ ٱلۡمُنَٰفِقُونَ قَالُواْ نَشۡهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ
إِنَّكَ لَرَسُولُهُۥ وَٱللَّهُ يَشۡهَدُ إِنَّ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ لَكَٰذِبُونَ ﴿١﴾
ٱتَّخَذُوٓاْ أَيۡمَٰنَهُمۡ جُنَّةٗ فَصَدُّواْ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِۚ إِنَّهُمۡ سَآءَ مَا كَانُواْ
يَعۡمَلُونَ ﴿٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمۡ ءَامَنُواْ ثُمَّ كَفَرُواْ فَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمۡ
فَهُمۡ لَا يَفۡقَهُونَ ﴿٣﴾ ۞ وَإِذَا رَأَيۡتَهُمۡ تُعۡجِبُكَ أَجۡسَامُهُمۡۖ
وَإِن يَقُولُواْ تَسۡمَعۡ لِقَوۡلِهِمۡۖ كَأَنَّهُمۡ خُشُبٞ مُّسَنَّدَةٞۖ يَحۡسَبُونَ كُلَّ
صَيۡحَةٍ عَلَيۡهِمۡۚ هُمُ ٱلۡعَدُوُّ فَٱحۡذَرۡهُمۡۚ قَٰتَلَهُمُ ٱللَّهُۖ أَنَّىٰ يُؤۡفَكُونَ ﴿٤﴾

(3) और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से, जो अब तक उनसे
नहीं मिले [2], और वही गालिब और हिक्मत वाला है [3]।
(4) यह अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) है, जिसे चाहे अपनी कृपा
से नवाज़े, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है।
(5) जिन लोगों को तौरात के अनुसार कर्तव्य करने का आदेश
दिया गया [4] फिर उन्होंने उसके अनुसार कर्तव्य नहीं किया [5],
उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जो बहुत सी [6] किताबें [7]
लादे हो, अल्लाह की निशानियों को झुटलाने वाले की बहुत बूरी
मिसाल है [8], और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को मार्गदर्शन नहीं देता।
(6) कह दिजिए कि ऐ यहूदियो! यदि तुम्हारा दावा है कि तुम
अल्लाह के मित्र हो दूश्रे लोगों के सिवाय [9], तो यदि तुम
सच्चे हो [10] तो मौत की कामना (तमन्ना) करो [11]।
(7) यह कभी मौत की तमन्ना नहीं करेंगें उन अमलों के कारण
जो अपने आगे, अपने हाथों भेज रखे हैं [12], और अल्लाह
ज़ालिमों का अच्छी तरह जानता है।
(8) कह दिजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो
तुम्हें पहूँ च कर रहेगी [13], फिर तुम सब, छिपे और खुले
जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे [14], और वह
तुम्हें तुम्हारे किए हुए सारे काम बतला देगा [15]।
(9) ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो! जुम्'आ के दिन जब
नमाज़ की अज़ान [16] दी जाए, तो तुम अल्लाह के ज़िक्र की
तरफ़ दौड़ पड़ो [17], और किनना बेचना छोड़ दो [18] यह [19]
तुम्हारे हक़ में बहुत ही बेहतर है [20] यदि तुम जानते हो।
(10) फिर जब नमाज़ होचुके [21] तो धरती में फैल जाओ [22],

---

1 अर्थात शिर्क कर रहे थे और हक़ से अनभिग थे।

2 अर्थात जो उनसे अभी नहीं मिले हैं और तुरन्त उनसे इसके बाद मिलेंगे, अर्थात वह उन अनपढ़ों को पाक करता है, और फिर दूसरे लोगों को भी पाक करता है जो उन्ही अरब में से हैं, और यह अरब के लोग हैं जो सहाबा ﷺ के पश्चात प्रलय तक आने वाले हैं, इमाम बुख़ारी ने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि जिस समय सूरतुल् जुमुआ नाज़िल हुई हम लोग नबी ﷺ के पास बैठे हुए थे, आपने इसकी तिलावत की, जब आप **وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ** पर पहुँचे तो एक व्यक्ति ने आप से पूछा : अल्लाह के रसूल! यह कौन लोग हैं जो अभी नहीं मिले हैं? तो आप ﷺ ने अपना हाथ सलमान फारसी पर रखा और फरमाया : क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है, यदि ईमान सुरैया पर भी होगा तो उन में से कुछ लोग उसे पा लेंगे।

3 अज़ीज़ और हकीम दोनों मुबालग़ा के सेग़े हैं, अर्थ यह है कि वह बहुत अधिक ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

4 अर्थात उसके अनुसार अमल करने और जो कुछ भी उसमे है उसे बजा लाने का उन्हें आदेश दिया गया।

5 अर्थात उसके अनुसार अमल नहीं किए, और उनका अनुकरण नहीं किया जिनका उन्हें आदेश दिया गया था।

6 यह अल्लाह ने उन यहूदियों की मिसाल बताई है जिन्हों ने तौरात के अनुसार अमल करना छोड़ दिया था।

7 अस्फ़ार सिफ़्र की जमूअ (बहुवचन) है, जिसके अर्थ बड़ी किताब के हैं, गधा नहीं जानता कि उसकी पीठ पर किताब है या कूड़ा-कर्कट।

8 गधे से तुलना की गई है, और यहूद जो उससे वास्तव में एक-रूपता रखते हैं उनकी तुलना की गई है, यह सब से बूरी मिसाल है जो उन झुठलाने वालों की दी गई है, अर्थ यह है कि मुसलमानो! तुम उनके जैसे न हो जाओ, इस तश्बीह का चर्चा पहले इस लिए किया गया है, ताकि उसके द्वारा उन लोगों को डराया जाए जो अल्लाह के रसूल ﷺ को मिम्बर पर खुत्बा देते हुए खड़ा छोड़कर अनाज खरीदने चले गए थे, और उसी जैसे हर वह व्यक्ति भी है जो खुत्बा सुन कर विमुख होजाए, जैसा कि हदीस में आया है : जो जुमुआ के दिन इमाम के खुत्बा देने की अवस्था में बात करे उसकी मिसाल उस गधे की है, जो अपने ऊपर किताबों का बोझ लादे हो, और जो उससे चुप हो जाने के लिए कहे उसका भी जुमुआ नहीं।

9 **الَّذِينَ هَادُوا** से वह लोग मुराद हैं जो तकल्लुफ़ के साथ यहूदी बने हुए थे, और यह इस कारण कि यहूदी लोगों पर अपनी श्रेष्ठता और बर्तरी के दावेदार थे, और कहते थे कि वह अल्लाह के दोस्त, उसके बेटे और चहेते हैं, तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि जब वह यह बातिल दावे करें तो उन से कहें।

10 अपने इस गुमान में, क्योंकि जिसे इसकी जानकारी हो कि वह जन्नती है, तो वह जन्नत में जल्द पहुँचने की चाहत करता है।

11 तुम मौत की कामना करो ताकि तुम्हें वह श्रेष्ठता प्राप्त हो जाए।

12 अर्थात जिस कुफ्र और पाप के काम को वह करते आए हैं, और अल्लाह की किताब में इन्होंने जो परिवर्तन किए हैं, इनके कारण वह मौत की चाहत और आर्ज़ू कभी नहीं कर सकते।

13 अर्थात वह तुम पर उसी तरफ़ से आकर रहेगी जिस तरफ़ से तुम भाग रहे हो, और जल्द ही वह तुम्हारा सामना करके रहेगी।

14 और यही क़ियामत का दिन होगा।

15 अर्थात सारे बुरे कामों को बतला देगा, और तुम्हें उनकी सज़ा भी देगा।

16 इससे मुराद अज़ान है, जो जुमुआ के दिन इमाम के मिम्बर पर बैठने के समय दी जाती है, इसलिए कि नबवी दौर में उसके सिवाय कोई और अज़ान नहीं दी जाती थी, रही जुमुआ की पहली अज़ान तो उस्मान ﷺ ने उसे सहाबा ﷺ की मौजूदगी में उस समय बढ़ाया जब मदीना फैल गया और उसकी आबादी बढ़ गई।

17 अर्थात अल्लाह के ज़िक्र की ओर चल पड़ो, (दौड़ने से मुराद चलना है, क्योंकि नमाज़ के लिए दौड़ कर आने से रोका गया है, इत्मीनान और संजीदगी के साथ आने पर ज़ोर दिया गया है, और ज़िक्र से मुराद खुत्बा और जामे'अ् मस्जिद में नमाज़ अदा करना है) और उसके अस्बाब अर्थात नहाने वुजु करने और जुमुआ के प्रबन्ध में लग जाओ।

18 अर्थात काम-काज रोक दो, इसमें सारी सांसारिक चीज़ें शामिल हैं, इसी लिए जब जुमुआ के दिन मुअज़्ज़िन अज़ान शुरू करदे तो खरीदना बेचना जायज़ नहीं।

19 अर्थात अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ चल पड़ना और खरीदना बेचना छोड़ देना।

20 अर्थात खरीदने बेचने में लगे रहने, और अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ न जाने से बेहतर है, उस सवाब और बदले के कारण जो उसकी इताअत में है।

21 अर्थात जब नमाज़ पढ़ चुको और उसे अदा करके फ़ारिग़ हो जाओ।

22 व्यापार के लिए और उन कामों को निपटाने के लिए जिनकी तुम्हें ज़रूरत है।

और अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) खोजो [1], और अत्यधिक अल्लाह
का ज़िक्र किया करो [2], ताकि तुम सफलता प्राप्त करलो [3]।
11 और जब कोई सौदा बिक्ता देखें [4] या कोई खेल-तमाशा
दिखाई दे, तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं [5], और आप को
खड़ा ही [6] छोड़ देते हैं, आप कह दिजिए कि अल्लाह के पास
जो है [7], वह खेल और व्यापार [8] से बेहतर है, और अल्लाह
तआला सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।

सुरतुल् मुनाफ़िक़ून - 63

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

1 तेरे पास जब मुनाफ़िक़ आते हैं [9] तो कहते हैं कि हम
इस बात के गवाह हैं कि अवश्य आप अल्लाह के रसूल हैं [10],
और अल्लाह जानता है कि अवश्य आप उसके रसूल हैं [11],
और अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफ़िक़ झूटे हैं [12]।
2 उन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है [13], तो
उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका [14], बेशक बूरा है वह काम
जिसे यह कर रहे हैं।
3 यह इस कारण है कि यह (दिखाने को) ईमान लाए (दिल
में) काफिर ही रहे [15], तो इनके दिलों पर मोहर कर दी गई [16]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ ٱللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ
وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ٥ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ إِنَّ
ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ٦ هُمُ ٱلَّذِينَ يَقُولُونَ
لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ ٱللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا وَلِلَّهِ
خَزَآئِنُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ
٧ يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَآ إِلَى ٱلْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ ٱلْأَعَزُّ
مِنْهَا ٱلْأَذَلَّ وَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ
ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ٨ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تُلْهِكُمْ
أَمْوَٰلُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُمْ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ وَمَن يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ٩ وَأَنفِقُوا مِن مَّا رَزَقْنَٰكُم
مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِىَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَآ أَخَّرْتَنِىٓ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ١٠ وَلَن
يُؤَخِّرَ ٱللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ أَجَلُهَا وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ١١

آياتها ١٨ — سُورَةُ التَّغَابُنِ — ترتيبها ٦٤

अब यह नहीं समझते [17]।
4 और जब आप उन्हें देख लें तो उनके जिस्म आपको
ख़ुशनुमा (लुभावना) मालूम हों [18], यह जब बातें करने लगें तो
आप इनकी बातों पर कान लगाएं [19], जैसाकि यह लकड़ियां हैं
दीवार के सहारे लगाई हुई [20], हर ऊँची आवाज़ को अपने
ख़िलाफ समझते हैं [21], यही वास्तविक (हक़ीक़ी) दुश्मन हैं, इन
से बचो [22], अल्लाह इन्हें नाश करे [23], कहां फिरे जाते हैं [24]।
5 और जब इनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए

---

1 फ़ज़्ल से मुराद वह रोज़ी है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को नवाज़ता है, अर्थात अपने व्यापार और काम-धंधे का लाभ खोजो।

2 अपने कारोबार और खरीदने बेचने के बीच भी अल्लाह के ज़िक्र को न भूलो, बल्कि अत्यधिक उसका ज़िक्र करते रहो, उस आखिरत और दुनिया की भलाई और अच्छाई पर जिसका उसने तुम्हें मार्गदर्शन किया है, उसका शुक्र करके, इसी तरह ऐसी विरदें और अज़्कार करके जिन से अल्लाह की क़ुर्बत हासिल होती है, जैसे तस्बीह, तक्बीर, ह़म्द करके और इस्तिग़फार इत्यादि द्वारा उसे याद करते रहो।

3 ताकि तुम दनिया और आख़िरत की भलाई और सफलता पा सको।

4 इस आयत का शाने नुज़ूल यह है कि मदीना वाले फ़ाक़े काट रहे थे, और उन्हें अनाज की सख्त ज़रूरत थी, और इसी बीच कि नबी ﷺ जुमुआ का खुत्बा दे रहे थे कि मुल्के शाम से व्यापारियों का एक दल आ गया, तो आप को खुत्बा देते छोड़कर लोग अनाज लेने चले गए, और मस्जिद में मात्र १२ व्यक्ति बाक़ी रह गए, और एक रिवायत में ७ औरतों का चर्चा है।

5 **انفضوا اليها** का अर्थ उसकी तरफ़ बाहर जाकर फैल जाने का है।

6 अर्थात मिम्बर पर।

7 "अल्लाह के पास जो है" से मुराद बड़ा सवाब अर्थात जन्नत है।

8 इस तमाशा और व्यापार से जिन की तरफ़ तुम गए, और जिन के कारण तुम मस्जिद में नहीं रहे, और नबी ﷺ का खुत्बा नहीं सुना।

9 अर्थात जब तुम से मिलते और तुम्हारी सभा में होते हैं।

10 अर्थात वह पूरा ज़ोर यह बात बताने पर देते हैं कि वह दिल की गहराई और ख़ालिस अक़ीदे के साथ यह गवाही दे रहे हैं।

11 यह अल्लाह की तरफ़ से मुहम्मद ﷺ की रिसालत की तस्दीक़ है, जिसका चर्चा उनकी बातों में है, ताकि कोई यह न समझे कि आगे जो झुठलाया गया है उसका सम्बन्ध रिसालत से है।

12 अपने इस दावे में कि नबी ﷺ की रिसालत की जो गवाही दे रहे हैं वह दिल की गहराई और खालिस अक़ीदा के साथ है झूठे हैं, पर उनकी बातें जिस में रिसालत की गवाही है, वह हक़ है।

13 उन लोगों ने अपनी क़स्मों को जो तुम्हारे पास आकर खाते हैं, ढाल बना रखा है, कि उसके द्वारा वह तुम से बचाव करते हैं, और उसे मारे जाने और क़ैदी बनाए जाने से अपनी सुरक्षा का माध्यम बनाते हैं।

14 अर्थात उन्होंने आप की नुबुव्वत में शुबह पैदा करके लोगों को ईमान, जिहाद और नेकी और इताअत के कामों से रोका।

15 अर्थात यह इस कारण कि इनका ईमान बाहर ही तक रहा, अन्दर से यह काफ़िर ही थे, और एक क़ौल यह है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हूई है जो ईमान लाकर मुर्तद्द हो गए थे, (इस सूरत में तर्जुमा यह होगा : इस सबब से कि यह ईमान लाकर फिर काफ़िर होगए।)

16 अर्थात इनके कुफ़्र के कारण इनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो इसके बाद इनमें ईमान प्रवेश नहीं कर सकेगा।

17 उन चीजों को जिनमें इनकी भलाई है।

18 अर्थात इनके रूप अपनी रौनक़ और सुन्दरता के कारण उस व्यक्ति को अच्छे लगें जो इन्हें देखे।

19 अर्थात इनकी फ़साहत और चर्ब-ज़ुबानी के कारण आप इनकी बातों को दुरुस्त और सत्य जानें, मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबै बहुत फ़सीह, चर्ब-ज़ुबान, लम्बा और सुन्दर था।

20 अर्थात अल्लाह के रसूल की सभा में उनके टेक लगाकर बैठने को ऐसी लकड़ियों से तश्बीह दी गई है जो दीवारों से टेक लगाकर खड़ी की गई हों, जो लाभदायक समझ से खाली होने के कारण किसी बात को समझती बूझती न हों।

21 कहा जाता है कि मुनाफ़िक़ों को हमेशा डर लगा रहता था कि उनके बारे में कोई ऐसी चीज़ नाज़िल न हो जाए जो उन्हें बे-निक़ाब कर दे, और उनके खून और माल को मुबाह़ कर दे।

22 अपनी तरफ़ से उन्हें कोई अवसर देने से, या अपनी भेद की बातें उन्हें बताने से, क्योंकि यह तुम्हारे दुश्मनों के जासूस हैं।

23 अल्लाह की इन पर ला'नत हो, यह शाप है, या इसमें ईमान वालों के लिए तालीम है कि वह यह कहें।

24 अर्थात यह कैसे हक़ से फिरे जा रहे हैं, और कुफ़्र की ओर खिंचे जारहे हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنكُمْ كَافِرٌ
وَمِنكُم مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤﴾ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ
فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَت تَّأْتِيهِمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوا ۚ وَّاسْتَغْنَى
اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَآمِنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ
يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾

अल्लाह के रसूल माफ़ी की दुआ करें तो अपने सर मटकाते हैं [1], और तुम देखोगे कि घमन्ड करते हुए [2] रुक जाते हैं [3]।
(6) उनके लिए तुम्हारा माफ़ी की दुआ करना और न करना दोनों बराबर है [4], अल्लाह तआ़ला उन्हें कभी माफ़ न करेगा [5], अवश्य अल्लाह तआ़ला ऐसे फ़ासिक़ों को [6] हिदायत नहीं देता।
(7) यही वह हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो, यहां तक कि वह इधर-उधर होजाएं [7], और आकाशों और धरति के सारे ख़ज़ाने अल्लाह तआ़ला की मिलकियत हैं [8], लेकिन यह मुनाफ़िक़ नासमझ हैं [9]।
(8) यह कहते हैं कि यदि हम अब लौट कर मदीना जाएंगे तो

---

1 अर्थात ठट्ठा करते हुए इस्तिग़्फ़ार से मुंह मोड़ते हुए अपना सर मटकाते हैं।
2 अल्लाह के रसूल के पास आने और आप से इस्तिग़्फ़ार की दरखास्त करने से अपने को बड़ समझते हुए, अर्थात वह अपने आप को इस से बड़ा समझ रहे थे, और ऐसा करने में अपने लिए अपमान समझ रहे थे।
3अर्थात अल्लाह के रसूल से मुंह फेरते हैं।
4अर्थात आपका इस्तिग़्फ़ार इनके निफ़ाक़ और कुफ़्र पर अड़े रहने के कारण इनके कुछ भी काम न आएगा।
5 जब तक वह निफ़ाक़ पर अड़े रहेंगे।
6 अर्थात इता'अत से पूरे तौर पर निकल जाने वालों और अल्लाह की मा'सीयत (पाप) में मश्ग़ूफ़ रहने वालों को, और मुनाफ़िक़ीन इन में सब से पहले आते हैं।
7 यहां तक कि बिखर जाएं, इससे वह मुहाजिरीन फ़क़ीरों को मुराद लेते थे।
8 इन मुहाजिरों को भी वही रोज़ी देने वाला है।
9अर्थात उनकी समझ में यह बात नहीं आती कि रोज़ी के ख़ज़ाने अल्लाह के हाथ में हैं, इसी लिए उन्होंने यह गुमान कर लिया कि अल्लाह मोमिनों पर कुशादगी नहीं करेगा।

इज़्ज़त वाला वहां से ज़लील (अपमानित) लोगों को निकाल देगा [10], सुनो! सम्मान तो मात्र अल्लाह ही के लिए है, और उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है, पर यह मुनाफ़िक़ीन जानते नहीं।
(9) ऐ मुमिनों तुम्हारे धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करदें [11], और जो ऐसा करे [12] वह बड़े ही घाटा उठाने वाले लोग हैं [13]।
(10) और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें से (हमारे रास्ते में) इससे पहले खर्च करो [14] कि तुम में से किसी को मौत आजाए [15], तो कहने लगे कि : ऐ मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छुट क्यों नहीं देता [16] कि मैं दान करूँ [17] और नेक लोगों में से होजाऊं।
(11) और जब किसी का निर्धारित समय आजाता है [18] तो फिर उसे अल्लाह तआ़ला कभी मौक़ा नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानता है [19]।

सुरतु त्तग़ाबुन - 64

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

(1) (सारी चीजें) जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी बयान करती हैं, उसी का राज है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।
(2) उसी ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कुछ तो काफ़िर हैं और कुछ मुमिन हैं [20], और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह खूब देख रहा है।
(3) उसीने आकाशों और धरती को ह़क़ के साथ पैदा किया, उसीने तुम्हारे रूप बनाए, और बहुत अच्छे बनाए [21], और

---

10 कहने वाला मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबै है, **الأعز** से मुराद उसने स्वंय अपने को और अपने साथियों को लिया है, और **الأذل** से अल्लाह के रसूल ﷺ और आप के साथियों को। और लौटने से उसकी मुराद उस युद्ध से उसकी वापसी है।
ज़ैद बिन अर्क़म से रिवायत है वह कहते हैं कि : मैं नबी ﷺ के साथ एक ग़ज़्वे में था, अब्दुल्लाह बिन उबै ने कहा कि यदि हम मदीना वापस लौटे तो उनमें से इज़्ज़त वाला ज़लीलों को निकाल देगा, वह कहते हैं : मैं नबी ﷺ के पास आया, और उसकी यह बात बताई, वह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उबै ने क़सम खा ली कि उसने इस तरह की कोई बात नहीं की है, ज़ैद कहते हैं : मेरी क़ौम के लोग मुझे कोसने लगे और पूछने लगे इससे तुम्हारा क्या मक़्सद था? वह कहते हैं कि मैं उदास (दुःखित) होकर सो गया, अल्लाह के नबी ने एक व्यक्ति भेज कर मुझे बुलवाया, और फ़रमाया : अल्लाह ने तुम्हारा उज़्र नाज़िल किया है, और तुम्हारी तस्दीक़ की है, और यह आयत उतारी है।
11 अल्लाह मोमिनों को उन मुनाफ़िक़ों की लतों की खबर दे रहा है, जिन्हें उनके धन और औलाद ने अल्लाह के ज़िक्र, अर्थात इस्लामी फ़राइज़ से ग़ाफ़िल कर दिया है, और एक क़ौल यह है कि ज़िक्र से मुराद तिलावते क़ुरआन है।
12 अर्थात दनिया के लिए धर्म से ग़ाफ़िल होजाए।
13 अर्थात पूरे तौर पर घाटे में हैं।
14 अर्थात हम ने तुम्हें जो दिया है उसमें से कुछ भलाई के रास्ते में खर्च करो। एक और कथन यह है कि : खर्च करने से मुराद फ़र्ज़ ज़कात है।
15 अर्थात उसके पास मौत के असबाब आ जाएं, या वह मौत की निशानियाँ देख ले।
16 क्यों तू मुझे मौक़ा नहीं देता, और मेरी मौत को कुछ समय के लिए टाल नहीं देता।
17 कि मैं अपने माल से सद्क़ा कर लूं।
18 अर्थात जब उसकी मौत का समय आ पहुँचता है, और इसकी जीवन की अवधि पूरी हो जाती है।
19 अर्थात उससे तुम्हारी कोई भी चीज़ छुपी नहीं रहती, जो कुछ तुम कर रहे हो उसके ज्ञान में है, इसका बद्ला वह तुम्हें ज़रूर देगा।
20 अल्लाह तआ़ला ने काफिर को पैदा किया और काफ़िर का कुफ़्र और काफ़िर का काम उसका कसब (उपार्जन) है, और मोमिन को पैदा किया, मोमिन का ईमान और उसका काम उसका कसब है, काफ़िर कुफ़्र करता है और कुफ़्र को पसन्द करता है, और मोमिन ईमान लाता और ईमान को पसन्द करता है, और यह सब अल्लाह के हुक्म से होता है, तुम्हारी चाहत और बस में कुछ नहीं, जब तक कि अल्लाह रब्बुल आलमीन न चाहे।
21 अर्थात अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें पूरा और अच्छे रूप में पैदा किया, और तुम्हारा नाक-नक़्शा अच्छा बनाया। अच्छी सूरत और सुडौल शरीर में इन्सान की सुन्दरता कोई

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَآ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ
ٱلنَّارِ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ (١٠) مَآ أَصَابَ مِن
مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ بِكُلِّ
شَىْءٍ عَلِيمٌ (١١) وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ ۚ فَإِن
تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا ٱلْبَلَٰغُ ٱلْمُبِينُ (١٢) ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ (١٣) يَٰٓأَيُّهَا
ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّ مِنْ أَزْوَٰجِكُمْ وَأَوْلَٰدِكُمْ عَدُوًّا
لَّكُمْ فَٱحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِن تَعْفُوا۟ وَتَصْفَحُوا۟ وَتَغْفِرُوا۟
فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٤) إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ
فِتْنَةٌ ۚ وَٱللَّهُ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ (١٥) فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ مَا ٱسْتَطَعْتُمْ
وَٱسْمَعُوا۟ وَأَطِيعُوا۟ وَأَنفِقُوا۟ خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ ۗ وَمَن
يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ (١٦) إِن تُقْرِضُوا۟
ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَٱللَّهُ شَكُورٌ
حَلِيمٌ (١٧) عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ (١٨)

سُورَةُ الطَّلَاقِ

ترتيبها ٦٥ — آياتها ١٢

उसी की ओर लौटना है।

(4) वह आसमानों और ज़मीन की सारी चीजों का ज्ञान रखता है, और जो कुछ तुम छुपाओ और ज़ाहिर करो (सब) को जानता है, अल्लाह तो सीनों की बातों तक को जानने वाला है।

(5) क्या तुम्हारे पास इससे पहले के काफ़िरों [1] की खब्रओं नहीं पहूँ चीं? जिन्होंने अपने अमलों का वबाल [2] चख लिया और जिन के लिए कष्टदायी अज़ाब [3] है।

(6) यह [4] इसलिए कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट दलीलों (चमतकारों) को लेकर आए [5], तो उन्होंने कह दिया कि क्या इन्सान हमारा मार्गदर्शन करेगा [6]? तो इन्कार कर दिया [7] और मुंह फेर लिया, और अल्लाह ने भी बेनियाज़ी [8] बरती, और अल्लाह तो है ही बहुत बेनियाज़ सभी सिफ़तों वाला [9]।

(7) उन काफ़िरों ने भ्रम किया है कि वह दोबारा जिन्दा न किए जाएंगे, आप कह दिजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की क़सम तुम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे [10], फिर जो तुमने किया है उसकी ख़बर दिए जाओगे, और अल्लाह के लिए यह [11] बहुत ही सहज है।

(8) सो तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर (ज्योति) [12] पर जिसे हमने उतारा है ईमान लाओ, और अल्लाह को तुम्हारे सभी कामों की ख़बर है।

(9) जिस दिन तुम सभों को उस इकट्ठा होने के दिन इकट्ठा करेगा [13], वही दिन है हार जीत का [14], और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाकर नेक काम करे, अल्लाह उसके पापों को मिटा देगा [15], और उसे जन्नत में ले जाएगा, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वह हमेशा हमेश रहेंगे, यही बहुत बड़ी सफलता है।

(10) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वे सभी जहन्नम में जाने वाले हैं, जिसमें वह हमेशा रहेंगे, और वह बहुत बुरी जगह है।

(11) कोई दुःख तक्लीफ़ अल्लाह की अनुमति [16] के बिना नहीं पहूँ च सकती, जो अल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह उसके दिल को मार्गदर्शन देता है [17], और अल्लाह सारी चीजों का खूब जानकार है [1]।

ढकी छुपी बात नहीं, यह बुद्धिमानों के लिए ख़ालिक़ (सृष्टा) की शक्ति, हिक्मत, और महानता की स्पष्ट दलील है, इसी तरह इन्सान का डील-डौल और उसके सोचने समझने की जबर्दस्त योग्यता ऐसे प्रमाण हैं जो उससे भी बड़ी हैं जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया : وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ {٢٠} وَفِي أَنفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

1 इससे मुराद पिछली क़ौमों और समुदायों के काफ़िर हैं, जैसे नूह ﷺ, और आद व समूद की क़ौमें इत्यादि, अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि तुम्हारे पास क़ुरआन में उनके बारे में ख़बरें आ चुकी हैं कि किस तरह उनके रसूलों ने उन्हें अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ बुलाया, और उन चीजों से अलग हो जाने को कहा जिन्हें अल्लाह के सिवाए उन लोगों ने रब बना लिया था, और किस तरह झुठलाने वालों को हलाक किया गया, और रसूलों पर ईमान लाने वालों को बचाया गया।

2 वबाल का अर्थ बोझ और कठिनाई के हैं, इससे वह सांसारिक अज़ाब मुराद है जिसे यह क़ौमें भुगतीं।

3 इससे मुराद जहन्नम का अज़ाब है।

4 अर्थात दुनिया और आख़िरत का अज़ाब।

5 इस कारण हुवा कि उनकी तरफ़ जो रसूल भेजे गए वे उन्हें स्पष्ट चमत्कार दिखाये।

6 अर्थात उनमें से हर क़ौम ने इन्सान ही में से रसूल
होने का इन्कार करते हुए, और उस पर आश्चर्य और हैरत करते हुए अपने रसूलों से यही कहा कि क्या इन्सान हमें मार्गदर्शन करेगा?!!!

7 अर्थात उन्होंने रसूलों का और रसूलों की लाई हुई बातों का इन्कार किया, और उनसे मुंह मोड़ा, और जो कुछ रसूल लेकर आए उनमें विचार नहीं किया।

8 अर्थात उनके ईमान और उनकी इबादत से।

9 अर्थात उसे संसार वालों की इबादत की ज़रूरत नहीं, उसकी सारी सृष्टि ज़ुबान या हाल से उसकी प्रशंसा में लगी है।

10 अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को हुक्म दिया कि वह उन्हें बता दें कि जल्द ही अल्लाह उन्हें मरने के बाद ज़िन्दा करेगा, और उनसे यह क़सम खाकर कह दें कि अल्लाह की क़सम तुम अपनी क़ब्रों से ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने संसार में किया है उसकी तुम्हें ख़बर दी जाएगी, ताकि तुम पर दलील क़ायम हो सके, और तुम्हें उसका बदला दिया जा सके।

11 अर्थात दोबारा ज़िन्दा करना, और बदला देना।

12 इससे मुराद क़ुरआन है, क्योंकि यह ऐसा नूर है जिससे ज़लालत और गुम्राही के अंधेरे में हिदायत मिलती है।

13 इकट्ठा होने के दिन से मुराद क़ियामत (प्रलय) का दिन है, उस दिन सारे महशर के लोग इकट्ठा किए जाएंगे, ताकि वे अपने किए का बदला पाएं, इसमें हर व्यक्ति और उसके अमल को, सारे नबी और उनकी उम्मतियों को, सारे मज़्लूम और उन पर अत्याचार करने वालों और सभी पहले और बाद वालों को इकट्ठा किया जाएगा।

14 उस दिन महशर वालों में से कुछ हारें गे और कुछ जीतें गे, अर्थात हक़ वालों से बातिल वाले हारें गे, और जन्नतियों से जहन्नमियों की हार से बड़ी कोई हार नहीं होगी, गोया कि जहन्नमियों ने भलाई को बुराई, नेकी को पाप से, और नेमत को अज़ाब से बदल लिया, और जन्नतियों ने उसके उलटा किया। غَبَنْتُ فُلَانًا (मैं ने फुलाने को ठग लिया) यह उस समय कहेंगे, जब आपने उससे कोई चीज़ बेची या ख़रीदी हो, और उसे घाटा उठाना पड़ा हो, तो "मग्बून" वह व्यक्ति होगा जो जन्नत में अपने घर वालों और ठिकाने के बारे में घाटे में होगा।

15 अर्थात जो रसूलों की लाई बातों को सत्य जानेगा, और साथ ही उसके अमल भी नेक होंगे, तो वह इसका हक़्दार होगा कि उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएं।

16 अर्थात बिना उसकी क़ज़ा और क़द्र के नहीं पहुँच सकती, और एक क़ौल यह कि इस आयत के उतरने का अवसर यह है कि काफ़िर कहते थे : मुसलमान जिस धर्म पर हैं यदि वह सत्य होता तो अल्लाह उन्हें सांसारिक दुःख तक्लीफ से सुरक्षित रखता।

17 और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो और जानता हो कि उसे मात्र वही मुसीबत पहुँचेगी जिसे अल्लाह तआ़ला ने उसके लिए मुक़द्दर कर दिया है, तो मुसीबत के समय अल्लाह उसके दिल को हिदायत देता है, और वह यह जान लेता है कि यह अल्लाह की ओर से है, और जो उसे पहुँची उससे चूकने वाली नहीं थी, और जो उससे चूक गई वह उसे पहुँचने वाली नहीं थी, तो वह उसकी क़ज़ा और क़द्र को स्वीकार कर लेता है, और (إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ) पढ़ता है, और जब

(12) (लोगो!) अल्लाह का कहना मानो, और रसूल का कहना
मानो [2], और यदि तुम मुंह फेरे तो हमारे रसूल के ज़िम्मे
मात्र स्पष्ट रूप से पहूँ चा देना है।
(13) अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं
और मुमिनों को मात्र अल्लाह पर ही भरोसा रखना चाहिए [3]।
(14) ऐ ईमान वालो! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन
हैं [4], तो उनसे होशियार रहना [5], और यदि तुम माफ़ करदो, छोड़ दो,
और क्षमा करदो [6], तो अल्लाह तआला बख्शने वाला [7], मेहर्बान है।
(15) तुम्हारे माल और संतान तो सरासर तुम्हारी परिक्षा हैं [8], और
बहुत बड़ा सवाब अल्लाह के पास है [9]।
(16) तो जहां तक तुम से होसके [10] अल्लाह से डरते रहो, और
सुनते और मानते चले जाओ [11], और अल्लाह के रास्ते में
सद्क़ा करते रहो [12], जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो व्यक्ति
अपने नफ़्स की लालच से बचा लिया जाए वही सफ़ल है [13]।
(17) यदि तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज दोगे [14] तो वह उसे
तुम्हारे लिए बढ़ाता जाएगा [15], और तुम्हारे पाप भी माफ़ करदेगा
[16], अल्लाह बड़ा क़दरदान और सहन करने वाला है [17]।
(18) वह छिपी और खुली का जानने वाला है जबरदस्त और
हिक्मत वाला है।

वह किसी इम्तिहान में पड़ता है तो सब्र करता है, और जब उस पर नेमतें निछावर होती हैं तो शुक्रिया अदा करता है।

1 अर्थात वह इतना बड़ा ज्ञानी है कि उससे कोई चीज़ छुपी नहीं रहती।

2 अर्थात अल्लाह और उसके रसूल के अनुकरण ही में लगे रहो।

3 यदि तुम इताअत से मुंह फेरोगे, तो तुम्हारे इस विमुखता का पाप तुम्हें ही होगा, रसूल का कुछ नहीं बिगड़ेगा, अल्लाह का संदेश पहुँचा देने के सिवाय उनकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और वह तुम्हें पहुँचा कर अपना फ़र्ज़ पूरा कर चूके हैं।

4 अर्थात वह तुम्हें भलाई के कामों से रोक देते हैं, इस आयत के उतरने की वजह यह है कि मक्का के कुछ लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया, और हिजरत करने की इच्छा की तो उनकी पत्नीयों और बच्चों ने उन्हें हिजरत से रोक दिया।

मुजाहिद कहते हैं : अल्लाह की क़सम उन्हों ने दुनिया में उन से दुश्मनी नहीं की किन्तु उनकी महब्बत ने उन्हें इस बात पर उभारा कि उन्हों ने हराम तरीक़े से जीविका कमाकर उन्हें प्रदान किया।

5 कि तुम उनसे अपनी महब्बत और अपनी मेहरबानी को अल्लाह की इताअत पर तर्जीह (प्रधानता) दो, और उनके लिए भलाई की चाहत तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम अल्लाह की नाफ़र्मानी करके उनके लिए रोज़ी कमाओ।

6 अर्थात उनसे जो गलतियाँ (त्रुटियां) हुई हैं उन्हें तुम माफ कर दो, और उन पर उनकी पकड़ न करो, और उन पर पर्दा करो।

7 तुम्हें और उन्हें दोनों को, और एक क़ौल यह है कि जिस की पत्नीयाँ और बच्चे उसे हिजरत से रोकने का कारण बने थे, जब उसने लोगों को देखा कि वह हिजरत में आगे बढ़ गए, और धर्म के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करली, तो उसने अपनी पत्नीयों और बच्चों को उसकी सज़ा देने की इच्छा की तो उस पर उसे यह हुक्म हुआ कि तुम उन्हें माफ कर दो।

8 अर्थात तुम्हारे लिए मुसीबत, इम्तिहान और परीक्षा हैं, वह तुम्हें हराम कमाने और अल्लाह का हक़ अदा न करने पर उकसाते हैं।

9 उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की फर्माबर्दारी को, और माल और बच्चे की महब्बत में उसकी नाफ़र्मानी से बचने को फ़ौक़ियत (प्रधानता) दे।

10 अर्थात जितनी तुम में शक्ति हो और जहाँ तक तुम्हारे बस में हो।

11 अर्थात अल्लाह और उसके रसूल के आदेश ध्यान से सुनो और उन्हें बजा लाओ।

12 अपने उस धन से जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, नेकी के कामों में खर्च करो, और उसमें कन्जूसी न करो, और सद्क़ा करके अपने लिए भलाई आगे भेजते रहो।

13 अर्थात जिन्हें अल्लाह ने कंजूसी के रोग से बचा लिया, और उन्हें अपने रास्ते में और भलाई के कामों में खर्च करने की तौफ़ीक़ दी तो यही लोग, हर तरह की भलाई पाए और अपने सभी उद्देश्यों में सफल हैं।

14 अर्थात अपने धनों को भलाई के कामों में खालिस नियत तथा प्रफुल्लता के साथ खर्च करोगे।

15 तो वह उस नेकी को १० गुना से लेकर ७०० गुना तक बढ़ा देगा।

16 और इस बढ़ौतरी में गुनाहों की माफ़ी को भी सम्मिलित कर देगा।

17 अर्थात फ़र्माबर्दारों को कई गुना सवाब देता है, और नाफ़र्मानों की पकड़ तुरन्त नहीं करता, उन्हें ढील और मुह्लत देता है।

सुरतु तलाक़ - 65

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ नबी! (अपनी उम्मत से कहो कि) जब तुम अपनी
पत्नियों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्दत (के दिनों के
आरम्भ) में उन्हें तलाक़ दो [18], और इद्दत का हिसाब रखो
[19], और अल्लाह से जो तुम्हारा रब है डरते रहो [20], न तुम
उन्हें उनके घरों से निकालो [21], और न वह स्वंय निकलें [22],
हां यह और बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें [23], यह
अल्लाह की ओर से नियुक्त सीमाएं हैं [24], जो व्यक्ति अल्लाह
की ओर से नियुक्त सीमाओं से आगे बढ़ जाए, उसने अवश्य
अपने ऊपर अपराध किया [25], तुम नहीं जानते शायद उसके
बाद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा करदे [26]।
(2) तो जब यह औरतें अपनी इद्दत पूरी करने के क़रीब पहूँ च जाएं
[27] तो उन्हें या तो बाक़ाएदा अपने निकाह में रहने दो [28], या बाक़ाएदा
उन्हें अलग करदो [29], और आपस में से दो मुन्सिफ़ व्यक्ति को गवाह

---

18 अल्लाह तआला ने पहले नबी ﷺ को पुकारा, यह पुकार आप की प्रतिष्ठा और पद ज़ाहिर करने के लिए है, फिर आप से आपकी उम्मत समेत मुख़ातिब हुवा, आयत का अर्थ यह है कि : जब तुम अपनी पत्नीयों को तलाक़ देना चाहो और पुख़्ता इरादा कर लो तो उन्हें उनकी इद्दत के आरम्भ में तलाक़ दो, मुराद यह है कि उन्हें ऐसी पाकी में तलाक़ दो, जिसमें तुमने सुहबत न की हो, फिर वह छोड़ दी जाएं यहाँ तक कि उनकी इद्दत पूरी होजाए, तो जब तुमने उन्हें इस तरह तलाक़ दी तो उन्हें उनकी इद्दत में तलाक़ दी। इबने उमर رضي الله عنهما से रिवायत है कि : उन्होंने अपनी बीवी को माहवारी के दिनों में तलाक़ दी, तो उनके वालिद उमर رضي الله عنه ने इसका चर्चा अल्लाह के रसूल ﷺ से किया, तो आप ﷺ गुस्सा हूए, और फ़रमाया : “वह उसे लौटा ले, फिर उसे रोके रखे, यहाँ तक कि वह पाक होजाए, फिर उसे माहवारी आए और वह उससे पाक होजाए, तो यदि वह उसे तलाक़ देना चाहे तो उसे पाकी की स्तिथि में सुह्बत करने से पहले तलाक़ दे दे, यही वह इद्दत है जिसका औरतों को तलाक़ देते समय अल्लाह ने हुक्म दिया है”

19 अर्थात इद्दत को याद रखो, और उस समय को याद रखो, जिसमें तलाक़ हुई है, यहाँ तक कि इद्दत पूरी हो जाए, और यह तीन क़ुरूअ् (पाकी) है, और आयत में शौहरों को ख़िताब है।

20 अर्थात जिन बातों का वह तुम्हें हुक्म दे उसमें उसकी नाफ़र्मानी न करो, और औरतों को तक्लीफ़ न दो।

21 अर्थात उन घरों से जिन में वह तलाक़ के समय थीं, जब तक कि वह इद्दत में हों, घरों की निस्बत उनकी तरफ़ की यह बताने के लिए कि इद्दत के बीच वे उनमें रिहाइश का पूरा हक़ रखती हैं, और बीवियों को भी वहाँ से निकलने से रोका।

22 अर्थात वे स्वंय भी उन घरों से न निकलें जब तक कि वे इद्दत में हों, सिवाए किसी ऐसे ज़रूरी काम के जिसके बिना चारा नहीं है।

23 अर्थात तुम उन्हें उनके घरों से न निकालो मगर यह कि वह खुली बद्-कारी कर बैठें, और एक क़ौल यह है कि इससे मुराद गाली गुलूच, और ज़ुबान लड़ाना है, जो घर में रहने वाले दूसरे लोगों के साथ वह करती हैं।

24 अर्थ यह है कि यह आदेश जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए बयान किए हैं, उसकी वह सीमाएँ हैं जो उसने उनके लिए नियुक्त किए हैं, तो उनके लिए जायज़ नहीं कि वह उनका उल्लंघन करें।

25 अपने नफ़्स को हलाकत की जगह में डालकर।

26 अर्थात हो सकता है कि वह अपने घर में रहे तो अल्लाह उन दोनों के दिलों में प्रेम डाल दे, और वह दोनों लौट जाएं।

27 अर्थात जब उनकी इद्दत ख़त्म होने के क़रीब होजाए।

28 अर्थात उन्हे वापस लौटा लो, और यह लौटाना उनमें खाहिश रखते हुए उनके साथ अच्छी तरह गुज़र बसर के इरादे से हो, न कि उन्हें घाटा पहुँचाने के इरादे से।

29 अर्थात उन्हें छोड़े रखो यहाँ तक की उनकी इद्दत पूरी हो जाए, और वह स्वयं अपने नफ़्सों की मालिक हो जाएं, साथ ही जो हक़ उनके तुम्हारे ऊपर हों, उनको उन्हें पूरे पूरे दे दो, और उन्हें कोई नुक़्सान न पहुँचाओ, अर्थात इद्दत पूरी हो जाने पर तुम्हारे लिए दो ही चीज़ें हैं या तो भलाई के साथ उन्हें रोक लो, या भलाई के साथ छोड़ दो, रहा घाटा पहुँचाने के लिए रोकना, या दुःख पहुँचा कर और उनके हक़ उन्हें न देकर अलग करना, तो यह तुम्हारे लिए जायज़ नहीं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ ٱلنِّسَآءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا۟
ٱلْعِدَّةَ ۖ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنۢ بُيُوتِهِنَّ
وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
ٱللَّهِ ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ ٱللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُۥ ۚ لَا تَدْرِى لَعَلَّ
ٱللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَٰلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا۟ ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنكُمْ
وَأَقِيمُوا۟ ٱلشَّهَٰدَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِۦ مَن كَانَ يُؤْمِنُ
بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۚ وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّهُۥ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ
مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ
بَٰلِغُ أَمْرِهِۦ ۚ قَدْ جَعَلَ ٱللَّهُ لِكُلِّ شَىْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾ وَٱلَّٰٓـِٔى يَئِسْنَ
مِنَ ٱلْمَحِيضِ مِن نِّسَآئِكُمْ إِنِ ٱرْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَٰثَةُ أَشْهُرٍ
وَٱلَّٰٓـِٔى لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُو۟لَٰتُ ٱلْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ
وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّهُۥ مِنْ أَمْرِهِۦ يُسْرًا ﴿٤﴾ ذَٰلِكَ أَمْرُ ٱللَّهِ أَنزَلَهُۥٓ
إِلَيْكُمْ ۚ وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّـَٔاتِهِۦ وَيُعْظِمْ لَهُۥٓ أَجْرًا ﴿٥﴾

बनालो [1], और अल्लाह की खुशी के लिए ठीक ठीक गवाही दो [2], यही है वह जिसकी नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह पर औ थक़्यामत के दिन पर ईमान रखता हो [3]। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है [4], अल्लाह उसके निकलने का रास्ता बना देता है [5]।
(3) और उसे ऐसी जगह से [6] रोज़ी देता है जिसका उसे गुमान भी न हो, और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसे काफ़ी होगा [7]। अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके ही रहेगा [8], अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा निर्धारित कर रखा है [9]।
(4) तुम्हारी औरतों में से जो महिनवारी से निराश होगई हूं [10], यदि तुम्हें शक हो [11] तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और उन की भी जिन्हें महिनवारी आना शुरू ही न हुवा हो [12], और गर्भवती (हामिला) औरतों की इद्दत उनका बच्चे को जनम देना है [13], और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके हर काम में आसानी कर देगा [14]।
(5) यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह मिटा देगा, और उसे बहुत भारी बदला देगा [15]।
(6) तुम अपनी शक्ति के अनुसार [16] जहां तुम रहते वहां उन (तलाक़ वाली) औरतों को रखो [17], और उन्हें तंग करने के क्ष्ट न दो [18], और यदि वह गर्भवती हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले, उन्हें खर्च देते रहा करो [19], फिर यदि तुम्हारे कहने से वही दूध पिलाएं तो तुम उन्हें उन्की उज्रत दे दो [20], और आपस में अच्छी तरह राय-मश्वरा कर लिया करो [21], और यदि तुम आपस में तनाव रखो तो उसके कहने से कोई और दूध पिलाएगी [22]।
(7) धनी व्यक्ति को अपने धन अनुसार खर्च करना चाहिए [23], और जिस पर उसकी रोज़ी तंग की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उसे दे रखा है उसी में से अपनी शक्ति अनुसार दे [24], किसी व्यक्ति पर अल्लाह बोझ नहीं डालता मगर

---

1 अर्थात यदि तुम लौटा रहे हो तो लौटाने पर और यदि अलग कर रहे हो तो अलग करने पर, ताकि लड़ाई झगड़े का पूरे तौर से सफ़ाया होजाए।
2 यह आदेश गवाहों को है कि वह अल्लाह से क़ुर्बत और नज़दीकी चाहने के लिए ठीक ठीक गवाही दें।
3 ईमान वालों को खास इसलिए किया गया है कि वास्तव में यही लोग लाभ उठाने वाले हैं, दूसरा कोई नहीं।
4 अर्थात जो सीमाएं अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए नियुक्त कर दी हैं उनका उल्लंघन न करके अल्लाह से डरता है।
5 उन चीजों से जिसमें वह फंसा है।
6 अर्थात ऐसे तरीक़े से जो उसके गुमान में भी नहीं होते, तो जिसने तलाक़ दी फिर इद्दत ख़तम होने पर अलग होने पर, या लौटाने पर गवाह बना लिया, तो अल्लाह उसके निकलने और छुटकारा पाने का रास्ता बना देगा, तंगी तो मात्र उसे होगी जो तलाक़ या लौटाने के बारे में अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करे।
7 अर्थात अपने आने वाले समस्याओं में जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा, तो अल्लाह उसे काफ़ी होगा।
8 अर्थात उससे कोई चीज़ छूट नहीं सकती और न ही किसी चीज़ की तलब उसे बेबस करती है।
9 अर्थात तंगी के लिए उसने एक समय निर्धारित कर दिया है, और आसानी के लिए भी, यह दोनों अपने अपने समय पर पहुँच कर ख़तम हो जाते हैं, और सुद्दी कहते हैं कि : इससे मुराद माहवारी और इद्दत की मुद्दत (अवधि) है।
10 इससे मुराद बूढ़ी औरतें हैं, जिन्हें माहवारी आना बन्द होगया हो, और वह इससे निराश हो चुकी हों।
11 यदि तुम्हें शक हो और इसकी जानकारी न हो कि उनकी इद्दत कितनी होगी।
12 उनकी कम उम्री और माहवारी की उम्र को न पहुँचने के कारण, अर्थात नाबालिग लड़कियों की भी इद्दत तीन महीने है।
13 अर्थात उनकी इद्दत उस समय पूरी होगी जब वह अपने गर्भ को जनम दे देंगी।
14 ज़ह्हाक कहते हैं : जो अल्लाह से डरेगा और सुन्नत के अनुसार तलाक़ देगा, तो अल्लाह लौटाने के समस्या को आसान करदेगा।
15 अर्थात उसे आख़िरत में बहुत भारी बदला देगा, और वह जन्नत है।
16 इस आयत में रिहाइश का बयान है, जो मुतल्लक़ा रज्ईया (ऐसी औरतें जिन्हें मात्र १ या २ तलाक़ हूई हो) के लिए वाजिब है।
17 अर्थात अपनी आसानी के अनुसार तुम उन्हें उन्ही जगहों में से किसी में रखो जहाँ हमने तुम्हें रखा है, यह आदेश मुतल्लक़ा रज्ईया के बारे में है, रहीं वह औरतें जिन्हें तीन तलाक़ें दी जा चुकी हों तो उनके लिए नफ़क़ा और सुक्ना (खर्च और रिहाइश) है ही नहीं।
18 रिहाइश और खर्च के बारे में।
19 मुतल्लक़ा औरत यदि गर्भवती हो तो उसके खर्च और रिहाइश के वाजिब होने के बारे में उलमा के बीच इत्तिफ़ाक़ है।
20 अर्थात बच्चा जनने के बाद यदि तुम्हारे कहने से तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाएं, तो तुम उन्हें उनके दूध पिलाने की उज्रत दो।
21 यह फ़रमान उन पतियों और पत्नीयों दोनों के लिए है, जो तलाक़ के कारण एक दूसरे से अलग हो चुके हैं, अर्थ यह है कि तुम दोनों अपने राय-मश्वरे से तय कर लो, और तुम में से हर एक वह चीज़ स्वीकार कर ले जो बेहतर हो और जिसमें बच्चे के लिए भलाई हो, यह वही बात है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने सरतुल बक़्रा आयत न० २२३ में किया है : "فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا"
22 और यदि दूध पिलाने की उज्रत (पारिश्रमिक) में तुम आपस में विरोध कर बैठो, और शौहर बच्चे की माँ को वह उज्रत न देना चाहे जो वह चाहती हो, और माँ बिना उस उज्रत के जिसे वह चाहती हो दूध पिलाने पर राज़ी न हो, तो वह उज्रत पर कोई और दाया रख ले जो उसके बच्चे को दूध पिलाए।
23 इसमें धनवानों को यह आदेश है कि उनकी पत्नीयों में से जो उनके बच्चों को दूध पिला रही हों उनपर अपनी हैसियत अनुसार खर्च करें।
24 अर्थात जिनकी धन-सम्पत्ती कम हो, और वह परेशानी और तंगी में हों तो अल्लाह ने उन्हें जो जीविका दे रखी है उसी में से अपनी शक्ति के अनुसार उन्हें दें, उन पर मात्र उतना ही है जिसकी वह शक्ति रखते हैं।

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا۟
عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُو۟لَٰتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا۟ عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ
فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَـَٔاتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا۟ بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُۥٓ أُخْرَىٰ ﴿٦﴾ لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِۦ ۖ
وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُۥ فَلْيُنفِقْ مِمَّآ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا
إِلَّا مَآ ءَاتَىٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ ٱللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿٧﴾ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ
عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِۦ فَحَاسَبْنَٰهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَٰهَا
عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَٰقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾
أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ يَٰٓأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۚ
قَدْ أَنزَلَ ٱللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ رَّسُولًا يَتْلُوا۟ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ مُبَيِّنَٰتٍ
لِّيُخْرِجَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ مِنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ ۚ
وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ وَيَعْمَلْ صَٰلِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا
ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ ٱللَّهُ لَهُۥ رِزْقًا ﴿١١﴾ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ
سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ وَمِنَ ٱلْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ ٱلْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ
ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ ٱللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَىْءٍ عِلْمًۢا ﴿١٢﴾

उतनी ही जितनी शक्ति उसे दे रखी है [1], अल्लाह तंगी के बाद
आसानी भी कर देगा [2]।
(8) और बहुत सी बस्तियों वालों ने अपने रब के हुक्म का
और उसके रसूलों की नाफ़र्मानी की तो हमने उन से भी कड़ा
हिसाब लिया [3], और उन्हें बहुत ही कठोर अज़ाब दिया।
(9) तो उन्होंने अपने कर्तूत का मज़ा चख लिया [4], और
परिणाम स्वरूप (नतीजतन) उनका घाटा ही हूवा [5]।
(10) उनके लिए अल्लाह तआला ने कठोर अज़ाब [6] तैयार
कर रखा है, तो अल्लाह तआला से डरो हे अक़्लमन्द [7] ईमान
वालो! [8] अवश्य अल्लाह तआला ने तुम्हारी तरफ़ ज़िक्र [9]
उतार दिया है।
(11) और रसूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट आदेशों को
पढ़कर सुनाता है [10], ताकि उन लोगों के जो ईमान लाएं और
नेक कर्म किएं अन्धेरों से रौशनी की ओर ले आए [11], और जो व्यक्ति
अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे अल्लाह उसे ऐसी जन्नतों
में प्रवेश देगा जिसके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें यह हमेशा-हमेश
रहेंगे, अवश्य अल्लाह ने उसे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है।
(12) अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाए, और उसी के
बराबर धरती [12] भी, उसका हुक्म उनके बीच उतरता है [13], ताकि
तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है, और अल्लाह
तआला ने हर चीज को अपने इल्म के इहाते में घेर रखा है।

सुरतु त्तह़रीम - 66

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए ह़लाल
कर दिया है उसे आप क्यों ह़राम करते [14] हैं? क्या आप
अपनी पत्नियों की ख़ुशी प्राप्त करना चाहते हैं [15], और
अल्लाह माफ़ करने वाला [16], बड़ा दयालु है।
(2) हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए ह़लाल
कर दिया है उसे आप क्यों ह़राम करते [17] हैं? क्या आप

---

[1] अर्थात जितनी जीविका उसे दे रखी है, तो वह फ़क़ीर व्यक्ति पर उतना खर्च करने का बोझ नहीं डालता जिसकी उसे शक्ति न हो, जैसा कि धनवान खर्च करते हैं।
[2] अर्थात तंगी और सख़्ती के बाद मालदार बना देगा। अर्थात् बहुत सी बस्तियों वालों ने अल्लाह और उसके रसूल की ना-फरमानी की और मुंह फेरा।
[3] अर्थात अल्लाह ने उन कामों का जो उन्होंने किए कठोर ह़िसाब लिया, और आख़िरत में उन्हें कठोर अज़ाब में डाला, और संसार में उन्हें, भूक, अकाल, से दोचार किया, और उन्हें धंसाया और उनके चेहरों को बदल दिया।
[4] अर्थात उस भारी अज़ाब का मज़ा जो उनके कुफ़्र के कारण है।
[5] अर्थात परिणाम यह निकला कि वे संसार में हलाक और बर्बाद कर दिए गए, और आख़िरत में कठोर अज़ाब से दोचार होंगे, तो वे अपने धन, अपनी सन्तान और अपनी जान के अन्दर घाटे में रहे।
[6] अर्थात नरक का अज़ाब।
[7] हे ठीक-ठाक अक़्ल रखने वालो! इससे मुराद नबी ﷺ के उम्मती हैं।
[8] अर्थात जिन्होंने अल्लाह के सामने अपने सर झुका रखे हैं, और जो मुहम्मद ﷺ के फ़र्मांबर्दार हैं, तो तुम अपने ईमान में सच्चे बनो, और अपने से पहले की उम्मतों की तरह न हो जाओ, जो अवज्ञाकारी (बाग़ी) होगए, तो उनसे कठोर ह़िसाब लिया गया, और अज़ाब से दोचार हूए।
[9] ज़िक्र से मुराद क़ुरआने अज़ीम है, और एक क़ौल यह है कि यहाँ ज़िक्र से मुराद स्वयं अल्लाह के रसूल ﷺ ही हैं, इसी कारण फ़रमाया : "رسولا" अर्थात तुम्हारी तरफ़ क़ुरआन उतारा, और उस क़ुरआन के साथ एक रसूल भेजा।
[10] जो लोगों के लिए उन आदेशों को जिनकी उन्हें ज़रूरत है, खोल-खोल कर बयान करता है।
[11] ताकि अल्लाह उन आयतों के द्वारा उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक कर्म किया है, गुम्राही के अन्धेरों से निकाल कर हिदायत की रौशनी की ओर और कुफ़्र के अन्धेरों से नूरे ईमान की ओर ले आए।
[12] अर्थात सात आकाशों की तरह उसने सात धरतियां भी पैदा की हैं, एक मर्फ़ूअ् सह़ीह़ हदीस से इसकी ताईद भी होती है, (सह़ीह़ बुख़ारी और मुस्लिम मे) नबी ﷺ का फ़रमान है : "مَنْ ظَلَمَ شِبْرًا مِنَ الأَرْضِ طُوِّقَهُ مِنْ سَبْعِ أَرَضِينَ" "जिसने किसी का एक बीता ज़मीन भी हथियाया तो क़ियामत के दिन उस ज़मीन का उतना हिस्सा सातों ज़मीनों से तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा।"
[13] अर्थात सातों आकाशों से उसका हुक्म सातों धरतियों पर उतरता है तो पानी बरसता है, और पेड़-पौदे निकलते हैं, और रात और दिन और गर्मी और जाड़ा आता है।
[14] नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने ऊपर ह़राम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी ﷺ ज़ैनब बिन्ते जह़श رضي الله عنها के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और ह़फ़्सा رضي الله عنهما को ज़ैनब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मग़ाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फ़र्माया : मैं ने तो ज़ैनब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं क़सम खाता हूँ कि यह नहीं पिऊँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे ह़राम कर लिया।
[15] इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ ह़राम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए ह़लाल किया था।
[16] इस कोताही को जो अल्लाह की ह़लाल की हूई चीज़ को अपने लिए ह़राम करके आप से हूई है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को ख़बरदार किया।
[17] नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने ऊपर ह़राम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी ﷺ ज़ैनब बिन्ते जह़श رضي الله عنها के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और ह़फ़्सा رضي الله عنهما को ज़ैनब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएं तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मग़ाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फ़र्माया : मैं ने तो ज़ैनब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं क़सम खाता

ترتيبها ٦٦ — سُورَةُ التَّحْرِيمِ — آياتها ١٢

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ ٱللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَٰجِكَ وَٱللَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١ قَدْ فَرَضَ ٱللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَٰنِكُمْ وَٱللَّهُ مَوْلَىٰكُمْ
وَهُوَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْحَكِيمُ ٢ وَإِذْ أَسَرَّ ٱلنَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَٰجِهِۦ حَدِيثًا
فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِۦ وَأَظْهَرَهُ ٱللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُۥ وَأَعْرَضَ عَنۢ بَعْضٍ
فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِۦ قَالَتْ مَنْ أَنۢبَأَكَ هَٰذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ ٱلْعَلِيمُ ٱلْخَبِيرُ
٣ إِن تَتُوبَآ إِلَى ٱللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِن تَظَٰهَرَا عَلَيْهِ
فَإِنَّ ٱللَّهَ هُوَ مَوْلَىٰهُ وَجِبْرِيلُ وَصَٰلِحُ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ
بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ٤ عَسَىٰ رَبُّهُۥٓ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُۥٓ أَزْوَٰجًا
خَيْرًا مِّنكُنَّ مُسْلِمَٰتٍ مُّؤْمِنَٰتٍ قَٰنِتَٰتٍ تَٰٓئِبَٰتٍ عَٰبِدَٰتٍ سَٰٓئِحَٰتٍ
ثَيِّبَٰتٍ وَأَبْكَارًا ٥ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ
نَارًا وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ٦ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَا تَعْتَذِرُوا۟ ٱلْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ٧

अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं [1], और अल्लाह माफ़ करने वाला [2], बड़ा दयालु है।
(2) बेशक अल्लाह ने आप के लिए क़स्मों से निकलने का रास्ता नियुक्त कर दिया है [3], और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज़) है [4], और वही (पूरी) तरह से जानने वाला [5] हिक्मत वाला है [6]।
(3) और याद करो जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों [7] से एक बात चुपके से [8] कही, तो जब अल्लाह ने इस बात की ख़बर कर दी [9], और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया [10], तो नबी ने थोड़ी सी बात तो बता दी, और थोड़ी सी टाल गए [11], फिर जब नबी ने अपनी इस पत्नि को यह बात बताई [12] तो वह पूछने लगी : इसकी ख़बर आप को किसने दी? कहा : सब जानने वाले पूरी ख़बर रखने वाले अल्लाह ने मुझे यह बतलाया है [13]।
(4) (ऐ नबी की दोनों पत्नियो!) यदि तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करलो, (तो बहुत बेहतर है) अवश्य तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं [14], और यदि तुम नबी के विरुद्ध एक दूसरे की मदद करोगी [15], तो अवश्य उसका कारसाज़ अल्लाह है, और जिब्राईल हैं, और नेक ईमानदार [16], और उसके बाद [17] फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं [18]।
(5) यदि वह (पैगम्बर) तुम्हें तलाक़ देदें तो बहुत जल्द उन्हें उनका रब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी पत्नियां इनायत फ़र्मादेगा [19], जो इस्लाम वालियाँ [20], ईमान वालियाँ [21], अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ [22], तौबा करने वालियाँ [23], इबादत करने वालियाँ [24], रोज़े रखने वालियाँ होंगी विधवाएं [25] और कुँवारियाँ [1]।

हूँ कि यह नहीं पिऊँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हराम कर लिया।

1 इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ हराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

2 इस कोताही को जो अल्लाह की हलाल की हूई चीज़ को अपने लिए हराम करके आप से हूई है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को ख़बरदार किया।

3 अर्थात तुम्हारे लिए जायज़ किया कि कफ़्फ़ारा अदा करके अपनी क़स्मों को हलाल कर लो, जैसा कि सूरतुल माइदा आयत न० ८९ में है, और तुम्हें उसका तरीक़ा बता दिया, और किसी के लिए जायज़ नहीं कि जो चीज़ें अल्लाह ने हलाल की हों उन्हें हराम करले, यदि किसी ने ऐसा किया तो यह स्वीकार नहीं होगा, और ऐसा करने वाले पर यह लाज़िम नहीं होगा, क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार मात्र अल्लाह तआ़ला को है, लेकिन यदि किसी ने ऐसा कर लिया तो कुछ फ़ुक़हा इस बात की तरफ़ गए हैं कि यदि उसने अपने ऊपर कोई कपड़ा या पोशाक, या खाने पीने की कोई चीज़, या कोई ऐसी चीज़ हराम की जिसे अल्लाह ने उसके लिए हलाल की है तो यह क़सम के दर्जे में होगा, यदि उस काम को जिसे उसने अपने ऊपर हराम कर लिया है फिर करना चाहे तो उसे क़सम का कफ़्फ़ारा देना होगा, यदि उसने क़सम का कफ़्फ़ारा दे दिया तो वह चीज़ जायज़ होजाएगी, और यही हुक्म सारी चीजों का है यहाँ तक कि पत्नी का भी यदि उसे अपने ऊपर हराम कर ले तो, और कुछ लोगों ने कहा है कि यदि उसने पत्नी को हराम कर लिया और हराम करने से उसने तलाक़ की नियत की हो तो तलाक़ पड़ जाएगी। वल्लाहु आ'लम।

4 अर्थात तुम्हारा कारसाज़, नासिर और मददगार है।

5 उन चीजों को जिसमें तुम्हारी भलाई और सफलता है।

6 अपनी बातों और अपने कामों में।

7 इससे मुराद हफ़्सा ﵂ हैं जैसा कि पीछे गुज़रा।

8 चुपके से कही जाने वाली बात से मुराद शहद हराम कर लेना है, और कलबी कहते हैं कि : आप ﷺ ने चुपके चुपके उनसे यह कहा था कि तुम्हारे और आइशा के पिता ﵄ यह दोनों मेरे बाद मेरी उम्मत में मेरे ख़लीफ़ा होंगे।

9 उसने उसे दूसरी को अर्थात आइशा ﵂ को भी बता दिया।

10 अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को इसकी ख़बर दे दी, कि हफ़्सा ने आइशा ﵂ को इसकी ख़बर कर दी है।

11 अर्थात आप ने हफ़्सा को थोड़ी सी वह बात बता दी जिसकी उन्होंने आइशा को ख़बर दे दी थी, और कुछ बताए बिना टाल गए।

12 तो जब आप ने हफ़्सा को वह बात बताई जो वह बता चुकी थीं।

13 अर्थात मुझे उस अल्लाह ने इस की ख़बर दी है जिस पर कोई चीज़ भी नहीं छुपती।

14 ख़िताब आइशा और हफ़्सा ﵄ को है, अर्थात यदि तुम दोनों तौबा कर लो तो बेहतर है, तुम दोनों के दिल नबी ﷺ के विरुद्ध एक दूसरे की मदद करने से तौबा करने की ओर झुक ही चुके हैं।

15 अर्थात यदि तुम दोनों ने उनके विरुद्ध अपनी ग़ैरत में और उनके भेद को बताने में एक दूसरे की मदद की और एक दूसरे का साथ दिया।

16 तो अल्लाह उसकी मदद फ़र्माएगा, इसी तरह जिब्राईल और उसके नेक मोमिन बन्दे, जैसे अबू बक्र और ऊमर भी उसकी मदद करेंगे, ऐसा नहीं होगा कि उसका कोई मदद करने वाला न होगा।

17 अर्थात अल्लाह, जिब्राईल और नेक मोमिन बन्दों की मदद के बाद।

18 उसके मददगार हैं जो उसकी मदद करेंगे, और एक क़ौल यह है कि आइशा और हफ़्सा ﵄ के बीच यह आपसी मदद नबी ﷺ से नफ़्क़ा तलब करने के बारे में था।

19 अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की पत्नीयों को डराने के लिए ख़बर दी है, कि अल्लाह के पास यह शक्ति है कि यदि वह उन्हें तलाक़ दे दें तो वह उन्हें उन से अच्छी पत्नीयाँ इनायत फ़रमा दे।

20 इसलाम के फ़रीज़ों पर अमल करने वालियाँ।

21 अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों की पुष्टि करने वालियाँ।

22 अर्थात अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्मांबर्दारी करने वालियाँ।

23 अर्थात गुनाहों से।

24 अल्लाह की इबादत करने वालियाँ और उससे गिड़गिड़ाने वालियाँ।

25 "सैइबा": शादी शुदा औरत जिसके पति ने उसे तलाक़ दे दी हो या उसकी मौत होगई हो।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ تُوبُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ
أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى
مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى ٱللَّهُ ٱلنَّبِىَّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ
مَعَهُۥ ۖ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَـٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ
أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَٱغْفِرْ لَنَآ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾
يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَـٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَـٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ
وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا
لِّلَّذِينَ كَفَرُواْ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ
عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَـٰلِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا
مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا وَقِيلَ ٱدْخُلَا ٱلنَّارَ مَعَ ٱلدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾
وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ
قَالَتْ رَبِّ ٱبْنِ لِى عِندَكَ بَيْتًا فِى ٱلْجَنَّةِ وَنَجِّنِى مِن فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِى مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ ٱبْنَتَ
عِمْرَٰنَ ٱلَّتِىٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَـٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَـٰنِتِينَ ﴿١٢﴾

(6) ऐ मुमिनो! तुम खुद अपने आप को [2], और अपने घर वालों
को [3], उस आग से बचाओ [4], जिसका इन्धन इन्सान और पत्थर
हैं, जिस पर कठोर दिल वाले मज़्बूत फ़रिश्ते तैनात हैं [5], जिन्हें
जो हुक्म अल्लाह तआ़ला देता है उसकी नाफ़र्मानी नहीं करते [6],
बल्कि जो हुक्म दिया जाए उसका पालन करते हैं [7]।
(7) हे काफ़िरो! आज तुम बहाना मत करो (मज्बुरी मत बताओ) [8]
तुम्हें मात्र तुम्हारे करतूतों का बदला [9] दिया जारहा है।

(8) हे ईमान वालो! तुम अल्लाह के सामने सच्ची ख़ालिस तौबा
[10] करो, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटादे, और तुम्हें
ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं,
जिस दिन अल्लाह तआ़ला नबी को और ईमानदारों को जो
उनके साथ हैं रुस्वा (अपमानित) न करेगा, उनका नूर उनके
सामने और उनके आगे दौड़ रहा होगा [11], वह यह दुआएं करते
होंगे : हे हमारे रब! हमें कामिल नूर अता फ़र्मा, और हमें बख़्श
दे अवश्य तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।
(9) हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें [12], और
उन पर कड़ाई करें, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और
वह बहुत बुरी जगह है।
(10) अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों के लिए नूह़ की और लूत की
पत्नियों का उदाहरण दिया, यह दोनों औरतें हमारे बन्दों में से दो
नेक बन्दों के घर में थीं, फिर उन्की उन्होंने खयानत की
(विश्वासघत किया) [13], तो वह दोनों नेक बन्दे उनसे अल्लाह के
किसी अज़ाब को न रोक सके [14], और आदेश हुवा (हे औरतों)
नरक में जाने वालों के साथ [15] तुम दोनों भी चली जाओ।
(11) और अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों के लिए फ़िरऔन
की पत्नि का उदाहरण दिया [16], जब्कि उसने दुआ की कि हे
मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना [17], और
मुझे फ़िरऔन से और उसके कुकर्म से बचा [18], और मुझे
अत्याचारियों से [19] छुटकारा दे।
(12) और उदाहरण दिया मर्यम बिन्ते इम्रान [20] का जिसने
अपनी सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त की [21], फिर हमने अपनी
ओर से उसमें जान फूँक दी [22], और मर्यम ने अपने रब की
बातों [23] और उसकी किताबों की पुष्टि की, और वह इबादत

---

1 "बिक्र" का अर्थ अज़्राअ् अर्थात कुँवारी है।
2 अर्थात अपने आप को बचाओ, उन चीज़ों को करके जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया, और उन चीज़ों से बच कर जिन से उसने तुम्हें रोका है।
3 उन्हें अल्लाह की फ़र्मांबर्दारी का हुक्म देकर और उसकी नाफ़र्मानी से रोक कर।
4 अर्थात ऐसी बड़ी आग से कि जिसका ईंधन लोग और पत्थर होंगे, जैसे संसार की आग का ईंधन लकड़ी है।
इब्ने जरीर कहते हैं कि इस आयत की रौशनी में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अपने बाल-बच्चों को धर्म, भलाई, और उन स्वभावों की शिक्षा दें, जिसके बिना चारा नहीं।
5 जहन्नम पर दारोग़ा, और जहन्नम के कामों और जहन्नमियों को अज़ाब देने वाली चीज़ों के निगराँ फ़रिश्ते होंगे, जो जहन्नमियों पर ऐसे बे-रहम और कठोर दिल होंगे, कि वे उनसे रहम चाहेंगे तो कुछ भी दया न करेंगे, वह अज़ाब के लिए पैदा ही किए गए हैं।
6 अर्थात वे अज़ाब के बारे में उसका विरोध नहीं कर सकते।
7 वे उसे देरी किए बिना तुरन्त करते हैं, उसमें थोड़ी भी देर नहीं लगाते, और वे उस पर अच्छी तरह शक्ति रखते हैं, इससे उन्हें कोई चीज़ वह चाहे जैसी ही क्यों न हो बेबस नहीं कर सकती।
8 यह बात उनसे उनके जहन्नम में घुसते समय कही जाएगी, ताकि वह यकदम निराश होजाएं, और उनकी रही सही सभी आशाएं ख़तम होजाएं।

9 अर्थात तुम्हारे उन कुकर्मों का जो तुमने संसार में किए हैं।
10 सच्ची ख़ालिस तौबा यह है कि व्यक्ति अपने किए हुए पाप पर दिल से लज्जित (शर्मिन्दा) हो, और ज़ुबान से माफ़ी चाहे, और अपने अंगो से उसे करने से रुक जाए, और भविष्य में उसके दोबारा न करने का पक्का इरादा करे।
11 अर्थात् यह नूर उनके साथ उस समय होगा जब वह पुल-सिरात़ पार कर रहे होंगे।
12 अर्थात काफ़िरों से युद्ध करके, और मुनाफ़िक़ों से उन्हें दंड दे कर, क्योंकि वे ऐसे कुकर्म कर रहे थे जिनके कारण उन पर ह़द वाजिब हो रहा था, अर्थात इन दोनों गिरोहों के साथ कठोर रवैया अपनाएं, ताकि उन पर तुम्हारा डर बैठ जाए।
13 अर्थात उन दोनों ने उनके साथ विश्वासघात किया, कहा गया है नूह़ (عليه السلام) की पत्नी उनके बारे में लोगों से कहती कि उन की बात न मानो, यह पागल और मज्नून हैं, और लूत़ (عليه السلام) की पत्नी अपनी क़ौम को घर में आने वाले मेहमानों के बारे में बताती थी।
14 तो नूह़ और लूत़ उन दोनों औरतों को अपनी बीवियाँ होने के बावजूद किसी तरह का कोई लाभ नहीं पहुँचा सके और अल्लाह के यहाँ प्रतिष्ठित और सम्मानित होने होने के बावजूद उनसे कुछ भी अल्लाह का अज़ाब टाल नहीं सके।
15 काफ़िरों और पापियों में नरक में जाने वालों के साथ।
16 अर्थात कुफ़्र का दबदबा उन्हें घाटा न पहुँच्या सकेगा, जैसे फ़िरऔन की पत्नी को घाटा न पहुँचा सका, जबकि वह सब से बड़े काफ़िर के निकाह़ में थीं, इसके बावजूद वह अपने ईमान के कारण उपहारों वाली जन्नतों का ह़क़दार हुई।
17 और मेरे लिए ऐसा घर बना जो तेरे दया से क़रीब, तेरे नेक और मुक़र्रब बन्दों के दरजों में हो।
18 अर्थात स्वंय फ़िरऔन से और उसके कुकर्मों से जिन्हें वह कर रहा है।
19 इससे मुराद क़िब्ती वंश के काफ़िर लोग हैं।
20 अर्थात मर्यम को अल्लाह ने एक साथ दुनिया और आख़िरत का सम्मान दिया, और सारे जहान की औरतों से उन्हें चुना, जबकि उनका सम्बन्ध कुकर्मी वंश से था।
21 बदकारी से।
22 यह इस तरह से कि जिब्रईल (عليه السلام) ने उनके कुर्ते के गरीबान में फूँक मारी तो वह गर्भवती होगई, और उनके पेट में ईसा (عليه السلام) की परवरिश होने लगी।
23 अर्थात उन आदेशों का जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए निर्धारित किया है, और जिनके साथ फ़रिश्ता उनसे बात किया, और यह जिब्रईल का उनसे कहना है

करने वालियों में से थी [1]

सूरतुल मुल्क - 67

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) बहुत बर्कत-वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है और जो प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है। [2]

(2) जिसने ज़िन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया है कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से अच्छे कर्म कौन करता है, और वह ग़ालिब (प्रभावशाली) और बख़्शने वाला है। [3]

(3) जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किए (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई बेजाबतगी (असंगति) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है। [4]

(4) फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी ओर हीन (और विवश) हो कर थकी हुई लौट आएगी। [5]

(5) और निःसंदेह हम ने संसारीय आकाश को दीपों (तारों) से संवारा और उन्हें शैतानों के मारने का साघन बना दिया और शैतानों के लिए हमनें (नरक का जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया। [6]

(6) और अपने और के साथ कुफ़्र करने वालों के लिए नरक का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरा स्थान है।

(7) जब उसमें ए डाले जाएंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा। [7]

سُورَةُ المُلْكِ
آياتها ٣٠ — ترتيبها ٦٧

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

تَبَٰرَكَ ٱلَّذِى بِيَدِهِ ٱلْمُلْكُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ ٱلَّذِى خَلَقَ
ٱلْمَوْتَ وَٱلْحَيَوٰةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْغَفُورُ ﴿٢﴾
ٱلَّذِى خَلَقَ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا مَّا تَرَىٰ فِى خَلْقِ ٱلرَّحْمَٰنِ مِن
تَفَٰوُتٍ فَٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ
يَنقَلِبْ إِلَيْكَ ٱلْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا ٱلسَّمَآءَ
ٱلدُّنْيَا بِمَصَٰبِيحَ وَجَعَلْنَٰهَا رُجُومًا لِّلشَّيَٰطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ
ٱلسَّعِيرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ
﴿٦﴾ إِذَآ أُلْقُوا۟ فِيهَا سَمِعُوا۟ لَهَا شَهِيقًا وَهِىَ تَفُورُ ﴿٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ
مِنَ ٱلْغَيْظِ كُلَّمَآ أُلْقِىَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾
قَالُوا۟ بَلَىٰ قَدْ جَآءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ ٱللَّهُ مِن شَىْءٍ إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوا۟ لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِىٓ أَصْحَٰبِ
ٱلسَّعِيرِ ﴿١٠﴾ فَٱعْتَرَفُوا۟ بِذَنۢبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ ﴿١١﴾
إِنَّ ٱلَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِٱلْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

(8) क़रीब है कि (अभी) क्रोध के मारे फट पड़े, जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा उससे नरक के दारोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? [8]

(9) वे जवाब देंगे कि बे-शक आया तो था, परन्तु हम ने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नहीं उतारा, तुम भयंकर गुम्राही में ही हो। [9]

(10) और कहेंगे कि यदि हम सुनते होते या समझते होते तो जहन्नमियों (नरकवासियों) में (सम्मिलित) न होते। [10]

कि मैं आप के रब का रसूल हूँ, और इसी तरह उन्हें ईसा के पैदा होने और उनके मुक़र्रब रसूल बनाए जाने की ख़ुश-खबरी देना। (देखिए सुरतु आले इम्रान ४२-४८)

[1] अर्थात वह अपने रब की फ़र्मांबर्दारी और इबादत करने वाले लोगों में से थीं, और उनका घराना नेकी और इताअत का घराना था।

[2] तबारक का अर्थ है : बहुत अधिक ख़ैर और बर्कत वाला। और बादशहत का अर्थ संसार और आखिरत में आकाश और धरती की बादशाहत है।

[3] मौत : शरीर से रूह का सम्पर्क ख़तम होजाने का नाम मौत है, और शरीर से रूह का सम्पर्क बाक़ी रहने का नाम : जीवन है। तो जीवन का अर्थ इन्सान को पैदा करना और उसमें रूह डालना है।
अर्थात तुम पर अपनी शरीअत का बोझ डाल कर तुम्हें आज़माए, फिर तुम्हें उसका बदला दे, और आज़माइश का उद्देश्य नेक लोगों की नेकी और पैरवी करने वालों की पैरवी के कमाल का स्पष्ट होना है।

[4] अर्थात : एक के नीचे एक, कुछ को कुछ के ऊपर।
अर्थात : उनमें कोई इख़्तिलाफ़, जुदाई, टेढ़ापन, और मुख़्लाफ़त नहीं पाओगे, बल्कि यह बराबर और सीधे हैं जो अपने पैदा करने वाले पर दलील (प्रमाण) हैं।
अर्थात : तुम अपनी नज़र दोबारा आकाश पर डालो, और फिर से ध्यान देकर देखो क्या तुम्हें उसकी बड़ाई और चौड़ाई के बावजूद तुम्हें उसमें कोई फ़टन और दराड़ दिखाई दे रहा है।

[5] अर्थात : बार-बार नज़र डालो, जितना अधिक नज़र डाल सको, यह बहुत ऊँची चीज़ है दलील क़ायम करने और बहाने को नष्ट करने के लिहाज़ से।
अर्थात : आकाश की पैदाइश में कोई कमी देखने से अपमानित और नीची होकर लौट आएगी। **अर्थात** : और वह थकी हारी होगी।

[6] अर्थात : यह तारे आकाशों के लिए शोभा होने के साथ-साथ शैतानों को मारने का माध्यम भी हैं जो उन पर आग बन कर गिरते हैं। क़तादा कहते हैं कि अल्लाह तआला ने तीन मक़्सद के लिए तारे पैदा किए : आसमानों की शोभा के लिए, शैतानों को मारने के लिए, और जल-थल में रास्ते के निशान बताने के लिए।
अर्थात : संसार में उन्हें शिहाबे साक़िब से जलाने के बाद हमने आख़िरत में उन शैतानों के लिए नरक का अज़ाब तैयार कर रखा है।

[7] अर्थात : वे नरक में फेंके जाएंगे जिस तरह कि लकड़ी आग में फेंकी जाती है। तो वे जहन्नम की ऐसी आवाज़ सुनेंगे जिस तरह कि गधा पहली बार अपनी बुरी आवाज़ निकालता है। और यह जहन्नम उनके साथ हांडी के खौलने की तरह खौल रही होगी।

[8] अर्थात : जहन्नम काफ़िरों पर अपने कठोर गुस्सा के कारण क़रीब है कि वह फट कर एक दूसरे से अलग-अलग होजाए।
लोगों का एक गिरोह।
यह दारोग़े फ़रिश्तों में से होंगे, जो उनसे डांट के तौर पर पूछेंगे।
संसार में। जो तुम्हें इस दिन से डराता।

[9] अल्लाह के पास से जो हमारा रब है, डराने वाला रसूल आया था, जिसने हमें डराया, और इस दिन के बारे में जानकारी दी।
तो हमने उस डराने वाले को नकार दिया।
और हमने कहा अल्लाह ने तुम्हारी ज़ुबानों पर ग़ैब की बातें, आख़िरत की ख़बरें और शरीअत की कोई ऐसी चीज़ नहीं उतारी है जो वह हमसे चाहता हो।
हम ने उन रसूलों को कहा कि तुम इन बातों को बताने में झूठे और सत्य से बहुत दूर हो।

[10] अर्थात यदि हम उस व्यक्ति की तरह सुने होते जो सुन कर याद रखता है, और उस व्यक्ति की तरह समझे होते जो सत्य और असत्य में फ़र्क़ करता है और उनमें ध्यान देता है, तो हम जहन्नमियों में से न होते, बल्कि हम उन चीज़ों पर ईमान ले आए होते जो अल्लाह ने उतारी है, और हमने रसूल की पैरवी की होती।

وَأَسِرُّواْ قَوْلَكُمْ أَوِ ٱجْهَرُواْ بِهِۦٓ إِنَّهُۥ عَلِيمُۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١٣﴾ أَلَا
يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ هُوَ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
ٱلْأَرْضَ ذَلُولٗا فَٱمْشُواْ فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُواْ مِن رِّزْقِهِۦۖ وَإِلَيْهِ ٱلنُّشُورُ
﴿١٥﴾ ءَأَمِنتُم مَّن فِي ٱلسَّمَآءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ ٱلْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي ٱلسَّمَآءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبٗاۖ
فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْاْ إِلَى ٱلطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَٰٓفَّٰتٖ وَيَقْبِضْنَۚ مَا
يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱلرَّحْمَٰنُۚ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَيْءِۭ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَٰذَا ٱلَّذِي
هُوَ جُندٞ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ ٱلرَّحْمَٰنِۚ إِنِ ٱلْكَٰفِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ
﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَٰذَا ٱلَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُۥۚ بَل لَّجُّواْ فِي عُتُوّٖ
وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِۦٓ أَهْدَىٰٓ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا
عَلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسْتَقِيمٖ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ ٱلَّذِيٓ أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمْعَ
وَٱلْأَبْصَٰرَ وَٱلْأَفْـِٔدَةَۖ قَلِيلٗا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ ٱلَّذِي ذَرَأَكُمْ
فِي ٱلْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَٰدِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا ٱلْعِلْمُ عِندَ ٱللَّهِ وَإِنَّمَآ أَنَا۠ نَذِيرٞ مُّبِينٞ ﴿٢٦﴾

(11) तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार लिया, अब ए नरक-वासी हट जाएं (दूर हों।)[1]
(12) बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा सवाब है।[2]
(13) और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छि तरह जानता है।[3]
(14) क्या वही न जाने जिसने पैदा किया फिर वह बारीक-बीन (सूक्ष्मदर्शी) और जानने वाला भी हो।[4]
(15) वह वही हस्ती है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (और पस्त) बनाया ताकि तुम उसके रास्तों पर चलते-फिरते रहो और उसकी दी हुई रोज़ी को खाओ पिओ, उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।[5]
(16) क्या तुम इस बात से बे-ख़ौफ़ (निर्भय) हो गए हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।[6]
(17) या क्या तुम इस बात से निडर हो गए हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे? फिर तो तुम्हें जानकारी हो ही जाएगी कि मेरा डराना कैसा था।[7]
(18) और उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा अज़ाब कैसा कुछ हुआ?[8]
(19) क्या यह अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (हवा और फ़िज़ा में) थामे हुऐ है। नि:संदेह प्रत्येक वस्तु उसकी निगाह में है।[9]
(20) अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके काफ़िर तो सरासर धोखे ही में हैं।[10]
(21) यदि अल्लाह (तआला) अपनी रोज़ी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जिविका चलाएगा? बल्कि (काफ़िर) तो उद्दण्डता एवं विमुख होने पर अड़ गए हैं।[11]
(22) अच्छा वह व्यक्ति अधिक हिदायत (मार्गदर्शन) पर है जो

---

[1] कुफ़्र करने और नबियों के झुठलाने के गुनाहों को स्वीकार कर लिया जिसके कारण वे जहन्नम के अज़ाब के हक़दार हुए।
तो उनके लिए अल्लाह और उसकी रहमत से दूरी हो, और जब उन्होंने अपने गुनाहों को स्वीकार लिया तो अल्लाह तआला ने उन पर अज़ाब लाज़िम कर दिया; क्योंकि इस स्वीकृति के कारण उन पर दलील क़ायम हो गई, और उनके लिए अब कोई बहाना न बचा।
[2] सारी बातों को अल्लाह तआला जानता है, उस से कोई चीज़ छुपी नहीं रहती, वह तो दिलों के भेद का जानने वाला है।
[3] क्या जिस हस्ती ने उसे पैदा किया, और उसे वुजूद (अस्तित्व) में लाया वही उसके भेद और दिलों में छुपी हुई बात नहीं जानेगा? जबकि उसने उसे अपने हाथ से पैदा किया, और जो किसी चीज़ का बनाने वाला हो, वह उसके बारे में अधिक जानता है।
[4] अर्थात उसका ज्ञान इतना लतीफ़ है कि वह दिलों में उठने वाली बातों को भी जानता है।
और वह ख़बर-दार है उन बातों से जो तुम छुपाते और दिल में रखते हो, उससे कोई भेद में रहने वाली चीज़ भेद में नहीं रह सकती।

[5] समतल और नर्म बनाया, ताकि तुम उस पर आबाद हो सको, और उस पर चल सको, इतना कठोर नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर रहना और चलना फिरना कठिन होजाए।
अर्थात उसके रास्तों और किनारों में चलो फिरो।
जो उसने तुम्हें दी हैं, और तुम्हारे लिए धरती में पैदा की हैं।
अल्लाह तआला आदम की सन्तान पर अपने एहसानों को जता रहा है, कि उसने उन्हें इस धरती पर शक्ति दी, और उन्हें ऐसी योग्यताएं दीं जिन्हें कार्य में लाकर वे इसके फ़ायदे को प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उनके लिए यह भी जानना ज़रूरी है कि उन्हें उसकी तरफ़ लौट कर जाना है, इसी लिए फरमाया : अपनी क़ब्रों से उठ कर उन्हें उसी की ओर जाना है, किसी और की ओर नहीं।
[6] अर्थात : अल्लाह तआला।
अर्थात तुम्हें इस में धंसादे, इसके बाद कि उसने तुम्हारे लिए इसे नर्म और समतल बनाया, कि तुम इसके रास्तों और किनारों में चल सको, जैसे कि क़ारून के साथ उसने किया।
इस नरमी और ठहराव के प्रतिकुल जिस पर अभी वह है हिलने और लरजने लग जाए।
[7] जैसे उसने लूत की क़ौम और अस्हाबुल् फ़ील (हाथियों वाले अब्रहा और उसकी फ़ौज) पर बरसाए, और एक क़ौल यह है कि इसका अर्थ ऐसी हवा है जिसमें कंकरियां हों।
अर्थात : जब तुम यह अज़ाब देख लोगे तो तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा था, लेकिन इस जानने से तुम्हें कोई लाभ न होगा।
[8] अर्थात : मेरा इन्कार करना उन पर कैसा रहा उस अपमानित करने वाले अज़ाब के कारण जिसमें मैंने उन्हें डाला।
[9] उड़ने के समय फ़ज़ा में अपने पंखों को खोले और सिमटाए हुए।
और अपने पंखों को समेटे हुए है।
फ़ज़ा में उड़ने समेटने और फैलाने के समय।
जो हर चीज़ पर शक्ति रखता है।
अर्थात : उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।
[10] अर्थ यह है कि कोई फ़ौज ऐसी नहीं जो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से रोक सके, और तुम्हारी सहायता पर शक्ति रख सके, यदि अल्लाह अपनी दया और सहायता द्वारा तुम्हारी मदद न करे।
शैतान की ओर से बड़े धोके में हैं, वह उसके द्वारा उन्हें धोके देता है।
[11] अर्थात कौन है जो तुम पर वर्षा द्वारा जीविका बरसाए गा, यदि अल्लाह वर्षा को तुम से रोक ले।
सरकशी और हक़ से विमुखता में वह बढ़ते ही चले जारहे हैं, न तो दूसरी समुदायों और उम्मतों से उन्होंने कोई नसीहत पकड़ी और न ही ध्यान से काम लिया।

अपने मुख के बल औंधा होकर चले या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो।[1]
(23) कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाए। तुम बहुत ही कम शुक्र-गुज़ारी (कृतज्ञता व्यक्त) करते हो।[2]
(24) कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया और उसकी ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे।[3]
(25) और (काफ़िर) पूछते हैं कि वह वायदा कब प्रकट होगा यदि तुम सच्चे हो (तो बताओ)?।
(26) (आप) कह दीजिए इसकी जानकारी तो अल्लाह ही को है। मैं तो स्पष्ट रूप से आगाह (सावधान) कर देने वाला हूँ।[4]
(27) जब ए लोग उस (वायदे) को क़रीब-तर (निकटतम) पा लेंगे, उस समय इन काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे और कह दिया जाएगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।[5]
(28) (आप) कह दीजिए! कि ठीक है यदि मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) नष्ट कर दे या हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफ़िरों को दर्द-नाक अज़ाब (कष्टदायी यातना) से कौन बचाएगा?[6]
(29) (आप) कह दीजिए कि वही रह़मान है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हमने भरोसा किया। तुम्हें जल्द ही जानकारी हो जाएगी कि स्पष्ट भटकावे में कौन है?
(30) (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारा (पीने का) पानी धरती चूस जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए निथरा हुवा पानी लाए?[7]

---

[1] मुंह के बल औंधा चलने वाले से मुराद काफ़िर है, जो दुनिया में औंधे मुंह पाप में डूबा रहता है, तो अल्लाह क़ियामत के दिन उसे उसके चेहरे के बल ही उठाएगा। सीधा जो अपने आगे देख रहा हो।
[2] बराबर और समतल रास्ते पर जिसमें टेढ़ापन न हो, इससे मुराद मोमिन है, जो दुनिया में अल्लाह के बनाए हुए क़ानून पर हिदायत और बसीरत के साथ चलता है, तो अल्लाह उसे आखिरत में सिराते मुस्तक़ीम पर सीधा उठाएगा, जो उसे सीधा जन्नत में पहुँचा देगा।
[3] उन्हें धरती में पैदा किया गया, और उसकी पीठ पर उन्हें फैला दिया।
[4] अर्थात क़ियामत कब क़ायम होगी इसकी जानकारी मात्र अल्लाह को है, दूसरा कोई भी इसके बारे में नहीं जानता।
मैं तुम्हें इससे डरा रहा हूँ, और तुम्हें कुफ़्र के परिणाम से डरा रहा हूँ, और तुम्हें केवल वही चीज़ें बता रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है, उसने मुझ से यह नहीं कहा है कि मैं तुम्हें यह बताऊँ कि क़ियामत कब क़ायम होगी।
[5] अर्थात अज़ाब को क़रीब देख लेंगे। काले होजायेंगे, उन पर हवाइयाँ उड़ने लगेंगी, और ज़िल्लत छा जाएगी।
अर्थात संसार में मज़ाक़ के तौर पर तलब कर रहे थे, और जिसकी जल्दी मचा रहे थे।
[6] मौत देकर या क़तल करके, जैसाकि तुम मेरे लिए उसकी तमन्ना और चाहत करते हो, और मेरी मुसीबतों और हलाकत के इन्तिज़ार में रहते हो।
ईमान वालों में से मेरे साथियों को।
कुछ समय के लिए अज़ाब को रोक करके, तो यदि मान लिया जाए कि हमारे साथ ऐसा हो गया।
यह पूछना उन पर रद्द करने के लिए है, अर्थात उन्हें उससे कोई नहीं बचा सकेगा, तो बात बराबर है चाहे अल्लाह अपने रसूल और जो सहाबा उनके साथ हैं हलाक करदे, जैसा कि काफ़िर चाहते हैं, या उन्हें मोहलत दे दे।
[7] मुझे बताओ यदि स्रोतों, कुँवों, और नदियों-नहरों का तुम्हारा वह पानी जिसके द्वारा अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, धरती की तह में इस तरह चला जाए कि बिल्कुल उसका वुजूद ही न रहे, या धरती के इतना भीतर चला जाए के तुम उसे डोलों और हैन्ड पाइपों से निकाल ही न सको। तो कौन इतना अधिक बहता पानी लाएगा जो ख़तम न हो, अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवाए कोई ऐसा नहीं जो उसे तुम्हारे पास वर्षा और नहर द्वारा ला सके, ताकि तुम उससे लाभ उठा सको।

فَلَمَّا رَأَوۡهُ زُلۡفَةٗ سِيٓـَٔتۡ وُجُوهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَقِيلَ هَٰذَا ٱلَّذِي
كُنتُم بِهِۦ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلۡ أَرَءَيۡتُمۡ إِنۡ أَهۡلَكَنِيَ ٱللَّهُ وَمَن مَّعِيَ
أَوۡ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ ٱلۡكَٰفِرِينَ مِنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ ﴿٢٨﴾ قُلۡ هُوَ
ٱلرَّحۡمَٰنُ ءَامَنَّا بِهِۦ وَعَلَيۡهِ تَوَكَّلۡنَاۖ فَسَتَعۡلَمُونَ مَنۡ هُوَ فِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٖ
﴿٢٩﴾ قُلۡ أَرَءَيۡتُمۡ إِنۡ أَصۡبَحَ مَآؤُكُمۡ غَوۡرٗا فَمَن يَأۡتِيكُم بِمَآءٖ مَّعِينِۭ ﴿٣٠﴾

سُورَةُ القَلَمِ

ترتيبها ٦٨ — آياتها ٥٢

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

نٓۚ وَٱلۡقَلَمِ وَمَا يَسۡطُرُونَ ﴿١﴾ مَآ أَنتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُونٖ ﴿٢﴾
وَإِنَّ لَكَ لَأَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُونٖ ﴿٣﴾ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٖ ﴿٤﴾
فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُونَ ﴿٥﴾ بِأَييِّكُمُ ٱلۡمَفۡتُونُ ﴿٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعۡلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعۡلَمُ بِٱلۡمُهۡتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ
ٱلۡمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدُّواْ لَوۡ تُدۡهِنُ فَيُدۡهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعۡ كُلَّ
حَلَّافٖ مَّهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٖ مَّشَّآءِۭ بِنَمِيمٖ ﴿١١﴾ مَّنَّاعٖ لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ
أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلِّۭ بَعۡدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾ أَن كَانَ ذَا مَالٖ وَبَنِينَ
﴿١٤﴾ إِذَا تُتۡلَىٰ عَلَيۡهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلۡأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾

सूरतुल् क़ल्म - 68

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) नून, क़सम (सौगन्ध) है क़लम की और उसकी जो कुछ कि वे (फ़रिश्ते) लिखते है।[8]
(2) आप अपने रब के फ़ज़्ल (कृपा) से पागल नहीं है।[9]
(3) और निःसंदेह आपके लिए अनन्त बदला है।[10]
(4) और निःसंदेह आप बड़े उम्दः (अति उत्तम) स्वभाव पर हैं।[11]
(5) तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे।[7]

---

[8] अक्षरों में से एक अक्षर है, जिस तरह से कि सूरतों के आरम्भ में दूसरे अक्षर आए हैं जिन से सूरतों का आरम्भ हुवा है।
अल्लाह तआला ने क़लम की क़सम खाई है; क्योंकि स्पष्टता इसी के द्वारा होती है, और क़लम आम है, हर उस क़लम को शामिल है जिससे लिखा जाए।
अर्थात उन ज्ञानों की जिन्हें लोग क़लम द्वारा लिखते हैं।
[9] अर्थात ऐ मुह़म्मद! अल्लाह ने तुम्हें नुबुव्वत और आम सरदारी की जो नेमत दी उसके कारण तुम जुनून, पागलपन और दीवानगी से पवित्र हो।
[10] नुबुव्वत का बोझ उठाने में जो परेशानियाँ आप ने झेली हैं, और विभिन्न तरह की जो कठिनाइयाँ बरदाश्त की हैं, उस पर आप के लिए असंख्य सवाब है।
अर्थात अत्यधिक सवाब है जो कभी ख़तम न होगा, या इस एह़सान का बदला लोग चुका ही नही सकेंगे।
[11] अर्थात आप उस अख़्लाक़ पर हैं, जिसका हुक्म अल्लाह ने आप को क़ुरआन में दिया है, सह़ीह़ (मुस्लिम) में उम्मुल् मोमिनीन आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि उन से नबी के अख़्लाक़ के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा : आप के अख़्लाक़ सरापा क़ुरआन के नमूना थे।

سَنَسِمُهُۥ عَلَى ٱلْخُرْطُومِ ١٦ إِنَّا بَلَوْنَٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا۟
لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ١٧ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ١٨ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ
وَهُمْ نَآئِمُونَ ١٩ فَأَصْبَحَتْ كَٱلصَّرِيمِ ٢٠ فَتَنَادَوْا۟ مُصْبِحِينَ ٢١ أَنِ
ٱغْدُوا۟ عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰرِمِينَ ٢٢ فَٱنطَلَقُوا۟ وَهُمْ يَتَخَٰفَتُونَ ٢٣
أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا ٱلْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ٢٤ وَغَدَوْا۟ عَلَىٰ حَرْدٍ قَٰدِرِينَ ٢٥ فَلَمَّا
رَأَوْهَا قَالُوٓا۟ إِنَّا لَضَآلُّونَ ٢٦ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ٢٧ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل
لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ٢٨ قَالُوا۟ سُبْحَٰنَ رَبِّنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ٢٩ فَأَقْبَلَ
بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَٰوَمُونَ ٣٠ قَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا طَٰغِينَ ٣١ عَسَىٰ
رَبُّنَآ أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ إِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا رَٰغِبُونَ ٣٢ كَذَٰلِكَ ٱلْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ
ٱلْءَاخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا۟ يَعْلَمُونَ ٣٣ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ
٣٤ أَفَنَجْعَلُ ٱلْمُسْلِمِينَ كَٱلْمُجْرِمِينَ ٣٥ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ٣٦ أَمْ
لَكُمْ كِتَٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ٣٧ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ٣٨ أَمْ لَكُمْ أَيْمَٰنٌ
عَلَيْنَا بَٰلِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ٣٩ سَلْهُمْ أَيُّهُم
بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ٤٠ أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ إِن كَانُوا۟ صَٰدِقِينَ ٤١
يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ٤٢

(6) कि तुम में भ्रष्ट कौन है।[1]
(7) नि:संदेह तेरा रब अपने रास्ते से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है, और वह रास्ता पाए लोगों को भी भली-भाँति जानता है।[2]
(8) तो आप झुठलाने वालों की (बात) स्वीकार न करें।
(9) वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो यह भी ढीले पड़ जाएं।[3]
(10) और आप किसी ऐसे व्यक्ति की भी कहना न मानें जो अधिक क़स्में खाने वाला हो।[4]

---

[1] अर्थात ऐ मुहम्मद बहुत जल्द आप भी देख लेंगे, और यह काफ़िर भी देख लेंगे कि दोनों गिरोहों में कौन पागल है, और यह क़ियामत के दिन होगा, जब हक़ स्पष्ट हो जाएगा, और आँखों पर पड़े परदे उठ जाएंगे, यह उनके उस गुमान का खंडन है कि मुहम्मद ﷺ पागल और सीधे रास्ते से भटके हुए हैं, इसी लिए फ़रमाया :

[2] कि वास्तव में सीधे रास्ते से भटका हुवा कौन है, स्वयं तुम हो या वह जिस पर तुम सीधे रास्ते से भटकने का आरोप लगा रहे हो, अर्थ यह है कि वे स्वंय ही सीधे रास्ते से भटके हुए हैं, क्योंकि वे ऐसी चीज़ों का विरोध करते हैं जिनमें उनके लिए दुनिया और आख़िरत दोनों में लाभ है, और ऐसी चीजों को चाहते हैं जिनमें उनके लिए दुनिया और आखिरत दोनों में घाटा है।
जो ऐसे रास्ते पर हैं जो उन्हें दोनों जहान की खुशियां दिलाने वाला है।

[3] अर्थ यह है कि काफ़िर चाहते हैं कि तुम उनके साथ नरम व्यवहार करो, तो वे भी तुम्हारे साथ नरम व्यवहार करें, और एक क़ौल यह है कि इसका अर्थ यह है कि यदि तुम सत्य-दर्शन छोड़कर उन की ओर झुक जाओ, तो वे भी तुम्हारी ओर झुक जाएं, और तुम से नरम व्यवहार करने लग जाएं, ताकि तुम उनकी ओर झुक सको।

[4] حَلَّافٍ :जो अधिक बातिल क़स्में खाता हो। مَّهِينٍ: तुच्छ, हक़ीर, अपमानित।

(11) बे-वक़ार, कमीना (दुष्ट, दुराचारी) और चुगली करने वाला हो।[5]
(12) भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो।
(13) घमंडी फिर साथ ही बे-नसब (कुवंश) हो।[6]
(14) (उसकी उद्दण्डता) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।[7]
(15) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ए तो पूर्व के लोगों की कथाएं है।
(16) हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग देंगे।[8]
(17) बे-शक हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली, जिस प्रकार हमने बाग वालों की परीक्षा ली थी। जबकि उन्होंने क़समें खायीं कि सवेरे होते ही उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे।[9]
(18) और इंशा-अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा।[10]
(19) तो उस पर तेरे रब की ओर से एक बला चारों ओर से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।[11]
(20) तो वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।[12]
(21) अब सवेरे होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाजें दीं।[13]
(22) कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही चल पड़ो।
(23) फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।
(24) कि आज के दिन कोई निर्धन तुम्हारे पास न आपाए।[14]

---

[5] هَمَّازٍ : जो लोगों का चर्चा उनके सामने बुराई से करता हो।
مَّشَّاءٍۭ بِنَمِيمٍ : जो लोगों की चुगुलखोरी (पिशुनता) करके, उन्हें लड़ाता और उनके बीच झगड़ा बढ़ाता है।

[6] عُتُلٍّ: उखड़, घमंडी, बुरे स्वभाव का। ज़ज्जाज कहते हैं कि عُتُلٍّ का अर्थ : कठोर और बुरे स्वभाव के हैं।
इन बुराईयों के साथ-साथ वह زَنِيمٍ (कुवंश, जिसकी नसब में सन्देह हो, किसी वंश से मिला दिया गया हो, हालांकि वह उसमें से न हो) भी है।

[7] तुम इसकी बात इस कारण से न मानो कि वह धनी और सन्तान वाला है, और एक क़ौल यह है कि इससे मुराद डांट फटकार है, इस तरह से कि अल्लाह ने धन और संतान के रूप में जो नेमतें दी हैं, उसका बदला वह यह दे रहा है कि वह अल्लाह, उसके रसूल और उसकी निशानियों का इन्कार कर रहा है।

[8] अर्थात हम उसकी नाक पर कालक लगादेंगे, जिसके कारण उसका चेहरा जहन्नम में डाले जाने से पहले काला होजाएगा, और उसकी यह नाक उसके जहन्नमी होने की निशानी होगी, फिर हम उस पर बदनुमाई थोप देंगे जो उससे हटेगी नहीं, उसी से वह पहचान लिया जाएगा।

[9] अर्थात अल्लाह तआ़ला ने नबी के शराप के कारण मक्का के काफ़िरों को भूक और काल में ग्रस्त किया।
जिनकी घटना क़ुरैश में प्रसिद्ध थी, कहा जाता है कि यमन में सन्आ शहर से ६ मील की दूरी पर एक व्यक्ति का बागीचा था, वह उसमें से अल्लाह का हक़ अदा करता था, जब वह मर गया और फुलवारी उसके सन्तान के क़ब्ज़े में आगई तो उन लोगों ने उस फुलवारी के लाभ लोगों से रोक लिए, और उसमें जो अल्लाह का हक़ था उसके साथ कंजूसी की, और कहने लगे कि : धन थोड़ा है, और संतान अधिक हैं, हमारे लिए इन चीज़ों के करने की गुन्जाइश नहीं जो हमारे पिता किया करते थे, उन लोगों ने ग़रीबों को उस फुलवारी के लाभ से महरूम कर देने का इच्छा कर लिया तो उनका परिणाम वही हुवा जिसका चर्चा अल्लाह ने अपनी किताब में किया।
अर्थात जब उन लोगों ने क़सम खाया कि वे उसके फ़ल तड़के सवेरे ही तोड़ लेंगे।

[10] अर्थात इन-शा-अल्लाह नही कह रहे थे, और एक क़ौल यह है कि उसमें से ग़रीबों के लिए उस मात्रा को अलग नहीं किया जिसे उनका बाप उन्हें देता था।

[11] अर्थात अल्लाह की ओर से एक आग उस पर घूम गई जिसने उसे जलाकर राख कर दिया।

[12] ऐसे बाग़ की तरह जिसके फल तोड़ लिए गए हों, और उसमें उसके फलों में से कुछ भी बाक़ी न रहा हो।

[13] अर्थात एक-दूसरे से कहने लगे कि तड़के सवेरे ही निकल पड़ो, और फ़क़ीरों के आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाओ।

[14] अर्थात यह बात एक-दूसरे से चुपके चुपके कह रहे थे, और उनका यही कहना था कि इस बाग़ में आज कोई फ़क़ीर आने न पाए ताकि वह तुम से मांग सके और कह सके कि : तुम लोग भी उसे वह दो जो तुम्हारे बाप देते थे।

25 और लपके हुए सुबह-सवेरे गए, (समझ रहे थे) कि हम
क़ाबू पा गए।[1]
26 फिर जब उन्होंने बाग़ देखा तो कहने लगे कि बे-शक
हम रास्ता भूल गए हैं।[2]
27 नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिए गए।
28 उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि: मैं तुम सबसे कहता
न था कि तुम (अल्लाह की) पाकी क्यों नहीं बयान करते?[3]
29 (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पवित्र है, बे-शक
हम ही अत्याचारी थे।[4]
30 फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा भला कहने लगे।
31 कहने लगे हाय अफ़सोस! बे-शक हम उद्दण्ड थे।
32 क्या अजब (विचित्र) है कि हमारा रब हमें इससे उत्तम
बदला दे दे, हम तो अब अपने प्रभु से ही आशा रखते हैं।[5]
33 इसी प्रकार प्रकोप (अज़ाब) आता है, और आख़िरत
(परलोक) का अज़ाब बहुत बड़ा है। काश! उन्हें बुद्धि होती।[6]
34 बे-शक परहेजगारों (सदाचारियों) के लिए उनके रब के
पास उपहारों वाले स्वर्ग (जन्नत) हैं।
35 क्या हम मुसलमानों को पापियों के बराबर कर देंगे?[7]
36 तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय कर रहे हो?[8]
37 क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?[9]
38 कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों।[10]
39 या हमसे तुमने कुछ ऐसी क़स्में ली हैं जो क़ियामत
(प्रलय के दिन) तक बाक़ी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है,
जो तुम अपनी ओर से मुक़र्रर (निर्धारित) कर लो?[11]

---

1 अर्थात अपने वंश के लोगों से बिना मिले और बिना उन्हें साथ लिए अकेले चल पड़े, यह भ्रम करते हुए कि वे अपने बाग़ पर बिना किसी मदद के स्वंय शक्ति रखते हैं।

2 अर्थात वे आपस में एक-दूसरे से कहने लगे : कहीं हम अपने बाग़ का रास्ता तो नहीं भूल गए हैं, यह तो नहीं हो सकता, फिर जब उन लोगों ने ध्यान से देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि यही उनका बाग़ है, और अल्लाह तआला ने इस फुलवारी के फल को नष्ट करके उन्हें सज़ा दी है, तो कहने लगे : अल्लाह ने हमें हमारे बाग़ के फल से महरूम कर दिया; क्योंकि हमने फ़क़ीरों से इसके लाभ को रोक लेने का इच्छा कर लिया था।

3 जो उनमें बेहतर, बुद्धिमान और नेकी वाला था।
क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि गरीबों को उन के हक़ से महरूम कर देने की तुम्हारी यह कार्रवाई सरासर अत्याचार और अन्याय का काम है, तुम क्यों नहीं उसकी पवित्रता करते जबकि तुम्हें यह विश्वास हो चुका है कि वह अत्याचारियों की ताक में रहता है।

4 अर्थात हमारे बाग़ के साथ जो कुछ उसने किया उस में वह अत्याचारी नहीं; क्योंकि यह हमारे पाप के कारण हुवा, जो पाप हमने फ़क़ीरों के साथ उसके लाभ को रोक कर किया है।

5 अर्थात माफ़ी की आशा रखते हुए उससे भलाई चाहने वाले हैं।

6 अर्थात इसी अज़ाब की तरह जिससे हमने इन्हें आज़माया हम काफ़िरों को भी संसार में आज़माएंगे। लेकिन उन्हें समझ-बूझ नहीं।

7 क़ुरैश वंश के काफ़िर सरदार कहा करते थे कि मुहम्मद (ﷺ) जो गुमान कर रहे हैं यदि सहीह़ हुवा तो हमारा और मुसलमानों का हाल वैसे ही होगा जैसे संसार में है, आख़िरत में हमें भी वे सारी नेमतें प्राप्त होंगी जो उन्हें प्राप्त होंगी, तो अल्लाह तआला उन्हें ख़बर-दार कर रहा है कि यह न्याय नहीं है कि जो अल्लाह की पैरवी पाबन्दी के साथ करता हो, और जो पापी अत्याचारी हो अल्लाह के आदेशों की परवाह न करता हो, दोनों में फ़र्क़ न किया जाए और दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार हो।

8 इस तरह का टेढ़ा न्याय। गोया कि बदला देने की बात तुम्हारे ही ज़िम्मे हो।

9 जिसमें तुम पढ़ रहे हो कि आज्ञाकारी, अवज्ञाकारी (फ़र्माबर्दार नाफ़र्मान) की तरह हैं।

10 अर्थात क्या उस किताब में यह भी है कि आख़िरत में तुम्हारे लिए वही सारी चीज़ें होंगी जो तुम चाहोगे।

11 तुम्हारा अल्लाह से कोई वादा है जिसे तुमने उससे क़स्में लेकर पुख़्ता और मज़बूत कर लिया है कि वह तुम्हें जन्नत में लेजाएगा, और यह वादा क़ियामत तक के लिए निर्धारित हो जिस से वह उस समय तक न निकल सकता हो जब तक कि वह उस दिन तुम्हारे लिए इसका निर्णय न करदे।

خَٰشِعَةً أَبْصَٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا۟ يُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ وَهُمْ سَٰلِمُونَ
(٤٣) فَذَرْنِى وَمَن يُكَذِّبُ بِهَٰذَا ٱلْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُونَ (٤٤) وَأُمْلِى لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِى مَتِينٌ (٤٥) أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُم
مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ (٤٦) أَمْ عِندَهُمُ ٱلْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ (٤٧) فَٱصْبِرْ
لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ ٱلْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ (٤٨) لَّوْلَآ
أَن تَدَٰرَكَهُۥ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِۦ لَنُبِذَ بِٱلْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ (٤٩) فَٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ
فَجَعَلَهُۥ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ (٥٠) وَإِن يَكَادُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَٰرِهِمْ
لَمَّا سَمِعُوا۟ ٱلذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُۥ لَمَجْنُونٌ (٥١) وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ (٥٢)

سُورَةُ الحَاقَّةِ

ترتيبها ٦٩ — آياتها ٥٢

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْحَآقَّةُ (١) مَا ٱلْحَآقَّةُ (٢) وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْحَآقَّةُ (٣) كَذَّبَتْ ثَمُودُ
وَعَادٌۢ بِٱلْقَارِعَةِ (٤) فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا۟ بِٱلطَّاغِيَةِ (٥) وَأَمَّا
عَادٌ فَأُهْلِكُوا۟ بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ (٦) سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ
سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَٰنِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى ٱلْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ
كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ (٧) فَهَلْ تَرَىٰ لَهُم مِّنۢ بَاقِيَةٍ (٨)

40 उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का ज़िम्मेदार
(और दावेदार) है?[12]
41 क्या उनके कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने
साझेदारों को ले आएं यदि ए सच्चे हैं।[13]
42 जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सजदा करने के
लिए बुलाए जाएंगे तो (सजदा) न कर सकेंगे।[14]
43 उनकी आँखें नीची होंगी और उन पर अपमान (और
ज़िल्लत) छा रही होगी, हालाँकि ए सजदे के लिए, (उस समय

---

12 ऐ मुहम्मद! आप डांट और फटकार के तौर पर इन काफ़िरों से पूछिए कि इनमें कौन इस बात का ज़िम्मेदार है?

13 क्या उनके भ्रम अनुसार अल्लाह के कुछ साझी हैं जो इस बात की शक्ति रखते हों कि वे उन्हें आख़िरत में मुसलमानों की तरह करदें?

14 जिस दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोल देगा जो घटना की कठोरता का प्रमाण होगा। इमाम बुख़ारी इत्यादि ने अबू सईद ख़ुद्री رضي الله عنه से रिवायत किया है उन्हों ने कहा कि मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को फ़र्माते हुए सुना कि : "हमारा रब पिंडली खोलेगा (जिस तरह कि उसकी शान के लायक़ है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उसके सामने सज्दे में गिर जाएंगे, परन्तु वे लोग बाक़ी रहेंगे जो दिखलावे के लिए सज्दे किया करते थे, वे सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी तख़्ते की तरह एक होजाएगी, जिसके कारण उनके लिए झुकना सम्भव न हो सकेगा।
अर्थात सारी सृष्टि अल्लाह का सज्दा करेगी, काफ़िर और मुनाफ़िक़ भी सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी सख़्त होजाएगी और सज्दे के लिए झुक न सकेगी; क्योंकि वे संसार में ईमान नहीं लाए थे, और न ही अल्लाह का सज्दा किया था।

भी) बुलाए जाते थे जब भले-चंगे थे।[1]
(44) तो मुझे और इस बात को झुठलाने वाले को छोड़ दें,हम उन्हें
इस प्रकार धीरे धीरे खींचेंगे कि उन्हें जानकारी भी न होगी।[2]
(45) और मैं उन्हें ढील दूँगा बे-शक मेरी तद्बीर (योजना)
बड़ी मज़्बूत है।[3]
(46) क्या तू उनसे कोई बद्ला चाहता है, जिसके भार से ए
दबे जाते हों?[4]
(47) या क्या उनके पास ग़ैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है
जिसे वे लिखते हों?[5]
(48) तो तू अपने रब के आदेश का सब्र (धैर्य) से (इन्तिज़ार
करें) और मछली वाले की तरह न हो जा, जबकि उसने दुःख
की अवस्था में पुकारा।[6]
(49) यदि उसे उसके रब की ने'मत (कृपा) न पालेती तो
बे-शक वह बुरी अवस्था में चटयल मैदान (ऊसर धरती) पर
डाल दिया जाता।[7]
(50) तो उसे उसके रब ने फिर नवाज़ा (निर्वाचित किया)
और उसको नेक लोगों में कर दिया।[8]
(51) और क़रीब है कि (यह) काफ़िर अपनी तेज़ निगाहों (तीव

---

[1] उन पर बहुत अधिक ज़िल्लत, और रुसवाई छाई हुई होगी।
अर्थात संसार में। अर्थात निरोग थे, और सज्दा करने की शक्ति थी, फिर भी यह नहीं करते थे। इब्राहीम तैमी कहते हैं कि : अज़ान और इक़ामत द्वारा बुलाये जाते थे लेकिन इन्कार कर देते थे।

[2] अर्थात उनका मुआमला आप मेरे ज़िम्मे कर दें, अपने को तबाही में न डालें, मैं अकेले ही उनके लिए काफ़ी हूँ, और بِهَٰذَا ٱلْحَدِيثِ से मुराद क़ुरआन मजीद है। हम उन्हें धीरे-धीरे अज़ाब की ओर ले चल रहे हैं, यहाँ तक कि हम उसमें उन्हें इस तरह फँसा देंगे कि वे जान ही न सकेंगे कि यह ढील है; क्योंकि वे उसे दया समझ रहे थे और उसका परिणाम नहीं सोच पा रहे थे, और न वे यही समझ पा रहे थे कि जल्द ही वे इसमें फँसने वाले हैं।

[3] अर्थात मैं उन्हें समय दूँगा कि वे पाप पर पाप करते चले जाएं।
अर्थात उन्हें इस अज़ाब की पकड़ में लेने की मेरी योजना बहुत मज़्बूत है, वे इस से बच कर निकल नहीं पाएंगे।

[4] مَّغْرَمٍ क्या जो आप इन लोगों को ईमान की दावत देते हैं उस पर इन से कोई बदला मांगते हैं, जो उस बदले के तावान का बोझ उठाए हूए हो। अर्थात कंजूसी के कारण उसका बोझ उठाना उन पर भारी पड़ रहा हो, तो क्या आपने उनसे कोई बदला मांगा है जिसके कारण वे इसे स्वीकार करने से मुंह मोड़ रहे हों।

[5] या उनके पास ग़ैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है, जिससे जो दलीलें वे चाहते हों अपने भ्रम अनुसार लिख लेते हों, और उनके द्वारा वे आप से लड़ाई कर रहे हों।

[6] मछली वाले से मुराद यूनुस हैं, अर्थात आप गुस्से और उकताहट में उनकी तरह न होजाएं।
अल्लाह अपने नबी को तसल्ली दे रहा है, और उन्हें सब्र से काम लेने का आदेश दे रहा है, और यह कि उतावलेपन से काम न लें, जैसे कि मछली वाले ने जल्दबाज़ी की, उनका क़िस्सा सूरतुल् अम्बियॉ, यूनुस और साफ़्फ़ात में बीत चुका है, और उनकी यह दुआ इन शब्दों द्वारा थी : لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبْحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ अर्थात इस अवस्था में कि वह दुःख और तक्लीफ़ से भरे हुए थे, और यह भी सम्भव है कि इस से मुराद उनका मछली के पेट में बन्द होना हो।

[7] इससे मुराद उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ मिलनी है कि उन्होंने अल्लाह से तौबा की, और अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली।
यदि उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ न मिली होती तो वह मछली के पेट से एक चटयल और खाली मैदान में डाल दिए जाते।
जो पाप उन्होंने किया था उसके कारण वह बुराई और मलामत किए जाने के हक़दार होते और अल्लाह के दया से धुत्कार दिए जाते।

[8] अर्थात उन्हें नुबुव्वत के कारण अपना मुख्लिस, चुना हुवा और प्रिय भक्त बना लिया।
अर्थात नेकी और पुण्य में कामिल कर दिया। और एक क़ौल यह है कि उनकी ओर नुबुव्वत लौटा दी, और उनकी सिफ़ारिश स्वंय उनके और उनके वंश के बारे में स्वीकार की, और उन्हें रसूल बनाया और एक लाख या इससे अधिक लोगों की ओर उन्हें भेजा, तो वे सब ईमान लाए।

दृष्टि) से आपको फिसला दें, जब कभी क़ुरआन सुनते हैं, और
कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है।[9]
(52) और वास्तव में यह (क़ुरआन) तो पूरी जगत वालों के
लिए सरासर शिक्षा ही है।

सूरतुल हाक्क़ः - 69

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) साबित (सिद्ध) होने वाली।[10]
(2) क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली?
(3) और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है?
(4) उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने
झुठलाया था।[11]
(5) (जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो बहुत ही भयंकर
(और ऊंची) आवाज़ से नष्ट कर दिए गए।[12]
(6) और आद अत्यन्त तीव्रगति की पाले वाली (तेज़ो तुन्द)
आँधी से नष्ट कर दिए गए।[13]
(7) जिसे उन पर लगाता सात रात और आठ दिन तक
(अल्लाह ने) लगाए रखा तो तुम देखते कि ए लोग धरती पर
इस प्रकार पछाड़े गए हैं जैसे खजूर के खोखले तनें हों।[14]
(8) तो क्या उनमें से कोई भी तुझे बाक़ी दिखाई दे रहा है?[15]
(9) फ़िरऔन और उससे पूर्व के लोग और जिनकी बस्तियाँ
उलट दी गयीं, उन्होंने भी त्रुटियाँ (गलतियां) कीं।[16]
(10) और अपने रब के रसूल (संदेष्टा) की नाफ़र्मानी की,
(अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) कठोर पकड़ में ले लिया।[17]
(11) जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हमने तुम्हें
नाव पर चढ़ा लिया।[18]
(12) ताकि उसे तुम्हारे लिए नसीहत (और यादगार) बना दें

---

[9] अर्थात जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो दुश्मनी और शत्रुता के कारण वे आप को तो अपनी तेज़ निगाहों से घूर रहे होते हैं, जैसे कि वे आप को अपनी जगह से फिसला देंगे, अर्थ यह है कि वे आप को बड़े ही गुस्से से भरी निगाह से देखते हैं।

[10] ٱلْحَآقَّةُ "साबित होने वाली" इससे मुराद क़ियामत है, इसे "साबित होने वाली" इसलिए कहा गया है कि उस दिन ह़क़ीक़तें साबित और स्पष्ट होजाएंगी।

[11] بِٱلْقَارِعَةِ "खड़का देने वाली" अर्थात क़ियामत को इसे "खड़का देने वाली" इसलिए कहा गया है कि यह अपने डरावनेपन और भयानकपन से लोगों को खड़का देगी।

[12] ثَمُودُ समूद से मुराद सालिह़ عليه السلام की क़ौम है, और بِٱلطَّاغِيَةِ ताग़िया से मुराद ऐसी चीख़ जो सीमा पार कर जाए, अर्थात बहुत ही भयंकर चीख़।

[13] عَادٌ आद हूद عليه السلام की क़ौम है, और بِرِيحٍ صَرْصَرٍ पाले वाली हवा, عَاتِيَةٍ सरकश, किसी के वश में न आने वाली बहुत भयंकर आँधी।

[14] अर्थात उन पर सात रात और आठ दिनों तक छोड़े रखा जो लगातार चली जा रही थी, न वह रुक रही थी और न ही उसकी तेज़ी में कोई कमी आ रही थी, और उन्हें कंकरियों से मार रही थी। अर्थात उन्हें पूरे तौर पर ख़तम कर देने वाली और मिटा देने वाली थी। अर्थात अपने घरों में।
धरती पर मरे हुए पड़े थे।

[15] अर्थात कोई दल जो उनमें से बाक़ी बचा हो, या कोई व्यक्ति जो उनमें से जीवित रह गया हो तुम्हें दिखाई दिया है? (पूछना इनकार करने के लिए है) अर्थात उनमें से कोई जीवित नहीं रहा।

[16] काफ़िर वंशों और उम्मतों में से। وَٱلْمُؤْتَفِكَٰتُ से मुराद लूत عليه السلام के वंश के गाँव हैं। ग़लत कर्म किए अर्थात शिर्क और पाप किए।

[17] उनकी ऐसी पकड़ की जो दूसरी क़ौमों की पकड़ से बढ़कर थी, अर्थात सभों से अधिक सख़्त थी, और वह यह थी कि उन्हें उनके घरों समेत पलट दिया और उन पर पत्थरो की वर्षा की।

[18] अर्थात पानी ऊँच्राई में सीमा पार कर गया।
حَمَلْنَٰكُمْ में كُمْ के मुख़ातब नबवी ज़माने के लोग हैं, अर्थ यह है कि तुम अगरचे नाव में नहीं थे, परन्तु अपने उन पुर्खों के पीठों में थे जिन्हें हमनें नाव में बैठाया था, ٱلْجَارِيَةِ से मुराद नूह़ عليه السلام की नाव है, क्योंकि वह उन्हे बाढ़ के पानी में लेकर चल रही थी।

और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।[1]
(13) तो जब सूर (नरसिंघा) में एक फूँक फूँकी जाएगी।
(14) और धरती और पर्वत उठा लिए जाएंगे, और एक ही चोट में कण-कण कर दिए जाएंगे।[2]
(15) उस दिन हो पड़ने वाली घटना (प्रलय) हो पड़ेगी।[3]
(16) और आकाश फट जाएगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण (बोदा) हो जाएगा।[4]
(17) और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे और तेरे रब का अर्श (आसन) उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।[5]
(18) उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत (पेश) किए जाओगे, तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।[6]
(19) तो जिसका कर्मपत्र (नामए-आ'माल) उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।[7]
(20) मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ।[8]
(21) तो वह एक सुखद (दिल-पसन्द) जीवन में होगा।[9]
(22) उच्च (बुलन्द व बाला) जन्नत में।[10]
(23) जिसके फल झुके पड़े होंगे।
(24) (उससे कहा जाएगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कर्मों के बदले जो तुमने पहले किए।[11]
(25) परन्तु जिसे उसका नामए-आ'माल (कर्मपत्र) बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा नामए-आ'माल दिया ही न जाता।
(26) और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।[12]
(27) काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।[13]

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَن قَبْلَهُۥ وَٱلْمُؤْتَفِكَٰتُ بِٱلْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا۟ رَسُولَ
رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ إِنَّا لَمَّا طَغَا ٱلْمَآءُ حَمَلْنَٰكُمْ فِى ٱلْجَارِيَةِ
﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَٰعِيَةٌ ﴿١٢﴾ فَإِذَا نُفِخَ فِى ٱلصُّورِ
نَفْخَةٌ وَٰحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَحُمِلَتِ ٱلْأَرْضُ وَٱلْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَٰحِدَةً ﴿١٤﴾
فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ ٱلْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَٱنشَقَّتِ ٱلسَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ
﴿١٦﴾ وَٱلْمَلَكُ عَلَىٰٓ أَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَٰنِيَةٌ
﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ
كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ إِنِّى ظَنَنتُ أَنِّى مُلَٰقٍ
حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِى عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِى جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾
قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى ٱلْأَيَّامِ
ٱلْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ
﴿٢٥﴾ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ ٱلْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ أَغْنَىٰ
عَنِّى مَالِيَهْ ۜ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّى سُلْطَٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ ٱلْجَحِيمَ
صَلُّوهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِى سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَٱسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾ إِنَّهُۥ
كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾

(28) मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।[14]
(26) और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।[15]
(27) काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।[16]
(28) मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।[17]
(29) मेरा ग़ल्बा भी मुझसे जाता रहा।[18]
(30) (हुक्म होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक़ पहना दो।
(31) फिर उसे जहन्नम में डाल दो।[19]
(32) फिर उसे ऐसी ज़ंजीर में जिसकी नाक सत्तर हाथ की है, जकड़ दो।[20]

---

1 अर्थात नूह (عليه السلام) की क़ौम की बर्बादी के घटना को तुम्हारे लिए ऐ उम्मते मुहम्मद (ﷺ)!
अर्थात इब्रत और नसीहत बनादें ताकि तुम उसके द्वारा अल्लाह के शक्तिमान और उसके बदले की कठोरता पर दलील पकड़ सको।
याद रखने वाले लोग जो कुछ सुनें उसे सुन कर याद रख सकें।
2 अर्थात वे दोनों एक ही चोट में कण-कण (ज़र्रा-ज़र्रा) कर दिए जाएंगे, अधिक चोट की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, और एक क़ौल यह है कि वे दोनों एक क्षण में बिछा दिए जाएंगे, और चटयल मैदान बना दिए जाएंगे।
3 अर्थात क़ियामत क़ायम होजाएगी।
4 अर्थात आकाश में जो फ़रिश्तें हैं उनके उतरने के कारण आकाश फट जाएगा, और वह उस दिन कम्ज़ोर और ढीला-ढाला होजाएगा।
5 अर्थात फ़रिश्ते आकाश के किनारों पर होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन्हें धरती पर उतरने का आदेश देगा तो वे धरती पर उतर जाएंगे, और धरती को और धरती की सारी चीज़ों को घेर लेंगे।
अर्थात आठ निकटस्थ (मुक़र्रब) फ़रिश्ते।
6 अर्थात अल्लाह के सामने हिसाब-किताब के लिए तुम्हारी पेशी होगी।
अर्थात अल्लाह तआला से न तो स्वयं तुम छुपे रहोगे, और न ही तुम्हारे कथन और कर्म छुपे होंगे, कोई भी चीज़ उससे छुपी नहीं रहेगी।
7 هَآؤُمُ का अर्थ है : लो।
ऐसा वह प्रसन्न और ख़ुश होकर कहेगा, उन अक़ीदों और सुकर्मों के कारण जिन्हें वह अपने नाम-ए-आ'माल (कर्मों के रजिस्टर) में लिखा हुवा देखेगा।
8 मुझे संसार में इस चीज़ की अच्छी तरह जानकारी थी, और मुझे इस पर पूरा विश्वास था कि आख़िरत में मेरा हिसाब होगा।
9 जहां मात्र मन-पसंद चीज़ें ही होंगी, कोई घृणित चीज़ नहीं होगी।
10 ऊँचा इसलिए कहा है; क्योंकि वह जन्नत आकाश में होगी, या पदों और दर्जों में ऊँची होगी।
11 अर्थात उसके फल बहुत ही क़रीब होंगें हर व्यक्ति आसानी से तोड़ सकेगा, चाहे वह खड़ा हो, या बैठा या लेटा।
अपने उन कर्मों के बदले जो तुम ने संसार में करके प्रलय के दिन के लिए भेजे थे।
12 मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।
13 काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आर्ज़ू वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।
14 अर्थात जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।
15 मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।
16 काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आर्ज़ू वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।
17 अर्थात जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।
18 और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और अकारत गईं, और एक क़ौल यह है कि सुल्तान से मुराद मर्यादा और मर्तबा, शासन और सिंघासन है, और उस समय अल्लाह तआला फ़रमाएगा :
19 خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ ٱلْجَحِيمَ صَلُّوهُ बेड़ियों में उसका हाथ उसके गर्दन से जकड़ दो। फिर उसे नरक में ले जाकर डाल दो ताकि वह उसकी आग में जलता रहे।
20 سِلْسِلَةٍ का अर्थ है : ज़न्जीर और ذَرْعُهَا का अर्थ है : उसकी लम्बाई, सुफ़्यान कहते हैं : हमें यह बात पहुँची है कि वह ज़न्जीर उसके

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿٣٦﴾ لَا يَأْكُلُهُ
إِلَّا الْخَاطِئُونَ ﴿٣٧﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٩﴾
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ
تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا
مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

ترتيبها ٧٠ — آياتها ٤٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِنَ
اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾
إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ
﴿٨﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾

(33) बे-शक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था।
(34) और निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था।
(35) तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है,[1]
(36) और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है।[2]
(37) जिसे पापियों के सिवाय कोई नहीं खाएगा।[3]
(38) तो मुझे क़सम है उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो।
(39) और उन चीज़ों कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।[4]
(40) कि बे-शक यह (क़ुरआन) मुअज़्ज़ज़ रसूल (प्रतिष्ठित संदेष्टा) का क़ौल (कथन) है।[5]
(41) यह किसी कवि (शाएर) का कथन नहीं, (अफसोस) तुम बहुत कम विशवास रखते हो।[6]
(42) और न किसी ज्योतिषी का कथन है, (अफसोस) तुम बहुत कम नसीहत ले रहे हो।[7]
(43) (यह तो) सारे जहां के रब का उतारा हुवा है।[8]
(44) और यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।[9]
(45) तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते।[10]
(46) फिर उसके दिल की नस काट देते।[11]
(47) फिर तुममें से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता।[12]
(48) अवश्य यह (क़ुरआन) परहेजगारों के लिए नसीहत है।[13]
(49) और हमें पूरी जानकारी है कि तुम में से कुछ उसके झुटलाने वाले हैं।[14]
(50) निःसंदेह (यह झुठलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।[15]
(51) और निःसंदेह यह यक़ीनी (विश्वसनीय) सत्य है।[16]
(52) तो तू अपने अज़ीम रब (महिमावान प्रभु) की पाकी बयान कर।

सूरतुल् मआरिज़ - 70

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) एक माँग करने वाले ने उस अज़ाब (प्रकोप) की माँग की जो (स्पष्टतः) होने वाला है।
(2) काफिरों पर जिसे कोई हटाने वाली नहीं।
(3) उस अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों वाला है।
(4) जिसकी ओर फ़रिश्ते और रूह चढ़ते हैं एक दिन में जिसकी अवधि (मिक्दार) पचास हज़ार वर्ष की है।
(5) तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख (सब्र कर)।
(6) बे-शक यह उस (अज़ाब) को दूर समझ रहे हैं।
(7) और हम उसे क़रीब ही देखते हैं।
(8) जिस दिन आकाश तेल की तलछट जैसे हो जाएगा।
(9) और पर्वत रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।
(10) और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।
(11) (हालाँकि) एक-दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, पापी उस दिन के अज़ाब के बदले प्रतिदान (फ़िद्ए) में अपने बेटों को देना चाहेगा।
(12) अपनी पत्नी को और अपने भाई को।
(13) और अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।
(14) और धरती के सभी लोगों को देना चाहेगा, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।
(15) (मगर) कभी भी यह न होगा। बे-शक वह शोले (ज्वाला) वाली (आग) है।
(16) जो मुख और सिर की खाल खींच लेने वाली है।

चूतड़ में घुसा करके मुँह के रास्ते से निकाल ली जाएगी।

1 अर्थात प्रलय के दिन आख़िरत में उसका कोई क़रीबी नहीं होगा, जो उसके कुछ भी काम आसके, या उसकी सिफ़ारिश कर सके, इसलिए कि यह ऐसा दिन होगा कि इसमें क़रीबी अपने क़रीबी से और मित्र अपने मित्र से भागेगा।

2 غِسْلِين उस बदबूदार (दुर्गंधयुक्त) धोवन को कहते हैं जो शरीर से खून और पीप धोते समय गिरता है।

3 इससे मुराद ख़ताकार और पापी हैं जो संसार में कुफ़्र और शिर्क किया करते थे।

4 अर्थात मैं उन सारी चीजों की क़सम खा रहा हूँ चाहे वे दिखाई देती हों या न दिखाई देती हों।

5 لَقَوْلُ क़ौल से मुराद तिलावत है, अर्थात यह क़ुर्अन प्रतिष्ठित रसूल की तिलावल है, और رَسُولٍ كَرِيمٍ से मुराद : मुहम्मद ﷺ हैं। या अर्थ यह है कि यह एक ऐसा क़ौल है जिसे एक प्रतिष्ठित रसूल तुम्हें पहुँचा रहा है, इस स्तिथि में رَسُولٍ كَرِيمٍ से मुराद जिब्रईल عليه السلام होंगे।

6 जैसा कि तुम समझते हो क्योंकि यह कविता नहीं है।

---

7 जैसा कि तुम समझ रहे हो; क्योंकि कहानत (शकुनी-कर्म) दूसरी चीज़ है, इसमें और कहानत में कोई चीज़ मेल नहीं खाती है। قَلِيلًا अर्थ : थोड़ा, (यह दोनों जगहों पर इन्कार के अर्थ में है) अर्थात : न तो तुम क़ुरआन पर ईमान ही रखते हो, और न ही उससे कुछ नसीहत (उपदेश) पकड़ते हो।

8 अर्थात : प्रतिष्ठित रसूल की जुबान से निकलने वाला यह कलाम (कथन) रब्बुलआलमीन का उतारा हुवा कलाम है।

9 यदि यह रसूल मुहम्मद या जिब्रईल जैसा कि ऊपर चर्चा हुवा, स्वंय अपनी ओर से कुछ गढ़ने की प्रयास करते और उसका सम्बंध अल्लाह से करते।

10 तो हम अपने दाएँ हाथ से उसकी पकड़ करते।

11 गर्दन की वह नस जो दिल से मिलती है, और जिसके कटने से आदमी तुरन्त मर जाता है, यह तसवीर है उसके बुरी तरह हलाक कर दिए जाने की, जैसे राजा लोग ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिन से वे क्रोधित हों।

12 तुम में से कोई ऐसा नहीं जो हमें उस से रोक सके, या उसको हम से बचा सके, तो भला फिर वह तुम्हारे कारण हम पर झूठ क्यों बोलेगा।

13 क्योंकि इससे लाभ उठाने वाले वास्तविक रूप से यही लोग हैं।

14 तुम में से कुछ लोग क़ुरआन को झुटला रहे हैं, हम उन्हें उसकी दंड देकर रहेंगे।

15 यह क़ुरआन का झुटलाना क़ियामत के दिन काफ़िरों के लिए अफसोस और पछतावा होगा।

16 क्योंकि यह अल्लाह की ओर से है, इसमें कण बराबर भी शंका की गुन्जाइश नहीं।

يُبَصَّرُونَهُمْ يَوَدُّ ٱلْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِى مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾
وَصَٰحِبَتِهِۦ وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيلَتِهِ ٱلَّتِى تُـْٔوِيهِ ﴿١٣﴾ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ
جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ ﴿١٤﴾ كَلَّآ ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾ تَدْعُوا۟
مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰٓ ﴿١٨﴾ ۞ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ خُلِقَ هَلُوعًا
﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ ٱلشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ ٱلْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا
ٱلْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ ٱلَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَآئِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَٱلَّذِينَ فِىٓ
أَمْوَٰلِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآئِلِ وَٱلْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَٱلَّذِينَ يُصَدِّقُونَ
بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٢٦﴾ وَٱلَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾ إِنَّ عَذَابَ
رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَٰفِظُونَ ﴿٢٩﴾ إِلَّا عَلَىٰٓ
أَزْوَٰجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ٱبْتَغَىٰ وَرَآءَ
ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْعَادُونَ ﴿٣١﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ لِأَمَٰنَٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَٰعُونَ
﴿٣٢﴾ وَٱلَّذِينَ هُم بِشَهَٰدَٰتِهِمْ قَآئِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَٱلَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ
﴿٣٤﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ فِى جَنَّٰتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ
﴿٣٦﴾ عَنِ ٱلْيَمِينِ وَعَنِ ٱلشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾ أَيَطْمَعُ كُلُّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ
أَن يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّآ ۖ إِنَّا خَلَقْنَٰهُم مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

(17) वह प्रत्येकउस व्यक्ति को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुख मोड़ता है।
(18) और इकट्ठा करके संभाल रखता है।
(19) बे-शक इन्सान अत्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।
(20) जब उसे कष्ट पहुँचता है तो हड़बड़ा जाता है।
(21) और जब सुख मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।
(22) मगर वह नमाज़ी।
(23) जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।
(24) और जिनके धन में निर्धारित (मुक़र्ररः) भाग है।
(25) माँगनेवालों का भी और प्रश्न करने से बचने वालों का भी।
(26) और जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।
(27) और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं।
(28) बे-शक उनके रब का अज़ाब निर्भय होने की चीज़ नहीं।
(29) और जो लोग अपने गुप्तांगों (शरमगाहों) की (हराम से) रक्षा करते हैं।
(30) हां उनकी पत्नियों और लौन्डियों के बारे में जिनके वे मालिक हैं, वे निन्दित नहीं।
(31) अब जो कोई इसके सिवाय (मार्ग) ढूंढेगा तो ऐसे लोग सीमा उल्लंघन करने वाले होंगे।
(32) और जो अपनी अमानतों का और अपने वचन का ध्यान रखते हैं।
(33) और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और डटे) रहते हैं।
(34) और जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।
(35) यही लोग जन्नतों में आदर (और इज़्ज़त) वाले होंगे।
(36) तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वह तेरी ओर दौड़ते आते हैं?
(37) दाएं और बाएं से गुट के गुट।
(38) क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे सुख-सुविधा वाले जन्नत में ले जाया जाएगा?
(39) (ऐसा) कभी भी न होगा, हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।
(40) तो मुझे क़सम है पूर्वों और पश्चिमों के रब की, (कि) हम यक़ीनन् क़ुद्रत रखने वाले हैं।
(41) इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आएं, और हम विवश नहीं हैं।
(42) तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें, यहाँ तक कि ए अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वादा किया जाता है।
(43) जिस दिन क़ब्रों से ए दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी स्थान की ओर तेज़ी से जा रहे हैं।
(44) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा रही होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था।

सूरतु नूह़ - 71

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) बे-शक हम ने नूह (عليه السلام) को उनके समुदाय (क़ौम) की ओर भेजा कि अपनी क़ौम को डरा दो (और सचेत कर दो) इससे पहले कि उनके पास कष्टदायी यातना (दर्द-नाक अज़ाब) आजाए।[1]
(2) (नूह عليه السلام ने) कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।
(3) कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरा कहना मानो।
(4) तो वह तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा। बे-शक अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रूकता नहीं। काश (यदि) तुम्हें जानकारी होती।[2]
(5) (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात-दिन तेरी ओर बुलाया।
(6) मगर मेरे बुलाने से ए लोग और अधिक भागने लगे।[3]
(7) और मैंने जब कभी उन्हें तेरी बख़्शिश (क्षमादान) के लिए बुलाया उन्होंने अपनी ऊंगलियाँ अपने-अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया और अड़ गए और बड़ा घमंड किया।[4]

---

[1] पहले इसका चर्चा होचुका है कि नूह عليه السلام सब से पहले रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपना रसूल बनाकर भेजा, और सूरतुल-अन्कबूत में इसका भी चर्चा हो चुका है कि वह अपनी क़ौम में कितनी अवधि तक रहे। अर्थात हमने उनसे कहा कि तुम अपने समुदाय के व्यक्तियों को डराओ। अर्थात नरक का अज़ाब, या इससे मुराद वह बाढ़ है जो नूह عليه السلام के समुदाय पर आई थी।

[2] अर्थात तुम्हारे पिछले पाप जो रसूल की अनुकरण और उनकी दावत स्वीकार करने से पहले तुम से हुए हैं। अर्थात तुम्हारी मृत्यु को उस अन्तिम सीमा तक टाल देगा जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित की है, मुराद यह है कि तुम्हारी उम्मत (अनुयायी) की अवधि बढ़ादेगा और उसे अधिक समय तक धरती पर बसाए रखेगा जब तक वह अनुकरण करेगी।
अर्थात अज़ाब जिसे उसने तुम्हारे लिए नियुक्त कर रखा है, जब वह आजाएगा और तुम कुफ़्र पर अड़े रहोगे तो वह टाला नहीं जा सकेगा, वह हर हाल में आकर ही रहेगा, इसिलए तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम आगे बढ़कर ईमान और इताअत का रास्ता अपना लो।
अर्थात यदि तुम्हें समझ होती तो तुम यह जान लेते कि अल्लाह की ओर से निश्चित समय जब आ जाता है तो वह टाला नहीं जा सकता।

[3] अर्थात जिस बात की ओर मैं उन्हें बुलाता था वे उससे बराबर भागते और अधिक दूर होते चले गए।

[4] अर्थात जब कभी मैंने उन्हें ईमान और अनुकरण के रास्ते की ओर

فَلَآ أُقْسِمُ بِرَبِّ ٱلْمَشَٰرِقِ وَٱلْمَغَٰرِبِ إِنَّا لَقَٰدِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا۟ وَيَلْعَبُوا۟ حَتَّىٰ يُلَٰقُوا۟ يَوْمَهُمُ ٱلَّذِى
يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ ٱلْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ
﴿٤٣﴾ خَٰشِعَةً أَبْصَٰرُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ ٱلَّذِى كَانُوا۟ يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

سُورَةُ نُوحٍ

ترتيبها ٧١ — آياتها ٢٨

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾ أَنِ ٱعْبُدُوا۟
ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ
﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا
فِرَارًا ﴿٦﴾ وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ
فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟ ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟ ٱسْتِكْبَارًا
﴿٧﴾ ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ
لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾

(8) फिर मैंने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया।
(9) और बे-शक मैंने उनसे खुल कर भी कहा और
चुपके-चुपके भी।[1]
(10) और मैंने कहा कि अपने रब से अपने पापों को माफ़ करवा
लो। (और माफी माँगो) बे-शक वह बड़ा बख़्शनेवाला (क्षमाशील) है।[2]
(11) वह तुम पर आकाश को खुब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।
(12) और तुम्हें खूब माल और सन्तान में बढ़ा देगा और
तुम्हें बाग़ देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।
(13) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की बर्तरी
(सर्वोच्चता) पर विश्वास नहीं करते?[3]
(14) हालान्कि उसने तुम्हें विभिन्न प्रकार से पैदा किया है।[4]

(15) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआ़ला) ने किस तरह
ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिया है?
(16) और उनमें चाँद को खूब जगमगाता बनाया है और
सूरज को रौशन चिराग़ बनाया है?[5]
(17) और तुमको धरती से (एक विशेष विधि से) उगाया है (और
पैदा किया है)[6]
(18) फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जाएगा और (एक विशेष
विधि से) फिर तुम्हें निकालेगा।[7]
(19) और तुम्हारे लिए धरती को अल्लाह (तआ़ला) फ़र्श बनाया है।
(20) ताकि तुम उसके चौड़े रास्तों में चलो फिरो।[8]
(21) नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने
मेरी ना-फ़र्मानी की और ऐसों का फ़र्माबर्दारी की जिनके माल
और संतान ने उनको (निःसंदेह) हानि ही में बढ़ाया।[9]
(22) और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।[10]
(23) और उन्होंने कहा कि कभी भी अपने देवताओं को न छोड़ना
और न वद्द, सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़ और नस्र को (छोड़ना)।[11]
(24) और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया, (हे रब) तू
उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।[12]
(25) ए लोग अपने पापों के कारण (पानी में) डुबो दिए गए
और नरक में पहुँचा दिए गए और अल्लाह के सिवाय उन्होंने
अपना कोई सहायता करने वाला न पाया।[13]

बुलाया जिसके द्वारा तू क्षमा प्रदान करता है। ताकि वह मेरी आवाज़ न सुन सकें। अर्थात अपने कपड़ों से उन्होंने अपने चेहरे ढाँक लिए, ताकि वे मुझे देख न सकें, और मेरी बात सुन न सकें। अर्थात कुफ़्र पर डटे रहे।

[1] अर्थात खुल्लम-खुल्ला और उद्घोषित-रूप से सभाओं और मज्लिसों में उन्हें दावत दी। अकेले-अकेले भी बुलाता रहा, अर्थ यह है कि विभिन्न तरीक़ों से मैंने उन्हें दावत दी, और एक क़ौल यह है कि وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا का अर्थ है : उनके घरों में जा-जाकर मैंने उन्हें दावत दी।

[2] مِّدْرَارًا खूब वर्षा होता हुवा, इसमें इस बात की दलील है कि अल्लाह से माफ़ी मांगना वर्षा और जीविका की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा माध्यम है।

[3] अर्थात उसकी बरतरी और बड़ाई से नहीं डरते।

[4] वीर्य, फिर जमा हुवा खून, फिर गोश्त के टुकड़े से लेकर पूरी पैदाइश तक, जैसा कि उसका विवरण सुरतुल-मोमिनून में बीत चुका है, फिर माँ के पेट से एक बालक के रूप में तुम निकलते हो, फिर जवान होते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो, फिर क्योंकर उस हस्ती की बड़ाई और प्रतिष्ठा में तुम कोताही करते हो जिसने तुम्हें पैदा किया और इन विभिन्न मरहलों से गुज़ारा।

[5] अर्थात सारे आकाशों में जबकि वह उन सातों आकाशों में से संसार वाले आकाश में है। जिससे धरती जगमगाती रहती है, और उसमें कोई गर्मी नहीं होती है। (तो गोया वह आकाश के माथे का झूमर है।)
धरती पर बसने वालों के लिए एक रौशन चिराग़ बनाया, (ताकि उसकी रौशनी में वह जीविका प्राप्त करने के लिए प्रयास कर सकें।)

[6] अर्थात तुम्हारे पिता आदम عليه السلام को जिन्हें अल्लाह ने मिट्टी से बनाया, फिर उन्के संतान बनाए जो धरती के उन हिस्सों को जो फ़लों और अनाजों और जानवरों में परिवर्तित होगए हैं, खाकर बड़े होते हैं।

[7] अर्थात धरती ही में, इस तरह कि तुम मरकर उसी में दफ़न होगे, फिर तुम्हारे अंग गल कर मिट्टी होजाएंगे और धरती में मिल जाएंगे।
अर्थात क़ियामत के दिन उसी से निकाल कर तुम्हें यकायक खड़ा कर देगा, पहले की तरह धीरे-धीरे नहीं।

[8] (فَجّ فِجَاجًا का बहुवचन है) जिसका अर्थ है : दो पहाड़ों के बीच का रास्ता, अर्थात इस धरती पर अल्लाह तआ़ला ने बड़े-बड़े चौड़े रास्ते बना दिए हैं,)ताकि इन्सान आसानी से एक शहर से दूसरे शहर में या एक मुल्क से दूसरे मुल्क में आ-जा सके।)

[9] अर्थात उनके छोटे व्यक्तियों ने अपने सरदारों और धनवानों का अनुकरण किया जिनके धन और संतान की बढ़ौतरी ने दुनिया और आख़िरत के घाटे ही में उन्हें बढ़ाया है।

[10] उनका अपने बेवक़ूफ़ों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या पर उभारना था।

[11] अर्थात उन सरदारों ने अपने अनुपालन करने वालों को नूह की अवज्ञाकारी पर उभारते हुए उनसे कहा : तुम अपने उपास्यों की पूजा को न छोड़ना। यह बुत उनकी क़ौम के बुज़ुर्गों की मूर्तियां थीं जो उन्होंने बना रखे थे जिन्हें बाद में अरब-वासी भी पूजने लगे थे।
अर्थात इन मूर्तियों की पूजा न छोड़ना, वद्द, सुवा'अ़, यग़ूस, यऊक़ और नस्र इनकी क़ौम के नेक और बुज़ुर्ग व्यक्तियों के नाम हैं, जो आदम और नूह عليهما السلام के बीच गुज़रे थे, उन लोगों ने उनके फ़ोटो और उनकी मूर्तियां बनाकर अपनी इबादत की जगहों में रख ली थीं, फिर उनके बाद जिन लोगों का जनम हुवा उनसे इब्लीस ने आकर कहा कि : तुम से पहले जो लोग गुज़र चुके हैं वे इनकी पूजा करते थे, इसलिए तुम भी इनकी पूजा किया करो, और इस तरह उन लोगों ने इनकी इबादत शुरू करदी, इस तरह मूर्ति-पूजा आरम्भ हुवा, फिर यह मूर्तियां अरब महा द्वीप मे पहुँच गए और यहां भी कुछ वंशो ने इनकी पूजा शुरू करदी।

[12] अर्थात उनके बड़ों और सरदारों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और एक क़ौल यह है कि उन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और उन्हे घाटे और नुक़्सान में अधिक बढ़ाया।

[13] (مِّمَّا में مَا ज़ाइदा है) अर्थात वह अपने कुकर्मों के कारण भीषण बाढ़ में डुबा दिए गए, फिर उसके बाद आग में घुसा दिए गए, आग से मुराद आख़िरत में नरक

يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ﴿١١﴾ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَٰلٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل
لَّكُمْ جَنَّـٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَـٰرًا ﴿١٢﴾ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾
وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾ أَلَمْ تَرَوْا۟ كَيْفَ خَلَقَ ٱللَّهُ سَبْعَ سَمَـٰوَٰتٍ
طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَجَعَلَ ٱلْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ ٱلشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾
وَٱللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ
إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَٱللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوا۟ مِنْهَا
سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِى وَٱتَّبَعُوا۟ مَن لَّمْ يَزِدْهُ
مَالُهُۥ وَوَلَدُهُۥٓ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوا۟ مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوا۟
لَا تَذَرُنَّ ءَالِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا۟ كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا ضَلَـٰلًا ﴿٢٤﴾
مِّمَّا خَطِيٓـَٔـٰتِهِمْ أُغْرِقُوا۟ فَأُدْخِلُوا۟ نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا۟ لَهُم مِّن دُونِ
ٱللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَـٰفِرِينَ
دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا۟ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوٓا۟ إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَّبِّ ٱغْفِرْ لِى وَلِوَٰلِدَىَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِىَ
مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَـٰتِ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارًۢا ﴿٢٨﴾

(26) और नूह (عليه السلام) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर
किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़![1]
(27) यदि उन्हें छोड़ देगा तो निःसंदेह ए तेरे दूसरे बन्दों को
भी भटका देंगे और ए कुकर्म काफ़िरों ही को जन्म देंगे।[2]
(28) हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माँ-बाप और जो ईमान
लाकर मेरे घर में आए और सारे ईमानवाले पुरूषों और सारी
ईमानवाली महिलाओं को माफ़ कर दे और काफ़िरों को
विनाश (बर्बादी) के सिवाय अन्य किसी बात में न बढ़ा।[3]

सुरतुल् जिन्न - 72

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) (हे मुहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे वह्य (प्रकाशना)
की गयी है[4] कि जिन्नों के एक गिरोह ने (कुरआन) सुना तथा
कहा कि हम ने अजीब कुरआन[5] सुना है।
(2) जो सत्य रास्ते की ओर मार्गदर्शन देता है, हम तो उस
पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी
दूसरे को साझीदार न बनाएंगे।
(3) तथा अवश्य हमारे रब की शान महान है[6], न उसने
किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न सन्तान।
(4) और अवश्य हम में का मूर्ख अल्लाह के बारे में झूठी
बातें कहा करता था[7]।
(5) और हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि इन्सान
और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगाएं[8]।
(6) वास्तविकता यह है कि कुछ इन्सान कुछ जिन्नों से पनाह (शरण)
मांगते थे[9], जिससे जिन्नात अपनी उद्दण्डता में और बढ़ गए[10]।
(7) और (इन्सानों) ने भी जिन्नों की तरह ए समझ लिया
था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा। (अथवा किसी
को पुनः जीवित न करेगा)।
(8) और हमने आकाश को टटोल कर देखा[11] तो उसको अत्यन्त
चौकस सुरक्षाकर्मियों[12] और तीव्र शोलों (ज्वालाओं)[13] से पूर्ण पाया।
(9) और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में
जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे[14]। अब जो भी कान
लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है[15]।
(10) और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी

की आग है, और एक क़ौल यह है कि इससे मुराद क़ब्र का अज़ाब है।

1 जब नूह़ عليه السلام उनके ईमान से निराश होगए, तो अल्लाह तआ़ला की इस वह्य أَنَّهُۥ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ ءَامَنَ (तेरी क़ौम में से जो ईमान लाचुके हैं उनके सिवाय अब अधिक कोई ईमान नहीं लाएगा) के बाद उनहोंने उन्हें शरापा, और अल्लाह ने उनकी इस शराप को स्वीकार किया, और डुबा दिया,(دَيَّارًا فَيْعَال के वज़न पर "دَيْوَار" है, वाव को या से बदल कर इद्ग़ाम करदिया गया है) जिस के माने है : जो बस्ती में रहता बसता हो, मतलब यह है कि उन काफ़िरों में से किसी को भी बाक़ी न छोड़।

2 सीधे रास्ते से। जो तेरी अनुकरण करने वाले नहीं।
जो तेरी नेमतों की नाशुक्री (कृतध्नता) में सीमा छलांगे हुए हैं।

3 हलाकत और घाटे के।
नूह़ عليه السلام की यह शराप क़ियामत तक आने वाले सारे अपराधियों के लिए है

4 हे मुह़म्मद ﷺ आप अपनी उम्मत को कह दीजिए कि अल्लाह ने जिब्रईल عليه السلام द्वारा मुझ पर वह्य की कि जिन्नों में से कुछ ने मुझे कुरआन पढ़ते सुना, और जो सूरत उस समय आप पढ़ रहे थे वह ٱقْرَأْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلَّذِى خَلَقَ थी, और अल्लाह ने जिन्नों में से कोई रसूल नहीं भेजा बल्कि सभी रसूल आदम عليه السلام की संतान इन्सानों में से ही हुए।

5 जब वे अपनी क़ौम में वापस लौटे तो उन्होंने उनसे कहा कि : हमने एक पढ़ा जाने वाला कलाम सुना है, जो अपनी फ़साह़त और बलाग़त, स्पष्टता और साहित्य में बड़ा अनोखा और निराला है, और एक कथन यह है कि अपनी नसीह़त के लिहाज़ से अधिक अचंभे वाला है, और एक कथन यह है कि बर्कत के लिहाज़ से बहुत आश्चर्य-जनक है।

6 अर्थात हमारे रब की बड़ाई और शान, और उसका जलाल इससे बहुत अधिक ऊँचा और बुलन्द है कि उसकी पत्नी या सन्तान हो। और एक कथन यह है कि جَدُّ से मुराद शक्ति है।

7 जिन्नात अपने मुश्रिक़ और मूर्ख जिन्नों के इस झूटे दावों का कि अल्लाह की पत्नी और उसके संतान हैं खंडन कर रहे हैं। شَطَطًا के मायने हैं : कुफ्र में बढ़ना, सीधे रास्ते से दूर होना, और सीमा उल्लंघन करना।

8 हमने तो यह भ्रम कर रखा था कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह के बारे में झूठ बोल ही नहीं सकते, इसी लिए उन्हों ने जब यह कहा कि अल्लाह के साझी हैं और वह पत्नी और संतान वाला है तो हम ने उनकी यह बात मान ली।

9 अज्ञानकाल (जाहिलियत) में अरबों में रिवाज था कि जब कोई व्यक्ति किसी घाटी में पड़ाव डालता तो वह जिन्नों के सरदार से शरण मांगते हुए कहता : **أعوذ بسيد هذا الوادي من شر سفهاء قومه** "मैं इस घाटी के सरदार की पनाह चाहता हूँ उसके वंश के मूर्खों से" इस तरह वह जिन्नों के सरदार की पनाह में रात बिताता यहाँ तक कि सवेरा होजाता।

10 अर्थात जब जिन्नों ने यह देखा कि इन्सान हमसे डरते हैं और हमारी पनाह चाहते हैं, तो उन्हों ने उनकी उद्दंडता और मूर्खता को और बढ़ावा दिया, और उन्होंने इन्सानों पर अधिक अत्याचार किया। या इन्सानों के दुःख, कमज़ोरी और डर-भय को अधिक बढ़ा दिया।

11 अर्थात अपने स्वभाव अनुसार हमने खोज शुरू करदी कि आकाश में क्या घटना घटी है।

12 यह सुरक्षाकर्मी फ़रिश्तों में से थे, जो उसकी सुरक्षा कर रहे थे कि कोई आकाश की बात चोरी-छुपे न सुन ले। जो कि شَدِيدًا ताक़तवर हैं।

13 وَشُهُبًا यह तारों के ज्वाले हैं। यह सुरक्षा नबी ﷺ की बेसत के बाद शुरू हूई थी, अल्लाह तआ़ला ने इन आकाशों की सुरक्षा जलादेने वाले तिव्र ज्वालों से किया।

14 ताकि वह आकाश की ख़ब्रे फ़रिश्तों से सुन कर ज्योतिषियों को बताएं।

15 उस सुनने वाले जिन्नात की ताक में रहते हैं ताकि आकाश की बात सुनने से रोकने के लिए उसे इससे मारा जाए।

ترتيبها ٧٢ — **سُورَةُ الجِنِّ** — آياتها ٢٨

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ ٱسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ ٱلْجِنِّ فَقَالُوٓا۟ إِنَّا سَمِعْنَا قُرْءَانًا
عَجَبًا ﴿١﴾ يَهْدِىٓ إِلَى ٱلرُّشْدِ فَـَٔامَنَّا بِهِۦ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ أَحَدًا ﴿٢﴾
وَأَنَّهُۥ تَعَٰلَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا ٱتَّخَذَ صَٰحِبَةً وَلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ وَأَنَّهُۥ كَانَ
يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى ٱللَّهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّآ أَن لَّن تَقُولَ ٱلْإِنسُ
وَٱلْجِنُّ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ وَأَنَّهُۥ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ ٱلْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ
مِّنَ ٱلْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا۟ كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ
ٱللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾ وَأَنَّا لَمَسْنَا ٱلسَّمَآءَ فَوَجَدْنَٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَٰعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن
يَسْتَمِعِ ٱلْءَانَ يَجِدْ لَهُۥ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾ وَأَنَّا لَا نَدْرِىٓ أَشَرٌّ أُرِيدَ
بِمَن فِى ٱلْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾ وَأَنَّا مِنَّا ٱلصَّٰلِحُونَ
وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّآ أَن لَّن نُّعْجِزَ
ٱللَّهَ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُۥ هَرَبًا ﴿١٢﴾ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا ٱلْهُدَىٰٓ
ءَامَنَّا بِهِۦ ۖ فَمَن يُؤْمِنۢ بِرَبِّهِۦ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾

बुराई का विचार किया गया है [1] या उनके रब का विचार
उनके साथ भलाई का है।
(11) और यह कि (यक़ीनन) कुछ तो हममें से सच्चे हैं तथा
कुछ विपरीत भी हैं [2]। हम विभिन्न तरह से बटे हुए हैं।
(12) तथा हमें पूरा यक़ीन हो गया कि हम अल्लाह तआला को
धरती में कभी बेबस नहीं कर सकते [3] और न हम भागकर
उसे हरा सकते हैं [4]।
(13) और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला
चुके, और जो भी अपने प्रभु पर ईमान लाएगा उसे न किसी
हानि का डर है न अत्याचार (और दुःख) का [5]।

(14) और, हम में से कुछ तो मुसलमान हैं तथा कुछ अन्यायी हैं [6]।
तो जो मुसलमान हो गए उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली [7]।
(15) और जो अत्याचारी हैं वे नरक का ईंधन बन गए [8]।
(16) (और हे नबी ﷺ यह भी कहदो :) कि यदि ए लोग सीधे
रास्ते पर जमे रहते तो ज़रूर हम उन्हें बहुत अधिक पानी पिलाते [9]।
(17) ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा तो लें [10] और जो व्यक्ति
अपने रब के ज़िक्र से मुंह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला)
उसे कठोर अज़ाब में डाल देगा [11]।
(18) और यह कि मस्जिदें मात्र अल्लाह ही के लिए (विशेष)
हैं [12], तो अल्लाह के साथ किसी अन्य को न पुकारो।
(19) और जब अल्लाह का बंदा (भक्त) [13] उसकी इबादत के
लिए खड़ा हुआ [14] तो क़रीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर
उस पर पिल पड़ें [15]।
(20) आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने रब को ही
पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता।
(21) कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का
अधिकार नहीं [16]।
(22) कह दीजिए कि मुझे हरगिज़ कोई अल्लाह से नही बचा सकता
[17] तथा मैं कभी उसके सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता।
(23) परन्तु (मेरा काम) तो मात्र अल्लाह की बात और उसका
संदेश (लोगों को) पहुँचा देना है [18], (अब) जो भी अल्लाह
और उसके रसूल की नाफ़र्मानी करेगा उसके लिए नरक की
आग है जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे।
(24) यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको वचन
दिया जाता है, तो जल्द भविष्य में जान लेंगे कि किस का
मददगार (सहायक) कम्ज़ोर [19] और किसका गिरोह कम है [20]।
(25) (आप) कहदीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका वादा
तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मेरा प्रभु उसके

---

1 आकाश की इस चौकस सुरक्षा द्वारा बुराई का विचार है, या رَشَدًا भलाई का विचार है। इब्ने ज़ैद का कथन है कि : इब्लीस ने कहा : हमें इसकी जानकारी नहीं कि अल्लाह ने इस रुकावट के द्वारा धरती वालों पर अज़ाब उतारने का विचार किया है, या यह कि उनकी ओर रसूल भेजेगा।

2 कुछ जिन्नों ने अपने साथी दूसरे जिन्नों से कहा जब उन्होंने अपने साथियों को मुहम्मद पर ईमान लाने की दावत दी : क़ुरआन सुनने के बाद हम में से कुछ लोग उस पर ईमान लाकर नेक बन गए, और कुछ ईमान नहीं लाए, इस तरह हमारी विभिन्न टोलियाँ हो गईं, और हमारे इच्छाएँ विभिन्न हो गईं। सईद कहते हैं : वे जिन्न मुसलमान भी थे, यहूदी, नस्रानी और अग्नि के पूजारी भी।

3 अवश्य हमने यह जान लिया कि यदि अल्लाह ने हमारे साथ किसी चीज़ की इच्छा की तो वह होकर रहे गी, हम उस से बच नहीं सकते।

4 उससे भागते हुए हम उसे बेबस नहीं कर सकते।

5 بَخْسًا के मायने हैं : नुक़्सान, कमी और घाटा, और رَهَقًا के मायने हैं : अत्याचार, ज़्यादती और सरकशी।

6 अत्याचारी हैं जो सीधे रास्ते से भटके हुए हैं।

7 उन्होंने सीधे रास्ते का इच्छा किया, और उसकी खोज के लिए प्रयास किया, तो उन्हें उसकी तौफ़ीक़ मिल गई।

8 नरक की आग का ईंधन होंगे, जिन से नरक की आग भड़काई जाएगी, जिस तरह से कि वह काफ़िर इन्सानों से भड़काई जाएगी।

9 अर्थ यह है कि मुझे इस बात की वह्य की गई है कि यदि जिन्नात या इन्सान या दोनों सीधे रास्ते पर जमे रहते तो لَأَسْقَيْنَٰهُم مَّآءً غَدَقًا अर्थात : अल्लाह तआला उन्हें बहुत अधिक पानी पिलाता।

10 ताकि हम उनकी परीक्षा ले लें और जान लें कि वे नेमतें प्राप्त करके किस प्रकार शुक्र करते हैं।

11 और जो व्यक्ति क़ुरआन से, या नसीहत से मुंह मोड़ेगा तो उसे बहुत ही मुश्किल और कठोर अज़ाब में डाल देगा।

12 और मेरी ओर उसने इस बात की भी वह्य की कि मस्जिदें मात्र अल्लाह के लिए विशेष हैं, वे मूर्ति पूजा के लिए नहीं हैं, فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا तो जिन चीज़ों की शक्ति मात्र अल्लाह को है उस पर उसके सिवाय किसी सृष्टि से सहायता न मांगो चाहे वह जितना अधिक मर्यादा वाला क्यों न हो; इसलिए कि दुआ इबादत है।

13 इस बन्दे से मुराद नबी ﷺ हैं।

14 अल्लाह को पुकार रहा था, और उसकी पूजा कर रहा था, और या घटना बत्ने नख़्ला का है, जैसा कि चर्चा हुवा।

15 तो क़रीब था कि जिन्नात अल्लाह के रसूल से क़ुरआन सुनने के लिए भीड़ के कारण उन पर झुण्ड के झुण्ड पिल पड़ते।

16 मुझे इसकी शक्ति नहीं कि दुनिया और आख़िरत में तुम से किसी नुक़्सान और हानि को रोक सकूं, और न ही इसकी कि तुम्हें कोई लाभ पहुँचा सकूं।

17 ठिकाना, पनाह और बचने का स्थान।

18 मगर यह कि अल्लाह की ओर से पहुँचा दूं, और उसके संदेशानुसार कर्तव्य करूँ, दूसरों को जिन चीज़ों का आदेश देता हूँ स्वंय मैं भी वही करूँ, यदि मैंने ऐसा किया तो छुटकारा पालूंगा नहीं तो मै भी बर्बाद हो जाउँगा।

19 सेना जिससे कि सहायता लिया जाता है।

20 क्या संख्या में वह कम हैं या मोमिन लोग।

लिए दूर की मुद्दत [1] मुक़र्रर (निर्धारित) करेगा।

26 वह ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला है तथा अपने ग़ैब पर किसी को अवगत (बाख़बर) नहीं कराता।

27 सिवाय उस रसूल के जिसे वह प्रिय बना ले [2], इसलिए कि उसके भी आगे-पीछे पहरे-दार लगा देता है [3]।

28 ताकि जानकारी हो जाए कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिए [4], अल्लाह ने उनके आस-पास की चीजों को घेर रखा है [5] और प्रत्येकवस्तु की संख्या की गिनती कर रखी है।

सूरतुल् मुज़्ज़म्मिल - 73

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 हे चादर में लिपटने वाले।

2 रात (के समय तहज्जुद की नमाज़) में उठ खड़े हो जाओ, परन्तु थोड़ी देर।

3 आधी रात या उससे भी कुछ कम।

4 या उस पर बढ़ा दे और क़ुर्आन को ठहर-ठहर कर (स्पष्ट) पढ़ा कर।

5 अवश्य हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही उतारेंगे।

6 अवश्य रात का उठना दिल-जम्ई (मन की एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत उचित करने वाला है।

7 अवश्य तुझे दिन में बहुत से कार्य होते है।

8 और तू अपने प्रभु के नाम जप किया कर और समस्त सृष्टि से अलग होकर उसकी ओर मुतवज्जिह (ध्यानमग्न) हो जा।

9 पूर्व और पश्चिम का रब जिसके सिवाय कोई सत्य पूज्य नहीं, तू उसी को अपना कार-साज़ बना ले।

10 और जो कुछ वे कहते है तू सहन करता रह और उन्से अच्छी प्रकार से अलग-थलग रह।

11 और मुझे और उन झुठलाने वाले खुश-हाल लोगों को छोड़ दे और उन्हें थोड़ा अवसर दे।

12 अवश्य हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ नरक है।

13 और गले में अटकने वाला भोजन है और दुःख-दायक अज़ाब है।

14 जिस दिन धरती और पर्वत थरथरा जाएंगे और पर्वत भुरभुरी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

15 अवश्य हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हमने फ़िर्औन की ओर रसूल भेजा था।

---

[1] सीमा और मुद्दत, बस अल्लाह के सिवाय किसी को इसकी जानकारी नहीं कि क़ियामत कब होगी।

[2] पिछले हुक्म से उस रसूल को अलग कर लिया जिसे वह पसन्द करले, तो अपने ग़ैबी ज्ञान में से जो चाहे उन्हें वह्य द्वारा बता देता है, और उसे उनके लिए मो'जज़ा (चमत्कार) और उनकी नुबुव्वत पर सच्चा प्रमाण बनाया, और ज्योतिषी और उस जैसे अन्य लोग जो पत्थरों से मारते हैं, हाथों की लकीरें पढ़ते हैं, या पक्षी उड़ाते हैं, उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें अल्लाह ने पसंद किया है, बल्कि वह तो अल्लाह के साथ कुफ़्र करने वाले, अपने अन्दाज़े, झूठ और अटकल द्वारा अल्लाह पर आरोप लगाने वाले हैं।

[3] अर्थात अल्लाह तआ़ला रसूल के आगे पीछे फ़रिश्तों में से सुरक्षाकर्मी निर्धारित कर देता है, जो उस की सुरक्षा करते हैं ताकि जब वह उस पर वह्य को स्पष्ट करे तो शैतान आड़े न आसके, और इसी तरह उसे घेरे रहते हैं ताकि शैतान उसे सुन न सकें और न ज्योतिषियों को बता सकें।

[4] ताकि अल्लाह तआ़ला जिस तरह ग़ैब द्वारा जानता है उसी तरह यह देख भी ले कि उसके रसूलों ने उसके संदेशा ठीक-ठीक पहुँचा दिए हैं।

[5] अर्थात घात में रहने वाले फ़रिश्तों के पास की, या रसूलों के पास की जो अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं, या उन लोगों के पास की चीजों को घेर रखा है।

وَأَنَّا مِنَّا ٱلْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا ٱلْقَـٰسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ
تَحَرَّوْا۟ رَشَدًا ﴿١٤﴾ وَأَمَّا ٱلْقَـٰسِطُونَ فَكَانُوا۟ لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾
وَأَلَّوِ ٱسْتَقَـٰمُوا۟ عَلَى ٱلطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَـٰهُم مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِۦ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَأَنَّ
ٱلْمَسَـٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾ وَأَنَّهُۥ لَمَّا قَامَ عَبْدُ ٱللَّهِ
يَدْعُوهُ كَادُوا۟ يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا۟ رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ
بِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ إِنِّى
لَن يُجِيرَنِى مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ إِلَّا بَلَـٰغًا
مِّنَ ٱللَّهِ وَرِسَـٰلَـٰتِهِۦ ۚ وَمَن يَعْصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَإِنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ
خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتَّىٰٓ إِذَا رَأَوْا۟ مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ
مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ إِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ
مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُۥ رَبِّىٓ أَمَدًا ﴿٢٥﴾ عَـٰلِمُ ٱلْغَيْبِ فَلَا
يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِۦٓ أَحَدًا ﴿٢٦﴾ إِلَّا مَنِ ٱرْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُۥ
يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ﴿٢٧﴾ لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا۟
رِسَـٰلَـٰتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًۢا ﴿٢٨﴾

16 तो फ़िर्औन ने उस रसूल की नाफ़र्मानी की तो हमने उसे घोर आपद में पकड़ लिया।

17 तुम यदि काफ़िर रहे तो उस दिन कैसे बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा?

18 जिस दिन आकाश फट जाएगा, अल्लाह का यह वचन पूरा होकर ही रहनेवाला है।

19 अवश्य यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने रब की ओर के रास्ते को अपना ले।

20 अवश्य तेरा रब भली-भाँति जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात के और आधी रात के और एक तिहाई रात के (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़ा होता है, और रात-दिन का पूरा अनुमान अल्लाह को ही है, वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे कभी न निभा सकोगे तो उसने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना क़ुर्आन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो, वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ अन्य धरती पर सफ़र करके अल्लाह की कृपा (अर्थात जीविका भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी करेंगे, तो तुम सरलता पूर्वक जितना (क़ुर्आन) पढ़ सकते हो पढ़ो। और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और ज़कात (भी) देते रहा करो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ (ऋण) दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ सर्वोत्तम रूप से बदले में अत्यधिक पाओगे। और अल्लाह से क्षमा माँगते रहो। यक़ीनन् अल्लाह क्षमा करने वाला मेहर्बान (कृपालु) है।

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

ترتيبها ٧٣ — آياتها ٢٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢﴾ نِصْفَهُ أَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا
﴿٣﴾ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ﴿٤﴾ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا
ثَقِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾ إِنَّ لَكَ فِي
النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ﴿٨﴾
رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ
عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ
أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ﴿١١﴾ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ﴿١٢﴾
وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ
وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَهِيلًا ﴿١٤﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا
عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ
فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ
الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴿١٧﴾ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾
إِنَّ هَٰذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

सूरतुल् मुद्दस्सिर [1] – 74

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

1 हे कपड़ा ओढ़ने वाले।[2]
2 खड़ा हो जा और आगाह (सावधान) कर दे।[3]
3 और अपने रब ही की बड़ाईयां (महिमा) बयान कर।[4]
4 और अपने कपड़ों को पवित्र रखा कर।[5]
5 और नापाकी को छोड़ दे।[6]
6 और इह़सान (उपकार) करके अधिक लेने की इच्छा न कर।[7]
7 और अपने प्रभु के मार्ग में सब्र (धैर्य) रख।[8]
8 तो जब सूर (नरसिंघा) में फूँका जाएगा।[9]
9 तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा।
10 (जो) काफ़िरों पर सरल न होगा।
11 मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है।[10]
12 और उसे अत्यधिक धन दे रखा है।[11]
13 और हाज़िर रहने वाले पुत्र भी।[12]
14 तथा मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी (समृद्धि) दे रखी है।[13]
15 फिर भी उसकी चाहत है कि उसे और अधिक दूँ।
16 नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी है।[14]
17 जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा।[15]
18 उसने विचार करके अनुमान किया।[16]
19 उसका नाश हो! उसने कैसा अनुमान किया?[17]
20 फिर उसका नाश हो! किस प्रकार उसने अनुमान किया?
21 उसने फिर देखा।[18]
22 फिर मुख सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया।[19]
23 फिर पीछे हट गया, गर्व किया।
24 और कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नकल किया जाता है।[20]
25 (यह) इन्सान की बात के सिवाय कुछ भी नहीं।[21]
26 मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा।[22]
27 और तुझे क्या पता कि नरक क्या चीज़ है?
28 न वह बाक़ी रखती है और न छोड़ती है।
29 खाल को झुलसा देती है।[23]

---

1 मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ पर जब वह़्य (प्रकाशना) की शुरूआत हूई, उस समय जिब्रईल عليه السلام आप के पास आए, आप ने उन्हें आकाश और धरती के बीच एक कुर्सी पर जगमगाती रौशनी की तरह बैठे देखा तो आप घबरा गए और बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब होश में आए तो ख़दीजा رضي الله عنها के पास आए, पानी मंगवाया और अपने ऊपर पानी छिड़का, फिर फ़रमाया : मुझे कपड़ा ओढ़ादो, मुझे कपड़ा ओढ़ादो, तो उन्होंने आप के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया।

2 ऐ वह व्यक्ति जो अपने कपड़े में लिपटा हुवा है, और उसे ओढ़ रखा है।

3 अर्थात : उठ खड़ा हो, और मक्का वालों को यदि वे इस्लाम नहीं लाते तो उन्हें अज़ाब से डराओ।

4 और अपने रब का ही जो कि तेरा आक़ा, मालिक, और तेरे काजों की इस्लाह करने वाला है, और उस पाक हस्ती ने बड़ाई और महानता को अपनी विशेषता बताई है, और वह इससे महान है कि उसका कोई साझीदार हो।

5 अल्लाह तआ़ला ने आप को अपना कपड़ा पवित्र रखने, और उसे गन्दगी से पाक रखने का आदेश दिया। और क़तादा कहते हैं कि अपने नफ़्स को पाप से पाक रखिए।

6 और बुतों और मूर्तियों को छोड़ दीजिए, और उनकी पूजा न कीजिए; क्योंकि यही अज़ाब के कारण हैं।

7 और नुबुव्वत का जो बोझ आप उठा रहे हैं उसका एह़सान आप अपने रब पर न जताइए, उस व्यक्ति की तरह जो यदि किसी का बोझ उठाता है तो उससे अधिक मिलने की इच्छा रखता है। और एक कथन की रौशनी में इसका अर्थ यह है कि जब आप किसी को कोई उपहार दें तो मात्र अल्लाह की ख़ुशी के लिए दें और लोगों पर उसका एह़सान न जताएं।

8 अर्थात : आप पर भारी ज़िम्मेदारी लादी गई है, जिसके कारण आप से अरबी और अजमी युद्ध करेंगे, तो आप उस पर अल्लाह के लिए सब्र कीजिए।

9 इसका अर्थ सूर (नरसिंघा) में फूंक मारना है, गोया कि कहा जा रहा है कि आप इनकी ओर से पहुँचने वाली कष्टों पर सब्र करें; क्योंकि इनके सामने एक भयंकर दिन है जिसमें वे अपने कर्तूतों की सज़ा पाने वाले हैं।

10 मुझे और उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दें जिसे मैंने पैदा किया है जबकि वह अपनी मां के पेट में अकेला था, न तो उसके पास धन था और न ही सन्तान, या इसका अर्थ यह है कि : मुझे अकेला उससे बदला लेने के लिए छोड़ दें, मैं आप की ओर से उससे निपटने के लिए काफ़ी हूँ।

11 ढेर सारे धन दिए।

12 और ऐसे बेटे जो हर समय उसके साथ मक्का ही में रह रहे हैं, न वह यात्रा करते हैं और न ही अपने बाप के धन के कारण जीविका की खोज में बाहर जाने के मुहताज हैं।

13 उसकी जीविका को फैला दिया है, लम्बी आयु दी है, और क़ुरैश की सरदारी भी।

14 كَلَّا मैं कभी नहीं बढ़ाउंगा। إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا वह हमारी निशानियों का विरोधी है, और जो हमने अपने रसूल पर उतारा है उसका इन्कार करने वाला है।

15 जल्द ही हम उस पर कठिन अज़ाब का बोझ डालेंगे, इर्हाक़ कहते हैं कि इन्सान ऐसी भारी चीज़ उठाए जिसकी वह शक्ति न रखता हो।

16 उसने नबी ﷺ के बारे में सोचा और जी में विचार कर लिया, और जवाब देने के लिए बातें तैयार कर ली, तो अल्लाह ने उसे अपमानित किया।

17 उस पर शराप हो और उसका नाश हो उसने कैसी बात सोची।

18 उसने सोचा कि किस तरह क़ुरआन को रद्द करे और उसमें त्रुटि निकाले।

19 ثُمَّ عَبَسَ जब उसे कोई ऐसी त्रुटि नहीं मिली जिसके द्वारा वह क़ुरआन पर रद्द करे तो उसने अपना मुंह बनाया। وَبَسَرَ और त्योरी चढ़ाई।

20 यह क़ुरआन जादू के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे मुह़म्मद (ﷺ) दूसरों से नक़ल करके बता रहे हैं।

21 यह तो इन्सानों का कथन है, अल्लाह का कथन नहीं है।

22 जल्द ही मैं उसे जहन्नम की आग में डालूँगा।

23 जहन्नम लोगों को दिखाई देगी और वे अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देखेंगे, और कहा गया है कि वह लोगों के चेहरे का रंग बदल देगी, यहाँ

30 और उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते नियुक्त) मुक़र्रर हैं।[1]
31 और हमने नरक के दारोग़े मात्र फ़रिश्ते रखे हैं। और हमने उनकी संख्या मात्र काफ़िरों की परीक्षा के लिए मुक़र्रर (निर्धारित) कर रखी है, ताकि अहले किताब विश्वास कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जाएं और अहले किताब और मुसलमान शंका न करें, और जिनके दिल में रोग है वे और काफ़िर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह की क्या मुराद है? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत (मार्गदर्शन) देता है, और तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवाय कोई नहीं जानता, यह सभी इन्सानों के लिए (साक्षत) शिक्षा (एवं उपदेश) है।[2]
32 कभी नहीं! चन्द्रमा की क़सम।[3]
33 और रात की जब वह पीछे हटे।[4]
34 और सवेरे की जब वह रौशन हो जाए।[5]
35 कि (अवश्य वह नरक) बड़ी चीजों में से एक है।[6]
36 लोगों को डराने वाला।
37 उस व्यक्ति को जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।[7]
38 प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है।[8]
39 परन्तु दाएं हाथ वाले।
40 (कि) वे जन्नतों में (बैठे हुए) पूछते होंगे।
41 पापियों से।

۞ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ ٱلَّيْلِ وَنِصْفَهُۥ وَثُلُثَهُۥ وَطَآئِفَةٌ
مِّنَ ٱلَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَٱللَّهُ يُقَدِّرُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ ۖ فَٱقْرَءُوا۟ مَا تَيَسَّرَ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ
وَءَاخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِى ٱلْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ ٱللَّهِ ۙ وَءَاخَرُونَ
يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ فَٱقْرَءُوا۟ مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟
ٱلزَّكَوٰةَ وَأَقْرِضُوا۟ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا۟ لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ
عِندَ ٱللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌۢ ٢٠

سُورَةُ المُدَّثِّرِ

ترتيبها ٧٤ — آياتها ٢٠

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمُدَّثِّرُ ١ قُمْ فَأَنذِرْ ٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ٣ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ٤
وَٱلرُّجْزَ فَٱهْجُرْ ٥ وَلَا تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ ٦ وَلِرَبِّكَ فَٱصْبِرْ ٧
فَإِذَا نُقِرَ فِى ٱلنَّاقُورِ ٨ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ٩ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ
غَيْرُ يَسِيرٍ ١٠ ذَرْنِى وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ١١ وَجَعَلْتُ لَهُۥ مَالًا
مَّمْدُودًا ١٢ وَبَنِينَ شُهُودًا ١٣ وَمَهَّدتُّ لَهُۥ تَمْهِيدًا ١٤ ثُمَّ يَطْمَعُ
أَنْ أَزِيدَ ١٥ كَلَّآ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ لِءَايَٰتِنَا عَنِيدًا ١٦ سَأُرْهِقُهُۥ صَعُودًا ١٧

42 तुम्हें नरक में किस बात ने डाला?[9]
43 वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ी न थे।
44 न भूखों को खाना खिलाते थे।
45 और हम बाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ बाद-विवाद में मश्गूल (व्यस्त) रहा करते थे।[10]
46 और हम बदले के दिन को झुठलाते थे।
47 यहाँ तक कि हमारी मृत्यु आ गयी।[11]
48 तो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश लाभ न देगी।
49 उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुख मोड़ रहे हैं?[12]
50 जैसे कि वे बिदके हुए गधे हैं।[13]
51 जो तीर अंदाज़ों से भागे हों।[14]
52 बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे स्पष्ट किताबें दी जाएं।[15]

तक कि वह काले हो जाएंगे।

1 जहन्नम पर फ़रिश्तों में से १६ दारोग़े निर्धारित हैं, और कहा गया है कि १६ प्रकार के फ़रिश्ते निर्धारित हैं।

2 जब यह आयत عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ उतरी तो अबू जहल ने कहा : क्या मुहम्मद की सहायता करने वाले मात्र १६ होंगे? तो क्या तुम में से सौ सौ व्यक्ति मिल कर भी एक को न पकड़ पाएंगे कि लोग जहन्नम से निकल जाएं? तो यह आयत وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلنَّارِ إِلَّا مَلَٰٓئِكَةً उतरी, तो फ़रिश्तों से भिड़ने की किस के पास शक्ति है? और कौन उन्हें हरा सकता है? वह तो अल्लाह के हक़ को उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से सबसे अधिक क़ायम करने वाले हैं, और सबसे अधिक उसके लिए गुस्सा होने वाले हैं, उनका अज़ाब सबसे कठिन है, और उनकी पकड़ सबसे मज़्बूत है। وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ हमने उनकी उल्लिखित संख्या को काफ़िरों की गुम्राही और परीक्षा का कारण बनाया, तो उन्होंने अपने दिल की बातें कह लीं, ताकि उन पर अज़ाब में बढ़ौतरी होजाए और उन पर अल्लाह का क्रोध अधिक होता चला जाए। لِيَسْتَيْقِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ ताकि यहूदी और ईसाई यक़ीन करलें; क्योंकि क़ुरआन में जो संख्या बताया गया है वही संख्या उनकी किताबों में भी उल्लिखित है। وَيَزْدَادَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِيمَٰنًا यह देख कर उनका ईमान बढ़ जाए कि यहूदियों और ईसाईयों ने भी उनकी मुवाफ़क़त की है। وَلِيَقُولَ ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ और ताकि मुनाफ़िक़ कहें। और وَٱلْكَٰفِرُونَ वह जो कि काफ़िर हैं मक्का वासियों में से या अन्य स्थानों के : مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا कि इस अचंभे में डाल देने वाली संख्या से अल्लाह की इच्छा क्या है? وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ जहन्नम के दारोग़े अगरचे १६ ही हैं लेकिन फ़रिश्तों में से उनके मददगार और लश्कर हैं जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं जानता। وَمَا هِىَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ

अर्थात जहन्नम और जहन्नम के दारोगों की यह संख्या मात्र संसार वालों की नसीहत के लिए है, ताकि उन्हें अल्लाह की परिपूर्ण शक्ति की जानकारी होजाए, और इसकी भी कि उसे किसी मददगार की ज़रूरत नहीं है।

3 मैं इस पर चाँद की और इसके बाद आने वाली चीज़ों की क़सम खाता हूँ।

4 जब वह पीछे मुड़ कर जाने लगे।

5 जब वह रौशन और स्पष्ट हो जाए।

6 जहन्नम बड़े कष्टों तथा मुसीबतों में से एक है। और कहा गया है मुहम्मद (ﷺ) को झुठलाना बड़ी मुसीबतों में से एक है।

7 हर एक के लिए डराने वाला है चाहे ईमान के साथ आगे बढ़े या कुफ़्र द्वारा पीछे रह जाए।

8 अपने कर्मों के कारण हर व्यक्ति की पकड़ होगी और वह उसके साथ गिरवी है, अब उसका वह कर्म या तो उसे अज़ाब से बचा लेगा, या उसे बर्बाद कर देगा।

9 उनसे पूछेंगे : तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाल दिया?

10 कुकर्मियों के साथ उनके कुकर्म में व्यस्त रहते थे, जब भी कोई पापी पाप करता हम उसके साथ रहते।

11 अर्थात : मौत आगई।

12 कौन सी चीज़ उन्हें मिल गई है जिसने उन्हें क़ुरआन से दूर कर दिया है जबकि इसमें तो बहुत बड़ी नसीहत है।

13 जैसे कि वे बहुत अधिक बिदके हुए गधे हों।

14 जो तीर अंदाज़ों से भागे हों जो उन्हें तीर से मार रहे हों, और कहा गया है कि अरबी में قَسْوَرَة का अर्थ शेर है। तो इसका अर्थ यह होगा कि यह जंगली गधे हैं जो शेर को अपनी ओर फाड़ खाने के लिए आता देख कर भाग रहे हों।

15 मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि काफ़िरों ने मुहम्मद से मांग किया कि : हम

إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ
﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ أَدۡبَرَ وَٱسۡتَكۡبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا سِحۡرٞ
يُؤۡثَرُ ﴿٢٤﴾ إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا قَوۡلُ ٱلۡبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصۡلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ
مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبۡقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٞ لِّلۡبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيۡهَا تِسۡعَةَ عَشَرَ
﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلۡنَآ أَصۡحَٰبَ ٱلنَّارِ إِلَّا مَلَٰٓئِكَةٗۙ وَمَا جَعَلۡنَا عِدَّتَهُمۡ إِلَّا فِتۡنَةٗ
لِّلَّذِينَ كَفَرُواْ لِيَسۡتَيۡقِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ وَيَزۡدَادَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِيمَٰنٗاۙ
وَلَا يَرۡتَابَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَ وَلِيَقُولَ ٱلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ
وَٱلۡكَٰفِرُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلٗاۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَن يَشَآءُ وَيَهۡدِي
مَن يَشَآءُۚ وَمَا يَعۡلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكۡرَىٰ لِلۡبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا
وَٱلۡقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَٱلَّيۡلِ إِذۡ أَدۡبَرَ ﴿٣٣﴾ وَٱلصُّبۡحِ إِذَآ أَسۡفَرَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهَا لَإِحۡدَى
ٱلۡكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيرٗا لِّلۡبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَن شَآءَ مِنكُمۡ أَن يَتَقَدَّمَ أَوۡ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ
نَفۡسِۭ بِمَا كَسَبَتۡ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّآ أَصۡحَٰبَ ٱلۡيَمِينِ ﴿٣٩﴾ فِي جَنَّٰتٖ يَتَسَآءَلُونَ
﴿٤٠﴾ عَنِ ٱلۡمُجۡرِمِينَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمۡ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُواْ لَمۡ نَكُ مِنَ
ٱلۡمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾ وَلَمۡ نَكُ نُطۡعِمُ ٱلۡمِسۡكِينَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ
ٱلۡخَآئِضِينَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوۡمِ ٱلدِّينِ ﴿٤٦﴾ حَتَّىٰٓ أَتَىٰنَا ٱلۡيَقِينُ ﴿٤٧﴾

(53) कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि यह क़ियामत (प्रलय) से बेख़ौफ़ (निर्भय) हैं।
(54) सत्य बात तो यह है कि यह (क़ुरआन) एक नसीहत है।
(55) अब जो चाहे इससे नसीहत प्राप्त करे।
(56) और वे उस समय नसीहत प्राप्त करेंगे जब अल्लाह चाहे, वह (अल्लाह) इसी लायक़ (योग्य) है कि उससे डरें, और इस लायक़ भी कि वह क्षमा करे।[1]

सूरतुल क़ियाम - 75

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

(1) मैं क़सम (सौगन्ध) खाता हूँ[2] क़ियामत (प्रलय) के दिन की।
(2) और क़सम खाता हूँ उस मन की जो निन्दा करने वाला हो[3]।

(3) क्या इन्सान यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी करेंगे ही नहीं[4]।
(4) हाँ, अवश्य करेंगे, हमें शक्ति है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें[5]।
(5) बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़र्मानियां करता जाए[6]।
(6) पूछता है कि क़ियामत (प्रलय) का दिन कब आएगा[7]?
(7) तो जिस समय आँखें पथरा जाएंगी[8]।
(8) और चाँद बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएगा।
(9) और सूर्य एवं चाँद इकट्ठे कर दिए जाएंगे[9]।
(10) उस दिन इन्सान कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है[10]?
(11) नहीं-नहीं, कोई पनाह-गाह नहीं[11]।
(12) आज तो तेरे रब की ओर ही ठिकाना है[12]।
(13) आज इन्सान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से आगाह (अवगत) कराया जाएगा।
(14) बल्कि इन्सान स्वयं अपने आप पर हुज्जत (प्रमाण) है[13]।
(15) अगर्चि कितने ही बहाने पेश करे[14]।
(16) (हे नबी) आप क़ुर्आन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलाएं[15]।

आप को रसूल उस समय मानेंगे जब हम में से हर व्यक्ति के पास जब हम सवेरे उठें तो अल्लाह की ओर से एक खुली हुई किताब हो जिसमें यह लिखा हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

[1] وَمَا يَذۡكُرُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ अर्थात : जब अल्लाह उन्हें हिदायत देना चाहे। هُوَ أَهۡلُ ٱلتَّقۡوَىٰ वास्तव में वही इस लायक़ है कि परहेज़गार उससे डरें, उसका अनुकरण करके और अवहेलना छोड़कर। وَأَهۡلُ ٱلۡمَغۡفِرَةِ और वास्तव में वही इस लायक़ भी है कि मोमिनों के गुनाहों को जो उन से हुए हैं माफ़ करे।

[2] لَآ أُقۡسِمُ بِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ में لَا अधिक है, असल इस प्रकार है أُقۡسِمُ بِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ, अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत के दिन की क़सम उसकी महानता बताने के लिए खाई है, वह अपनी सृष्टि में से जिस की चाहे क़सम खा सकता है, पर मख़्लूक़ के लिए अल्लाह के सिवाय दूसरे की क़सम खाना जायज़ नहीं है।

[3] بِٱلنَّفۡسِ ٱللَّوَّامَةِ से मुराद मोमिन का नफ़्स है, जो कि उस की कमी और कोताही पर उसे मलामत करता है, यह बुराई करने पर मलामत करता है कि तूने ऐसा क्यों किया, और नेकी करने पर भी निंदा करता है कि और अधिक क्यों नहीं किया। मुक़ातिल कहते हैं कि इस से काफ़िर का नफ़्स मुराद है जो आख़िरत में अपने आप को मलामत करेगा, और अल्लाह के बारे में जो कमी कोताही की है उस पर अफ़सोस करेगा, या दोनों की एक साथ अल्लाह क़सम खारहा है कि वह शीघ्र ही हड्डियों को इकट्ठा करेगा फिर प्रत्येक व्यक्ति को दोबारा जीवित करेगा ताकि वह उस से हिसाब ले और उसे उस का बदला दे, (हड्डियों का चर्चा ख़ास कर इसलिए किया गया है कि यही पैदाइश का असल ढांचा है)

[4] उसके बिखर जाने के बाद दोबारा नए सिरे से उसे पैदा करेंगे ही नहीं, तो उसका भ्रष्ट गुमान है।

[5] जल्द हम उन्हें ज़रूर इकट्ठा करेंगे, और हमें इस की भी शक्ति है कि उस की उंगलियों को एक दूसरे से जोड़ कर ऊँट के खुर की तरह करदें लेकिन हम ने उन पर करम किया है और उन्हें उंगलियां दीं जिनमें जोड़, नाख़ुन, पतली रगें, और बारीक हड्डियां हैं। और इस बारे में एक विचार यह है कि यह अल्लाह तआ़ला की ओर से सावधानी है कि उसने प्रत्येक व्यक्ति के पोर पोर तक अलग बनाए हैं, जो उसकी महान शक्ति की दलील है, यदि वह चाहता तो सब की उंगलियों के पोरों को एक जैसा कर देता।

[6] अर्थात वह चाहता है कि आने वाले समय से पहले पहले बूराइयाँ कर गुज़रे, तो वह गुनाहों को करते जाता और तौबा को टालते जाता, वह जिन्दगी भर गुनाह करते जाता और मौत को याद नहीं करता।

[7] अर्थात क़ियामत को दूर समझकर उसका मज़ाक़ उड़ाते हुए प्रश्न करता है।

[8] अर्थात मौत अथवा दोबारा उठाए जाने की घब्राहट, दहशत और डर से आँखें पथरा जाएंगी।

[9] अर्थात सूर्य भी चाँद की तरह प्रकाशहीन होजाएगा, दोनों की रौशनी एक साथ ख़तम हो जाएगी, इस तरह रात और दिन के आने जाने का चक्कर ख़तम हो जाएगा।

[10] अर्थात अल्लाह से और उसके हिसाब और अ़ज़ाब से भागने के लिए कोई स्थान न होगा।

[11] अर्थात कोई पहाड़, या किला या शरण-स्थल ऐसी न होगी जो तुम्हें अल्लाह से बचा सके।

[12] ٱلۡمُسۡتَقَرُّ के अर्थ शरण-स्थल और पनाह-गाह के हैं, मुराद मैदाने महशर है जहाँ अल्लाह बन्दों के बीच न्याय करेगा, और यह सम्भव न होगा कि कोई उस की अ़दालत से बच कर निकल जाए।

[13] अर्थात उसे वास्तविक्ता का पता चल जाएगा कि वह ईमान पर है या कुफ़्र पर, फ़र्मांबर्दारी पर या नाफ़र्मानी पर, सिधाई पर या टेढ़ाई पर। और कहा गया है कि उस के हाथ पैर और अंग स्वयं उसी के विरोध में गवाही देंगे।

[14] अर्थात चाहे वह जितने ही बहाने बनाए और अपना दिफ़ाअ़ करे, लेकिन यह सारी चीज़ें उस के कुछ काम न आएंगी, और स्वयं उसके अंग उस के बहानों को झुटला देंगे।

[15] अल्लाह के रसूल पर जब क़ुर्आन नाज़िल होता था तो आप जिब्रईल

فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَٰعَةُ ٱلشَّٰفِعِينَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ ٱلتَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ
﴿٤٩﴾ كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍۭ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ
كُلُّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ۖ بَل لَّا يَخَافُونَ
ٱلْءَاخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ إِنَّهُۥ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَن شَآءَ ذَكَرَهُۥ ﴿٥٥﴾
وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ ٱلتَّقْوَىٰ وَأَهْلُ ٱلْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

سُورَةُ القِيَامَةِ

ترتيبها ٧٥ — آياتها ٤٠

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَآ أُقْسِمُ بِٱلنَّفْسِ ٱللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ أَيَحْسَبُ
ٱلْإِنسَٰنُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُۥ ﴿٣﴾ بَلَىٰ قَٰدِرِينَ عَلَىٰٓ أَن نُّسَوِّىَ بَنَانَهُۥ ﴿٤﴾ بَلْ
يُرِيدُ ٱلْإِنسَٰنُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُۥ ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ أَيَّانَ يَوْمُ ٱلْقِيَٰمَةِ ﴿٦﴾ فَإِذَا بَرِقَ ٱلْبَصَرُ
﴿٧﴾ وَخَسَفَ ٱلْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ ٱلشَّمْسُ وَٱلْقَمَرُ ﴿٩﴾ يَقُولُ ٱلْإِنسَٰنُ يَوْمَئِذٍ
أَيْنَ ٱلْمَفَرُّ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ ٱلْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا۟ ٱلْإِنسَٰنُ
يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ ٱلْإِنسَٰنُ عَلَىٰ نَفْسِهِۦ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾ وَلَوْ أَلْقَىٰ
مَعَاذِيرَهُۥ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهِۦ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِۦٓ ﴿١٦﴾ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُۥ
وَقُرْءَانَهُۥ ﴿١٧﴾ فَإِذَا قَرَأْنَٰهُ فَٱتَّبِعْ قُرْءَانَهُۥ ﴿١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُۥ ﴿١٩﴾

(17) उसको जमा करना [1] और (आप के मुख से) पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है [2]।
(18) हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उसके पढ़ने की पैरवी करें [3]।
(19) फिर उसे बयान (स्पष्ट) कर देना हमारे ज़िम्मे है [4]।
(20) नहीं-नहीं, तुम तो जल्दी मिलने वाले (संसार) से प्रेम रखते हो।
(21) और आख़िरत (प्रलोक) को छोड़ बैठे हो।
(22) उस दिन बहुत से चेहरे हरे-भरे और प्रकाशित होंगे [5]।
(23) अपने रब की ओर देखते होंगे [6]।
(24) और कितने चेहरे उस दिन (बद्-रौनक़ और) उदास होंगे [7]।
(25) समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जाएगा [8]।
(26) नहीं-नहीं[9], जब (रूह अर्थात प्राण) हंसुली तक पहुँचेगी [10]।
(27) और कहा जाएगा कि कोई झाड़-फूँक करने वाला है [11]?
(28) और उसने विश्वास कर लिया कि यह जुदाई का समय है [12]।
(29) और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी [13]।
(30) आज तेरे रब की ओर चलना है [14]।
(31) तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज़ पढ़ी [15]।
(32) बल्कि झुठलाया और पलट गया [16]।
(33) फिर अपने घर वालों की ओर इतराता हुआ गया [17]।
(34) अफसोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।
(35) फिर दुख है औ ख़राबी है तेरे लिए [18]।
(36) क्या इन्सान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा [19]।
(37) क्या वह एक गाढ़े पानी (मनी) की बूँद न था, जो टपकाया गया था [20]?
(38) फिर वह खून का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।
(39) फिर उससे जोड़े अर्थात नर-मादा बनाए।
(40) क्या अल्लाह तआला इस बात की शक्ति नहीं रखता कि मुर्दे को ज़िन्दा कर दे [21]?

के पढ़कर फ़ारिग़ होने से पहले उसे याद करने के लिए अपने दोनों होंट और अपनी जीभ को हिलाते थे, तो यह आयत उतरी, कि जब वह्य आप पर उतर रही हो तो इस डर से कि कहीं आप उसे भूल न जाएं उसे जल्दी याद करने के लिए अपनी जीभ को न हिलाएं, ।

1 आप के सीने में कि उस में से कुछ भी आप से छूटने न पाए।

2 अर्थात सहीह़ रूप में आप की जीभ पर उस की क़िराअत को साबित करना।

3 अर्थात जिब्रईल द्वारा जब हम उसे पढ़कर फ़ारिग़ हो जाएं तो उसके पश्चात आप उसे पढ़ें, और जब तक हम उसे पढ़ें आप चुप होकर ध्यान देकर सुनते रहें।

4 रसूल द्वारा इसमें जो ह़लाल और ह़राम है उसे बयान कराना हमारा काम है, इस के बाद जिब्रईल जब भी आप के पास वह्य लेकर आते तो अल्लाह तआला की हिदायत अनुसार आप चुप होकर उसे सुनते, फिर जब चले जाते तो उसे पढ़ते।

5 यह ईमान वालों के चेहरे होंगे, जो अपने अच्छे अन्जाम के कारण खुश और प्रकाशित होंगे।

6 अपने रब को देख रहे होंगे और उसकी दीदार से लुत्फ़ उठा रहे होंगे, सहीह़ ह़दीसों द्वारा तवातुर के साथ यह प्रमाणित है कि नेक लोग क़ियामत के दिन अपने रब को ऐसे देखेंगे जैसे बिना परेशानी के चौदहवीं का चाँद देखते हैं।

7 यह काफ़िरों के चेहरे होंगे जो पीले पड़े होंगें और ग़म से काले होंगे।

8 فَاقِرَةٌ का अर्थ भयंकर आफत है, गोया कि उस ने उन की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी।

9 अर्थात उनका क़ियामत पर ईमान लाना संभव ही नहीं है।

10 ﴿ ٱلتَّرَاقِىَ ﴾ **ترقوة** की जमा है, गर्दन के क़रीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है, और रूह़ की हंसली तक पहुँचने से किनाया मौत का क़रीब होना है।

11 अर्थात उस के घर वालों में से जो उस के पास होंगे, कहेंगे : कोई है झाड़ फूँक करने वाला जो उसे स्वस्थ कर सके? जाओ ह़कीमों और डाक्टरों को ले आओ, लेकिन अल्लाह की आज्ञा के सामने कोई भी चीज़ उस के काम न आएगी।

12 और जिस की रूह़ हंसली तक पहुँच गई है उसे विश्वास हो जाएगा कि अब बीवी बच्चे और धन दौलत से जुदाई का समय आचुका है।

13 अर्थात मौत के समय उस की एक पिंडली दूसरी पिंडली से मिल जाएगी, और उस के दोनों पैरों में भी जान बाक़ी नहीं रहेगी, उस की दोनों पिंडलियां भी सूख जाएंगी और उसे उठा नहीं पाएंगी, जबकि पहले वह इन्ही दोनों पर खड़े होकर खूब टहलता घूमता था, और लोग उसके जिस्म की और फ़रिश्ते उस की रूह लेजाने की तैयारी में लग जाएंगे।

14 रूहों को शरीरों से निकालने के बाद उन्हें उनके रब की ओर ले जाया जाएगा।

15 अर्थात इस ने न तो रिसालत की तस्दीक़ की और न ही क़ुरआन की तस्दीक़ की, और न ही अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ी, तो न वह दिल से ईमान लाया और न ही अपने अंगों द्वारा अमल ही किया।

16 अर्थात रसूलों और उन की लाई हुई शरीअत को झुठलाया और ईमान लाने से मुंह मोड़ा।

17 يَتَمَطَّىٰ इतराता और अकड़ता हुवा।

18 अर्थात तेरी बर्बादी हो, असल में है : **أولاك الله ما تكرهه** अल्लाह तुझे ऐसी चीज़ से दोचार करे जिसे तू नापसंद करता है। या तुझे हमेशा बर्बादी का सामना रहे।

19 अर्थात उसे यूंही छोड़ दिया जाएगा जो मन में आए करे, न उसे किसी चीज़ का आदेश दिया जाए और न किसी चीज़ से रोका जाए, न ही उसे ह़िसाब देना पड़े और न ही उसे अच्छा या बुरा कोई बदला मिले।

20 अर्थात वह मनी की बूँद न था जो रह़्म में टपकाया गया था?।

21 अर्थात जिस अल्लाह ने उसे अनेक मर्हलों से गुज़ार कर ऐसी ऐसी निराली और अछोती पैदाइश की और उस पर उस की शक्ति रही, क्या उस में इस की शरीर को दोबारा लौटाने पर शक्ति न होगी? जबकि दोबारा लौटाना पहले की निस्बत में आसान है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾
إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾
كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾ وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ
السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ
﴿٣١﴾ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿٣٣﴾ أَوْلَىٰ لَكَ
فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٥﴾ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾
أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ
الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾

سُورَةُ الْإِنسَانِ

ترتيبها ٧٦ — آياتها ٣١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾
إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا
بَصِيرًا ﴿٢﴾ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿٣﴾
إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿٤﴾ إِنَّ
الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾

सूरतुल्-इन्सान - 76

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) अवश्य ही इन्सान पर युग का एक वह समय भी गुज़र चुका है [1] जबकि यह कोई क़ाबिले ज़िक्र वस्तु न था [2]।
(2) बेशक हमने इन्सान को मिले जुले नुत्फ़े (वीर्य) से [3] परीक्षा के लिए [4] पैदा किया। और उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया [5]।
(3) हमने उसे मार्ग दिखाया [6], अब चाहे वह शुक्र-गुज़ार बने या ना-शुक्रा।
(4) बेशक हमने काफिरों के लिए जंजीरें, और तौक़ और भड़कने वाली आग तैयार कर रखखी है [7]।
(5) बेशक नेक लोग उसे प्याले से पिएंगे जिसमें काफूर की मिलावट है। [8]
(6) जो एक स्रोत है [9]। जिससे अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे [10] (जिधर चाहें)।
(7) जो मन्नत पूरी करते हैं [11] और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है [12]।
(8) और ज़रूरत के बावजूद खाना खिलाते हैं, गरीब, अनाथ और कैदियों [13] को।
(9) हम तो तुम्हें मात्र अल्लाह की खुशी के लिए खिलाते हैं[14], न तुमसे बदला चाहते हैं न शुक्र-गुज़ारी।
(10) निःसंदेह हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो उदासी [15] और कठोरता [16] वाला होगा।
(11) तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया [17] और उन्हें ताज़गी और खुशी पहुँचायी [18]।
(12) और उन्हें उनके सब्र (धैर्य) के बदले जन्नत और रेशमी कपड़े अता किए।
(13) यह वहाँ आसनों पर तकिए लगाए हुए बैठेंगे [19], न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता [20]।

---

[1] यहां الْإِنسَانِ से मुराद अबुल् बशर आदम हैं, حِينٌ (एक समय) से मुराद एक क़ौल अनुसार रूह फूंके जाने से चालीस साल पहले का समय है। वह मिट्टी और पानी की मिलावट से, फिर सने हुए गारे से, फिर खनकती हुई मिट्टी से पैदा किए गए।
[2] अर्थात रूह फूंके जाने से पहले, और एक क़ौल अनुसार इस का अर्थ यह है कि ऐसे युग भी बीत चुके हैं कि आदम कुछ नहीं थे, अभी वह अ़दम से वुजूद में नहीं आए थे, और न सृष्टि के लिए चर्चा के क़ाबिल थे।
[3] अर्थात मर्द और औरत के नुतफ़े से जो बच्चादानी में जाकर मिल जाते हैं, और एक क़ौल के अनुसार أَمْشَاجٍ का अर्थ मिली हुई चीज़ें हैं क्योंकि वीर्य अनेकों वस्तुओं से मिला होता फिर उसी से इन्सान को पैदा किया जाता है, और उन्हीं से विभिन्न स्वभावें जनम लेती हैं।
[4] हम ने उसे परीक्षा के लिए पैदा किया, और हम उस की नेकी और बुराई तथा दूसरी जिम्मेदारियों द्वारा परीक्षा ले रहे हैं।
[5] अर्थात हम ने उस के भीतर एहसास जगाया ताकि वह महसूस करे और उस की परीक्षा संभव हो सके।
[6] अर्थात हम ने उसे हिदायत और गुम्राही, पुण्य तथा पाप के रास्ते, और उसके लाभ तथा हानि भी बता दिए, जिन की ओर वह अपनी फ़ित्रत तथा बुद्धिमानी द्वारा मार्ग पा सकता है, अब वह चाहे शुक्र गुजार बने या नाशुक्रा।
[7] अर्थात हम ने इन चीज़ों को इन्हीं के लिए तैयार किया ताकि इनके द्वारा हम इन्हें यातना में रखें, وَأَغْلَالًا ग़ल की जमअ़ है, इसका अर्थ है बेड़ी जिस से हाथ को गर्दन से बांधा जाता है, और وَسَعِيرًا का अर्थ है भड़कती हुई आग।
[8] इस शराब में काफूर मिली होगी, ताकि उस की खुश्बू और मज़ा दोनों अच्छे और खुशगवार होजाएं।
[9] जिस से वे शराब पिएंगे, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उस शराब में उस स्रोत के पानी की मिलावट होगी।
[10] अर्थात उसे जिस ओर चाहेंगे बहा ले जाएंगे।
[11] अर्थात यह बदला उन्हें इस कारण मिलेगा क्योंकि वह मात्र अल्लाह के लिए मन्नत मानते थे, फिर उसे पूरा करते थे, मन्नत : नमाज़, रोज़ा तथा कुर्बानी इत्यादि में से उस अमल को कहते है जिसे बन्दा ने स्वयं अपने ऊपर वाजिब कर लिया हो, अल्लाह ने वाजिब न किया हो।
[12] अर्थात क़ियामत के दिन से। जिस की बुराई इस तरह चारों ओर फैल जाने वाली होगी। आकाश और धरती भी उस की चपेट में आ जाएंगे, आकाश फट जाएगा, तारे टूट कर गिरने लगेंगे, और धरती कूट कर बराबर कर दी जाएगी, और पहाड़ कण कण होकर बिखर जाएंगे।
[13] अर्थात इन तीनों तरह के लोगों को खाना खिलाते थे, बावजूद इस के कि उनके पास खाना कम मात्रा में होता, और स्वयं उन्हें उसकी चाहत होती थी, और एक क़ौल के अनुसार حُبِّهِ की ज़मीर अल्लाह की ओर लौटती है, अर्थात वह अल्लाह तआ़ला की महब्बत में खाना खिलाते थे।
[14] अर्थात वह बदले की भावना नहीं रखते, और न वह उस पर लोगों से अपनी प्रशंसा चाहते हैं, चूँकि अल्लाह उन के दिलों का भेद जानता है इसी लिए उसने इस पर उनकी प्रशंसा की है।
[15] अर्थात जिसकी हौलनाकी और सखती से लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे।
[16] जिस में आंखें सिकुड़ जाएंगी, और पलकों पर बल पड़ जाएंगे, और एक क़ौल के अनुसार कठोरता और सख्ती के कारण यह सब से कठोर और लम्बा दिन होगा।
[17] क्योंकि वह इस दिन की बुराई से डर कर नेकी और फ़र्मांबर्दारी के काम करते थे।
[18] अर्थात काफ़िरों के चेहरे पर उस दिन उदासी छाई होगी, उस के विपरीत ईमान वालों के चेहरों पर ताज़गी होगी, और दिल खुशी से भरा होगा, चेहरों की यह खुशी नेमतों के प्रभाव के कारण होगी।
[19] और उन्हें उनके नेक कर्मों के बदले ऐसी जन्नत मिलेगी जिन में वह ताज वाले आसनों पर टेक लगाए बैठे होंगे।
[20] अर्थात जन्नत में न तेज़ गर्मी होगी न कड़ाके की सरदी, (वहाँ सदा बहार का ही मौसम रहेगा)

14 और उन पेड़ों के साए उन पर झुके होंगे और उनके
(मेवे) और गुच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे [1]।
15 और उन पर चाँदी के बर्तनों और उन गिलासों का दौर
चलाया जाएगा [2], जो शीशे के होंगे।
16 शीशे भी चाँदी के [3] जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान
से नाप रखा होगा [4]।
17 और उन्हें वहाँ वे जाम पिलाए जाएंगे जिनमें सोंठ की
मिलावट होगी [5]।
18 जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है [6]।
19 और उनके चारों ओर वे कम उम्र बच्चे घूमते-फिरते होंगे
जो हमेशा रहने वाले हैं [7], जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वह
बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं [8]।
20 और तू वहाँ [9] जिस ओर भी निगाह डालेगा पूर्ण उपहार
(नेमतें) [10] और महान राज्य [11] ही देखेगा।
21 उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी [12] कपड़े
होंगे और उन्हें चाँदी के कंगन का ज़ेवर पहनाया जाएगा [13]
और उन्हें उनका रब पवित्र शराब पिलाएगा [14]।
22 (कहा जाएगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला और
तुम्हारी कोशिश की क़दर की गई [15]।
23 बेशक हमने तुझ पर (ब-तद्रीज) क्रमशः कुरआन
अवतरित किया है [16]।
24 तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह और उनमें

عَيۡنٗا يَشۡرَبُ بِهَا عِبَادُ ٱللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفۡجِيرٗا ٦ يُوفُونَ بِٱلنَّذۡرِ وَيَخَافُونَ
يَوۡمٗا كَانَ شَرُّهُۥ مُسۡتَطِيرٗا ٧ وَيُطۡعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسۡكِينٗا
وَيَتِيمٗا وَأَسِيرًا ٨ إِنَّمَا نُطۡعِمُكُمۡ لِوَجۡهِ ٱللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمۡ جَزَآءٗ وَلَا شُكُورًا
٩ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوۡمًا عَبُوسٗا قَمۡطَرِيرٗا ١٠ فَوَقَىٰهُمُ ٱللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ
ٱلۡيَوۡمِ وَلَقَّىٰهُمۡ نَضۡرَةٗ وَسُرُورٗا ١١ وَجَزَىٰهُم بِمَا صَبَرُواْ جَنَّةٗ وَحَرِيرٗا
١٢ مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى ٱلۡأَرَآئِكِۖ لَا يَرَوۡنَ فِيهَا شَمۡسٗا وَلَا زَمۡهَرِيرٗا ١٣
وَدَانِيَةً عَلَيۡهِمۡ ظِلَٰلُهَا وَذُلِّلَتۡ قُطُوفُهَا تَذۡلِيلٗا ١٤ وَيُطَافُ عَلَيۡهِم بِـَٔانِيَةٖ
مِّن فِضَّةٖ وَأَكۡوَابٖ كَانَتۡ قَوَارِيرَا۠ ١٥ قَوَارِيرَاْ مِن فِضَّةٖ قَدَّرُوهَا تَقۡدِيرٗا ١٦
وَيُسۡقَوۡنَ فِيهَا كَأۡسٗا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ١٧ عَيۡنٗا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلۡسَبِيلٗا
١٨ ۞ وَيَطُوفُ عَلَيۡهِمۡ وِلۡدَٰنٞ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيۡتَهُمۡ حَسِبۡتَهُمۡ لُؤۡلُؤٗا مَّنثُورٗا
١٩ وَإِذَا رَأَيۡتَ ثَمَّ رَأَيۡتَ نَعِيمٗا وَمُلۡكٗا كَبِيرًا ٢٠ عَٰلِيَهُمۡ ثِيَابُ سُندُسٍ
خُضۡرٞ وَإِسۡتَبۡرَقٞۖ وَحُلُّوٓاْ أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٖ وَسَقَىٰهُمۡ رَبُّهُمۡ شَرَابٗا
طَهُورًا ٢١ إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمۡ جَزَآءٗ وَكَانَ سَعۡيُكُم مَّشۡكُورًا ٢٢ إِنَّا
نَحۡنُ نَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡقُرۡءَانَ تَنزِيلٗا ٢٣ فَٱصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعۡ
مِنۡهُمۡ ءَاثِمًا أَوۡ كَفُورٗا ٢٤ وَٱذۡكُرِ ٱسۡمَ رَبِّكَ بُكۡرَةٗ وَأَصِيلٗا ٢٥

से किसी पापी या ना-शुक्रे (कृतध्न) का कहना न मान [17]।
25 और अपने रब के नाम का सवेरे-शाम ज़िक्र (वर्णन)
किया कर [18]।
26 और रात के समय उसके समक्ष सज्दे कर और बहुत
रात तक उसकी तस्बीह (महिमागान) किया कर।
27 अवश्य यह लोग जल्द मिलने वाली [19] को चाहते हैं
और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन [20] को छोड़ देते हैं।
28 हमने उन्हें पैदा किया और हमने ही उनके जोड़ (एवं
बंधन) मज़्बूत किए [21] और हम जब चाहें उनके बदले उन
जैसे दूसरों को बदल लाएं [22]।
29 अवश्य यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब
का रास्ता अपनाले।
30 और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह तआ़ला ही चाहे [23]।

---

1 उनके मेवों पर उन्हें पूरी शक्ति प्राप्त होगी, वह खड़े बैठे, लेटे जिस तरह चाहेंगे उसे तोड़ सकेंगे, ऐसा न होगा कि दूरी या कांटे के कारण उनके हाथ न पहुँच सकें और वापस फिर आएं।
2 चाँदी के बर्तनों और गिलासों को लिए नौकर फिरेंगे, जब वे पीना चाहेंगे तो उन से लेकर पी लेंगे।
3 قَوَارِيرَا۠ का अर्थ शीशे के हैं, शीशे दुनिया में रेत के होते हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन शीशों की यह खूबी बताई कि वे चाँदी के होंगे जिन में अन्दर की चीज़ बाहर से दिखेगी।
4 अर्थात उन बर्तनों में उनकी चाहत और इच्छा का ख़ास ख़याल होगा, वह उतने अच्छे रूप के होंगे जितना वे चाहेंगे, न थोड़ा न अधिक, और एक क़ौल के अनुसार उन में शराब ऐसे अनुमान से भरी गई होगी कि जिस से वे सैराब होजाएं, अधिक की चाहत बाक़ी न रह जाए, और बर्तनों में भी बाक़ी न बचे।
5 كَأۡسٗا बर्तन जिस में शराब होगी। زَنجَبِيلًا सोंठ, अर्थात उस शराब में मिलावट सोंठ की होगी।
6 का अर्थ तेज़ी से बहता हुवा साफ़ पानी है, जो कि गले के लिए बहुत ही अच्छा हो।
7 अर्थात उनका बचपन और उनकी रौनक़ हमेशा बर्क़रार रहेगी, वह न बूढ़े होंगे न उनकी सुन्दरता बदलेगी और न उन्हें मौत आएगी।
8 अपनी सुन्दरता, रंगों में निखार और चेहरे की रौनक़ के कारण वह बिखरे हुए मोतियों के समान लगेंगे। बिखरे हुए मोतियों से उनकी तश्बीह इसलिए दी है कि वह तेज़ी से सेवा में लगे रहेंगे।
9 अर्थात जहाँ भी तुम जन्नत में नज़र उठाकर देखोगे।
10 जिन की खूबियाँ बयान नहीं की जा सकतीं।
11 जिन की महानता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।
12 سُندُسٍ पतला रेशम। خُضۡرٞ मोटा रेशम
13 और सूरतुल फ़ातिर में है : يُحَلَّوۡنَ فِيهَا مِنۡ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٖ "उस में उन्हें सोने का कंगन पहनाया जाएगा"। अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार जो चाहेगा पहनेगा।
14 अबू क़िलाबा और इब्राईम नख़ई कहते हैं कि उन्हे खाना दिया जाएगा, और जब वह उसे खा चुकेंगे तो पाकीज़ा शराब दी जाएगी, जिसे वे पिएंगे जो उन के पेट की सारी गंदगियों को निकाल कर उन्हें पचका देगी, और उनकी शरीर से ऐसा पसीना बहाएगी जिस से कस्तूरी की ख़ुश्बू फूटेगी।
15 अर्थात अल्लाह अपने सेवक के कर्म की क़दर करेगा, उसकी इताअ़त को स्वीकार करेगा, और उस पर उसकी प्रशंसा करेगा।
16 अर्थात उसे एक ही बार उतारने के बजाए ज़रूरत के अनुसार थोड़ा थोड़ा करके विभिन्न समय में उतारा है, और यह तेरा अपना घड़ा हुवा नहीं है जैसा कि मुश्रिकीन दावा करते हैं।

---

17 उनमें से किसी पापी या कुफ़्र में सीमा पार कर जाने वाले की बात न सुन।
18 और अपने रब के लिए सवेरे-सांझ नमाज़ पढ़ा कर, सवेरे से मुराद फ़ज्र की नमाज़ और सांझ से अस्र की नमाज़ है। (और एक क़ौल के अनुसार सवेरे-सांझ से मुराद सारे समय में अल्लाह का ज़िक्र है)
19 ٱلۡعَاجِلَةَ जल्दी मिलने वाली अर्थात दुनिया।
20 يَوۡمٗا ثَقِيلٗا भारी दिन अर्थात क़ियामत का दिन, इसे भारी दिन इस की सख़्ती और भयानकपन के कारण कहा गया है, और इसे पीछे छोड़ने का अर्थ है कि उस के लिए तैयारी नहीं करते, और उस की परवाह नहीं करते।
21 अर्थात हम ने उनकी जोड़ों को रगों और पट्ठों द्वारा जोड़ कर मज़्बूत किया।
22 अर्थात यदि हम चाहें तो उन्हें नष्ट करके उनके बदले ऐसी क़ौम ले आएं जो उन से अधिक मेरी फ़र्माबर्दार हो।
23 अर्थात तुम अपने रब का रास्ता अपनाने की चाहत नहीं कर सकते

وَمِنَ ٱلَّيۡلِ فَٱسۡجُدۡ لَهُۥ وَسَبِّحۡهُ لَيۡلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ
هَٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّونَ ٱلۡعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمۡ يَوۡمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَّحۡنُ
خَلَقۡنَٰهُمۡ وَشَدَدۡنَآ أَسۡرَهُمۡۖ وَإِذَا شِئۡنَا بَدَّلۡنَآ أَمۡثَٰلَهُمۡ تَبۡدِيلًا
﴿٢٨﴾ إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذۡكِرَةٞۖ فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾
وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾
يُدۡخِلُ مَن يَشَآءُ فِي رَحۡمَتِهِۦۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ أَعَدَّ لَهُمۡ عَذَابًا أَلِيمَۢا ﴿٣١﴾

سُورَةُ المُرۡسَلَاتِ

ترتيبها ٧٧ — آياتها ٥٠

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلۡمُرۡسَلَٰتِ عُرۡفٗا ﴿١﴾ فَٱلۡعَٰصِفَٰتِ عَصۡفٗا ﴿٢﴾ وَٱلنَّٰشِرَٰتِ نَشۡرٗا ﴿٣﴾
فَٱلۡفَٰرِقَٰتِ فَرۡقٗا ﴿٤﴾ فَٱلۡمُلۡقِيَٰتِ ذِكۡرًا ﴿٥﴾ عُذۡرًا أَوۡ نُذۡرًا ﴿٦﴾ إِنَّمَا
تُوعَدُونَ لَوَٰقِعٞ ﴿٧﴾ فَإِذَا ٱلنُّجُومُ طُمِسَتۡ ﴿٨﴾ وَإِذَا ٱلسَّمَآءُ فُرِجَتۡ
﴿٩﴾ وَإِذَا ٱلۡجِبَالُ نُسِفَتۡ ﴿١٠﴾ وَإِذَا ٱلرُّسُلُ أُقِّتَتۡ ﴿١١﴾ لِأَيِّ يَوۡمٍ أُجِّلَتۡ
﴿١٢﴾ لِيَوۡمِ ٱلۡفَصۡلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلۡفَصۡلِ ﴿١٤﴾ وَيۡلٞ يَوۡمَئِذٖ
لِّلۡمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾ أَلَمۡ نُهۡلِكِ ٱلۡأَوَّلِينَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتۡبِعُهُمُ ٱلۡأٓخِرِينَ
﴿١٧﴾ كَذَٰلِكَ نَفۡعَلُ بِٱلۡمُجۡرِمِينَ ﴿١٨﴾ وَيۡلٞ يَوۡمَئِذٖ لِّلۡمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾

अवश्य अल्लाह तआ़ला जानने वाला और हिक्मत वाला है।
31 जिसे चाहे अपनी रह़्मत (कृपा) में सम्मिलित कर ले, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्द-नाक अज़ाब (कष्टदायी यातना) तैयार कर रखा है।

सूरतुल् मुर्सेलात - 77

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

1 क़सम है उन फ़रिश्तों की जो वह़्य लेकर भेजे जाते हैं।
2 फिर उन फ़रिश्तों की क़सम जो हवाओं को ज़ोर से हांकते हैं।
3 और उन फ़रिश्तो की क़सम जो फ़िज़ा में अपने परों को फैलाते हैं।
4 फिर उन फ़रिश्तों की जो सत्य-असत्य को अलग-अलग
करदेने वाले हैं।
5 और उन फ़रिश्तों की जो वह़्य (प्रकाशना) लाने वाले हैं [1]।
6 जो (वह़्य) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए
होती है [2]।

7 जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित
रूप से होने वाली है।
8 तो जब तारे बे-नूर (प्रकाशहीन) कर दिए जाएंगे [3]।
9 और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जाएगा [4]।
10 और जब पर्वत टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिए जाएंगे [5]।
11 और जब रसूलों को मुक़र्रर (निर्धारित) समय पर लाया जाएगा [6]।
12 किस दिन के लिए (उन्हें) टाला गया है [7]?
13 निर्णय के दिन के लिए [8]।
14 और तुझे क्या पता कि निर्णय का दिन क्या है [9]?
15 उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।
16 क्या हमने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया [10]?
17 फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाए [11]।
18 हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं।
19 उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी है।
20 क्या हमने तुम्हें तुच्छ पानी [12] से पैदा नहीं किया।
21 फिर हमने उसे मज्बूत स्थान [13] में रखा।
22 एक मुक़र्रर (निर्धारित) समय तक [14]।
23 फिर हमने अनुमान लगाया तो हम क्या अच्छा अनुमान
लगाने वाले हैं [15]।
24 उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी (विनाश) है।
25 क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?
26 ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी [16]।
27 और हमने उसमें उच्च (और भारी) पर्वत बना दिए
और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया [17]।
28 उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।
29 उस नरक की ओर जाओ जिसे तुम झुठला रहे थे [18]।

जब तक कि अल्लाह की चाहत न हो, तो इस पर अल्लाह का अधिकार है तुम्हारा नहीं, भलाई और बुराई सब उसी के हाथ में है, तो जब तक अल्लाह न चाहे बन्दे की चाहत से न तो कोई भलाई प्राप्त हो सकती है, और न ही किसी बुराई को टाला जा सकता है।

1 وَٱلۡمُرۡسَلَٰتِ عُرۡفٗا से लेकर فَٱلۡمُلۡقِيَٰتِ ذِكۡرًا तक, इन आयातों में अल्लाह तआ़ला ने उन फ़रिश्तों की क़सम खाई है जिन्हें वह वह़्य लेकर अपने नबियों के पास भेजता है, और वह बड़ी तेज़ी से अपने पर फैलाए उन चीज़ों को लेकर आते हैं, जो सत्य तथा असत्य, और ह़लाल तथा ह़राम के बीच फ़र्क़ करती हैं, यहाँ तक कि वह वह़्य नबियों तक पहुँचा दी जाती हैं।

2 अर्थात फ़रिश्ते वह़्य लेकर आते हैं ताकि अल्लाह की ओर से हुज्जत क़ायम हो जाए, और यह बहाना बाक़ी न रह जाए कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का संदेश लेकर आया ही नहीं, उद्देश्य अल्लाह के अ़ज़ाब से उन लोगों को डराना है जो कुफ़्र करने वाले होंगे, और एक क़ौल यह है कि ह़क़-परस्तों के लिए शुभ संवाद है और बातिल-परस्तों के लिए डराव।

3 अर्थात उस की रौशनी ख़तम कर दी जाएगी।

4 अर्थात खोल और फाड़ दिए जाएंगे।

5 अर्थात अपनी जगह से उखेड़ दिए जाएंगे, और टुकड़े-टुकड़े करके फ़ज़ा में बिखेर दिए जाएंगे और धरती पर उन की जगह बराबर कर दी जाएगी।

6 अर्थात उनके और उनकी उम्मतों के बीच निर्णय के लिए एक समय निर्धारित होगा।

7 अर्थात ऐसे भयंकर दिन के लिए जिस की हौलनाकी के कारण लोग अचंभे में होंगे, इस समय रसूल इकट्ठे होंगे अपनी उम्मत के विरूद्ध गवाही देने के लिए।

8 जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जाएगा, और उनके कर्म के आधार पर अलग-अलग जन्नत तथा जहन्नम मिलेगी।

9 और तुम्हें किसने बताया के निर्णय का दिन क्या है? अर्थात वह बहुत ही भयंकर है जिस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

10 अर्थात उन काफ़िर उम्मतों को जो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक गुज़री हैं, हमने उन्हें संसार में अज़ाब द्वारा नष्ट कर दिया जब उन्होंने अपने रसूलों को झुठलाया।

11 अर्थात मक्का के काफ़िर और उनकी मुवाफ़क़त करने वालों को, जिन्होंने मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाया।

12 अर्थात कमज़ोर और ह़क़ीर मनी से।

13 मज़बूत और सुरक्षित स्थान अर्थात बच्चादानी में।

14 अर्थात गर्भ के समय तक जो कि ९ महीना है।

15 अर्थात हमने उस के अंगों तथा ख़ूबियों का ठीक ठीक अनुमान लगाया, और उस की सारी चीज़ों को उसी तरह बनाया जैसा हमने चाहा, तो अल्लाह कितना अच्छा अनुमान लगाने वाला है।

16 अर्थात तुम सभों को समेट कर सुरक्षित रखने वाली है, जीवितों को अपनी पीठ पर और मृतकों को अपने अन्दर।

17 فُرَاتًا : मीठा, यह सारी चीज़ें दोबारा जीवित किए जाने से भी अधिक अचंभे में डालने वाली हैं। ।

18 उन से कहा जाएगा कि जिस अ़ज़ाब को तुम झुठलाते थे उसे चल कर चखो।

30 चलो तीन शाखाओं वाले साए की ओर [1]।
31 जो वास्तव में न छाया देने वाला है और न ज्वाले से
बचा सकता है [2]।
32 अवश्य (नरक) चिंगारियाँ फेंकता है जो महल की तरह हैं [3]।
33 जैसे कि वे पीले ऊँट हैं [4]।
34 उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति है।
35 आज (का दिन) वह दिन है कि यह बोल भी न सकेंगे।
36 न उन्हें बहाना करने की अनुमति दी जाएगी।
37 उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।
38 यह है निर्णय का दिन, हमने तुम्हें और पहले के लोगों
को (सब को) इकट्ठा कर लिया है [5]।
39 तो यदि तुम मुझसे कोई चाल चल सकते हो तो चल लो[6]।
40 दु:ख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।
41 अवश्य परहेज़गार (सदाचारी) लोग साए में हैं और बहते
चश्मों (स्रोतों) में।
42 और उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें।
43 (हे जन्नवालो!) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किए हुए
कर्मों के बदले।
44 अवश्य हम नेकी करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।
45 उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।
46 (हे झुठलाने वालो!) तुम (संसार में) थोड़ा सा खा-पी लो
और लाभ उठा लो, निःसंदेह तुम पापी हो [7]।
47 उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।
48 उनसे जब कहा जाता है कि रुकूअ़ कर लो तो रुकूअ़
नहीं करते [8]।
49 उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है।
50 अब इस (क़ुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे [9]?

सूरतुन्-नबा - 78

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

1 यह लोग किस चीज़ की पूछताछ कर रहे हैं।[10]
2 उस बड़ी सूचना की? [11]

أَلَمْ نَخْلُقكُّم مِّن مَّآءٍ مَّهِينٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنَٰهُ فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿٢١﴾ إِلَىٰ قَدَرٍ
مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ ٱلْقَٰدِرُونَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾
أَلَمْ نَجْعَلِ ٱلْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ أَحْيَآءً وَأَمْوَٰتًا ﴿٢٦﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَٰسِىَ
شَٰمِخَٰتٍ وَأَسْقَيْنَٰكُم مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾
ٱنطَلِقُوٓا۟ إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ ٱنطَلِقُوٓا۟ إِلَىٰ ظِلٍّ ذِى ثَلَٰثِ
شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِى مِنَ ٱللَّهَبِ ﴿٣١﴾ إِنَّهَا تَرْمِى بِشَرَرٍ
كَٱلْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُۥ جِمَٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾
هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَٰذَا يَوْمُ ٱلْفَصْلِ جَمَعْنَٰكُمْ وَٱلْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِن كَانَ
لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾ إِنَّ ٱلْمُتَّقِينَ فِى
ظِلَٰلٍ وَعُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَفَوَٰكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔا
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كُلُوا۟ وَتَمَتَّعُوا۟ قَلِيلًا إِنَّكُم مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ٱرْكَعُوا۟ لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَىِّ حَدِيثٍۭ بَعْدَهُۥ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

3 जिसके बारे में वे विरोद्ध कर रहे हैं।[12]
4 यक़ीनन् यह अभी जान लेंगे।[13]
5 फिर निश्चित रूप से उन्हें बहुत जल्द जानकारी हो जाएगी। [14]
6 क्या हमने धरती को फ़र्श नहीं बनाया?[15]
7 और पर्वतों को खूँटा नहीं बनाया?[16]
8 और हमने तुम्हें जोड़-जोड़े पैदा किए।
9 तथा हमने तुम्हारी निद्रा को तुम्हारे आराम का कारण बनाया। [17]
10 और रात को हमनें पर्दा बनाया।[18]
11 और दिन को हमने रोज़-गार (जीविका कमाने) का
समय बनाया।[19]

---

1 नरक के धुएं की छाया की ओर चलो, जो ऊँचा होकर तीन शाखाओं में फैला होगा।

2 अर्थात यह छाया दुनिया के छाया जैसा ठंडी नहीं होगी, और न ही यह छाया नरक की गर्मी से बचा सकेगी। हिसाब व किताब से फ़ारिग़ होन तक तुम्हें इसी छाया में रहना होगा।

3 अर्थात नरक से उड़ने वाली चिंगारियाँ इतनी बड़ी बड़ी होंगी जैसे महल होते हैं।

4 डील डोल में इतने बड़े होंगे जैसे पीले ऊँट, पीला का अर्थ यहां पर काला है, अरबवासी काले ऊँट को पीला कहते हैं, और एक क़ौल के अनुसार चिंगारी जब उड़ेगी और गिरेगी तो उस नरक के रंग का जो प्रभाव होगा वह काले ऊँट जैसा होगा।

5 अर्थात उन से कहा जाएगा कि निर्णय का दिन है, जिसमें लोगों के बीच निर्णय हो जाएंगे, और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर स्पष्ट किया जाएगा, हमने तुम्हें हे क़ुरैश के काफ़िरो, पिछली उम्मतों के काफ़िरों के साथ इकट्ठा कर लिया है।

6 अल्लाह तआ़ला कहेगा : यदि तुम्हारे पास कोई चाल है जिसे तुम मेरे विरोध में चल सकते हो तो चल कर देख लो।

7 अर्थात उन से यह संसार में कहा जाएगा, और पापी से मुराद मुश्रिक और नाफ़रमान हैं।

8 अर्थात जब उन्हें नमाज़ का आदेश दिया जाता था तो नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

9 यदि क़ुरआन पर ईमान नहीं लाए तो भला इसके सिवा किस चीज़ पर ईमान लाएंगे?

10 जब नबी ﷺ की बेसत हुई, और आप ने उन्हें तौहीद और दोबारा जीवित किए जाने के बारे में बताया, क़ुरआन की तिलावत की तो वे आपस में एक दूसरे से पूछने लगे। कहने लगे कि मुहम्मद को क्या हो गया, यह क्या लेकर आए हैं? तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी।

11 बड़ी सूचना से मुराद महान क़ुरआन है; क्योंकि यह किताब अल्लाह की वहदानियत, रसूल की सच्चाई और दोबारा उठाए जाने की ख़बर देती है।

12 क़ुरआन के बारे में उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया किसी ने उसे जादू कहा, किसी ने शाइरी, किसी ने कहानत तो किसी ने उसे पहले लोगों के अफ़साने का नाम दिया।

13 इस में उन के लिए डाँट और फटकार है, कि जल्द ही उन्हें जानकारी हो जाएगी कि झुटलाने का अन्जाम क्या होने वाला है।

14 यह दोबारा उन्हें डाँट पिलाने के लिए है।

15 बिछौना और फ़र्श बनाया, जैसे बच्चों के लिए बिछौना तैयार किया जाता है ताकि उसे उस पर सुलाया जाए।

16 अर्थात हम ने पहाड़ों को धर्ती के लिए खूंटा की तरह बनाया ताकि वह ठहरी रहे और उसमें हिल-डोल न हो।

17 سُبَاتًا हिलना बन्द हो जाता है ताकि शरीर को आराम मिले।

18 अर्थात हम तुम्हें रात का अंधेरा पहना देते हैं बल्कि उस से ढक देते हैं जैसे कपड़े से शरीर ढक दिया जाता है।

19 अर्थात हम दिन को रौशन कर देते हैं, ताकि लोग अपनी रोज़ी की खोज में दौड़ भाग करें।

ترتيبها ٧٨ — سُورَةُ النَّبَإِ — آياتها ٤٠

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُونَ ﴿١﴾ عَنِ ٱلنَّبَإِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٢﴾ ٱلَّذِى هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ﴿٣﴾
كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ نَجْعَلِ ٱلْأَرْضَ مِهَٰدًا ﴿٦﴾
وَٱلْجِبَالَ أَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَخَلَقْنَٰكُمْ أَزْوَٰجًا ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا
﴿٩﴾ وَجَعَلْنَا ٱلَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾ وَجَعَلْنَا ٱلنَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا
فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَأَنزَلْنَا
مِنَ ٱلْمُعْصِرَٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهِۦ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَجَنَّٰتٍ
أَلْفَافًا ﴿١٦﴾ إِنَّ يَوْمَ ٱلْفَصْلِ كَانَ مِيقَٰتًا ﴿١٧﴾ يَوْمَ يُنفَخُ فِى ٱلصُّورِ
فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَفُتِحَتِ ٱلسَّمَآءُ فَكَانَتْ أَبْوَٰبًا ﴿١٩﴾ وَسُيِّرَتِ
ٱلْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّٰغِينَ
مَـَٔابًا ﴿٢٢﴾ لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا
﴿٢٤﴾ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا۟
لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَىْءٍ
أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوقُوا۟ فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

(12) और तुम्हारे ऊपर हमने सात मज़्बूत आकाश बनाए।[1]
(13) और एक चमकता हुआ ज्योति दीप (सूरज) पैदा किया।[2]
(14) और मेंघों[3] से हमने अत्यधिक बहता हुवा[4] पानी बरसाया।
(15) ताकि उससे अनाज और बनस्पति उगाएं।[5]
(16) और घने बाग़[6] भी (उगाएं)।
(17) बेशक निर्णय के दिन का समय मुक़र्रर (निर्धारित) है।[7]
(18) जिस दिन कि सूर[8] (नरसिंघा) में फूँका जाएगा फिर तुम सब दल के दल बन कर जाओगे।[9]
(19) और आकाश खोल दिया जाएगा[10], तो उसमें द्वार-द्वार हो जाएंगे।[11]

---

1 अर्थात सात मज़्बूत से मुराद सात आकाश हैं, जो कि बहुत ठोस हैं।
2 इस से मुराद सूरज है, **وهج** उसे कहते हैं जिसमें रौशनी और गर्मी दोनों हो।
3 **معصرات** वह बदलियाँ हैं जो पानी से भरी हुई हों लेकिन अभी बरसी न हों।
4 **ثجاجا** अधिक मात्रा में बहने वाला पानी।
5 जैसे गेंहूँ, जौ और इस तरह के दूसरे अनाज और ग़ल्ले और घास और चारे जिन्हें पशु खाते हैं।
6 घने बागीचे जिनके पेड़ों की डालियाँ एक दूसरे से मिली हों।
7 अर्थात पहले और पिछलों के इकट्ठा होने और वादे का समय जिस में वह उस परिणाम को पाएंगे जिसका उनसे वादा किया गया है, और इसे निर्णय का दिन इसलिए कहा गया है कि उस दिन अल्लाह अपनी मख़्लूक़ के बीच निर्णय करेगा।
8 **صور** नरसिंघा जिस में इसराफ़ील ﷺ फूंक मारेंगे।
9 पेशी की जगह, (अर्थात मैदाने महशर की ओर)
10 फ़रिश्तों के उतरने के लिए।
11 अर्थात उसमें ढेर सारे दर्वाज़े हो जाएंगे।

(20) और पर्वत चलाए जाएंगे तो वे सफेद बालू हो जाएंगे।[12]
(21) निःसंदेह नरक[13] घात में है।
(22) उद्दण्डियों का स्थान वही है।[14]
(23) उसमें वे युगों-युग पड़े रहेंगे।[15]
(24) न कभी उसमें ठंस का स्वाद चखेंगे न पानी का।
(25) सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।[16]
(26) (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा।[17]
(27) उन्हें तो हिसाब की उम्मीद (संभावना) ही न थी।[18]
(28) और दिलेरी से हमारी आयतों को झुठलाते थे।
(29) हमने हर-एक बात को लिखकर सुरक्षित रखा है।[19]
(30) अब तुम (अपने किए का) स्वाद चखो, हम तुम्हारा अज़ाब ही बढ़ाते जाएंगे।
(31) यक़ीनन् परहेज़गारों (सदाचारियों) के लिऐ सफलता है।[20]
(32) बाग़ात हैं और अंगूर हैं।
(33) और नवयुवती कुँवारी[21] हम-उम्र[22] औरतें हैं।
(34) और छलकते हुए शराब के प्याले हैं।[23]
(35) वहाँ न तो वे बुरी बातें सुनेंगे और न झूटी बातें सुनेंगे।[24]
(36) (उनको) तेरे रब की ओर से (उनके नेक-कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो काफ़ी इन्आम होगा।[25]
(37) (उस) रब की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उनके बीच है, उनका रब है, और बड़ी बख़्शिश करने वाला है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।[26]
(38) जिस दिन रूह़ और फरिश्ते सफ़ें बाँध कर खड़े होंगे[27] तो कोई बात न कर सकेगा मगर जिसे रहमान अनुमति देदे[28], और वह ठीक बात मुंह से निकालेगा।[1]

---

12 अर्थात पहाड़ों को उन की जगहों से जहाँ वे गड़े हुए हैं उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, और वे कण-कण होकर बिखर जाएंगे, देखने वाला उन्हें "सराब" समझेगा, अर्थात रेत जो दूर से पानी लगता है।
13 नरक में उसके दारोगे काफ़िरों के घात में होंगे, कि वे उसमें उन्हें अ़ज़ाब दें।
14 **مآبا** ठिकाना जिसकी ओर वे लौटेंगे।
15 अर्थात वे हमेशा नरक में ही रहेंगे, (**أحقاب، حقب** का बहु बचन है) मुराद लम्बा ज़माना है, एक हक़्ब जब खतम होगा दूसरा शुरू हो जाएगा, इस प्रकार इस सिलसिला का कभी अन्त न होगा, मतलब यह है कि वह सदा उसमें रहेंगे।
16 **حميما** गरम पानी। **غساقا** जहन्नमियों की पीप।
17 अर्थात सज़ा पाप अनुसार होगी, तो शिर्क से बढ़कर कोई जुर्म नहीं और जहन्नम से बढ़कर कोई अ़ज़ाब नहीं, और उनके कर्तूत चूँकि बुरे थे इसलिए अल्लाह उन्हें वही देगा जो उन्हें ग़म्गीन करदे।
18 न उन्हें सवाब की लालच थी और न हिसाब का डर, क्योंकि दोबारा जीवित किए जाने पर उनका ईमान ही नहीं था।
19 अर्थात हम ने उसे "लौहे़ मह़फ़ूज़" में लिख रखा है, और एक क़ौल यह है कि इस से मुराद उनके कर्तूत का वह रिकार्ड है जिसे निगरां फ़रिश्तों ने तैयार कर रखा है।
20 **مفازا** सफलता और जहन्नम से छुटकारा।
21 अर्थात उनके लिए ऐसी कुंवारी और नवयुवती औरतें होंगी जिनकी छातियां सीनों पर उठी होंगी, टूटी या ढीली न होंगी।
22 **أترابا** हम-उम्र।
23 **كأسا دهاقا** शराब से भरे हूए प्याले।
24 जन्नत में कोई ख़राब और बेहूदा बात नहीं सुनेंगे, और कोई किसी से झूठ नहीं कहेगा।
25 अर्थात जो अल्लाह के वादे में उनके लिए वाजिब हुवा होगा उसके अनुसार होगा, उसने एक नेकी पर दस नेकी के सवाब का वादा किया है, और किसी के लिए ७०० गुने का वादा है, और किसी के लिए ऐसे बदले का वादा है जिस की कोई सीमा न होगी।
26 अर्थात वह इस से बात न कर सकेंगे, जब तक कि वह उन्हें उसकी अनुमति न दे दे, और न हीं बिना उसकी अनुमति के सिफ़ारिश कर सकेंगे।
27 **روح** से मुराद फ़रिश्ता है, और एक क़ौल के अनुसार जिब्रईल मुराद हैं, और एक क़ौल के अनुसार फ़रिश्तों के इलावा अल्लाह का कोई लश्कर है।
28 सिफ़ारिश की, या वह मात्र उसी व्यक्ति के हक़ में बात कर सकेंगे

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَأَعْنَٰبًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً
حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٱلرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ
مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ ٱلرُّوحُ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ
إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذَٰلِكَ ٱلْيَوْمُ ٱلْحَقُّ فَمَن
شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا ﴿٣٩﴾ إِنَّآ أَنذَرْنَٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ
يَنظُرُ ٱلْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ ٱلْكَافِرُ يَٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرَٰبًا ﴿٤٠﴾

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

ترتيبها ٧٩ — آياتها ٤٦

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلنَّٰزِعَٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَٱلنَّٰشِطَٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَٱلسَّٰبِحَٰتِ سَبْحًا
﴿٣﴾ فَٱلسَّٰبِقَٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾ فَٱلْمُدَبِّرَٰتِ أَمْرًا ﴿٥﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ ٱلرَّاجِفَةُ
﴿٦﴾ تَتْبَعُهَا ٱلرَّادِفَةُ ﴿٧﴾ قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ﴿٨﴾ أَبْصَٰرُهَا
خَٰشِعَةٌ ﴿٩﴾ يَقُولُونَ أَءِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِى ٱلْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾ أَءِذَا كُنَّا
عِظَٰمًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوا۟ تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾ فَإِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ
وَٰحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَإِذَا هُم بِٱلسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلْ أَتَىٰكَ حَدِيثُ مُوسَىٰٓ ﴿١٥﴾

(39) यह[2] दिन सत्य है[3], अब जो चाहे अपने रब के पास (सत्यकर्म करके) स्थान बना ले।[4]

(40) हमने तुम्हें क़रीब में आने वाले अज़ाब से डरा दिया (और सावधान कर दिया)। जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा[5]। और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।[6]

सूरतुन् नाज़िआत - 79

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह्म करने वाला है।

(1) डूबकर कठोरता से खीचने वालों की क़सम।[7]
(2) बंधन खोलकर छुड़ादेने वालों की क़सम।[8]
(3) और तैरने फिरने वालों की क़सम।[9]
(4) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की क़सम।[10]
(5) फिर कामों के उपाय करने वालों की क़सम।[11]
(6) जिस दिन काँपने वाली काँपेंगी।[12]
(7) उसके बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आएगी।[13]
(8) (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।[14]
(9) जिनकी निगाहें नीची होंगी।[15]
(10) कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाए जाएंगे?[16]
(11) क्या उस समय जब हम गली हुई हड्डियाँ हो जाएंगे।
(12) कहते हैं कि यह लौटना फिर तो हानिकारक है।[17] (जानकारी होनी चाहिए)
(13) वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है[18] कि (जिसके ज़ाहिर होते ही)।
(14) वह एक-दम मैदान में इकट्ठे हो जाएंगे।[19]
(15) क्या मूसा (عليه السلام) की कथा भी तुम्हें पहुँची है?[20]
(16) जबकि उनके रब ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा[21] में पुकारा।
(17) कि तुम फ़िऔन के पास जाओ उसने उद्दण्डता अपना ली है।
(18) उससे कहो[22] कि क्या तू अपना सुधार और इस्लाह़ चाहता है।[23]
(19) और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उससे) डरने लगे।

जिसके लिए रह्मान अनुमति दे दे।

1 और यह व्यक्ति उन लोगों में से हो जिसने संसार में दुरुस्त बात कही हो, अर्थात तौह़ीद की गवाही दी हो, और तौह़ीद का स्वीकारी रहा हो।

2 अर्थात रूह़ और फ़रिश्तों के इस तरह से खड़े होने का दिन।

3 अर्थात हर हाल में आने वाला है।

4 **مآب** ठिकाना, अर्थात सुकर्म करके अपने रब के पास ठिकाना बना ले।

5 जिस दिन आदमी उस नेकी या बुराई को देख लेगा जिसे आगे भेजा था।

6 अर्थात जो अ़ज़ाब अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखा है उसे देख कर वह यह आरज़ू करेगा कि काश वह मिट्टी होता।

7 अल्लाह ने फ़रिश्तों की क़सम खाई जो बन्दों की रूहों को उन की शरीरों से पूरी शक्ति से खींचते हैं, जैसे कमान खींचने वाला जहाँ तक बढ़ सकता है पूरी शक्ति से खींच कर बढ़ाता है, **غرقا** डूब कर, अर्थात इस तरह सख्ती से कि शरीर के अन्तिम सिरे से उसे खींच लेते हैं।

8 **نشط** का माना रस्सी से डोल खींचने के हैं, अर्थात जानों को शरीरों से पूरी शक्ति से खींच कर बाहर निकालते हैं, (और एक क़ौल यह है कि **نشط** का माना बंधन खोलने के हैं, अर्थात मोमिन की जान फ़रिश्ते आसानी से निकाल लेते हैं, जैसे आसानी से किसी चीज़ का बंधन खोल दिया जाए)

9 फ़रिश्ते तेज़ी से आकाश से उतरते हैं, वह हवा में तैरते हैं जैसे गोता-खोर पानी में तैरता है।

10 यह फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश क़ायम करने के लिए दौड़ते हैं, और उन में से कुछ मोमिनों की रूहें लेकर जन्नत की ओर दौड़ते हैं।

11 फ़रिश्तों का मामले का उपाय करने का अर्थ : उनका ह़लाल, ह़राम और उनकी तफ़सील को लेकर उतरना, और धरती वालों के लिए पानी और हवा वग़ैरः का उपाय करना।

12 यह पहली फूँक है जिस से सारी मख़्लूक़ फ़ना हो जाएगी।

13 **رادفة** से मुराद दूसरी फूँक है जिस से सब लोग जीवित होकर क़ब्रों से निकल आएंगे।

14 क़ियामत की हौलनाकी को देख कर वह डरे होंगे और धड़कते होंगे।

15 अर्थात उनकी निगाहों में ज़िल्लत और बेचारगी स्पष्ट होगी, और क़ियामत की हौलनाकी को देख कर उनकी नज़रें मारे डर के झुकी हुई होंगी, मुराद उन लोगों की नज़रें हैं जो बिना इस्लाम लिए मरे होंगे।

16 ऐसा वे कहते हैं जो दोबारा जीवित किए जाने के इन्कारी हैं, जब उन से कहा जाता है कि मरने के पश्चात तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो आश्चर्य से कहते हैं कि क्या हम अपनी पहली हालत की ओर लौटा दिए जाएंगे, और मर जाने और क़ब्र के गढ़े में जाने के बाद फिर जीवित किए जाएंगे?

17 अर्थात मरने बाद के लौटाए जाने और मुहम्मद ﷺ जो कह रहे हैं उस से दोचार होने पर तो हम बड़े घाटे में होंगे। (यह बात वह मज़ाक़ उड़ाने के लिए कहते हैं)।

18 दूसरी फूँक होगी जिस से सारे लोग क़ब्रों में जीवित होकर निकल आएंगे, हमारी शक्ति इतनी महान है कि हमें इस के लिए कुछ और नहीं करना पड़ेगा।

19 एक क़ौल के अनुसार **ساهرة** सफ़ेद धरती होगी जिसे अल्लाह वुजूद में लाएगा और उसी पर सभों का हिसाब लेगा।

20 **هل, قد** के माने में है, अर्थात फ़िऔन और मूसा عليه السلام की कथाएं तुम्हें पहुँच चुकी हैं जिन से उनकी कहानी जानी जा सकती हैं।

21 पाक और बा-बर्कत तुवा, तूरे सीना में एक वादी है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा عليه السلام को पुकारा था (और उन्हें अल्लाह से बात करने का शुभ अवसर प्राप्त हुवा था)

22 उसके पास पहुँचने के बाद तुम उससे पूछो कि क्या तू शिर्क की गन्दगी से पवित्र होना चाहता है? मूसा عليه السلام को आदेश दिया गया था कि जाकर उसे नरमी से समझाएं।

23 और क्या तू चाहता है कि मैं तुझ को उस की इबादत और उस की तौह़ीद का रास्ता दिखाऊं ताकि तू अपने परिणाम से डरे, और अल्लाह का डर उसी समय पैदा हो सकता है जब वह स्वयं अच्छा और नेक होना चाहता हो।

إِذْ نَادَىٰهُ رَبُّهُۥ بِٱلْوَادِ ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾ ٱذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ﴿١٧﴾
فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰٓ أَن تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾ وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾ فَأَرَىٰهُ
ٱلْـَٔايَةَ ٱلْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾ فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ
فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾ فَأَخَذَهُ ٱللَّهُ نَكَالَ ٱلْـَٔاخِرَةِ وَٱلْأُولَىٰٓ
﴿٢٥﴾ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰٓ ﴿٢٦﴾ ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ ٱلسَّمَآءُ ۚ بَنَىٰهَا
﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّىٰهَا ﴿٢٨﴾ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَىٰهَا ﴿٢٩﴾
وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ ﴿٣٠﴾ أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعَىٰهَا ﴿٣١﴾
وَٱلْجِبَالَ أَرْسَىٰهَا ﴿٣٢﴾ مَتَٰعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَٰمِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَإِذَا جَآءَتِ ٱلطَّآمَّةُ
ٱلْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ ٱلْإِنسَٰنُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ ٱلْجَحِيمُ
لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾ فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾ وَءَاثَرَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَإِنَّ ٱلْجَحِيمَ
هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ
﴿٤٠﴾ فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلسَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَىٰهَا
﴿٤٢﴾ فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَىٰهَآ ﴿٤٣﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَىٰهَآ ﴿٤٤﴾ إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرُ
مَن يَخْشَىٰهَا ﴿٤٥﴾ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَىٰهَا ﴿٤٦﴾

سُورَةُ عَبَسَ

ترتيبها ٨٠ — آياتها ٤٢

(20) तो उसे बड़ी निशानी[1] दिखायी।
(21) तो उसने झुठलाया और नाफ़र्मानी की।[2]
(22) फिर पलटा दौड़-धूप करते हुए।[3]
(23) फिर सबको इकट्ठा करके पुकारा।[4]
(24) कहा कि तुम सबका बड़ा रब मैं ही हूँ।[5]
(25) तो (सबसे बुलंद और महान) अल्लाह ने भी उसे परलोक तथा इस लोक के अज़ाबों में घेर लिया।[6]
(26) बे-शक इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा है, जो डरे।[7]
(27) क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है [8] या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया।
(28) उसकी ऊँचाई चढ़ायी[9] फिर उसे ठीक ठाक कर दिया।[10]
(29) और उसकी रात को अंधेरा किया[11] और उसके दिन को निकाला।[12]
(30) और उसके बाद धरती को (समतल) बिछा दिया। [13]
(31) उसमें से पानी और चारा निकाला।[14]
(32) और पर्वतों को (मज़्बूत) रूप से गाड़ दिया।[15]
(33) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिऐ (हैं)।
(34) तो जब वह बड़ी विपत्ति (क़ियामत) आ जाएगी।[16]
(35) जिस दिन कि इन्सान अपने किए हुए कर्मों को याद करेगा।
(36) और (प्रत्एक) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर दी जाएगी।[17]
(37) तो जिस (व्यक्ति) ने उद्दण्डता अपनायी (होगी)।[18]
(38) और साँसारिक जीवन को तर्जीह़ दी (होगी)।[19]
(39) (उसका) स्थान जहन्नम ही है।[20]
(40) मगर जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़े[21] होने से डरता रहा होगा और अपने मन[22] को इच्छाओं से रोका होगा।
(41) तो उसका स्थान जन्नत ही है।
(42) लोग आपसे क़ियामत (प्रलय) के आने का समय पूछते हैं।[23]
(43) आपको उसके बयान करने से क्या सम्बन्ध?[24]
(44) उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके रब की ओर है।[25]
(45) आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान करने वाले हैं।[26]
(46) जिस दिन यह उसे देख लेंगे, तो ऐसा लगेगा कि केवल दिन का अन्तिम हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।[27]

---

1 बड़ी निशानी से मुराद एक क़ौल के अनुसार लाठी है, और एक क़ौल के अनुसार 'यदे बैजा' है।
2 अर्थात ईमान से उसने मुंह फेरा।
3 और धरती पर फ़साद के लिए दौड़-धूप करता रहा, और मूसा عليه السلام जो मोजिज़ा लेकर आए थे उस के मुक़ाबला के लिए प्रयास में रहा।
4 अपने लश्कर को लड़ाई के लिए इकट्ठा किया, या जादूगरों को मूसा عليه السلام से मुक़ाबला के लिए इकट्ठा किया, या लोगों को मुसा عليه السلام और जादूगरों के बीच होने वाले मुक़ाबले को देखने के लिए इकट्ठा किया।
5 इस से उस मल्ऊन की मुराद यह थी कि उस से बड़ा कोई रब नहीं।
6 तो अल्लाह ने उसे अपनी पकड़ में ले लिया और उसे उस की सज़ा दी, **نكال الآخرة** नरक का अज़ाब है। और **نكال الأولى** संसार में डुबाने का अज़ाब है, ताकि जो उस की ख़बर सुने उससे नसीह़त प्राप्त करे।
7 फ़िऔंन के कथा और जो उस के साथ किया गया, उस में बड़ी इब्रत और शिक्षा है उन लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते और तक़्वा के रास्ते पर चलना चाहते हैं।
8 अर्थात मरने के बाद फिर से तुम्हें पैदा करना और क़ब्रों से उठाना तुम्हारे अन्दाज़े में अधिक कठिन है, या उस महान आकाश को जिस में उस की शक्ति और कारीगरी की बहुत सी विचित्रताएं हैं जो कि देखने वालों से छुपी नहीं हैं।
9 अर्थात उसे ऊँचा बनाया जैसे धरती पर ऊँची बिल्डिंग होती है।
10 अर्थात उस की शकल और सूरत को समतल और बराबर बनाया, उसमें न तो टेढ़ापन है और न ही फटन है।
11 **أغطش، أظلم** के मायने में है, अर्थात उसे अंधेरा किया।
12 **أخرج، أبرز** के मायने में है, (और **نهارها** की जगह **ضحاها** इसलिए कहा गया है कि चाश्त का समय सब से उत्तम होता है) अर्थ यह है कि दिन को सूरज द्वारा रौशन किया।
13 अर्थात आकाश को पैदा करने के बाद धरती को बिछाया।
14 धरती से नहरें और चश्मे बहाए, और चारे और पौदे उगाए जिन में पशु चरते हैं।
15 अर्थात पर्वतों को धरती पर खूँटो की तरह मज़्बूत गाड़ दिया, ताकि जो उनके ऊपर रहते बसते हैं उनके साथ हिले न।
16 जो सारी मुसीबतों से बढ़ कर होगी, और वह दूसरी फूंक होगी जो जन्नतियों को जन्नत और जहन्नमियों को जहन्नम के हवाले कर देगी।
17 अर्थात इस तरह ज़ाहिर कर दी जाएगी कि किसी से छुपी नहीं रहेगी।
18 अर्थात कुफ़्र और पाप में सीमा पार किया होगा।
19 अर्थात संसार को आख़िरत पर वरीयता प्रदान किया होगा, और उसी को सब कुछ समझा होगा, और आख़िरत के लिए कोई तैयारी नहीं की होगी।

---

20 अर्थात वही उस की जगह होगी जिस की ओर वह पनाह पकड़ेगा, उस के सिवाय कोई और शरण-स्थल न होगी जहाँ वह शरण ले सके।
21 अर्था क़ियामत के दिन अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा।
22 और मन को उन पापों और गुनाहों से रोकता रहा जिसका इच्छा मन में जगता है।
23 अर्थात वह कब आएगी और कब कश्ती की तरह लंगर अंदाज़ होगी?
24 उसके ज्ञान और वर्णन से आप का क्या सम्बंध है, उसका वास्तविक ज्ञान तो अल्लाह के पास है।
25 अर्थात उस के ज्ञान की सीमा तेरे रब की ओर है, मात्र वही जानता है दूसरा कोई नहीं जानता।
26 अर्थात आप मात्र उस व्यक्ति को डराने वाले हैं जो क़ियामत आने से डर रहा हो।
27 अर्थात जिस दिन वे उसे देख लेंगे दुनिया की मौज मस्ती सब कुछ भूल जाएंगे, और उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में पूरे एक दिन भी नहीं रहे, मात्र दिन के पहले या अन्तिम हिस्सा में दुनिया में रहे हैं।

सूरतु अबस - 80

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

1 वह चिड़चिड़ा हुवा और मुंह मोड़ लिया।[1]
2 (केवल इसलिए) कि उसके पास एक अंधा आया।[2]
3 तुझे [3] क्या पता शायद वह सुधर जाता।
4 या नसीह़त सुनता[4] और उसे नसीहतें लाभ पहुँचाती।[5]
5 (परन्तु) जो लापरवाही करता है।[6]
6 उसकी ओर तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।[7]
7 हालांकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि नहीं।
8 और जो व्यक्ति तेरी ओर दौड़ता हुआ आता है।[8]
9 और वह डर (भी) रहा है।
10 तो तू उससे बे-रुख़ी (विमुखता) बरतता है।[9]
11 यह उचित नहीं[10] (क़ुरआन तो) नसीह़त की (चीज़) है।[11]
12 जो चाहे उससे नसीह़त ले।
13 यह तो सम्मानित किताबों में है।[12]
14 जो उच्च, [13] महान और पवित्र और शुद्ध है।[14]
15 ऐसे लिखने वालों के हाथों में है[15]।
16 जो बुज़ुर्ग[16] और पवित्र हैं।[17]
17 अल्लाह की मार इंसान पर[18], कितना ना-शुक्रा (कृतध्न) है।

---

[1] नबी ﷺ ने तेवर चढ़ाई और अपना मुंह फेर लिया।
[2] अपने पास अंधा के आने की वजह से, इस सूरत के नाज़िल होने का कारण यह है कि नबी ﷺ के पास कुछ क़ुरैश के शरीफ़ लोग बैठे हुए थे, जिन से आप बातें कर रहे थे, आप की चाहत थी कि यह इस्लाम स्वीकार कर लें, इतने में अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम जो कि अंधे थे और नेक सहाबा में से थे आ पहुँचे, और आप से धर्म सम्बन्धी बातें पूछने लगे, अल्लाह के रसूल को उनकी इस कतअ कलामी पर नागवारी हूई और उन की ओर ध्यान नहीं दिया तो यह आयतें नाज़िल हूईं।
[3] ऐ मुह़म्मद ﷺ।
[4] अर्थात वह अंधा व्यक्ति तुझ से धर्म की बातें सीख कर नेक कर्म करता जिस से वह गुनाहों से पवित्र हो जाता।
[5] या नसीहत प्राप्त करता और जो नसीहत की बात उसे बताते उस से उसे लाभ पहुँचता।
[6] और जो तुझ से बेपरवाही बरतता है, और उन चीज़ों से मुंह मोड़ता है जिन्हें लेकर तुम आए हो तो उसकी ओर तो तुम पूरा ध्यान लगाते हो।
[7] यदि वह इस्लाम न लाता तो उस से तुम्हें क्या हानि पहुंचता, तुम्हारी जिम्मादारी तो मात्र पहुँचाने की है, इसलिए ऐसे काफ़िरों के मामले को इतनी महत्व न दो।
[8] अर्थात वह (अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तूम) तेरे पास दौड़ते हुए आए हैं ताकि तू उनको लाभ का मार्ग दिखाए और अल्लाह की बातों की नसीह़त करे।
[9] तो तू उससे विमुखता बरतता है और अपना मुंह फेर लेता है।
[10] तेरा यह बर्ताव ठीक नहीं, ऐसे लोगों का तो सम्मान करना चाहिए, न कि उन से मुंह फेरना चाहिए।
[11] अर्थात यह आयतें या यह सूरत नसीह़त है, और इस लायक़ है कि तू इससे नसीह़त प्राप्त करे, और इसे स्वीकारे और इस के तक़ाज़ों के अनुसार कर्म करे।
[12] अर्थात यह ऐसी किताबों में है जो ज्ञान और ह़िक्मत से पुर होने और लौहे मह़फ़ूज़ से नाज़िल होने के कारण अल्लाह के पास बड़े सम्मानित हैं।
[13] और अल्लाह के पास बड़ी क़द्र व मन्ज़िलत वाले हैं।
[14] पवित्र हैं क्योंकि उन्हें पाक लोगों के अलावा कोई छूता ही नहीं, और शैतानों और काफ़िरों की पहुंच से सुरक्षित हैं, (इसलिए उन में कोई हेरा फेरी नहीं हो सकती)
[15] **سفرة، سافر** की जमअ़ है, यह सिफ़रत से है, इस से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो अल्लाह और रसूलों के बीच दूत के काम करते हैं, और अल्लाह की वह्य को रसूलों तक पहुँचाते हैं।
[16] अपने रब के पास शरीफ़ और सम्मानित हैं।
[17] परहेज़गार और अपने रब के आज्ञा का पालन करने वाले हैं, और अपने ईमान में सच्चे हैं।
[18] यहां इन्सान से काफिर इन्सान मुराद है, अर्थात उसकी ना-शुक्री बे-हद बढ़ी हुई है।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ﴿١﴾ أَن جَآءَهُ ٱلْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُۥ يَزَّكَّىٰٓ ﴿٣﴾ أَوْ
يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ ٱلذِّكْرَىٰٓ ﴿٤﴾ أَمَّا مَنِ ٱسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾ فَأَنتَ لَهُۥ تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾
وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَن جَآءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾ فَأَنتَ
عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾ كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَن شَآءَ ذَكَرَهُۥ ﴿١٢﴾ فِى صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ
﴿١٣﴾ مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭ ﴿١٤﴾ بِأَيْدِى سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾ قُتِلَ ٱلْإِنسَٰنُ
مَآ أَكْفَرَهُۥ ﴿١٧﴾ مِنْ أَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ ﴿١٨﴾ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُۥ فَقَدَّرَهُۥ ﴿١٩﴾ ثُمَّ
ٱلسَّبِيلَ يَسَّرَهُۥ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ أَمَاتَهُۥ فَأَقْبَرَهُۥ ﴿٢١﴾ ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنشَرَهُۥ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا
يَقْضِ مَآ أَمَرَهُۥ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنظُرِ ٱلْإِنسَٰنُ إِلَىٰ طَعَامِهِۦٓ ﴿٢٤﴾ أَنَّا صَبَبْنَا ٱلْمَآءَ صَبًّا
﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا ٱلْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾
وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَفَٰكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَٰعًا لَّكُمْ
وَلِأَنْعَٰمِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَإِذَا جَآءَتِ ٱلصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾
وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَٰحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ
يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَفَرَةُ ٱلْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

18 उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया?[19]
19 एक मनी (वीर्य) से पैदा किया[20]। फिर उसको अंदाजा पर रखा।[21]
20 फिर उसके लिए रास्ता आसान किया।[22]
21 फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में गाड़ दिया।[23]
22 फिर जब चाहेगा उसे जिन्दा करदेगा।[24]
23 कभी भी नहीं, उसने अब तक अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।[25]
24 इन्सान को चाहिए कि अपने खाने की ओर देखे।[26]
25 कि हमने खूब पानी बरसाया।

---

[19] अर्थात अल्लाह ने उस काफिर को किस चीज़ से पैदा किया।
[20] अर्थात उसकी पैदाइश एक घटिया वीर्य से हूई है जो पेशाब के निकलने के स्थान से निकलता है, फिर ऐसे व्यक्ति को घमंड क्योंकर भाता है जो पेशाब निकलने के स्थान से दो बार निकला हो।
[21] अर्थात उसे ठीक ठाक बनाया, उसे दो हाथ, दो पैर, दो आँख और दूसरी भांपने वाली चीज़ें दी।
[22] भलाई और बुराई प्राप्त करने के मार्ग उस के लिए आसान किए।
[23] अर्थात मरने के पश्चात उसे क़ब्र में दफ़नाने का आदेश दिया, ताकि उसका सम्मान बरक़रार रहे, उसे धरती पर पड़ा नहीं रहने दिया कि पशु पक्षि उसे नोच नोच कर खाएं जिस से उस का अपमान हो।
[24] अर्थात जिस समय वह चाहेगा उसे दोबारा जीवित करेगा।
[25] अर्थात उसे पालन करने में कमी की, कुछ ने कुफ़्र करके और कुछ ने ना-फ़रमानी करके, और जिन चीज़ों का अल्लाह ने आदेश दिया था उसे बहुत कम लोगों ने पूरा किया।
[26] अर्थात उसे विचार करना चाहिए कि अल्लाह ने उस की रोज़ी जो उस के जीवन का कारण है कैसे पैदा की।

سُورَةُ التَّكْوِيرِ — ترتيبها ٨١ — آياتها ٢٩

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا ٱلشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا ٱلنُّجُومُ ٱنكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا ٱلْجِبَالُ
سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا ٱلْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَإِذَا ٱلْوُحُوشُ حُشِرَتْ
﴿٥﴾ وَإِذَا ٱلْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَإِذَا ٱلنُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَإِذَا
ٱلْمَوْءُۥدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِأَىِّ ذَنۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا ٱلصُّحُفُ نُشِرَتْ
﴿١٠﴾ وَإِذَا ٱلسَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَإِذَا ٱلْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾ وَإِذَا ٱلْجَنَّةُ
أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾ فَلَآ أُقْسِمُ بِٱلْخُنَّسِ ﴿١٥﴾
ٱلْجَوَارِ ٱلْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَٱلَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾ وَٱلصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾
إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾ ذِى قُوَّةٍ عِندَ ذِى ٱلْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ
ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾ وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَءَاهُ بِٱلْأُفُقِ ٱلْمُبِينِ
﴿٢٣﴾ وَمَا هُوَ عَلَى ٱلْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ﴿٢٥﴾
فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٧﴾ لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن
يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٩﴾

سُورَةُ الانفِطَارِ — ترتيبها ٨٢ — آياتها ١٩

26 फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा।[1]
27 फिर उसमें अन्न उपजाए।[2]
28 और अंगूर और तरकारी।[3]
29 और ज़ैतून और खजूर।
30 और घने बाग़।
31 और मेवा और (घास) चारा[4] (भी उगाया)।
32 तुम्हारे प्रयोग और लाभ के लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए।
33 फिर जब कान बहरे करने वाली[5] (क़ियामत) आ जाएगी।
34 तो आदमी उस दिन अपने भाई से।
35 अपनी माँ और बाप से।
36 अपनी पत्नी और संतान से भागे गा।[6]
37 उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी फ़िक्र होगी जो
उसके लिए काफ़ी होगी।[7]
38 बहुत से चेहरे उस दिन रौशन[8] होंगे।
39 (जो) हँसते हुए प्रसन्न होंगे।
40 और बहुत से चेहरे उस दिन धूल में अटे[9] होंगे।
41 जिन पर कालिक चढ़ी होगी।[10]
42 वे यही काफ़िर बद्-किर्दार (दुराचारी) लोग होंगे।[11]

सूरतुत् तकवीर - 81

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 जब सूरज लपेट लिया जाएगा।[12]
2 और जब सितारे झड़ कर गिरने लगेंगे।[13]
3 और जब पर्वत चलाए जाएंगे।[14]
4 और जब ह़ामिला (गर्भवती) ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएंगी।[15]
5 और जब वह्शी जानवर (वन प्राणी) इकट्ठे किए जाएंगे।[16]
6 और जब सागर भड़काए जाएंगे।[17]
7 और जब जानें (जिस्मों से) मिला दी जाएंगी।[18]
8 और जब ज़िन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जाएगा।
9 कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी?[19]
10 और जब नाम-ए-आमाल (कर्मपत्र) खोल दिए जाएंगे।[20]
11 और जब आकाश की खाल खींच ली जाएगी।[21]
12 और जब जहन्नम भड़कायी जाएगी।[22]
13 और जब जन्नत क़रीब कर दी जाएगी।[23]

---

1 अर्थात कि वह बीज जैसे कम्ज़ोर वस्तू से जब वह पहली बार उगता है तो धरती में फट जाता है, अर्थात उस में यह शक्ति नहीं थी कि वह धरती को फाड़ कर बाहर निकले यह शक्ति हम ने उसे दी है।
2 जो इन्सान की रोज़ी है, अर्थात पौदा बराबर बढ़ता रहता है यहाँ तक कि अनाज और दाने में बदल जाता है।
3 **قضبا** एक हरा पौदा मुराद साग और तरकारी जो लटकती है।
4 **أبا** वह घास और चारा जो स्वयं उपजे जिसे बोया न जाता हो, जिसे पशु खाते हैं।
5 **صاخة** क़ियामत के दिन की चीख़ जो इतनी भयंकर होगी कि कानों को बहरा कर देगी।
6 यह सब से ख़ास क़ुरीबी लोग हैं और इस लायक़ हैं कि उनके साथ नरमी की जाए, तो ऐसे लोगों से उस का भागना बे-हद भयानकपन के कारण ही हो सकता है।

7 जो उन्हें उन के अपनों से बे-परवाह कर देगी, और उन्हें देख कर वह इस डर से भागेंगे कि कहीं वह उन से नेकी न मांग बैठें, या इस कारण भागेंगे कि उन का दुःख न देख सकें।
8 **سفرة** रौशन।
9 **غبرة** धूल।
10 अर्थात उस पर कालिक उदासी छाई होगी।
11 अर्थात धूल अटे चेहरे वाले।
12 अर्थात जब सूरज गेंद के रूप का कर दिया जाएगा, और लपेट कर फेंक दिया जाएगा।
13 अर्थात टूट टूट कर गिरने और बिखरने लगेंगे, और एक क़ौल यह है कि वे बे-नूर कर दिए जाएंगे।
14 अर्थात उसे धरती से उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, (और धुनी हूई रूई की तरह उड़ने लगेंगे)
15 **عشارة** गाभिन ऊँटनियाँ जिन के पेट में दस महीने के बच्चे हों, दस महीने की गाभिन ऊँटनी का चर्चा इसलिए है कि उन की गिन्ती अरबों के यहाँ सब से अच्छे धन में होती है, और **عطلت** का अर्थ बिना चरवाहे के यूँ ही छोड़ दी जाएंगी, अर्थात क़ियामत की हौलनाकी को देख कर लोगों को अपनी इस प्रकार की क़ीमती ऊँटनियों की भी परवाह न होगी।
16 अर्थात उन्हें भी जीवित किया जाएगा ताकि एक-दूसरे से अपना बदला ले सकें, और एक क़ौल यह है कि उन का हश्र उन की मौत है।
17 अर्थात वह जला दिए जाएंगे और उनमें आग भड़क उठेगी।
18 अर्थात मोमिनों की जानें बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों से और काफ़िरों की जानें शैतोनों से मिला दी जाएंगी, ह़सन बसरी कहते हैं कि हर व्यक्ति को उस की पार्टी और उसके हम ख़याल लोगों से मिला दिया जाएगा, यहूदी को यहूदियों के साथा, ईसाई को ईसाईयों के साथ, मजूसी को मजूसियों के साथ, मुनाफ़िक़ को मुनाफ़िक़ों के साथ, और मोमिन को मोमिनों के साथ मिला दिया जाएगा।
19 अर्थात अरबों के यहाँ जब कोई लड़की पैदा होती थी तो उसे आर या भुकमरी के डर से जिन्दा दफ़न कर देते थे, इस प्रकार हत्यारा से प्रश्न करके उस की सरजनिश की जाएगी, क्योंकि वास्तविक मुज्रिम तो वही है, न कि दफ़न की जाने वाली लड़की; क्योंकि बिना किसी पाप के उस की हत्या की गयी है।
20 अर्थात मौत के समय यह कर्म-पत्र लपेट दिए जाते हैं, फिर क़ियामत के दिन ह़िसाब के लिए खोल दिए जाएंगे।
21 अर्थात जब उधेड़ दिया जाएगा जैसे छत उधेड़ी जाती है।
22 अर्थात अल्लाह का ग़ुस्सा और बनू आदम के पाप उसे भड़का देंगे।
23 अर्थात परहेजगारों के क़रीब कर दी जाएगी, यह पूरे १२ हैं, जिन में शूरू के ६ का सम्बंध संसार से है, और अन्तिम ६ का सम्बंध आख़िरत से।

(14) तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।[1]
(15) मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले।[2]
(16) चलने-फिरने वाले[3] छिपने वाले सितारों की।[4]
(17) और रात की जब जाने लगे।[5]
(18) और सवेरे की जब चमकने लगे।[6]
(19) बे-शक यह एक महान रसूल का कहा हुवा है।[7]
(20) जो शक्तिशाली है[8] अर्श वाले (अल्लाह) के पास सम्मानित है।[9]
(21) जिसका वहाँ (आकाशों पर आदेश का) पालन किया जाता है[10] (वह) अमीन है।[11]
(22) और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[12]
(23) उसने उस (फ़रिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।[13]
(24) और यह [14] ग़ैब (परोक्ष) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं है। [15]
(25) और यह (क़ुरआन) मर्दूद शैतान का कहा हुवा नहीं। [16]
(26) फिर तुम कहाँ जा रहे हो।[17]
(27) यह तो सारे संसार वालों के लिए नसीहत नामा (शिक्षापत्र) है।
(28) (विशेषरूप से उसके लिए,) जो तुममें से सीधे रास्ते पर चलना चाहे।
(29) और तुम बिना सारे जहां के रब के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते।

सूरतुल इंफ़ितार - 82

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब आकाश फट जाएगा।[18]

[1] अर्थात जब कर्म-पत्र खोल दिए जाएंगे तो प्रत्येक व्यक्ति को यह पता चल जाएगा कि वह कैसा कर्म कर के संसार से आया है बुराई या भलाई।
[2] अल्लाह तआला सितारों की क़सम खा रहा है जो दिन को अपने मन्ज़र से पीछे हट जाते हैं, और सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देते।
[3] जो अपने स्थान पर चलते रहते हैं।
[4] और जो डूबने के समय छुप जाते हैं, और **كنس، كناس** से है जिस में वहशी जानवर जैसे हिरण वग़ैरा छुपते हैं।
[5] अर्थात जब वह चली गई हो और उसका अंधेरापन खतम होने लगा हो, और उजाला होने लगा हो।
[6] अर्थात सवेरे की जब वह भीनी भीनी और सुहानी हवा लेकर आ गई हो।
[7] अर्थात जिब्रईल ﷺ का; क्योंकि वही क़ुरआन अल्लाह की ओर रसूलुल्लाह ﷺ के पास लेकर उतरते थे।
[8] अर्थात बहुत शक्तिशाली है, जो भी काम उस के हवाले किया जाए उसे पूरी शक्ति के साथ करता है।
[9] अर्थात अल्लाह के पास बड़े मर्तबा वाला है।
[10] अर्थात फ़रिश्तों में उसके आदेश का पालन होता है, वे उसकी ओर आते हैं और उस की बात मानते हैं।
[11] अर्थात वह्य के बारे में अमीन और भरोसा के क़ाबिल है।
[12] साथी से मुराद मुहम्मद ﷺ हैं, उन्हें साथी यह कहने के लिए बताया गया है कि वह तुम्हारे वंश और नगर के हैं जिन्हें तुम खूब जानते हो, वह लोगों में सब से बड़े बुद्धिमान और पुर्ण हैं, (फिर तुम उन्हें दीवाना क्यों कह रहे हो? क्या यह स्वयं तुम्हारे पागलपन का सबूत नहीं है?)
[13] अर्थात मुहम्मद ﷺ ने जिब्रईल ﷺ को असली रूप में देखा है, उन के ६०० बाज़ू थे, मुजाहिद कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन्हे अज्याद की ओर जो मक्का के पूरब में है, देखा।
[14] अर्थात मुहम्मद ﷺ ।
[15] अर्थात आप आकाश की ख़बरें बताने में बख़ीली नहीं करते, और वह्य को लोगों को अच्छी तरह बता और सिखा देते हैं।
[16] अर्थात यह क़ुरआन किसी शैतान की बात नहीं, जो आसमान की कुछ बातें चोरी छूपे सुन लेते हैं, और जिन्हें शिहाबे-साक़िब से मार मार कर भगाया जाता है।
[17] अर्थात किस रास्ते पर जा रहे हो, क्या यह उस रास्ते से जिसे हमने तुम से बयान किया अधिक स्पष्ट है?
[18] फ़रिश्तों के उतरने के कारण फट जाएगा।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنفَطَرَتۡ ﴿١﴾ وَإِذَا ٱلۡكَوَاكِبُ ٱنتَثَرَتۡ ﴿٢﴾ وَإِذَا ٱلۡبِحَارُ
فُجِّرَتۡ ﴿٣﴾ وَإِذَا ٱلۡقُبُورُ بُعۡثِرَتۡ ﴿٤﴾ عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ
وَأَخَّرَتۡ ﴿٥﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡإِنسَٰنُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ ٱلۡكَرِيمِ ﴿٦﴾ ٱلَّذِي
خَلَقَكَ فَسَوَّىٰكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِيٓ أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾
كَلَّا بَلۡ تُكَذِّبُونَ بِٱلدِّينِ ﴿٩﴾ وَإِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحَٰفِظِينَ ﴿١٠﴾ كِرَامٗا
كَٰتِبِينَ ﴿١١﴾ يَعۡلَمُونَ مَا تَفۡعَلُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ ٱلۡأَبۡرَارَ لَفِي نَعِيمٖ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ
ٱلۡفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٖ ﴿١٤﴾ يَصۡلَوۡنَهَا يَوۡمَ ٱلدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمۡ عَنۡهَا بِغَآئِبِينَ
﴿١٦﴾ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلدِّينِ
﴿١٨﴾ يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٞ لِّنَفۡسٖ شَيۡـٔٗاۖ وَٱلۡأَمۡرُ يَوۡمَئِذٖ لِّلَّهِ ﴿١٩﴾

سُورَةُ المُطَفِّفِينَ

ترتيبها ٨٣ — آياتها ٣٦

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَيۡلٞ لِّلۡمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكۡتَالُواْ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسۡتَوۡفُونَ ﴿٢﴾
وَإِذَا كَالُوهُمۡ أَو وَّزَنُوهُمۡ يُخۡسِرُونَ ﴿٣﴾ أَلَا يَظُنُّ أُوْلَٰٓئِكَ أَنَّهُم
مَّبۡعُوثُونَ ﴿٤﴾ لِيَوۡمٍ عَظِيمٖ ﴿٥﴾ يَوۡمَ يَقُومُ ٱلنَّاسُ لِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ﴿٦﴾

(2) और जब सितारे झड़ जाएंगे।[19]
(3) और जब सागर बह चलेंगे।[20]
(4) और जब क़ब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जाएंगी।[21]
(5) उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (अर्थात अगले पिछले कर्मों को) जान लेगा।[22]
(6) हे इन्सान! तुझे अपने करीम रब से किसनें बहकाया?[23]
(7) जिस (रब ने) तुझे पैदा किया[24] फिर ठीक-ठाक किया[25] फिर (उचित रूप से) बराबर बनाया।[26]
(8) जिस रूप में तुझे चाहा ढ़ाला।[27]

[19] अर्थात बिखर-बिखर कर गिरने लगेंगे।
[20] एक क़ौल यह है कि आपस में मिल कर सब एक हो जाएंगे, या वह फूट पड़ेंगे जैसे ज्वालामुखी फूटता है, और यह क़ियामत आने से पहले होगा, (जैसा कि इस से पहली वाली सूरत में गुज़रा है)
[21] अर्थात उस की मिट्टी पलट दी जाएगी और उस के मुर्दे बाहर आ जाएंगे।
[22] अर्थात जो अच्छे और बुरे कर्म उसने आगे भेजा होगा, और जो उसने पीछे छोड़े होंगे उनका ज्ञान कर्म-पत्र के बिखेरे जाने के समय हो जाएगा, उस की कोई अच्छाई और बुराई उस से छुपी नहीं रहेगी।
[23] अर्थात फिर किस चीज़ ने तुझे धोके में डाल दिया कि तूने अपने रब्बे करीम का इन्कार किया, और एक क़ौल यह है कि उस के धोके में रखने से मुराद अल्लाह का उसको माफ़ किए रहना और उसे अपनी पकड़ में लेने में जल्दी न करना है।
[24] जिस रब ने तुझे मनी से पैदा किया जब कि तू कुछ नहीं था।
[25] अर्थात ऐसा इन्सान बना दिया जो देखता सुनता हो, और अक़्ल रखता हो।
[26] अर्थात तूझे सीधी क़ामत और अच्छे रूप का बनाया, और तेरे अंगों को फिट-फाट बनाया।
[27] अर्थात अपनी चाहत के अनुसार उसने तेरी जैसी शकल चाही बनाई,

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْفُجَّارِ لَفِى سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾ كِتَٰبٌ
مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ ٱلَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿١١﴾
وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ
ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ كَلَّآ إِنَّهُمْ
عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا۟ ٱلْجَحِيمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ
هَٰذَا ٱلَّذِى كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾ كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْأَبْرَارِ لَفِى عِلِّيِّينَ
﴿١٨﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾ كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾ يَشْهَدُهُ ٱلْمُقَرَّبُونَ
﴿٢١﴾ إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ لَفِى نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِى
وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ ٱلنَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾
خِتَٰمُهُۥ مِسْكٌ ۚ وَفِى ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ ٱلْمُتَنَٰفِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُۥ
مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا ٱلْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ
أَجْرَمُوا۟ كَانُوا۟ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا۟ بِهِمْ
يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا ٱنقَلَبُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمُ ٱنقَلَبُوا۟ فَكِهِينَ ﴿٣١﴾
وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّونَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ أُرْسِلُوا۟ عَلَيْهِمْ
حَٰفِظِينَ ﴿٣٣﴾ فَٱلْيَوْمَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنَ ٱلْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

(9) कभी भी नहीं[1], बल्कि तुम तो दण्ड और बदले के दिन को झुठलाते हो।[2]
(10) बे-शक तुम पर इज़्ज़त वाले रक्षक।
(11) लिखने वाले नियुक्त हैं।
(12) जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।[3]
(13) बे-शक नेक लोग (जन्नत के ऐशो-आराम और) नेमतों में होंगे।
(14) और यक़ीनन् कुकर्मी लोग जहन्नम में होंगे।
(15) बदले वाले दिन[4] उसमें जाएंगे।
(16) वे उसमें से कभी गायब न हो पाएंगे।[5]
(17) तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?
(18) मैं फिर (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और दण्ड) का दिन क्या है?[6]
(19) (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए किसी चीज़ का अधिकारी न होगा, और सारे आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे।[7]

सूरतुल् मुतफ़्फ़िफ़ीन - 83

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए।[8]
(2) कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा पूरा[9] लेते हैं।
(3) और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं[10], तो कम देते हैं।
(4) क्या उन्हें अपने मरने के बाद जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है।[11]
(5) उस बड़े भारी दिन के लिए।
(6) जिस दिन सभी लोग सारे जगत के रब के सामने खड़े होंगे।[12]
(7) बे-शक कुकर्मियों का नाम-ए-आ'माल (कर्म पत्र) सिज्जीन में है।[13]
(8) तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?[14]
(9) यह तो लिखी हुई किताब है।
(10) उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गत है।
(11) जो बदले और दण्ड के दिन को झुठलाते रहे।
(12) उसे केवल वही झुठलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जाने वाला और पापी होता है।[15]
(13) जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं[16], तो कह देता है कि यह अगले लोगों की कथाएं हैं।[17]
(14) यूँ नहीं![18] बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्म के कारण मोरचा चढ़ गया है।[19]

उस में तेरा कोई अधिकार नहीं रहा।

[1] यह डाँट फटकार है अल्लाह की उस नवाज़िश से धोका खाने पर और उसे उसके कुफ़्र का माध्यम बनाने पर।

[2] अर्थात बदले के दिन का।

[3] अल्लाह फ़रमा रहा है कि तुम बदले के दिन को झुठला रहे हो जब कि अल्लाह के फ़रिश्ते तुम्हारी निगरानी पर नियुक्त हैं और तुम्हारे सारे कर्म लिख रहे हैं, ताकि क़ियामत के दिन तुम से उस का हिसाब लिया जा सके।

[4] अर्थात बदले का दिन जिसे वे झुठलाया करते थे, उसी दिन उसकी लपट और शोलों में उन्हें जलना पड़ेगा।

[5] अर्थात कभी उससे अलग नहीं होंगे, बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

[6] अर्थात सवाब और बदले का दिन।

[7] अर्थात उस दिन न कोई फ़ैसला कर सकेगा, और न कोई किसी के लिए कुछ कर सकेगा, किसी को कोई अधिकार प्राप्त न होगा सिवाए रब्बुल आलमीन के, उस दिन अल्लाह किसी को किसी चीज़ का मालिक नहीं बनाए गा जैसा कि उस ने दुनिया में बनाया था, सारे अधिकार उसी के हाथ में होंगे।

[8] इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी ﷺ जब मदीना आए तो मदीना वाले नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे, तो अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी, इस के उतरने के बाद उन्होंने अपना नाप-तौल ठीक कर लिया, और इस एतेबार से भी वे अच्छे हो गए।

تطفيف का अर्थ है नाप-तौल में थोड़ी बहुत कमी करना, कभी-कभी लोगों के पास दो बटखरे होते थे, एक से नाप कर लोगों को देते थे, और दूसरे से लिया करते थे।

[9] जब कोई चीज़ अपने लिए खरीदते हैं तो पूरा पूरा नाप-तौल कर लेते हैं।

[10] और जब कोई चीज़ दूसरों को नाप या तौल कर देते हैं तो उस नाप या तौल में कमी करते हैं।

[11] अर्थात उन डंडी मारने वालों को इसका ध्यान नहीं होता कि वे अपनी क़ब्रों से उठाए जाएंगे, और जो कुछ कर रहे हैं उन से उस की पूछ-ताछ होगी, क्या उन्हें इस का विश्वास नहीं कि वे इस बारे में सोचें और इस के बुरे परिणाम से डर कर इसे छोड़ दें।

[12] अर्थात जिस दिन लोग अपने रब के सामने खड़े होंगे, और उसके आदेश तथा न्याय की प्रतीक्षा करेंगे और अपने बदले या हिसाब का इन्तिज़ार कर रहे होंगे, इसमें इस बात का प्रमाण है कि कम नापना बहुत ही भयंकर जुर्म है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरों का धन ना-हक़ खाया जाता है।

[13] अर्थात कुकर्मियों के नाम जिन में कम तौलने वाले भी शामिल हैं जहन्नमियों के रजिस्टर में लिखे होंगे, या वे क़ैद और तंगी में होंगे।

[14] अर्थात यह ऐसी किताब है जिसमें उन के नाम होंगे, एक क़ौल यह है कि सिज्जीन असल में सिज्जील है जो सिजिल से है, जिसके मायने रजिस्टर और किताब के हैं।

[15] अर्थात बदकार और पापी जो सीमा पार किया हुवा हो, ।

[16] जो मुहम्मद ﷺ पर उतारी गई हैं।

[17] अर्थात यह पहले लोगों की कथाएं और उनकी अविश्वासनीय बातें हैं जिन्हें उन लोगों ने अपनी किताबों में लिख रखा है।

[18] यह सीमा पार करने वाले कुकर्मियों के लिए डांट फटकार है, कि वे ऐसी बुरी बात न कहें और इसे झुठलाने से बचें।

[19] अर्थात उनके पाप इतने अधिक होगए हैं कि उसने उनके दिलों को घेर

15 कभी नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से भी ओट में रखे जाएंगे।[1]
16 फिर ये लोग निश्चित रूप से जहन्नम में झोंक दिए जाएंगे।[2]
17 फिर कह दिया जाएगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।
18 अवश्य अवश्य नेक लागों का नाम-ए-आ'माल इल्लीईन में है।[3]
19 तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?[4]
20 (वह तो) लिखी हुई किताब है।[5]
21 मुक़र्रब फ़रिश्ते उसके पास उपस्थित होते हैं।[6]
22 यक़ीनन् नेक लोग बहुत सुख में होंगे।
23 मसहरीयों[7] पर (बैठे) देख रहे होंगे।[8]
24 तू उनके चेहरों से ही सुखों की सुखदा को पहचान लेगा।[9]
25 यह लोग अत्यन्त शुद्ध मुहर लगी शराब [10] पिलाए जाएंगे।
26 जिस पर कस्तूरी की मुहर लगी होगी[11], आगे बढ़ने वालों को उसी में आगे बढ़ना चाहिऐ।[12]
27 और उसमें तस्नीम की मिलावट होगी।[13]
28 अर्थात वह जल श्रोत जिसका पानी मुक़र्रब लोग पिएंगे।[14]

عَلَى ٱلْأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ ٱلْكُفَّارُ مَا كَانُوا۟ يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

ترتيبها ٨٤ — **سُورَةُ الانشِقَاقِ** — آياتها ٢٥

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا ٱلْأَرْضُ مُدَّتْ
﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَٰقِيهِ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ
كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ﴿٧﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾ وَيَنقَلِبُ
إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتِىَ كِتَٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ
يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُۥ كَانَ فِىٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾
إِنَّهُۥ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰٓ إِنَّ رَبَّهُۥ كَانَ بِهِۦ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ أُقْسِمُ
بِٱلشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَٱلَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَٱلْقَمَرِ إِذَا ٱتَّسَقَ ﴿١٨﴾
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ
عَلَيْهِمُ ٱلْقُرْءَانُ لَا يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢١﴾ بَلِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ يُكَذِّبُونَ
﴿٢٢﴾ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾
إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

29 बे-शक पापी लोग ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे।[15]
30 और उनके पास से गुज़रते हुए कनखियों से उनका अपमान करते थे।[16]
31 और जब अपनों की ओर लौटते तो दिल लगी करते थे।[17]
32 और जब उन्हें देखते तो कहते कि यक़ीनन् यह लोग गुमराह हैं।
33 यह उनपर निगराँ बनाकर तो नहीं भेजे गए।[18]
34 तो आज ईमान वाले उन काफिरों पर हँसेंगे।[19]
35 सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।[20]
36 कि अब इंकार करने वालों ने जैसा वे किया करते थे पूरा पूरा उसका बदला पा लिया।

लिया है। तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत की है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया कि बन्दा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला नुक़्ता पड़ जाता है, यदि तौबा कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, और यदि तौबा के बजाए पाप पर पाप किए जाता है तो वह कालक बढ़ती रहती है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाती है, यही वह ज़ंग है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में किया है।

1 अर्थात क़ियामत के दिन उन्हें उनके रब के दीदार से रोक दिया जाएगा, वे उसे नहीं देख सकेंगे जबकि मोमिन उसे देखेंगे। काफिर जिस प्रकार संसार में उसकी तौहीद स्वीकार करने से महरूम थे उसी प्रकार वे क़ियामत के दिन उस के दीदार से भी महरूम होंगे।

2 अर्थात नरक में डाल दिए जाएंगे जहाँ वे उस की गर्मी चखेंगे।

3 अर्थात उन के नाम इल्लिईन वालों में लिखे होंगे, और इल्लिईन से मुराद जन्नत है या जन्नत का ऊपरी भाग है, और अबरार से मुराद नेक लोग हैं।

4 अर्थात ऐ मुहम्मद! आप को क्या पता कि इल्लीईन क्या है? यह तरीक़ा इल्लीईन की शान बढ़ाने के लिए अपनाया गया है।

5 अर्थात जिस किताब में उनके नाम दर्ज हैं वह एक लिखी हुई किताब है।

6 अर्थात उस किताब के पास फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं, और उसे देखते रहते हैं, और एक क़ौल यह है कि उसमें जो कुछ दर्ज है क़ियामत के दिन उस की गवाही देंगे।

7 **أرائك، أريكة** की जमअ् है, जिसके अर्थ छप्परखाट और ऐसे सिंहासन के हैं जिसे दुल्हन के लिए तैयार किया जाता है।

8 अर्थात उन उपहारों को देख रहे होंगे जो अल्लाह ने उनके लिए तैयार किए हैं, या अल्लाह की दीदार से अपनी आँखों को ख़ुश कर रहे होंगे।

9 तुम उन्हें देखते ही यह जान लोगे कि यह लोग बड़े ही आराम में हैं; क्योंकि उनके चेहरे पुर-नूर, खूबसूरत और सुन्दर होंगे।

10 **رحيق** साफ़ सुथरा शराब है, जिसमें किसी खोट की मिलावट न हो, और न कोई ऐसी चीज़ मिली हूई हो जो उसे ख़राब कर दे।

11 अर्थात उसे किसी ने छुवा नहीं होगा, यहाँ तक कि जन्नतियों के लिए ही उस की मुहर तोड़ी जाएगी। और उसकी अन्तिम घूँट कस्तूरी होगी, जब पीने वाला पी कर अपना मुंह बर्तन से हटाएगा तो अपनी अन्तिम घूँट से कस्तूरी की ख़ुश्बू पाएगा, और एक क़ौल यह है कि उस शराब के बर्तन पर जो मुहर होगी वह कस्तूरी की होगी।

12 अर्थात उसकी चाहत रखने वालों को उसकी ओर बढ़ना चाहिए, तनाफ़ुस का मायना किसी चीज़ में झगड़ने और उसे अपने लिए चाहने के हैं ताकि दूसरा उसे न पा सके।

13 अर्थात उस में तस्नीम मिली होगी, और तस्नीम ऐसी शराब है जो जन्नत के ऊपरी भाग से एक चश्मे से बहती हूई आकर उन पर गिरेगी, और जन्नत की सब से अच्छी शराब होगी।

14 अर्थात तस्नीम ऐसा जल-स्रोत है जिस से मुक़र्रब लोग पिएंगे। अबरार नेकोकारों के जाम में उस की मिलौनी होगी, जैसे शराब में केवड़ा या गुलाब का अ़र्क़ (रस) मिलाकर दिया जाता है।

15 अर्थात काफ़िर मोमिनों की हँसी उड़ाया करते थे, और उन पर भिब्तियां कसा करते थे।

16 **يتغامزون، غمز** से है, जिसका अर्थ है भवों और कन्खियों द्वारा इशारा करना, अर्थात उन्हें इस्लाम लाने पर शरम दिलाते थे।

17 अर्थात जब यह काफिर इन सभाओं से अपने घरों को लौटते तो अपनी हालत पर इतराते और खुश होते हुए और ईमान वालों से दिल लगी करते हुए लौटते थे।

18 अर्थात यह काफ़िर मुसलमानों पर अल्लाह की ओर से निगराँ और पहरेदार बनाकर तो नहीं भेजे गए हैं कि उस ने उन्हें इस बात की ज़िम्मेदारी दी हो कि वे उनकी हालतों और कर्मों को देखते रहें, और उन पर बोलियाँ कसते रहें।

19 अर्थात उस दिन ईमान वाले उन काफ़िरों पर जब उन्हें अपमानित और हारे थके हुए देखेंगे तो हंसेंगे जैसे काफिर उन पर संसार में हंसा करते थे।

20 अर्थात ईमान वाले ऐश-व-आराम में सिंहासन पर बैठे होंगे, अल्लाह के इन दुश्मनों को देख रहे होंगे जो अज़ाबे-इलाही में गिरिफ़्तार होंगे।

सूरतुल् इंशिक़ाक़ - 84

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 जब आकाश फट जाएगा।[1]
2 और अपने रब के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा।[2]
और उसी के लायक़ वह है।[3]
3 और धरती (खींच कर) फैला दी जाएगी।[4]
4 और उसमें जो है उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी।[5]
5 और अपने रब के आदेश पर कान लगाएगी। और उसी
के लायक़ वह है।
6 ऐ इन्सान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश[6] और
सारे काम और मेहनतें करके उससे मुलाकात करने वाला है।[7]
7 तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में
नामे-ए-आ'माल (कर्मपत्र) दिया जाएगा।[8]
8 उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जाएगा।[9]
9 और वह अपने परिवार वालों की ओर[10] हँसी खुशी[11]
लौट आएगा।
10 मगर जिस व्यक्ति का नाम-ए-आ'माल उसकी पीठ के
पीछे से दिया जाएगा।[12]
11 तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।[13]
12 और भड़कती हुई जहन्नम में[14] प्रवेश करेगा।
13 यह व्यक्ति अपने परिवार वालों (संसार) में प्रसन्न था।[15]
14 उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जाएगा।[16]
15 यह कैसे हो सकता है।[17] हालांकि उसका रब उसे अच्छी
तरह देख रहा था।[18]
16 मुझे सांझ की लालिमा की क़सम।[19]
17 और रात की, एवं उसकी इकट्ठी की हुई चीज़ों की क़सम।[20]
18 और पूर्ण चन्द्रमा की क़सम।[21]
19 अवश्य तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे।[22]
20 उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नही लाते?[23]
21 और जब उनके पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा
नहीं करते?[24]
22 बल्कि जिन्होंने कुफ्र किया वह झुठला रहे हैं।[25]
23 और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ
यह दिलों मे रखते हैं।[26]
24 उन्हें दर्दनाक अज़ाबों (कष्टदायी यातनाओं) की सूचना
सुना दो।[27]
25 मगर ईमान वालों और नेक लोगों को अन्गिन्त और
ख़तम न होने वाला बदला दिया जाएगा।[28]

सूरतुल् बुरूज - 85

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 बुर्जो वाले[29] आकाश की क़सम।
2 वायदा किए हुए दिन की क़सम।[30]
3 गवाही देने वाले की[31] और जिसकी गवाही दी गई है[32]
उसकी क़सम।
4 (कि) खाई वाले मारे गए।[33]

---

1 अर्थात आकाश का फटना क़ियामत की निशानियों में से है।
2 अर्थात उस की बात मानेगा और जो आदेश देगा उसे ध्यान से सुनेगा, और उसके अनुसार कर्म करेगा।
3 वह उसी के लायक़ भी है कि सुने और इताअ़त करे।
4 अर्थात उस पर जो पर्वत वग़ैरा हैं उन्हें कूट कर बराबर कर दिया जाएगा, और वह एक चटयल मैदान की तरह हो जाएगी।
5 अर्थात उसमें जो मुर्दे दफ़न थे उन्हें निकाल कर बाहर कर देगी, और उन्हें अल्लाह के ह़वाले कर देगी, और स्वयं खाली हो जाएगी ताकि उनके बारे में अल्लाह तआला अपना फ़ैसला जारी करे।
6 **يا أيها الإنسان** में **الإنسان** से इन्सान की जिन्स मुराद है, जिन में काफ़िर और मोमिन सभी शामिल हैं, अर्थात तेरा सम्पूर्ण प्रयास तुझे तेरे रब की ओर ले जारहा है, और तू खींचा उसी की ओर बढ़ता चला जा रहा है।
7 अर्थात् तू अपने अच्छे बुरे कर्मों के साथ अपने रब से जा मिलेगा।
8 यह ईमान वाले होंगे जिन्हें उनका कर्म-पत्र उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।
9 उनके पाप उन पर पेश किए जाएंगे और अल्लाह तआ़ला बिना किसी प्रश्न के उन्हें माफ़ कर देगा, बुख़ारी तथा मुस्लिम में आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : जिस से ह़िसाब में कुरेद किया गया तो उसे अ़ज़ाब में धर लिया जाएगा, वह कहती हैं कि मैं ने कहा क्या अल्लाह यह नहीं फरमा रहा है कि उन से आसान ह़िसाब लिया जाएगा? तो आप ने फ़रमाया : यह ह़िसाब नहीं बल्कि पेशी होगी, और जिस से क़ियामत के दिन ह़िसाब में खोद कुरेद किया गया वह अवश्य अ़ज़ाब में धर लिया जाएगा।
10 इस से मुराद उसकी जन्नती बिवियां और बड़ी आँखों वाली हूरें हैं।
11 अर्थात वह अपने सम्मान से खुश होगा।
12 क्योंकि उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन से बंधा हुवा होगा और उसका बायां हाथ उसके पीछे होगा, और यह काफ़िर तथा ना-फ़र्मान लोग होंगे।
13 अर्थात जब वह अपना कर्म-पत्र पढ़ेगा तो चीखे चिल्लाएगा, शोर मचाएगा कि मैं तो मारा गया, मैं तो हलाक हो गया।
14 अर्थात जहन्नम की भड़कती हुई आग में जाएगा, और उसकी जलन और गर्मी उसे सहनी पड़ेगी।
15 अर्थात वह चाहत के साथ अपनी इच्छाओं पर डटा रहता था, और परलोक के भयानकपन की उसे कोई परवाह नहीं थी।
16 अर्थात वह यह समझ रहा था कि उसे बदले के लिए अल्लाह की ओर पलटना नहीं है।
17 अर्थात उसे ज़रूर लौटना होगा।
18 अर्थात अल्लाह उसे और उसके कर्मों को खूब जानता है, उससे उसकी कोई चीज़ भी छुपी नहीं है, अवश्य वह उसे उसके कुकर्मों की सज़ा देकर रहेगा।
19 अल्लाह तआला उस लालिमा की क़सम खा रहा है जो आकाश के किनारे सूरज डूबने के बाद इशा के समय तक रहती है।
20 अर्थात रात का अंधेरापन जिन चीज़ों को इकट्ठा कर लेती और समेट लेती है, क्योंकि दिन में चीज़ें फैली और बिखरी रहती हैं, रात आते वे सब अपने ठिकाने की ओर सिमट आती हैं।
21 जब वह क़मरी (चाँद के) महीने के आधे में पूर्ण होजाता है।
22 अर्थात एक ह़ालत से दूसरी ह़ालत की ओर जैसे मालदारी और ग़रीबी, मौत और जीवन, और जन्नत या जहन्नम में जाने वग़ैरा विभिन्न हालतों की ओर।
23 अर्थात कुर्आन पर ईमान नहीं लाते जबकि ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जो उस पर ईमान लाने को वाजिब और लाज़िम क़रार दे रहे हैं।
24 कुर्आन की तिलावत के समय सजदा करने और आजिज़ी अपनाने से उन्हें कौन सी चीज़ रोक रही है, और एक क़ौल यह है कि इससे मुराद सज्द-ए-तिलावत है, अर्थात जब उनके सामने सजदे वाली आयत पढ़ी जाती है तो सजदा करने से उन्हें कौन सी चीज़ रोकती है।
25 अर्थात कुर्आन को झुठलाते हैं जिसमें तौह़ीद, दोबारा जिन्दा किए जाने, सज़ा और बदला का चर्चा है।
26 अर्थात अल्लाह उनके झुठलाने को जो वे अपने दिल में छुपाए हुए हैं खूब जानता है।
27 इसे डांट के रूप में खुश-खबरी कहा गया है।
28 अर्थात जो कभी खतम या कम न होगा।
29 बुर्जों से सितारों की मंजिलें मुराद हैं, यह १२ सितारों की अलग अलग १२ मंज़िले हैं।
30 इससे मुराद क़ियामत का दिन है जिसका वादा किया गया है।
31 शाहिद से मुराद वह सारी मख़्लूक़ हैं जो उस दिन गवाही देंगे।
32 मश्हूद से मुराद वह भयानक जराएम हैं जिन्हें इन मुजरिमों ने इन्हीं गवाहों के साथ किया होगा जो उनके ख़िलाफ़ गवाहियाँ देंगे, और यह गवाह वे सारे लोग होंगे जो अल्लाह के रास्ते में शहीद किए गए होंगे, जैसा कि अस्ह़ाबे उख़्दूद का घटना है जिसका चर्चा आगे आ रहा है।
33 अर्थात उन लोगों के लिए हलाकत और बर्बादी है जिन्होंने अल्लाह पर ईमान लाने वालों को खन्दक़ों में डाल कर हलाक कर दिया, और यह एक काफ़िर राजा और उसका लश्कर था, जिसने अपने प्रजा में से कुछ लोगों को ईमान लाने के जुर्म में गढ़ा खोदवाकर और उसमें आग का अलाव तैयार करके उसमें डाल दिया था।और राजा और उसके साथी यह मन्ज़र देख रहे थे।

(5) वह एक आग थी ईंधन वाली।[1]
(6) जब्कि वह लोग उसके आस पास बैठे थे।[2]
(7) और जो मुसलमानों के साथ कर रहे थे क़ियामत के दिन उसके गवाह होंगे।[3]
(8) यह लोग उन मुसलमानों के किसी अन्य पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इसके कि वे अल्लाह ग़ालिब, प्रशंसा के लायक़ की हस्ती पर ईमान लाए थे।[4]
(9) जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है, और अल्लाह (तआ़ला) के सामने हर चीज़ है।[5]
(10) बे-शक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को जलाया[6], फिर क्षमा भी न माँगी[7], उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और जलने की यातना है[8]।
(11) बे-शक ईमान स्वीकार करने वालों और नेक कार्य करने वालों के लिए वे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। यही बड़ी सफलता है।
(12) यक़ीनन् तेरे रब की पकड़ अधिक कठोर है।[9]
(13) वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा जिन्दा करेगा।[10]
(14) वह बड़ा बख़्श्ने वाला[11] और अत्यधिक प्रेम करने वाला है।[12]
(15) अर्श का मालिक[13] महान है।[14]
(16) जो चाहे उसे कर देने वाला है।
(17) तुझे सेनाओं की ख़बर भी मिली है।[15]
(18) अर्थात फ़िरऔन और समूद की।
(19) (कुछ नहीं) बल्कि काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए है।[16]
(20) और अल्लाह (तआ़ला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से घेरे हुए है।[17]
(21) बल्कि यह क़ुरआन है ही बड़ी शान वाला।[18]

ترتيبها ٨٥ — سُورَةُ البُرُوجِ — آياتها ٢٢

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ
﴿٣﴾ قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ﴿٥﴾ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا
قُعُودٌ ﴿٦﴾ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوا
مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ
فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ
عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾ إِنَّ بَطْشَ
رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾
ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ
﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ مِنْ
وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ﴿٢٠﴾ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ﴿٢١﴾ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

ترتيبها ٨٦ — سُورَةُ الطَّارِقِ — آياتها ١٧

(22) लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में लिखा हुवा है।[19]

सूरतुत्तारिक़ - 86

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है आकाश की और अंधेरे में रौशन होने वाले की।[20]
(2) तुझे पता भी है कि वह रात को नमूदार (प्रकट) होनी वाली चीज़ क्या है?
(3) वह रौशन सितारा है।[21]
(4) कोई ऐसा नहीं जिस पर निगह्बान (फ़रिश्ते) न हों।[22]
(5) इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है?
(6) वह एक उछलते पानी (वीर्य) से[23] पैदा किया गया है।

---

1 ईंधन जिसे जलाया जाता है।
2 खन्दक़ के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ कर आग को घेरे में ले रखा था, और ईमान वालों के जलने का तमाशा देख रहे थे।
3 अर्थात वह क़ियामत के दिन स्वयं अपने ही विरूद्ध अपने किए की गवाही देंगे कि उन्होंने ईमान वालों को उन के धर्म से फेरने के लिए आग में डाला था, यह गवाही उनके ख़िलाफ़ स्वयं उनकी जुबान और उनके हाथ पैर देंगे।
4 अर्थात उन मुसलमानों का जुर्म बस इतना ही था कि वह अल्लाह ग़ालिब पर जो प्रत्येक प्रकार की तारीफ़ के लायक़ है ईमान ले आए थे, इसके सिवाय उनका कोई दूसरा जुर्म नहीं था।
5 अर्थात मोमिनों के साथ जो कुछ उन लोगों ने किया है उसकी गवाही अल्लाह भी देगा, क्योंकि उनके साथ उन लोगों ने जो कुछ भी किया है उसमें से कोई भी चीज़ उससे छुपी नहीं है, इसमें अस्हाबे उखदूद को भयंकर धमकी है, और उन लोगों के लिए भलाई का वादा है जिन्हें अपने दीन पर जमे रहने के कारण सताया गया।
6 काफ़िरों ने मोमिनों को आग में डाल दिया, इसके सिवाय उन्हें कोई और अधिकार दिया ही नहीं कि वह अल्लाह के साथा कुफ्र करते, इस तरह उनके धर्म के बारे में उन्हें आज़माया गया, ताकि वह इस से फिर जाएं।
7 अपनी इस घटया हर्कत और कुफ्र से तौबा भी नहीं की।
8 क्योंकि उन्होंने भी ईमान वालों को आग में जलाया था।
9 अर्थात अत्याचारियों और सर्कशों के लिए उस की पकड़ बहुत कठोर है।
10 अर्थात उसने संसार में सारी मख़्लूक़ात को पैदा किया है और क़ियामत के दिन भी वही मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित करेगा।
11 अर्थात वह अपने मोमिन बन्दों के पापों को बहुत बख़्शने वाला है, वे उन्हें पाप के कारण अपमाणित नहीं करेगा।
12 अर्थात अपने वलियों से जो इसके फ़र्मांबर्दार हैं बहुत प्रेम करने वाला है।
13 अर्थात वही महान अर्श का मालिक है।
14 अर्थात बहुत ही बख़्शिश और करम वाला है।
15 अर्थात ऐ मुहम्मद! तुम्हारे पास उस काफ़िर जत्थे की बात पहुँच चुकी है जो अपने नबियों को झुठलाता था, जिनके पास उन से मुक़ाबला के लिए कोई जत्था नहीं था, और जत्थों की खबर से मुराद उन के अल्लाह की पकड़ में आने का घटना है, अर्थात तुम्हें इस की जानकारी होगई है कि अल्लाह ने उन्हें किस प्रकार पकड़ा।
16 बल्कि यह अरब के मुश्रिक भी उनकी तरह उन चीज़ों को झुठलाने में लगे हुए हैं जिन्हें तुम लेकर आए हो, उनकी घटनाओं से उन लोगों ने कोई नसीहत नहीं पकड़ी।
17 अर्थात इस बात की शक्ति रखता है कि उन पर भी वही अज़ाब भेज दे जो उन से पहले के काफ़िरों पर भेजा था।
18 अर्थात अनगिन्त फ़ज़्ल, शरफ़ और बर्कत वाला है, यह कविता, कहानत और जादू नहीं है जैसा कि यह काफ़िर कह रहे हैं।
19 अर्थात लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुवा है, और अल्लाह के पास सुरक्षित है, शैतानों की उस तक पहुँच नहीं।
20 अल्लाह तआ़ला आकाश की और रात में प्रकट होने वाले सितारों की क़सम खा रहा है, सितारे को तारिक़ इसलिए कहा गया है कि वह रात में निकलता है, और दिन में गुप्त रहता है, और जो चीज़ें रात में निकलती हैं उन्हें तारिक़ कहा जाता है।
21 **النجم الثاقب** रौशन सितारा, जिसकी रौशनी इतनी तेज़ हो, गोया वह रात के अंधेरे को सख़्ती से फ़ाड़ रही हो।
22 यह क़सम का जवाब है, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति पर अल्लाह की ओर से निगहबान नियुक्त हैं, और यह वही निग्रां फ़रिश्ते हैं, जो इन्सान की निग्रानी पर नियुक्त होते हैं, और उसके प्रत्येक क़ौल व फ़ेल का रिकार्ड रखते हैं, और जो भी अच्छाई या बुराई करता है उसे लिख कर सुरक्षित रखते हैं।
23 अर्थात पानी के ठोप से, जो तेज़ी से बच्चादानी में जाकर गिरता है, और वह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ إِن كُلُّ
نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِن مَّاءٍ
دَافِقٍ ﴿٦﴾ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾ إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾
يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾
وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ إِنَّهُمْ
يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

سُورَةُ الأَعْلَى

ترتيبها ٨٧ — آياتها ١٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ
﴿٣﴾ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ
فَلَا تَنسَىٰ ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ
لِلْيُسْرَىٰ ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ﴿١٠﴾
وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوتُ
فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

(7) जो पीठ तथा छाती [1] के बीच से निकलता है।
(8) बे-शक वह उसे फेर लाने पर अवश्य शक्ति रखने वाला है।[2]
(9) जिस दिन पोशीदा (गुप्त) भेदों की जाँच पड़ताल होगी।[3]
(10) तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई सहायक होगा।[4]
(11) बारिश वाले [5] आकाश की क़सम।
(12) और फटने वाली [6] धरती की क़सम।
(13) बे-शक यह (क़ुरआन) अवश्य दो टूक निर्णय करने वाली [7] कथन है।
(14) यह हँसी की (और व्यर्थ की) बात नहीं।
(15) अल्बत्ता वे (काफ़िर) दाँव-घात में हैं।[8]
(16) और मैं भी एक दाँव चल रहा हूँ।[9]
(17) तू काफ़िरों को अवसर दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।[10]

सूरतुल् आ'ला - 87

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) अपने बहुत बुलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।[11]
(2) जिसने पैदा किया और सही और स्वस्थ बनाया।[12]
(3) और जिसने ठीक-ठाक अनुमान लगाया और फिर रास्ता दिखाया।[13]
(4) और जिसने ताज़ा घास पैदा की।
(5) फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।[14]
(6) हम तुझे पढ़ाएंगे[15], फिर तू न भूलेगा।[16]
(7) मगर जो कुछ अल्लाह चाहे[17], वह ज़ाहिर और छुपा को जानता है।[18]
(8) हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।[19]
(9) तो आप नसीह़त करते रहें यदि नसीह़त कुछ लाभ दे।[20]
(10) डरने वाला तो नसीह़त ले लेगा।
(11) (मगर) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जाएगा।[21]
(12) जो बड़ी आग में जाएगा।[22]

मर्द और औरत दोनों का वीर्य है जिस से इन्सान की पैदाइश होती है, चूंकि दोनों पानी मिलकर एक हो जाता है इसलिए इसके लिए एक का सेगा लाया गया, नहीं तो वास्तव में वह मर्द और औरत दोनों का पानी होता है।

[1] कहा जाता है कि रीढ़ से मुराद मर्द की रीढ़ है, और सीने की हड्डियों से मुराद औरत के सीने की हड्डियां हैं, सीने पर हार की जगह को तराइब कहते हैं, बच्चे की पैदाइश इन्हीं दोनों पानियों से होती है, और एक क़ौल के अनुसार सुल्ब और तराइब से मुराद शरीर के सारे अंग हैं।

[2] अर्थात मरने के बाद उसे दोबारा जीवित करने पर।

[3] **تبلى** जांच पड़ताल की जाएगी कि उनमें से क्या ठीक थे और क्या गलत, **سرائر** से मुराद अक़ीदा, नियत और गुप्त बातें हैं जो दिलों में छुपी रहती हैं, जब तक इन्सान उन्हें ज़ाहिर नहीं करता स्पष्ट नहीं होतीं, इन सब की अच्छाई-बुराई उस दिन स्पष्ट हो जाएगी।

[4] अर्थात इन्सान उस दिन बेबस होगा, न तो स्वयं उसमें इतनी शक्ति होगी कि अपने आप को अल्लाह के अज़ाब से बचा सके और न हीं कोई उसका सहायक होगा जो उसे उसकी मुसीबत से निकाल सके।

[5] अर्थात बारिश, **رجع** का मायना लौटना और पलट कर आना है, और चूंकि बारिश भी बार बार लौट कर आती है, इसलिए उसे **رجع** कहा गया है।

[6] **صدع** ऐसी चीज़ जिस के लिए धरती फट जाती है, अर्थात, पौदे, फल और वृक्ष।

[7] अर्थात क़ुरआन ऐसा कलाम है जो सत्य और असत्य के बीच फ़र्क़ करता है, और उसे स्पष्ट कर देता है।

[8] अर्थात अल्लाह के रसूल जो दीन लेकर आए हैं उसे विफल करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

[9] और मैं भी उन्हें इस तरह ढील देता जारहा हूँ कि उन्हें उसका एहसास नहीं, उन की दाँव का मैं उन्हें कठोर बदला दूंगा।

[10] अर्थात उन पर जल्द अज़ाब लाने की मांग न कर, उन्हें कुछ ढील देदे ताकि वह अपनी दुश्मनी और सरकशी में और आगे निकल जाएं।

[11] प्रत्येक उस चीज़ से जो उसकी शान के लायक़ नहीं **"سبحان ربي الأعلى"** कह कर।

[12] अर्थात जिसने इन्सान को सीधे डील-डाल का बनाया, और उसने अंगों में बराबरी रखी और उसे समझ बूझ की नेमत अता की। और उसे मुकल्लफ होने के क़ाबिल बनाया।

[13] अर्थात जिसने सारी चीज़ों का अनुमान किया और प्रत्येक व्यक्ति को उस मार्ग पर चलाया जो उन के लिए उचित है।

[14] अर्थात उन्हें सुखा कर सूखा और काला कर दिया, जबकि वह हरे भरे थे, ।

[15] अर्थात क़ुरआन पढ़ाएंगे।

[16] अर्थात आप जो पढ़ेंगे उसे भूलेंगे नहीं, जिब्रईल ﷺ जब वह्य लेकर आते और अन्तिम आयत तक पढ़ कर अभी फ़ारिग़ नहीं होते कि नबी ﷺ इस डर से कि उसे भूल न जाएं पढ़ना शुरू कर देते, तो यह आयत उतरी कि हम आप को ऐसा पढ़ा देंगे कि आप भूलेंगे नहीं, इस प्रकार अल्लाह तआला ने क़ुरआन को भूल जाने से आप की हिफ़ाज़त की।

[17] सिवाय उस के जिसको अल्लाह आप से भुला देना चाहे।

[18] अर्थात सारी चीज़ों को जानता है, चाहे वह ज़ाहिर हों या गुप्त।

[19] अर्थात जन्नत के कर्म को हम आप के लिए आसान कर देंगे।

[20] अर्थात ऐ मुहम्मद! आप लोगों को उन चीज़ों द्वारा नसीह़त कीजिए जो हमने आप की ओर वह्य की है, और भलाइ के मार्ग और दीन के अहकाम की ओर उनकी राहबरी कीजिए, और यह उस जगह जहां नसीहत लाभदायक हो, रहा वह व्यक्ति जिसे नसीह़त कर दी गई और जिसके सामने हक़ पूरी स्पष्टता के साथ बयान कर दिया गया फिर भी उसने अपनी मन चाही की, और उद्दण्डता पर अड़ा रहा तो ऐसे व्यक्ति को नसीह़त की ज़रूरत नहीं, यह उस अवस्था में जब दोबारा तिबारा दावत दी जा रही हो, और यदि पहले पहल दावत दी जा रही हो तो यह सभों को दी जाएगी।

[21] अर्थात आप की नसीह़त से वह ज़रूर लाभ उठाएगा जो अल्लाह से डरता होगा, नसीहत के कारण उस में अल्लाह से डरने और अपनी इस्लाह करने की भावना अधिक बढ़ जाएगी, और इस से वह व्यक्ति लाभ न उठा सकेगा जो अपने कुफ्र पर अड़ा रहेगा, और नसीहत से मुंह मोड़ेगा।

[22] अर्थात बड़ी भयानक आग, बड़ी आग से मुराद जहन्नम की आग है, और छोटी आग सांसारिक आग है।

13 जहाँ फिर न वह मर सकेगा [1] न जिएगा [2], (बल्कि प्राण निकलने की अवस्था में पड़ा रहेगा)
14 बे-शक उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पाक हो गया।[3]
15 और जिसने अपने रब का नाम याद रखा[4] और नमाज़ पढ़ता रहा।[5]
16 लेकिन तुम तो साँसारिक जीवन को तर्जीह (श्रेष्ठता) देते हो।
17 और आख़िरत (प्रलोक) अत्यन्त सुखद और स्थाई है।
18 यह बातें [6] पहली किताबों में भी हैं।[7]
19 (अर्थात) इब्राहीम और मूसा की किताबों में [8]।

सूरतुल् ग़ाशिया - 88

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 क्या तुझे भी छिपा लेने वाली (प्रलय) (क़ियामत) की सूचना पहुँची है।[9]
2 उस दिन बहुत से चेहरे ज़लील (अपमानित) होंगे।[10]
3 (और) मेहनत करने वाले [11] थके हुए होंगे।
4 वे दहकती हुई आग में जाएंगे।
5 और अत्यन्त गर्म (उबलते हुए स्रोत) चश्में[12] का पानी उनको पिलाया जाएगा।
6 उनके लिए मात्र काँटेदार दरख़्तों [13] (वृक्षों) के अन्य कुछ खाना न होगा।
7 जो न मोटा करेगा और न भूख मिटाएगा।
8 बहुत से चेहरे उस दिन प्रसन्न और हरे-भरे होंगे।[14]
9 अपने कर्मों के कारण ख़ुश होंगे।[15]
10 उच्च स्वर्ग में होंगे।
11 जहाँ कोई बेहूदा (अश्लील) बात नहीं सुनेंगे।
12 जहाँ बहता हुवा चश्मा होगा।
13 (और) उसमें ऊँचे- ऊँचे तख़्त (सिंहासन) होंगे।
14 और प्याले रखे हुए (होंगे)।
15 और एक लाइन में रखे हुए तकिए होंगे।[16]
16 और मख़्मली कालीनें बिछी होंगी।[17]

بَلْ تُؤْثِرُونَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَٱلْـَٔاخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿١٧﴾ إِنَّ
هَـٰذَا لَفِى ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

ترتيبها ٨٨ — سُورَةُ الغَاشِيَةِ — آياتها ٢٦

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ

هَلْ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ٱلْغَـٰشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَـٰشِعَةٌ ﴿٢﴾
عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلَىٰ نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقَىٰ مِنْ عَيْنٍ ءَانِيَةٍ ﴿٥﴾
لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِى مِن جُوعٍ ﴿٧﴾
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِى جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾
لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَـٰغِيَةً ﴿١١﴾ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾
وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾ وَزَرَابِىُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾
أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى ٱلْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَإِلَى ٱلسَّمَآءِ كَيْفَ
رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَإِلَى ٱلْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَإِلَى ٱلْأَرْضِ كَيْفَ
سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ إِنَّمَآ أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَّسْتَ عَلَيْهِم
بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾ إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ ٱللَّهُ ٱلْعَذَابَ
ٱلْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

17 क्या ये ऊँटों को नहीं देखते[18] कि वे किस तरह पैदा किए गए हैं?
18 और आकाशों को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया है?[19]
19 और पर्वतों की ओर, कि किस प्रकार गाड़ दिए गए हैं?[20]
20 और धरती की ओर, कि किस प्रकार बिछाई गयी है?
21 तो आप नसीहत कर दिया करें[21] (क्योंकि) आप केवल नसीहत करने वाले हैं।[22]
22 आप कुछ उनपर दारोग़ा तो नहीं हैं।[23]
23 हां, जो व्यक्ति पीठ फेरे और कुफ़्र करे।[24]
24 उसे अल्लाह (तआला) अत्यन्त कठोर अज़ाब देगा।[25]
25 बे-शक हमारी ओर उनको लौटना है।[26]
26 फिर बे-शक हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना।[27]

---

1 कि जिस अज़ाब में वह पड़ा है उससे छुटकारा पा जाए।
2 अर्थात ऐसा जीवन जो उस के लिए लाभ-दायक हो।
3 अर्थात जिसने शिर्क से पवित्रता अपनाई, और अल्लाह और उसकी वहदानियत पर ईमान ले आया, और उसके आदेश का पालन करता रहा।
4 और अपनी जुबान पर उसके नाम का ज़िक्र जारी रखा।
5 और पाँचों समय की नमाज़ की पाबन्दी की।
6 अर्थात قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ से وَٱلْـَٔاخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ तक की आयतों में जो बातें चर्चित हैं।
7 अर्थात उनमें यह बातें चर्चित हैं।
8 अर्थात अल्लाह ने इब्राहीम और मूसा عليهما السلام पर जो किताबें उतारी हैं उन में यह बात लिखी हुई थी कि परलोक संसार के मुक़ाबले बहुत अधिक उत्तम है।
9 **هل، قد** के मायने में है, और **غاشية** से मुराद क़ियामत है, अर्थात ऐ मुह़म्मद! आप के पास क़ियामत की बात आ चुकी है, उसे छिपा लेनी वाली इसलिए कहा गया है कि उसकी कठोरता और भयंकरपन सारी मख़्लूक़ को ढांप लेगी।
10 लोग क़ियामत के दिन दो दलों में बटे हुए होंगे, एक दल वालों के चेहरे झुके हुए अपमानित होंगे, उस अज़ाब के कारण जिसमें वह डाले जाने वाले होंगे।
11 वह पूजा में अधिक मेहनत करते थे और अपने आप को थका देते थे, लेकिन वह सब बेकार हो जाएगा और उन्हें उन पर कोई पुण्य नहीं मिलेगा, क्योंकि वे जिस कुफ़्र और गुम्राही में पड़े थे, उस पर डटे हुए थे।
12 अर्थात ऐसे स्रोत से जिसका पानी बहुत गरम होगा।
13 यह एक कांटेदार झाड़ की क़िस्म है, जब वह हरा भरा रहे तो क़ुरैश की ज़ुबान में उसे शबरक़ कहते हैं और जब सूख जाए तो ज़रीअ़ कहते हैं।
14 अर्थात हर प्रकार की नेमतों से प्रसन्न और हरे भरे, और यह दूसरे दल के चेहरे होंगे जो अपने मामले के अच्छे परिणाम को देखकर ख़ुशी से खिले होंगे।
15 अपने उस कर्म के कारण जो दुनिया में उन्होंने किया था ख़ुश होंगे क्योंकि उन्हें उसका इतना सवाब मिलेगा जो उन्हें प्रसन्न कर देगा ।
16 अर्थात लाइन में एक दूसरे से लगे हुए तकिए होंगे।
17 और क़ालीनें होंगी, जिनके झालर पतले प्रकार के होंगे, जो सभाओं में चारों ओर जगह जगह फैली होंगी और जन्नती जहाँ आराम करना चाहेंगे कर सकेंगे।

---

18 वे अपनी पैदाइश के लिहाज़ से कितने अजीब, और किस प्रकार ताक़तवर और शक्तिमान हैं और कैसे अजीब अजीब उनमें गुण हैं।
19 अर्थात धरती पर बिना किसी खम्बे के इस प्रकार खड़ा है कि वह अक़्ल की समझ से बाहर है।
20 अर्थात इस प्रकार धरती पर मज़्बूती से गाड़ दिए गए हैं कि वह अपनी जगह से न हिल सकते हैं, न इधर उधर झुक सकते हैं, और न हट सकते हैं।
21 अर्थात ऐ मुह़म्मद! आप उन्हें नसीहत कीजिए और अल्लाह के अज़ाब से डराइए।
22 अर्थात आप की ज़िम्मेदारी मात्र इतनी है कि आप उन्हें समझा दें, मानना या न मानना उनका काम है।
23 कि आप उन पर ईमान लाने के लिए ज़ोर दें।
24 अर्थात नसीहत से मुंह मोड़ेगा।
25 बड़े अज़ाब से मुराद जहन्नम का हमेशगी का अज़ाब है।
26 अर्थात मरने के बाद हमारी ही ओर पलट कर आएंगे।
27 अर्थात क़ब्रों से उनके उठाए जाने के बाद हम ही उन का हिसाब लेंगे

سُورَةُ الْفَجْرِ
ترتيبها ٨٩ — آياتها ٣٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ
﴿٤﴾ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ
﴿٦﴾ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾
وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾
الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ
عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا
الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ
﴿١٥﴾ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ﴿١٦﴾
كَلَّا ۖ بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ
الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ
بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

सूरतुल् फ़ज्र - 89

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबीन बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है फ़ज्र की।[1]
(2) और दस रातों की।[2]
(3) और जोड़े और ताक़ (सम और विषम) की।[3]
(4) और रात की जब वह चलने लगे।[4]
(5) क्या उनमें बुद्धिमानों के लिए काफ़ी क़सम है?[5]
(6) क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने आदियों के साथ क्या किया?
(7) स्तम्भों वाले इरम[6] के साथ।
(8) जिनके जैसे लोग (अन्य किसी) देशों में पैदा नहीं किए गए।[7]
(9) और समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे?[8]
(10) और फ़िरौन के साथ जो खूँटों वाला था?[9]
(11) उन सभों ने नगरों में सिर उठा रखा था।[10]
(12) और बहुत उपद्रव मचा रखा था।[11]
(13) अन्त में तेरे रब ने उन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।[12]
(14) अवश्य तेरा रब घात में है।[13]
(15) इन्सान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उसे आज़माता[14] है और इज़्ज़त और नेमत देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान किया।[15]
(16) और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए[16] उसकी रोज़ी को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान किया।[17]
(17) ऐसा कभी भी नहीं, बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही) लोग यतीमों (अनाथों) का आदर नहीं करते।[18]
(18) और निर्धनों को खिलाने की एक-दूसरे को तर्ग़ीब (प्रेरणा) नहीं देते।[19]
(19) और (मृतकों की) मीरास समेट-समेट कर खाते हो।[20]
(20) और धन से जी भरकर प्रेम करते हो।
(21) अवश्य[21] जिस समय धरती कूट-कूट कर बिल्कुल (बराबर) समतल कर दी जाएगी।[22]
(22) और तेरा रब (स्वयं) आ जाएगा[23] और फ़रिश्ते सफ़ें बांधकर (पंक्तिबद्ध होकर) आ जाएंगे।[24]
(23) और जिस दिन जहन्नम भी लाई जाएगी[25], उस दिन

और उनके कर्मों का उन्हें बदला देंगे।

[1] अल्लाह तआला ने फ़ज्र की क़सम खाई है इसलिए कि यह दिन से अंधेरापन के छंटने का समय है, मुजाहिद कहते हैं इस से मुराद दस ज़ुलहिज्जा की फ़ज्र है।
[2] यह ज़ुलहिज्जा के शुरू की दस रातें हैं।
[3] शफ़अ़ के मायने हर चीज़ के जोड़े, और वित्र के मायने बेजोड़ के हैं, और एक क़ौल यह है कि शफ़अ़ से मुराद ११ और १२ ज़ुलहिज्जा है और वित्र से मुराद १३ ज़ुलहिज्जा है।
[4] अर्थात जब वह आए, जारी रहे, फिर चली जाए, ।
[5] حجر के मायना अक़्ल है, अर्थात बुद्धिमान को इसकी जानकारी है कि अल्लाह ने जिन चीज़ों की क़सम खाई है वह इस लायक़ हैं कि उनकी क़सम खाई जाए।
[6] इरम आदे ऊला का दूसरा नाम है, और एक क़ौल यह है कि यह आद क़ौम के दादा का नाम है, और एक तीसरा क़ौल यह है कि यह उस जगह का नाम है जहाँ यह आबाद थे, यह दिमश्क़ है या अहक़ाफ़ का कोई नगर जिसकी बिल्डिंगें पत्थरों को तराश करके लम्बे लम्बे खम्बों पर बनाई गई थीं।
[7] अर्थात अपनी इमारतों की मज़्बूती में इस जैसा कोई और नगर किसी देश में बसाया ही नहीं गया।
[8] जो पहाड़ों को तराशते थे, और उन्हें काट कर घर बनाते थे, और उसमें रहते थे, और उनकी वादी का नाम हिज्र या वादिल्क़ुरा था जो मदीना से शाम के रास्ते में पड़ता है।
[9] औताद से मुराद अहरामे मिस्र हैं, जिन्हें फ़िरऔनियों ने बनवाया था, ताकि उनमें उनकी क़ब्रें हों, और एक क़ौल यह है कि ذي الأوتاد से मुराद ऐसे लश्करों वाला है जिसके पास अनगिन्त खेमे थे, जिन्हें वे खूँटों से बांधते थे।
[10] यह आद, समूद और फ़िरऔन की सिफ़त है, अर्थात उनमें से प्रत्येक ने अपने अपने नगरों में उपद्रव मचा रखा था।
[11] अर्थात कुफ़्र और पाप करके और अल्लाह के बन्दों पर अत्याचार करके।
[12] अर्थात उन पर आकाश से अपना अज़ाब उतार उन्हें हलाक कर दिया।
[13] अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के कर्म की निग्रानी कर रहा है, और उसकी ताक में है ताकि उसकी अच्छाइयों का उसे अच्छा बदला दे, और पाप पर उसे सज़ा दे, हसन बसरी कहते हैं कि बन्दों का रास्ता इसी से होकर आगे बढ़ता है इस से कोई बच कर नहीं जासकता।
[14] अर्थात उसे धन देता है और उस की जीविका बढ़ा देता है।
[15] अर्थात जो धन सम्पत्ती उसे मिली है उससे प्रसन्न होकर उसी को असल सम्मान समझने लगता है।
[16] अर्थात तंगी में डाल कर उसे आज़माता है।
[17] यह काफ़िर की सिफ़त है, रहा मोमिन तो उसके पास असल सम्मान यह है कि अल्लाह उसे अपनी इताअ़त से नवाज़े, और परलोक के लिए कर्म करने की तौफ़ीक़ दे, और उसके पास असल अपमान यह है कि अल्लाह उसे अपनी इताअत और परलोक के लिए कर्म करने की तौफ़ीक़ से महरूम रखे।
[18] अल्लाह तआ़ला के दिए हुए इस धन द्वारा यदि तुम उनका आदर करते तो इसके कारण अल्लाह के पास तुम्हारा आदर होता।
[19] अर्थात न तो तुम स्वयं उसकी ओर राग़िब हो, और न आपस में एक दूसरे को उसकी प्रेरणा और आदेश देते हो, और उसकी राह दिखाते हो, इस प्रकार निर्धन तुम्हारे बीच लाचार पड़ा रहता है, कोई उसकी सहायता करने वाला नहीं होता।
[20] अर्थात अनाथों, विध्वाओं और कमज़ोरों के मालों को समेट समेट कर खूब खा रहे हो।
[21] अर्थात तुम्हारा यह व्यवहार बिल्कुल उचित नहीं।
[22] अर्थात झंझोड़ दी जाएगी और बराबर हिलाई जाएगी, या उसके पर्वतों को कूट-कूट कर बराबर कर दिया जाएगा।
[23] अपने बन्दों के बीच निर्णय करने के लिए तेरा रब स्वयं आएगा।
[24] इस प्रकार कि हर हर आकाश के फ़रिश्तों की सफ़ें अलग अलग होंगी।
[25] इस अवस्था में कि वह (७० हजार) लगामों से जकड़ी हुई होगी और (हर लगाम के साथ ७० हज़ार) फ़रिश्ते उसे खींच रहे होंगे।

इन्सान को समझ आएगी, मगर आज समझने का लाभ कहाँ?
24 वह कहेगा कि काश कि मैनें इस जीवन के लिए, कुछ (नेकी का काम) पहले से किया होता।
25 तो आज (अल्लाह) के अज़ाब जैसा अज़ाब किसी का न होगा।[1]
26 न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।[2]
27 ऐ इतमीनान वाली रूह (आत्मा)।[3]
28 तू अपने प्रभु की ओर लौट चल, इस तरह कि तू उससे प्रसन्न[4] और वह तुझ से ख़ुश।[5]
29 तो तू मेरे ख़ास बन्दों में सम्मिलित हो जा।[6]
30 और मेरी जन्नत में चली जा।[7]

يَقُولُ يَٰلَيۡتَنِي قَدَّمۡتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوۡمَئِذٖ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُۥٓ أَحَدٞ ﴿٢٥﴾
وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُۥٓ أَحَدٞ ﴿٢٦﴾ يَٰٓأَيَّتُهَا ٱلنَّفۡسُ ٱلۡمُطۡمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ٱرۡجِعِيٓ
إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةٗ مَّرۡضِيَّةٗ ﴿٢٨﴾ فَٱدۡخُلِي فِي عِبَٰدِي ﴿٢٩﴾ وَٱدۡخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

सूरतुल बलद - 90

سُورَةُ البَلَد

آياتها ٢٠ — ترتيبها ٩٠

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।
1 मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ।[8]
2 और आप इस नगर में मुक़ीम (ठहरे हुए) हैं।[9]
3 और क़सम है इन्सानी बाप और सन्तान की।[10]
4 यक़ीनन् हम ने इन्सान को (बड़ी मशक़्क़त) परिश्रम में पैदा किया है।[11]
5 क्या यह विचार करता है कि यह किसी के बस में ही नहीं?[12]
6 कहता (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल खर्च कर डाला।[13]
7 क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?[14]
8 क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनायीं?
9 और एक जीभ और दो होंठ (नहीं बनायें)?
10 और उसको दोनों रास्ते दिखा दिए।[15]
11 तो उससे न हो सका कि घाटी में प्रवेश करता।[16]

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
لَآ أُقۡسِمُ بِهَٰذَا ٱلۡبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنتَ حِلُّۢ بِهَٰذَا ٱلۡبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٖ وَمَا وَلَدَ
﴿٣﴾ لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيَحۡسَبُ أَن لَّن يَقۡدِرَ عَلَيۡهِ
أَحَدٞ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهۡلَكۡتُ مَالٗا لُّبَدًا ﴿٦﴾ أَيَحۡسَبُ أَن لَّمۡ يَرَهُۥٓ أَحَدٌ
﴿٧﴾ أَلَمۡ نَجۡعَل لَّهُۥ عَيۡنَيۡنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانٗا وَشَفَتَيۡنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيۡنَٰهُ
ٱلنَّجۡدَيۡنِ ﴿١٠﴾ فَلَا ٱقۡتَحَمَ ٱلۡعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا ٱلۡعَقَبَةُ ﴿١٢﴾
فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوۡ إِطۡعَٰمٞ فِي يَوۡمٖ ذِي مَسۡغَبَةٖ ﴿١٤﴾ يَتِيمٗا ذَا مَقۡرَبَةٍ
﴿١٥﴾ أَوۡ مِسۡكِينٗا ذَا مَتۡرَبَةٖ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَتَوَاصَوۡاْ
بِٱلصَّبۡرِ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡمَرۡحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَيۡمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَٱلَّذِينَ
كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِنَا هُمۡ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيۡهِمۡ نَارٞ مُّؤۡصَدَةُۢ ﴿٢٠﴾

سُورَةُ الشَّمۡسِ

آياتها ١٥ — ترتيبها ٩١

12 और तू क्या समझता कि घाटी है क्या?
13 किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद (स्वतन्त्र) करना।
14 या भूख वाले दिन[17] खाना खिलाना।
15 किसी रिश्तेदार यतीम[18] को।
16 या भूमि पर पड़े ग़रीब[19] को।
17 फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और एक दूसरे को सब्र की[20] और दया करने की[21] वसीयत करते हैं।
18 यही लोग हैं दाएं हाथ वाले।[22]
19 और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बाएं हाथ वाले।[23]

---

1 अर्थात जिस प्रकार अल्लाह काफ़िरों को अज़ाब देगा कोई और नहीं दे सकता।
2 और जिस प्रकार वह ज़ंजीरों और बेड़ियों से जकड़ेगा कोई और नहीं जकड़ सकता, क्योंकि उस दिन सारे अधिकार मात्र उसी के पास होंगे, किसी को उसके सामने पर मारने की हिम्मत न होगी।
3 अर्थात ऐसा नफ़्स जो अल्लाह पर और उसकी वहदानियत पर ऐसा विश्वास रखने वाला था, जिसमें कण बराबर भी शंका न था।
4 अर्थात उस सवाब से जो तेरे रब ने तुझे दिया है।
5 और तू उसके पास पसंदीदा है।
6 अर्थात मेरे नेक बन्दों के दल में सम्मिलित होजा।
7 उनके साथ (और यह ऐसा सम्मान है जिस से बढ़कर कोई सम्मान नहीं)।
8 अर्थात मैं इस हुर्मत वाले नगर की क़सम खाता हूँ, यह क़सम अल्लाह के पास मक्का की महानता को स्पष्ट करने के लिए है, क्योंकि इस नगर में का'बा है, और इस्माईल ﷺ और हमारे नबी ﷺ का शहर है, और इसी शहर में हज्ज के कर्म पूरे किए जाते हैं।
9 अर्थ यह है कि मैं इस नगर की क़सम जिसमें आप हैं आप की बड़ाई और आप के रुत्बे को स्पष्ट करने के लिए खा रहा हूँ। क्योंकि आप के क़ियाम के कारण यह नगर महान बन गया है।
10 अल्लाह तआला बाप और उसकी औलाद की क़सम खा रहा है, जैसे आदम की और उनकी नसल से जो सन्तान हुई उसकी, इसी प्रकार जानवरों में से प्रत्येक बाप और उसके औलाद की, यह क़सम नसल की अहमियत और अल्लाह की शक्ति, और उसके ज्ञान पर उसकी तम्बीह और आगाही के लिए है।
11 अर्थात वह पैदा होने के समय से लेकर बराबर संसार की कठिनाईयों में उलझा रहता है, और उसे बरदाश्त करता रहता है, यहाँ तक कि वह मर जाता है, फिर मरने के बाद उसे क़ब्र और बर्ज़ख़ की कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं, फिर उसे आख़िरत की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
12 अर्थात क्या इब्ने आदम यह समझता है कि उस पर किसी की शक्ति नहीं चलती, और कोई उससे बदला नहीं ले सकता, चाहे वह कितनी भी बुराईयां क्यों न करे, यहाँ तक कि उसका ख़ालिक़ और पालनहार भी।
13 **مالاً لبداً** का अर्थ है बहुत अधिक धन। अर्थ यह कि सांसारिक कामों में दिल खोल कर पैसा खर्च करता है और फिर लोगों से उसका चर्चा करता फिरता है।
14 अर्थात क्या वह यह समझता है कि अल्लाह उसे देख नहीं रहा है, और वह उससे उसके धन के बारे में पूछेगा नहीं कि उसने उसे कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया।
15 मतलब यह है कि क्या हमने उसे भलाई और बुराई दोनों के रास्ते नहीं बतला दिए हैं, और उन्हें इस प्रकार स्पष्ट नहीं कर दिए हैं जैसे दो ऊँचे मार्ग स्पष्ट होते है?
16 अर्थात वह क्यों तैयार नहीं रहा, और उसने अपने और अल्लाह की फ़र्मांबर्दारी के बीच नफ़्स के बहकावे और शैतान की पैरवी जैसी रुकावटें क्यों दूर नहीं कीं।
17 **مسغبة** का अर्थ भूक है, और **في يوم ذي مسغبة** का अर्थ भूक वाला दिन जिसमें खाने की इच्छा होती है।
18 अर्थात किसी अनाथ को, जिसके बचपने में उसके पिता का निधन होगया हो, खाना खिलाना।और वह अनाथ उसके रिश्तेदारों में से हो।
19 अर्थात ऐसा गरीब जिसके पास कुछ भी न हो, गोया कि वह अपनी मुहताजी के कारण मिट्टी से चिपका हुवा है। मुजाहिद कहते हैं कि जिसके पास पहनने के कपड़े भी न हों जिसके द्वारा वह मिट्टी से बच सके।
20 अर्थात अल्लाह की इताअत करने और उसके पाप से बचने और इस मार्ग में आने वाली मुसीबतों और कठिनाइयों पर सब्र की।
21 अर्थात अल्लाह के बन्दों पर रहम करने की।
22 अर्थात जिनके दाएं हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।
23 अर्थात जिनके बाएं हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلشَّمۡسِ وَضُحَىٰهَا ١ وَٱلۡقَمَرِ إِذَا تَلَىٰهَا ٢ وَٱلنَّهَارِ إِذَا جَلَّىٰهَا ٣
وَٱلَّيۡلِ إِذَا يَغۡشَىٰهَا ٤ وَٱلسَّمَآءِ وَمَا بَنَىٰهَا ٥ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا طَحَىٰهَا
٦ وَنَفۡسٖ وَمَا سَوَّىٰهَا ٧ فَأَلۡهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقۡوَىٰهَا ٨ قَدۡ
أَفۡلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ٩ وَقَدۡ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ١٠ كَذَّبَتۡ ثَمُودُ
بِطَغۡوَىٰهَآ ١١ إِذِ ٱنۢبَعَثَ أَشۡقَىٰهَا ١٢ فَقَالَ لَهُمۡ رَسُولُ ٱللَّهِ
نَاقَةَ ٱللَّهِ وَسُقۡيَٰهَا ١٣ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمۡدَمَ
عَلَيۡهِمۡ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمۡ فَسَوَّىٰهَا ١٤ وَلَا يَخَافُ عُقۡبَٰهَا ١٥

ترتيبها ٩٢ — **سُورَةُ اللَّيْلِ** — آياتها ٢١

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلَّيۡلِ إِذَا يَغۡشَىٰ ١ وَٱلنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ٢ وَمَا خَلَقَ ٱلذَّكَرَ وَٱلۡأُنثَىٰٓ ٣
إِنَّ سَعۡيَكُمۡ لَشَتَّىٰ ٤ فَأَمَّا مَنۡ أَعۡطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ٥ وَصَدَّقَ بِٱلۡحُسۡنَىٰ ٦
فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلۡيُسۡرَىٰ ٧ وَأَمَّا مَنۢ بَخِلَ وَٱسۡتَغۡنَىٰ ٨ وَكَذَّبَ بِٱلۡحُسۡنَىٰ
٩ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلۡعُسۡرَىٰ ١٠ وَمَا يُغۡنِي عَنۡهُ مَالُهُۥٓ إِذَا تَرَدَّىٰٓ ١١ إِنَّ عَلَيۡنَا
لَلۡهُدَىٰ ١٢ وَإِنَّ لَنَا لَلۡأٓخِرَةَ وَٱلۡأُولَىٰ ١٣ فَأَنذَرۡتُكُمۡ نَارٗا تَلَظَّىٰ ١٤

20 उन्हीं पर आग होगी जो चारों ओर से घेरे हुए होगी।[1]

सूरतुश शम्स - 91

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 क़सम है सूरज की और उसकी धूप की।[2]
2 क़सम है चाँद की जब उसके पीछे आए।[3]
3 क़सम है दिन की जब सूरज को ज़ाहिर करे।[4]
4 क़सम है रात की जब उसे ढाँक ले।
5 क़सम है आकाश की और उसके बनाने की।
6 क़सम है धरती की और उसे हम्वार (समतल) करने की।[5]
7 क़सम है नफ़्स (आत्मा) की और उसके सुधार करने की।[6]
8 फिर समझ दी उसको पाप की और उससे बचने की।[7]
9 जिसने उसे पाक किया वह सफल हो गया।[8]

10 और जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया वह असफल हुवा।[9]
11 समूदियों ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुठलाया।[10]
12 जब उनमें का बड़ा बद्-बख़्त (दुर्भग्यशाली) उठ खड़ा हुआ।[11]
13 उन्हें अल्लाह के रसूल ने[12] कह दिया था कि अल्लाह (तआ़ला) की ऊँटनी[13] और उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।[14]
14 उन लोगों ने अपने संदेष्टा को झूठा समझ कर उस ऊँटनी की कूंचें काट दीं, तो उनके रब ने उनके पाप के कारण उन पर हलाकत (विनाश) डाल दिया[15], और फिर विनाश को आम (आम लोगों के लिए) कर दिया, और उस बस्ती को बराबर कर दिया।[16]
15 वह निर्भय है इस प्रकोप के परिणाम से।[17]

सूरतुल् लैल - 92

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 क़सम है रात की जब छा जाए।
2 और क़सम है दिन की जब रौशन हो जाए।
3 और क़सम है उस (शक्ति) की जिसने नर-मादा[18] पैदा किया।
4 अवश्य तुम्हारी कोशिश विभिन्न प्रकार की है।[19]
5 तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा।[20]
6 और नेक बातों की तस्दीक़ (पुष्टि) करता रहा।[21]
7 तो हम भी उसके लिए सरल रास्ते की आसानी कर देंगे।[22]
8 मगर जिसने कंजूसी की और लापर्वाही बर्ती।
9 और नेक बातों को झुठलाया।
10 तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे।[23]

---

1 अर्थात वह आग चारों ओर से बन्द होगी ताकि कोई उससे बाहर न निकल सके।
2 **ضحی** सूरज निकलने के बाद उसके ऊपर चढ़ आने का समय, जब उसकी रौशनी पूरी हो जाती है।
3 अर्थात सूरज डूबने के बाद जब चाँद निकला।
4 सूरज जैसे जैसे फैलता जाता है दिन पूरी तरह स्पष्ट होता चला जाता है।
5 जिसने उसे चारों ओर बिछाया और फैलाया।
6 जिसने उसे पैदा किया और आत्मा से उसे जोड़ा, और उसे अनगिन्त शक्तियों और सलाहियतों और अनेक प्रकार के अनुभवों से ज्ञात किया, और उसे सीधे डील-डाल का और फित्रत के बमोजिब बनाया, जैसा कि ह़दीस में है कि : हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है, फिर उसके माता पिता उसे यहूदी या नस्रानी या मजूसी बना देते हैं।
7 अर्थात इन दोनों के हालात से ज्ञात कर दिया, और इन दोनों की अच्छाई और बुराई को बता दिया।

8 अर्थात जिसने अपने को साफ़ सुथरा किया, उसे बढ़ाया और तक़्वा द्वारा उसे ऊँचा किया तो वह अपने हर उद्देश्य में सफल और अपनी प्रत्येक मन-पसंद चीज़ को पाने में कामयाब रहा।
9 अर्थात वह घाटे में रहा जिसने उसे गुम्राह किया, और सीधे रास्ते से भटकाया, और अल्लाह के पास उसे गुमनाम कर दिया और उसे ताअत और अमले-सालेह के द्वारा शोहरत नहीं दी।
10 अर्थात कौमे समूद को झुठलाने पर उनकी उद्दण्डता ने उभारा। **طغیان** का अर्थ पाप और सर्कशी में सीमा पार कर जाना है।
11 अर्थात जिस समय समूद का या सृष्टी का सब से बद्-बख़्त व्यक्ति खड़ा हुवा, उसका नाम क़िदार बिन सालिफ़ था, उसने जाकर ऊँटनी की कूँचें काट दीं, **انبعث** का अर्थ है उस काम के लिए अपने आप को आगे बढ़ाया और उसे कर डाला।
12 अल्लाह के रसूल से मुराद उनके नबी सालिह ﷺ हैं।
13 अर्थात अल्लाह की ऊँटनी को छोड़ दो, उससे छेड़-छाड़ न करो, और उसे कोई नुक़्सान न पहुँचाओ, उन्होंने उससे उन्हें डराया।
14 और उसके पानी के पीने का ख़याल रखना, और उसकी बारी के दिन उससे कोई छेड़-छाड़ न करना।
15 अर्थात उन्हें हलाक कर दिया और उन पर कठोर अज़ाब नाज़िल किया।
16 फिर धरती उन पर बराबर कर दी और उन्हें मिट्टी के नीचे गाड़ दिया।
17 अर्थात उन्हें अज़ाब देने के कारण अल्लाह को किसी का डर नहीं है।
18 अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ में से दोनों जिन्सों नर और मादा की क़सम खाई है, चाहे यह नर और मादा इन्सानों में से हों या दूसरी मख़्लूक़ात में से।
19 अर्थात तुम्हारे कर्म अलग अलग हैं कोई जन्नत के लिए कर्म कर रहा है तो कोई जहन्नम के लिए।
20 अर्थात जिसने नेकी के कामों में अपना धन खर्च किया और अल्लाह ने जिन चीज़ों से रोका उन से बचा।
21 अर्थात अल्लाह की ओर से मिलने वाले अच्छे की पुष्टि की और उसके रास्ते में खर्च करने पर जिस सवाब का उसने वादा किया है उसे सच जाना।
22 तो हम उसके लिए पुण्य के रास्ते में खर्च करने को, और अल्लाह के लिए अनुकरण को आसान कर देंगे, यह आयतें अबू बक्र सिद्दीक़ के बारे में उतरी हैं, जिन्होंने ६ मोमिन गुलाम आजाद किए, जो मक्का के काफिरों की गुलामी में थे और वे उन्हें कठोर यातना पहुँचा रहे थे।
23 बुराई के काम को अर्थात कुफ़्र, गुनाह और नाफ़र्मानी के काम को हम उसके लिए आसान कर देंगे, यहाँ तक कि नेकी के द्वार उसके लिए कठिन होजाएंगे, और अच्छे कामों के करने की तौफ़ीक़ से वह महरूम रहेगा, और कुफ़्र और पाप में बढ़ता चला जाएगा जो उसे जहन्नम में पहुँचा देंगे।

11 और उसका माल[1] उसके (मुख के बल औंधा) गिरते समय कोई काम न आएगा।[2]
12 बे-शक रास्ता दिखा देना हमारे जिम्मे है।[3]
13 और हमारे ही हाथ में आख़िरत (परलोक) और संसार है।[4]
14 मैंने तो तुम्हें शोले मारती हुई आग से डरा दिया है।[5]
15 जिसमें केवल वही बद्-बख़्त (दुर्भाग्यशाली)[6] जाएगा।
16 जिसने झुठलाया और (उसके अनुकरण से) मुंह फेर लिया।[7]
17 और उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जाएगा जो परहेज़गार होगा।[8]
18 जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।[9]
19 किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।[10]
20 बल्कि केवल अपने महान और बर्तर रब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए।
21 यक़ीनन् वह (अल्लाह भी) जल्द ही राज़ी हो जाएगा।[11]

सूरतुद दुहा [12] - 93

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 क़सम है चाश्त (सूर्य के ऊँचे हो जाने) के समय की।[13]
2 और क़सम है रात की जब छा जाए।[14]
3 न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है [15], न बेज़ार (विमुख) हो गया।[16]
4 अवश्य तेरे लिए अन्जाम आग़ाज़ (अन्त आरम्भ) से बेहतर है।[17]
5 तुझे तेरा रब बहुत जल्द (पुरस्कार) देगा[18] और तू खुश हो जाएगा।
6 क्या उसने तुझे यतीम (अनाथ) पाकर जगह नहीं दी?[19]
7 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?[20]

لَا يَصْلَىٰهَآ إِلَّا ٱلْأَشْقَى ﴿١٥﴾ ٱلَّذِى كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٦﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا
ٱلْأَتْقَى ﴿١٧﴾ ٱلَّذِى يُؤْتِى مَالَهُۥ يَتَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾ وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُۥ مِن
نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰٓ ﴿١٩﴾ إِلَّا ٱبْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ ٱلْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾

سُورَةُ الضُّحَىٰ — ترتيبها ٩٣ — آياتها ١١

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلضُّحَىٰ ﴿١﴾ وَٱلَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ﴿٣﴾
وَلَلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ ٱلْأُولَىٰ ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ
فَتَرْضَىٰٓ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَـَٔاوَىٰ ﴿٦﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا
فَهَدَىٰ ﴿٧﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿٨﴾ فَأَمَّا ٱلْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ
﴿٩﴾ وَأَمَّا ٱلسَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

سُورَةُ الشَّرْحِ — ترتيبها ٩٤ — آياتها ٨

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾ ٱلَّذِىٓ
أَنقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ فَإِنَّ مَعَ ٱلْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ إِنَّ
مَعَ ٱلْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ فَإِذَا فَرَغْتَ فَٱنصَبْ ﴿٧﴾ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَٱرْغَب ﴿٨﴾

8 और तुझे ग़रीब पाकर अमीर नहीं बना दिया?[21]
9 तो यतीम पर तू भी कठोरता न किया कर।[22]
10 और न माँगने वाले को डाँट-डपट।[23]
11 और अपने रब की नेमतों (उपकारों) को बयान करता रह।[24]

सूरतुश्शह़ - 94

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया?[25]
2 और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।[26]
3 जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी।[1]

---

1 अर्थात उसका धन जिसे उसने अल्लाह के रास्ते में खर्च करने में बख़ीली की थी उसके कुछ भी काम न आएगा।
2 अर्थात उसके हलाक होने और जहन्नम में मुंह के बल गिरने के समय।
3 अर्थात हिदायत के रास्ते को गुम्राही के रास्ते से स्पष्ट करना हमारे ज़िम्मे है। फर्रा कहते हैं जो हिदायत के रास्ते पर चलेगा तो हिदायत के रास्ते पर चलाना अल्लाह के ज़िम्मे है।
4 लोक और परलोक की सारी चीज़ें हमारी हैं, हम जिस तरह चाहते हैं उनमें फेर-बदल करते हैं।
5 **نارا تلظى** शोले भड़काती हुई आग।
6 **أشقى** से मुराद काफिर है, अर्थात जहन्नम की गर्मी काफिर के लिए ही होगी।
7 जिसने उस सत्य को झुठलाया जिसे नबी तथा रसूल लेकर आए, और ईमान के रास्ते से मुंह मोड़ा।
8 कुफ़्र से डरने वाला व्यक्ति उससे दूर रखा जाएगा। वाहि़दी कहते हैं कि सारे मुफस्सिरीन का कहना है कि **اتقى** से मुराद अबू बक्र सिद्दीक़ हैं। अर्थात यह आयत उनके बारे में उतरी है, और इसका हुक्म आम है।
9 अर्थात वह उसे भलाई के कामों में खर्च करता है और इससे वह अल्लाह के पास पाक होना चाहता है।
10 अर्थात वह अपने धन का सदक़ा इसलिए नहीं करता है कि किसी के किए हुए एहसान का बदला चुकाए।
11 अर्थात इस महान बदले से जिस से हम उसे जल्द नवाजेंगे।
12 एक बार नबी ﷺ बीमार हो गए, दो तीन रात क़ियाम नहीं कर सके, तो एक औरत आप के पास आई और कहने लगी ऐ मुहम्मद! लगता है कि तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है, मैं देख रही हूँ कि दो तीन रातों से वह तेरे पास नहीं आया, जिस पर अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई।
13 **ضحى** सूरज के ऊपर चढ़ आने के समय का नाम है।
14 असमई कहते हैं कि **سجوالليل** का अर्थ है रात का दिन को ढांप लेना जैसे कपड़े से आदमी को ढांप दिया जाता है।
15 उसने तुझ से अपना नाता नहीं तोड़ा है, जैसे छोड़ कर चले जाने वाला करता है, और न उसने तुझ पर वह्य भेजनी ही बन्द की है।
16 और न ही तू उसके पास ना-पसंदीदा है, बल्कि तू उसे बहुत अधिक महबूब है।
17 अर्थात जन्नत तेरे लिए संसार से उत्तम है, और यह बावजूद उस नुबुव्वत के शर्फ के जिससे आप को नवाज़ा गया है।
18 अर्थात धर्म का ग़ल्बा, सवाब, हौज़े कौसर और उम्मती के लिए शिफ़ाअत इत्यादि चीज़ें अल्लाह आप को देगा।
19 अर्थात तुझे अनाथ और बे-सहारा पाया, बाप के प्रेम से भी तू महरूम था, तो उसने तुझे शरण दिया, जहाँ तू पनाह ले सके।
20 अर्थात न क़ुर्आन के बारे में जानता था, न शरीअत के बारे में, तो उसने तुझे उनका मार्ग दिखाया।
21 अर्थात उसने तुझे गरीब और बाल-बच्चों वाला पाया, तेरे पास धन नहीं था तो उसने तुझे धन और रोज़ी देकर बे-नियाज़ कर दिया।
22 अर्थात उन्हें कमज़ोर और असहाय पाकर उन से कठोरता से न पेश आ, और उन पर अत्याचार न कर, और अपनी यतीमी याद करके उन्हें उनका हक़ दे दिया कर।
23 अर्थात मांगने वाले को डाँट-डपट न किया कर, क्योंकि तू भी ग़रीब था, तो या तो तू उसे दे दिया कर या नरमी से उसे लौटा दिया कर।
24 इसमें आदेश है कि जो नेमतें अल्लाह तआला ने तुझे दी हैं उन्हें बयान करते और बताते रहा कर, अल्लाह की नेमतों का बयान यह कि उस पर उसका शुक्रिया किया जाए, और एक क़ौल के अनुसार नेमत से मुराद क़ुरआन है तो उसे पढ़ने और उसे बयान करने का आदेश दिया गया है।
25 अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद हम ने तेरा सीना नुबुव्वत क़बूल करने के लिए खोल दिया, चुनांचि उसी समय से तू दावती ज़िम्मेदारियां अन्जाम दे रहा है, और नुबुव्वत के बोझ को उठाने और वह्य को सुरक्षित रखने पर शक्ति वाला हो गया है।
26 अर्थात नुबुव्वत से पहले के तेरे ४० वर्षीय जीवन में जो कमी हुई हमने उन्हें माफ़ कर दिया।

ترتيبها ٩٥ — سُورَةُ التِّينِ — آياتها ٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ﴿١﴾ وَطُورِ سِينِينَ ﴿٢﴾ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ﴿٣﴾
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿٤﴾ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ
﴿٥﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٦﴾
فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ﴿٧﴾ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ﴿٨﴾

ترتيبها ٩٦ — سُورَةُ الْعَلَقِ — آياتها ١٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾ اقْرَأْ وَرَبُّكَ
الْأَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّا إِنَّ
الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ ﴿٦﴾ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ﴿٧﴾ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ﴿٨﴾ أَرَأَيْتَ
الَّذِي يَنْهَىٰ ﴿٩﴾ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ﴿١٠﴾ أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ﴿١١﴾ أَوْ أَمَرَ
بِالتَّقْوَىٰ ﴿١٢﴾ أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٣﴾ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِن
لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ
﴿١٧﴾ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩ ﴿١٩﴾

4 और हमने तेरा चर्चा बुलंद कर दिया।[2]
5 तो यक़ीननू कठिनाई के साथ आसानी है।
6 यक़ीननू कठिनाई के साथ आसानी है।[3]
7 तो जब तू ख़ाली हो[4] तो (इबादत में) मेहनत (परिश्रम) कर।[5]
8 और अपने रब की ओर दिल लगा।[6]

सूरतुत्तीन – 95

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 क़सम है इंजीर की और जैतून की।[7]
2 और सीनीन के तूर (पर्वत) की।[8]
3 और इस शान्ति वाले नगर की।[9]
4 यक़ीननू हमने इन्सान को बेहतरीन रूप[10] में पैदा किया।
5 फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।[11]
6 लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के कर्म किये[12],
तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समाप्त न होगा।[13]
7 तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी
बात आमादा (उत्साहित) करती है।[14]
8 क्या अल्लाह (तआला) सारे हाकिमों का हाकिम नहीं है?[15]

सूरतुल् अलक़ – 96

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 अपने रब का नाम लेकर पढ़[16] जिसने पैदा किया है।
2 जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।[17]
3 तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला (उदार) है।[18]
4 जिसने कलम के द्वारा (इल्म) सिखाया।[19]
5 जिसने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।[20]
6 वास्तव में इन्सान तो आपे से बाहर हो जाता है।[21]
7 इसलिए कि वह अपने आप को बे-पर्वा (निश्चिन्त या
धनवान) समझता है।
8 अवश्य लौटना तेरे रब की ओर है।[22]

---

1 अर्थात वह बोझ यदि तेरी पीठ पर लदा रहता तो यह बात सुनी गई होती कि उसने तेरी पीठ तोड़ दी।

2 अर्थात लोक और परलोक दोनों जगहों पर तेरे चर्चे को बुलंद किय, कुछ चीज़ों का आदेश देकर जिनमें से एक बात यह है कि जब वह **أشهد أن لا إلا الله** कहें तो **أشهد أن محمدا رسول الله** भी कहें, इसी तरह अज़ान में आप का नाम बुलन्द करने की हिदायत फ़रमाई, और लोगों को आप पर बहुत अधिक दरूद भेजने का आदेश दिया।

3 अर्थात उस कठिनाई के साथ जिसका अभी चर्चा हुआ एक और आसानी भी है और यह दोनों आसानियां अल्लाह की ओर से हैं।

4 अर्थात अपनी नमाज़ से या तब्लीग़ से या जिहाद से ख़ाली हो।

5 दुआ़ करने में और अल्लाह से मांगने में लग जा, या इबादत में अपने आप को थका दे।

6 अर्थात जहन्नम से डरते हुए और जन्नत की चाहत रखते हुए उसकी ओर दिल लगा।

7 अल्लाह तआला इन्जीर की जिसे लोग खाते हैं और और ज़ैतून की जिस से तेल निचोड़ते हैं क़सम खा रहा है, इन दोनों चीज़ों से इशारा फिलिस्तीन की धरती की ओर है जो इन्जीर और ज़ैतून वाली धरती है।

8 तूरे सीनीन से वह पर्वत मुराद है जिस पर अल्लाह तआला ने मूसा से बात की थी, अर्थात तूरे सैना।

9 अर्थात मक्का की, इसे बलदे अमीन कहा गया; क्योंकि वह शान्ति वाला है, इसमें इन्सान ही नहीं, पशू तथा पक्षि भी शान्ति पाते हैं, गोया कि अल्लाह तआला इन तीनों चीज़ों की क़सम खा रहा है इसलिए कि यह प्रारम्भ से ही वह्य के स्थान हैं, मूसा तथा ईसा और मुहम्मद ﷺ पर वह्य इन्हीं स्थानों में नाज़िल हुई, और तीनों आसमानी किताबें तौरात, इन्जील तथा क़ुरआन इन्हीं जगहों में उतरीं, और हिदायत का प्रकाश यहीं से निकला।

10 अर्थात हम ने उसे लम्बा और सीधा बनाया जो अपनी रोज़ी को अपने हाथ में ले सकता है, और उसे ज्ञान दिया, बोलने, उपाय करने और समझने बूझने की शक्ति दी, और उसे धरती पर हुकूमत करने के क़ाबिल बनाया।

11 अर्थात हम ने उसे उम्र की अन्तिम सीमा को पहुँचा दिया जिसमें जवानी और शक्ति के बाद बुढ़ापा और कमज़ोरी होजाती है, और एक क़ौल के अनुसार इन्सान जिसे अल्लाह तआला भले रूप में पैदा किया किरदार की ऐसी गिरावट और पस्ती में चला जाता है कि वह पशुओं से भी अधिक गया-गुजरा होजाता है, और उस की हालत सारी मख़्लूक़ से बुरी हो जाती है, और नरक के सब से निचले दरजे में डाल दिया जाता है।

12 अर्थात वह नरक में नहीं लौटाए जाते, बल्कि अल्लाह की कुशादा जन्नत इल्लीईन की ओर लौटाए जाते हैं।

13 अर्थात उनकी नेकी का उन्हें ऐसा सवाब मिलता है जिसका सिलसिला सदा जारी रहेगा, कभी बन्द नहीं होगा।

14 अर्थात ऐ इन्सान! जब तूने यह जान लिए कि अल्लाह ने तुझे भले रूप में पैदा किया और तुझे नरक में भी लौटा सकता है, तो फिर तुझे दोबारा लौटाए न जाने और जज़ा व सज़ा को झुठलाने पर कौन सी चीज़ उभार रही है? और तू क्यों उनका इनकार करता है?

15 अर्थात न्यायपूर्ण न्याय करने के हिसाब से; क्योंकि उस ने इन्सान को अच्छे रूप का बनाया, फिर जिसने उसके साथ कुफ्र किया उसे औंधे मुंह नरक में डाल दिया, और जो उस पर ईमान लाया उसे बुलन्द दर्जे अता किए।

16 यह सब से पहली वह्य है जो नबी ﷺ पर उतरी, अर्थात ऐ मुहम्मद ﷺ अपने रब के नाम से पढ़ना आरम्भ कीजिए, और एक क़ौल के अनुसार अपने रब के नाम से सहायता चाहते हुए पढ़िए।

17 जो पहले गलीज़ पानी के रूप में होता है फिर अल्लाह की कुदरत से खून में बदल जाता है जैसे वह जमे हुए खून का कोई टुकड़ा हो।

18 यह उस के करम का ही फल है कि उस ने तुम्हें पढ़ने की शक्ति दी बावजूद इस के कि तुम अनपढ़ हो।

19 अर्थात जिस रब ने इन्सान को क़लम द्वारा लिखना सिखाया, अल्लाह तआला इस्लाम की दावत का आरम्भ पढ़ने और लिखने की दावत और उस की ओर दिल लगाने से की; क्योंकि यह दोनों चीज़ें बहुत ही लाभ-दायक हैं।

20 अर्थात उस ने इन्सान को क़लम द्वारा ऐसी ऐसी चीज़ें सीखाईं जिन्हें वह नहीं जानता था।

21 अर्थात अपने धन और अपनी शक्ति के कारण अपने आप को निस्पृह समझ कर उद्दण्डता करता है।

22 न कि किसी दूसरे की ओर।

9 (भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है?[1]
10 जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है?
11 भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो?[2]
12 या परहेजगारी का हुक्म देता हो?[3]
13 भला देखो तो यदि यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो?[4] तो
14 क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआ़ला) उसे खूब देख रहा है।[5]
15 अवश्य यदि ये नहीं रूका तो हम उसकी पेशानी (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।[6]
16 ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।[7]
17 यह अपने सभा वालों को बुला ले।[8]
18 हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे।[9]
19 सावधान! उसका कहना कभी भी न मानना और सजदा कर[10] और करीब होजा।[11]

सूरतुल् क़द्र - 97

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 यक़ीनन हमने उसे[12] क़द्र की (शुभ) रात में उतारा।
2 तू क्या समझा कि क़द्र की (शुभ) रात क्या है?[13]
3 क़द्र की रात एक हज़ार महीनों से बेहतर (श्रेष्ठ) है।[14]
4 इसमें (प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए)[15] अपने रब के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह[16] (जिब्रील) उतरते हैं।[17]
5 यह रात सरासर शान्ति की होती है[18], और फ़ज्र के तुलूअ (उदय) होने तक (होती है)।

سُورَةُ القَدْرِ — اٰيَاتُهَا ٥ — تَرْتِيبُهَا ٩٧

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ﴿٢﴾
لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ
فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ﴿٥﴾

سُورَةُ البَيِّنَةِ — اٰيَاتُهَا ٨ — تَرْتِيبُهَا ٩٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ وَٱلْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ
حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُولٌ مِّنَ ٱللَّهِ يَتْلُوا۟ صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾
فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا مِنۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ ۚ وَذَٰلِكَ دِينُ
ٱلْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ وَٱلْمُشْرِكِينَ
فِى نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ ٱلْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾ إِنَّ
ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ ٱلْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾

सूरतुल् बय्यिनः - 98

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 अहले किताब के काफ़िर[19] और मूर्तिपूजक लोग[20], जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी न आ जाए, रूकने वाले न थे[21] (वह निशानी यह थी कि)।
2 अल्लाह (तआ़ला) का एक रसूल[22], जो पाक किताबें[23] पढ़े।
3 जिसमें ठीक और उचित आदेश हों।[24]
4 अहले किताब अपने पास जाहिर निशानी आ जाने के

---

[1] जो बन्दे को रोकता है उससे मुराद अबू जहल है, और बन्दे से मुराद मुह़म्मद ﷺ हैं।
[2] अर्थात मुह़म्मद ﷺ अगरचे सीधे मार्ग पर हों और और अपने मानने वालों को सीधे मार्ग पर ले जारहे हों।
[3] या उसे परहेज़गारी अर्थात इस्लाम, तौह़ीद और नेकी का आदेश दे रहा हो जिस से नरक से बचा जा सकता हो।
[4] अर्थात अबू जहल जो रसूल की लाई हूई चीज़ों को झुठलाता है और ईमान से मुंह फेरता है।
[5] कि अल्लाह उस की सारी बातों को जानता है, और उसे उस के किए की सज़ा देगा, फिर उसे इस की जुर्अत कैसे हूई?
[6] यह उस के लिए डाँट और फटकार है, अर्थात यदि वह अपनी इस घिनावनी ह़र्कत से नहीं रूका तो हम उस की पेशानी पकड़ कर घसीट कर उसे नरक में डाल देंगे, **ناصية** का अर्थ ललाट है।
[7] झूठी और पापी पेशानी से मुराद पेशानी वाले का झूठा और पापी होना है।
[8] نادي का अर्थ सभा है, जिस में लोग बैठते हों, अर्थात अपने सभा वालों को बुला ले, और एक क़ौल यह है कि अबू जहल ने अल्लाह के रसूल ﷺ को कहा था कि मुह़म्मद! तुम मुझे धमकी दे रहे हो जबकि इस वादी में मेरे हिमायती, और मेरे सभा वाले सब से अधिक हैं, तो यह आयत उतरी।
[9] अर्थात फ़रिश्तों को जो बहुत कठोर दिल वाले हैं, वह उसे पकड़ कर नरक में डाल देंगे।
[10] अर्थात तुम्हें जो वह नमाज़ से रोक रहा है तो तुम उस की यह बात कदापि न मानना, और उसके रोकने की परवाह किए बिना मात्र अल्लाह की खुशी के लिए नमाज़ पढ़ते रहना।
[11] और इताअत तथा इबादत द्वारा अपने रब की नज़दीकी चाहते रहना।
[12] अर्थात क़ुर्आन को जो शुभ रात्री में लौहे मह़फ़ूज़ से बैतुल् इज़्ज़त में जो कि पहले आकाश पर है एक ही बार पूरा उतार दिया गया, और वहाँ से ज़रूरत के अनुसार नबी ﷺ पर पूरे २३ वर्ष उतरता रहा, शबे क़द्र रमज़ान की अन्तिम १० रातों में से कोई एक रात है, जिस में क़ुर्आन उतारा गया।
[13] क़द्र का अर्थ अन्दाज़ा और फ़ैसला करने के हैं, इसे क़द्र की रात इसलिए कहा गया है कि इसमें अल्लाह पूरे साल के काम के अन्दाज़े और फ़ैसले करता है, और एक क़ौल के अनुसार क़द्र का अर्थ महानता और शर्फ़ है, और इसे क़द्र वाली रात इसलिए कहा गया है कि यह क़द्र व मन्ज़िलत और शर्फ वाली रात है।
[14] अर्थात उस में एक रात की इबादत हज़ार महीनों (८३ वर्ष ४ महीने) की इबादत से उत्तम है।
[15] सारे कामों को पूरा करने के लिए।
[16] रूह़ से मुराइ जिब्रईल عليه السلام हैं।
[17] अर्थात आकाश से धरती पर उतरते हैं।
[18] अर्थात यह पूरी रात शान्ति और भलाई वाली है, इस में कोई बुराई नहीं, इसमें शैतान न कोई गलत काम कर सकता है और न किसी को दुःख दे सकता, और यह सिलसिला फ़जर के उदय होने तक रहता है, फ़रिश्तों का दल के दल आकाश से उतरना फ़जर तक बन्द नहीं होता।
[19] अर्थात यहूद और नसारा।
[20] अर्थात अरब के मुश्रिकीन जो मूर्तियों के पूजारी थे।
[21] अर्थात अपने कुफ्र से रुकने वाले नहीं थे, स्पष्ट निशानी से मुराद मुह़म्मद और क़ुर्आने मजीद है जिसे लेकर आप ﷺ आए और आप ने उन की गुम्राही को उन पर स्पष्ट किया, और उन्हें ईमान की दावत दी।
[22] अर्थात मुह़म्मद ﷺ।
[23] जो हेर-फेर और रद्द व बदल से सुरक्षित हो और वाक़ई अल्लाह का कलाम हो।
[24] इस से मुराद आयात और अह़काम हैं जो उन में लिखी हूई हैं।
قيمة सीधा मह़कम जिनमें ह़क से इन्ह़िराफ़ और टेढ़ापन न हो, जो कुछ उस में हो पूरा का पूरा हिदायत और हिक्मत हो, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है : (**الحمد لله الذي أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا**) "सम्पूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी, और उस में कोई कजी नहीं रखी, और उसे बिल्कुल ठीक-ठाक रखा, जो भी उसकी पैरवी करे वह सीधे मार्ग पर होगा"।

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ
فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿٨﴾

سُورَةُ الزَّلزَلَة
ترتيبها ٩٩ — آياتها ٨

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ أَثْقَالَهَا
﴿٢﴾ وَقَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾
بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ أَشْتَاتًا
لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا
يَرَهُۥ ﴿٧﴾ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ﴿٨﴾

سُورَةُ العَادِيَات
ترتيبها ١٠٠ — آياتها ١١

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلْعَٰدِيَٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾ فَٱلْمُورِيَٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَٱلْمُغِيرَٰتِ صُبْحًا
﴿٣﴾ فَأَثَرْنَ بِهِۦ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا ﴿٥﴾ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ
لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ ﴿٦﴾ وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ﴿٧﴾ وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ
ٱلْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ﴿٨﴾ ۞ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِى ٱلْقُبُورِ ﴿٩﴾

बाद ही (मतभेद में पड़कर) मुतफ़र्रिक़ (विभाजित) हो गए।[1]
5 उन्हें इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया[2] कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को ख़ालिस (शुद्ध) कर रखें।[3] इब्राहीम हनीफ़ (एकेश्वरवादी) के धर्म पर[4], और नमाज़ को क़ायम रखें[5], और ज़कात देते रहें[6], यही है दीन सीधी मिल्लत का[7]।
6 बे-शक जो लोग अहले किताब में से काफिर हुए और मूर्तिपूजक, वे जहन्नम की आग (में जाएंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बद्-तरीन (तुच्छ) मख़्लूक़ हैं।[8]
7 बे-शक जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य किये, ये लोग बेहतरीन (सर्वोच्च श्रेणी) की मख़्लूक़ हैं।

---

[1] अर्थात उन के बीच इख़्तिलाफ़ इस कारण नहीं हुवा कि उन पर ह़क़ स्पष्ट नहीं था, बल्कि ह़क़ को पहचान कर कुछ लोग ईमान ले आए, और कुछ लोगों ने इन्कार किया, हालांकि उन पर एक ही मार्ग को अपनाना लाज़िम था।
[2] अर्थात उन किताबों में जो उन पर उतरी थीं और क़ुर्आने मजीद में भी।
[3] कि वह अल्लाह की इबादत को लाज़िम पकड़ें उस के साथ किसी को साझी न बनाएं, और इबादत को उसी के लिए शुद्ध रखें।
[4] अर्थात सारे धर्मों से अपना नाता तोड़ कर मात्र इस्लाम धर्म की ओर माइल होजाएं।
[5] नमाजों को ठीक रूप से अपने समय पर पढ़ें जिस प्रकार अल्लाह को मतलूब है।
[6] और जब उन पर ज़कात वाजिब हो तो ज़कात दें।
[7] अर्थात यही इस मिल्लत का धर्म है जो सीधा है इसलिए इससे इख़्तिलाफ़ मुनासिब नहीं।
[8] क्योंकि मात्र हसद के कारण उन्होंने ह़क़ को ठुकराया, और रसूल पर मात्र इस कारण ईमान नहीं लाए कि वह इस्माईल की औलाद में पैदा हुए, इसलिए अंजाम के ह़िसाब से मख़्लूक़ में सब से बुरे लोग हैं।

8 उनका बदला[9] उनके रब के पास हमेशगी वाली जन्नतें हैं जिनके नीचे[10] नहरें बह रही हैं जिनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे।[11] अल्लाह (तआ़ला) उनसे खुश हुआ और ये उससे। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।

सूरतुज़्ज़िल्ज़ाल - 99

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 जब धरती पूरी तरह झंझोड़ दी जाएगी।[12]
2 और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[13]
3 और इन्सान कहने लगेगा कि उसे क्या होगया?[14]
4 उस दिन धरती अपनी सारी ख़ब्रें बयान कर देगी।[15]
5 इसलिए कि तेरे रब ने उसे आदेश दिया होगा।[16]
6 उस दिन लोग विभिन्न दलों में होकर (वापस) लौटेंगे।[17]
ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएं।[18]
7 तो जिसने कण के बराबर भी नेकी की होगी वह उसे
देख लेगा।[19]
8 और जिसने कण के बराबर भी पाप किया होगा, वह
उसे देख लेगा।[20]

सूरतुल् आदियात-100

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम।[21]
2 फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की क़सम।[22]
3 फिर सवेरे धावा बोलने वालों की क़सम।[23]
4 तो उस समय धूल उड़ाते हैं।[24]
5 फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं।[25]

---

[9] अर्थात वह जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनका बदला।
[10] अर्थात जिन के पेड़ों और महलों के नीचे।
[11] अर्थात उस से न वह निकाले जाएंगे और न स्वयं छोड़ कर कहीं जाएंगे, और न ही उन्हें मौत आएगी।
[12] अर्थात पूरी कठोरता के साथ हिला दी जाएगी, और इस तरह थरथराने लगेगी कि जो चीज़ भी उस पर होगी सब टूट फूट जाएगी, और यह पहली फूंक के समय होगा।
[13] अर्थात जितने मुर्दे और ख़ज़ाने उस में दफ़न हैं सब को निकाल बाहर करेगी, और सारे लोग ज़िन्दा होकर उठ खड़े होंगे, और यह दूसरी फूंक के समय होगा।
[14] अर्थात वह इसके मामला में हैरान परीशान और भयभीत होकर कहेगा : यह क्यों हिलाई जा रही है और अपने बोझ निकाल कर फेंक रही है?
[15] अर्थात वह अपनी ख़बरें बयान करेगी और जो भी पुण्य तथा पाप उस पर किए गए हैं उसे बताएगी, अल्लाह उसे बोलने की शक्ति दे देगा ताकि वह बन्दों के खिलाफ गवाही दे।
[16] अर्थात वह अपनी ख़बरें अल्लाह की वह़्य और उस के इशारे पर बयान करेगी, अल्लाह की ओर से उसे आदेश मिला होगा कि वह उन्हें बयान करे, और लोगों के ख़िलाफ़ गवाही दे।
[17] अर्थात अपनी क़ब्रों से लोग मह़्शर की ओर अनेक दलों में पलटेंगें, कुछ लोग दाईं ओर से आएंगे और कुछ बाईं ओर से, इसी प्रकार उन के धर्म मज़हब और कर्म भी विभिन्न होंगे।
[18] ताकि अल्लाह उन्हें उन्के कर्म दिखाए जो उन पर पेश होंगे, और एक क़ौल यह है कि उन के कर्म का बदला दिखाए।
[19] तो जिसने संसार में कण बराबर भी नेकी की होगी वह उसे क़ियामत के दिन अपने नामए-आमाल पाकर खुश होगा, या उस नेकी को अपनी आँख से देखेगा।
[20] इसी प्रकार संसार में कोई बुराई की होगी उसे क़ियामत के दिन अपने नामए-आमाल में पाकर दुःखी होगा, कण उस गर्द व गुबार को कहते हैं जो सूरज की रौशनी में दिखाई देता है।
[21] इस से मुराद वह घोड़े हैं जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के लिए घोड़-सवारों को लेकर उन काफ़िर शत्रुओं की ओर दौड़ते हैं, जो अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी रखने वाले हैं। **ضبح** दौड़ने के समय घोड़े की सांस से निकलने वाली आवाज़।
[22] **موريات، إيراء** से है, जिसका अर्थ आग निकालना है, और **قدح** का अर्थ है टाप मारना, मुराद वह घोड़े हैं जिन की टापों की रगड़ से पत्थरों से आग निकलती है, जैसे चक़माक़ के टकराने से आग निकलती है।
[23] **مغيرات، أغار** से है, सुबह के समय हमला करने वाले या धावा बोलने वाले।
[24] **نقع** धूल जिसे जिहाद के समय घोड़े दुश्मन के चेहरों पर उड़ाते हैं।
[25] जो दौड़ कर दुश्मनों के बीच घुस जाते हैं।

6 अवश्य इन्सान अपने रब का बड़ा ना-शुक्रा है।[1]
7 और निश्चित रूप से वह ख़ुद भी उस पर गवाह है।[2]
8 और यह ख़ैर[3] के प्रेम में भी बड़ा कठोर है।
9 क्या उसे उस समय की जानकारी नहीं, जब कब्रों में जो कुछ है निकाल दिए जाएंगे।[4]
10 और सीनों में छिपी बातों को ज़ाहिर कर दिया जाएगा।[5]
11 बे-शक उनका रब उस दिन उनके हाल से पूरी तरह से बा-ख़बर (परिचित) होगा।[6]

सूरतुल क़ारियाः - 101

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 खड़खड़ा देने वाली।[7]
2 क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
3 तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?
4 जिस दिन इन्सान बिखरे हुए पतिंगों जैसे हो जाएंगे।[8]
5 और पर्वत धुने हुए रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।[9]
6 फिर जिसके पलड़े भारी होंगे।[10]
7 वह तो दिल पसंद आराम की ज़िन्दगी में होगा।[11]
8 और जिसके पलड़े हल्के होंगे।
9 उसका ठिकाना 'हाविया' है।[12]
10 तुझे क्या पता कि वह क्या है?[13]
11 वह बहुत तेज़ भड़कती हुई आग है।[14]

सूरतुत् तकासुर - 102

وَحُصِّلَ مَا فِي ٱلصُّدُورِ ﴿١٠﴾ إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌۢ ﴿١١﴾

ترتيبها ١٠١ — سُورَةُ القَارِعَةِ — آياتها ١١

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا ٱلْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْقَارِعَةُ
﴿٣﴾ يَوْمَ يَكُونُ ٱلنَّاسُ كَٱلْفَرَاشِ ٱلْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾
وَتَكُونُ ٱلْجِبَالُ كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ ﴿٥﴾ فَأَمَّا
مَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ ﴿٦﴾ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ
﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ ﴿٨﴾ فَأُمُّهُۥ هَاوِيَةٌ
﴿٩﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌۢ ﴿١١﴾

ترتيبها ١٠٢ — سُورَةُ التَّكَاثُرِ — آياتها ٨

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

أَلْهَىٰكُمُ ٱلتَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتَّىٰ زُرْتُمُ ٱلْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ
عِلْمَ ٱلْيَقِينِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ ٱلْجَحِيمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا
عَيْنَ ٱلْيَقِينِ ﴿٧﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٨﴾

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।

1 अधिकता की चाहत ने तुम्हें ग़ाफ़िल (अचेत) कर दिया।[15]
2 यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे।[16]
3 कभी भी नहीं तुम जल्द ही जान लोगे।[17]
4 कभी भी नहीं फिर तुम जल्द ही जान लोगे।
5 कभी भी नहीं यदि तुम निश्चित रूप से जान लो।[18]
6 तो बे-शक तुम जहन्नम देख लोगे।[19]
7 और तुम उसे विश्वास की आँख से देख लोगे।[20]
8 फिर उस दिन तुमसे अवश्य-अवश्य नेमतों का प्रश्न होगा।[21]

---

[1] **كنود، كفور** के मायने में है, अर्थात इन्सान बड़ा ना-शुक्रा है, वह अल्लाह के उपहारों की क़दर नहीं करता, और न उनका हक़ अदा करता।
[2] अर्थात वह अपने विरोध में स्वयं गवाही देता है कि वह बड़ा ना-शुक्रा है; क्योंकि उस के ना-शुक्रे होने का छाप उस पर स्पष्ट होता है।
[3] ख़ैर से मुराद धन है, अर्थात वह धन से बहुत ही अधिक प्रेम करने वाला, उसकी तलब और खोज में दौड़-भाग करने वाला है, और उस के लिए मर मिटने वाला है।
[4] अर्थात क़ब्रों में जो मुर्दे हैं निकाल कर बाहर फेंक दिए जाएंगे।
[5] **حصل، ميز** तथा **بين** के मायने में है, अर्थात सीने में छुपे भेदों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, और खोल दिया जाएगा।
[6] अर्थात जो रब उन्हें उनकी क़ब्रों से निकालेगा, और उनके सीनों के भेदों को स्पष्ट करेगा, उस के बारे में हर व्यक्ति जान सकता है कि वह कितना ख़बर रखने वाला है, उस पर कोई भी चीज़ छुप नहीं सकती, और न हीं उस दिन और उसके अलावा दूसरे दिनों में उस से कोई चीज़ छुपी रह सकती है, वह उस दिन हर एक को उस के कर्म के अनुसार बदला देगा, तो जब उन्हें इसकी जानकारी है तो यह उचित नहीं कि धन का प्रेम उन्हें अपने रब के शुक्र और उसकी इबादत से और क़ियामत के दिन के लिए कर्म करने से उन्हें फेर दे।
[7] क़ियामत के नामों में से एक नाम है, इसे क़ारिअह इसलिए कहा गया है कि यह दिलों को अपनी हौलनाकियों से खड़खड़ा देगी, या अल्लाह के दुश्मनों को अज़ाब से खड़खड़ा देगी।
[8] **الفراش** पतिंगे, जो रौशनी के चारो ओर मंडलाते हैं। **المبثوث** बिखरे हुए। अर्थात क़ियामत वाले दिन मारे डर के लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह इधर उधर भागते फिरेंगे, यहाँ तक कि वह मैदाने महशर में इकट्ठा कर दिए जाएंगे।
[9] अर्थात धुने हुए ऊन की तरह जो विभिन्न रंग के हों, यह हालत उन की इसलिए होगी कि वह कण-कण होकर उड़ रहे होंगे, इसके बाद फिर अल्लाह तआला ने मैदाने महशर में हिसाबो-किताब के समय लोगों की स्तिथि और उन के दो दलों में बटे होने का इजमाली रूप से चर्चा किया है।
[10] **موازين، موزون** की जमअ़ है, इस से मुराद नेक कर्म हैं, और एक क़ौला अनुसार यह **ميزان** की जमअ़ है, तराज़ू के मायने में जिसमें कर्म तौले जाएंगे, अर्थात नेकियों के पलड़े बुराइयों के पलड़ों से झुके हुए होंगे।
[11] अर्थात पसंदीदा जिसे आदमी पसंद करता हो।
[12] अर्थात उसका ठिकाना नरक होगा, उसे **ام** कहा गया है क्योंकि उसी की ओर शरण लेंगे जैसे दूध पीता बच्चा मां की गोद में शरण लेता है।
[13] उसकी भयंकरपन और कठोर अज़ाब को बताने के लिए है, कि वह इन्सान की सोच से ऊपर है, वह उसकी वास्तविक्ता तक नहीं पहुंच सकता।
[14] अर्थात उसकी गर्मी अपनी अन्तिम सीमा को और तेज़ी अपनी इन्तिहा को पहुँची होगी।

---

[15] अर्थात धन और संतान की अधिकता की चाहत में लगे रहने, उनकी अधिकता पर आपस में फखर (गर्व) करने, और एक दूसरे पर गालिब आने, और उन्हें अधिक से अधिक प्राप्त करने की चाहत ने तुम्हें अल्लाह की इताअत और परलोक के लिए कर्म करने से अचेत कर दिया है।
[16] यहाँ तक कि तुम्हें मौत ने आ लिया और तुम उसी ग़फ़लत में पड़े रहे।
[17] इसमें उनके लिए अधिकता की चाहत में पड़े रहने पर डांट और इस बात की वार्निंग है कि वह जल्द क़ियामत के दिन उसके परिणाम से अवगत होजाएंगे।
[18] अर्थात तुम जिस ग़फ़लत में पड़े हुए हो उसके परिणाम को वास्तविक रूप से जान लो जैसे तुम उन चीज़ों को जानते हो जो संसार में वास्तविक रूप में तुम्हारे पास हैं तो यह तुम्हें अधिकता की चाहत और आपस में फ़खर करने से व्यस्त कर देगा और इस अहम और संगीन मामले में तुम ग़फ़लत और लापर्वाही से काम नहीं लोगे।
[19] अर्थात तुम परलोक में नरक को अपनी आँखों से देखो गे।
[20] अर्थात तुम नरक को देखो गे, इसी को विश्वास की आँख कहा गया है, और इससे जहन्नम को देखना मुराद है।
[21] अर्थात संसार की नेमतों के बारे में जिसने तुम्हें आख़िरत के लिए कर्म करने से अचेत कर रखा था, उदाहरण स्वपरूप अल्लाह ने तुम्हें जो स्वास्थ्य,

سُورَةُ العَصۡرِ

ترتيبها ١٠٣ — آياتها ٣

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلۡعَصۡرِ ﴿١﴾ إِنَّ ٱلۡإِنسَٰنَ لَفِي خُسۡرٍ ﴿٢﴾ إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ
وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلصَّبۡرِ ﴿٣﴾

سُورَةُ الهُمَزَةِ

ترتيبها ١٠٤ — آياتها ٩

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَيۡلٞ لِّكُلِّ هُمَزَةٖ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾ ٱلَّذِي جَمَعَ مَالٗا وَعَدَّدَهُۥ ﴿٢﴾
يَحۡسَبُ أَنَّ مَالَهُۥٓ أَخۡلَدَهُۥ ﴿٣﴾ كَلَّاۖ لَيُنۢبَذَنَّ فِي ٱلۡحُطَمَةِ ﴿٤﴾
وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا ٱلۡحُطَمَةُ ﴿٥﴾ نَارُ ٱللَّهِ ٱلۡمُوقَدَةُ ﴿٦﴾ ٱلَّتِي تَطَّلِعُ
عَلَى ٱلۡأَفۡـِٔدَةِ ﴿٧﴾ إِنَّهَا عَلَيۡهِم مُّؤۡصَدَةٞ ﴿٨﴾ فِي عَمَدٖ مُّمَدَّدَةِۭ ﴿٩﴾

سُورَةُ الفِيلِ

ترتيبها ١٠٥ — آياتها ٥

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

أَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصۡحَٰبِ ٱلۡفِيلِ ﴿١﴾ أَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ
فِي تَضۡلِيلٖ ﴿٢﴾ وَأَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا أَبَابِيلَ ﴿٣﴾ تَرۡمِيهِم
بِحِجَارَةٖ مِّن سِجِّيلٖ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٖ مَّأۡكُولِۭ ﴿٥﴾

सूरतुल् अस्र - 103

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) ज़माने की क़सम।[1]
(2) वास्तव में सारे इन्सान सर्वथा घाटे में है।[2]
(3) उनके सिवाय जो ईमान लाए और नेक कार्य किए और (जिन्होने) आपस में सत्य[3] की वसीयत की और एक-दूसरे को सब्र की नसीह़त की।[4]

सूरतुल् हुमज़ - 104

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) बड़ी ख़राबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चुग़ली करने वाला हो।[5]
(2) जो माल को इकट्ठा करता जाए और गिनता जाए।[6]
(3) वह समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा।[7]
(4) कभी भी नहीं[8] यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा।
(5) और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?
(6) वह अल्लाह (तआ़ला) की सुलगायी हुई आग होगी।
(7) जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी।[9]
(8) (9) और उन पर बड़े-बड़े खम्बों में[10], हर ओर से बंद की हुई होगी।[11]

सूरतुल् फ़ील - 105

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

(1) क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों[12] के साथ क्या किया?
(2) क्या उसने उनके मक्र (दु-प्रयोजन) को अकारथ नहीं कर दिया।[13]
(3) और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिए।[14]
(4) जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ[15] मार रहे थे।
(5) तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।[16]

खाली समय, और खाने पीने की ज़ाइक़ादार चीज़ें दी है, प्यास बुझाने के लिए ठंडा पानी दिया है, धूप और गर्मी से बचने के लिए घरों का छाया और दूसरी नेमतें दी हैं उनके बारे में तुम से पूछा जाएगा।

[1] अल्लाह तआला ने **عصر** अर्थात जमाने की क़सम खाई है, क्योंकि रात व दिन के चक्कर और रौशनी और अंधेरे के अदल बदल कर आने जाने में बहुत सी इब्रत और नसीह़त की बातें छुपी हैं, इसी से जीवन में सीधापन है और इससे जिन्दों की बहुत सी मसलहतें जुड़ी हैं, और इस में अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) पर स्पष्ट और खुला प्रमाण मौजूद है। मुक़ातिल का कहना है कि अस्र से मुराद अस्र की नमाज़ है।

[2] **خسر** के मायने दिवालिया होजाने और असल धन के बर्बाद हो जाने के हैं।

[3] अर्थात एक दूसरे को ह़क़ की वसीयत की जिसकी अदाएगी ज़रूरी है, और वह है अल्लाह पर और उसकी वह़दानियत पर ईमान लाना, तौह़ीद और उसकी शरीअत अनुसार कर्म करना और जिन चीज़ों से रोका गया है उन से रुकना।

[4] अर्थात पाप से बचने पर सब्र, उसके आदेश और फ़राएज़ निभाने पर सब्र, और उन दुःखों और मुसीबतों पर सब्र जो उसकी तक़्दीर में लिखी जा चुकी हैं।

[5] **ويل** का अर्था रुसवाई (अपमान), या अज़ाब, यर बर्बादी है, **همزة** उस व्यक्ति को कहते जो लोगों के मुंह पर उनकी बुराई करता है, **لمزة** उस व्यक्ति को कहते है जो पीठ पीछे लोगों की बूराई करता है।

[6] इसमें ग़ीबत करने का कारण बताया गया है, अर्थात इकट्ठा किए गए धन के कारण वह स्वयं को सब से उत्तम समझने लगा है, और दूसरे उसे बौने दिखते हैं।

[7] अर्थात वह समझता है कि अपने धन के कारण हमेशा हमेश जीवित रहेगा कभी मरे गा ही नहीं; क्योंकि वह अपने इकट्ठा किए हुए धन के कारण सख्त क़िस्म की खुद पसंदी में पड़ गया है, और उसका ध्यान इस ओर जाता ही नहीं है कि वह मरने के बाद के बारे में भी कुछ सोच सके।

[8] अर्थात मामला ऐसा नहीं है जैसा वह समझ रहा है बल्कि वह और उसका धन ऐसी आग में फेंक दिए जाएंगे जो हर उस चीज़ को जो उसमें डाली जाएगी तोड़ फोड़ डालेगी।

[9] अर्थात उसकी गर्मी दिलों को पहुँच जाएगी, और पूरे दिल को ढक लेगी, क्योंकि दिल में ही नापाक इरादे, बूरे चरित्र और ह़सद पाया जाता है।

[10] अर्थात वे लम्बे खम्बों में बांध दिए गए होंगे, मुक़ातिल कहते हैं : उन पर दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे फिर उन्हें लोहे के खम्बों से बांध दिया जाएगा, फिर न कोई दरवाज़ा खुलेगा और न किसी तरह का आराम उन्हें मिल सकेगा।

[11] अर्थात उसके सारे दरवाज़े उन पर बन्द होंगे, वह उससे निकल नहीं सकेंगे।

[12] यह ह़ब्शा के कुछ नसरानी थे जो यमन पर हुकूमत कर रहे थे, फिर वे का'बा को गिराने के इरादे से निकले, और मक्का पहुँच गए, तो अल्लाह ने उन पक्षियों को भेजा जिनका चर्चा इस सूरत में है, उन पक्षियों ने उन्हें हलाक कर दिया, यह एक चिन्ह था, और यह नबी ﷺ की बेसत से ४० साल पहले की बात है, और जिन लोगों ने इस घटने को अपनी आँखों से देखा था उन में से बहुत से लोग आप की बेसत के समय भी जीवित थे।

[13] अर्थात क्या अल्लाह ने उनके मक्र और का'बा को गिराने की प्रयास को अकारत नहीं कर दिया, और उसे स्वयं उनकी बर्बादी का कारण नहीं बना दिया?

[14] अर्थात उन पर पक्षियों के झुन्ड भेज दिए, यह पक्षियां काले रंग की थीं, जो समुन्दर की ओर से दल के दल आई थीं, हर पक्षि के साथ तीन तीन कंकरियां थीं, दो उनके दोनों पैरों में और एक उनकी चोंच में, जिसे भी यह कंकरियां लगतीं उसे खाए हुए भूसे की तरह कर देतीं।

[15] लोगों का कहना है कि यह ऐसी कंकरियां थीं जो नरक की आग में पकाई गई थीं, और जिन लोगों को यह लगती थीं उस पर उनका नाम लिखा होता था, जो चने की तरह मसूर से कुछ बड़ी थीं।

[16] तो वह उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर देती थीं, जैसे पशू पत्तियां खाकर पाखाने के रास्ते से निकालता है, और एक क़ौल यह है कि वह खेत की उन पत्तियों की तरह होगए जिसे जानवरों ने खालिया हो और डन्ठल बाक़ी रह गया हो।

सूरतु कुरैश - 106

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) कुरैश को प्रेम दिलाने के लिए।
(2) (अर्थात) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से[1] मानूस करने के लिए।
(3) तो (उसके शुक्रिए में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।[2]
(4) जिसने उन्हें भूख में भोजन दिया[3] और डर (और भय) में अमन और शान्ति दिया।[4]

सूरतुल् माऊन - 107

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है?[5]
(2) यही वह है जो यतीम को धक्के देता है।[6]
(3) और निर्धन (भूखे) को खिलाने की तर्ग़ीब नहीं देता।[7]
(4) उन नमाजियों के लिए अफसोस (और वैल नामी जहन्नम की जगह) है।
(5) जो अपनी नमाज़ से ग़ाफिल हैं।[8]
(6) जो दिखावे का कार्य करते हैं।[9]
(7) और प्रयोग में आने वाली चीज़ें रोकते हैं।[10]

سُورَةُ قُرَيْشٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

لِإِيلَٰفِ قُرَيْشٍ ١ إِۦلَٰفِهِمْ رِحْلَةَ ٱلشِّتَآءِ وَٱلصَّيْفِ
٢ فَلْيَعْبُدُوا۟ رَبَّ هَٰذَا ٱلْبَيْتِ ٣ ٱلَّذِىٓ أَطْعَمَهُم
مِّن جُوعٍ وَءَامَنَهُم مِّنْ خَوْفٍۭ ٤

سُورَةُ الْمَاعُونِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ ١ فَذَٰلِكَ ٱلَّذِى
يَدُعُّ ٱلْيَتِيمَ ٢ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ٣
فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ٤ ٱلَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ
٥ ٱلَّذِينَ هُمْ يُرَآءُونَ ٦ وَيَمْنَعُونَ ٱلْمَاعُونَ ٧

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ٢
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ ٣

सूरतुल् कौसर - 108

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) यक़ीनन् हम ने तुझे कौसर[11] (और बहुत कुछ) दिया है।
(2) तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर।[12]
(3) अवश्य तेरा शत्रु[13] ही लावारिस और बेनाम व निशान है।

सूरतुल् काफिरून - 109

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

(1) आप कह दीजिये कि हे काफिरो![14]

---

[1] इस सूरत का नाम सूरए ईलाफ़ भी है।
साल में दो बार कुरैश का व्यापार के लिए यात्रा होता था, एक यमन की ओर जो सरदियों में होता था क्योंकि वह गरम मुल्क है, दूसरा शाम की ओर जो गरमियों में होता था; क्योंकि वह ठंडा मुल्क है, कुरैश की गुज़रान का माध्यम व्यापार था, यदि यह दोनों यात्रा न होते तो उन्हें कोई सम्मान प्राप्त न होता, और यदि वे अपने खान-ए-का'बा के पड़ोस में रहने के कारण सुरक्षित न होते तो यह दोनों यात्रा उन के लिए सम्भव न होता। मक़्सद यह है कि यह अल्लाह का उन पर एहसान है कि उसने उन्हें इन दोनों यात्राओं से मानूस किया, और उन्हें इनके लिए आसान कर दिया, तो इस कारण इन्हें मात्र अल्लाह की ही इबादत करनी चाहिए।

[2] तो अल्लाह तआला ने उन्हें इस बात से आगाह किया कि वही इस घर का रब है; क्योंकि उन्होंने बहुत सी मूर्तियां बना रखी थीं, जिनकी वे पूजा करते थे, तो अल्लाह ने उन से अपने आप को छांट कर अलग कर लिया।

[3] अर्थात उन्हें इन दोनों यात्राओं के माध्यम से भोजन दिया, और उन्हें उस भूक से छुटकारा दिया जिस में वे इस से पहले गिरिफ्तार थे।

[4] इस से पहले अरबों में हत्या और लूट-पाट साधारण सी बात थी, लोग एक दूसरे को बन्दी बना कर दास बना लिया करते थे, लेकिन कुरैश को हरम के कारण इस भय और डर से सुरक्षित रखा, और उसने उन्हें उन हबशियों के भय से भी सुरक्षित कर दिया जो अपने हाथी द्वारा खान-ए-का'बा को ढाने आए थे।

[5] अर्थात क्या हिसाब-व-किताब और बदले के दिन को झुठलाने वाले को तूने देखा।

[6] अर्थात यदि तू ध्यान से देखे तो यह वही व्यक्ति है जो अनाथ को धक्के देता है और उस के हक़ को पामाल करता है। जाहिलियत काल के अरब औरतों और बच्चों को वरासत में हिस्सा नहीं देते थे।

[7] अर्थात ऐसे व्यक्ति में धन की ऐसा लालच होती है कि वह फ़क़ीर को खाना तक नहीं खिला सकता, और न ही वह अपने बाल बच्चों और दूसरों को उस पर उभार सकता है।

[8] ساهون नमाज़ से गफ़लत और लापरवाही करने वाले, ऐसे लोग यदि नमाज़ पढ़ते भी हैं तो उन्हें अपनी नमाज़ों से पुण्य की उम्मीद नहीं होती और यदि छोड़ देते हैं तो उन्हें सज़ा का कोई डर नहीं होता, इस कारण उन्हें इस की कोई पर्वाह नहीं होती यहाँ तक कि उसका समय जाता रहता है।

[9] अर्थात यदि वे नमाज़ पढ़ते भी हैं तो मात्र दिखावे के लिए पढ़ते हैं, इस तरह जो भी नेकी के काम वे करते हैं, मात्र दिखावे के लिए करते हैं, ताकि लोग उनकी प्रशंसा करें।

[10] ماعون ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसे लोग एक दूसरे से मांग लिया करते हैं, जैसे डोल, और हांडी वगैरा, या ऐसी चीज़ जिसे देने से कोई नहीं रोकता, जैसे पानी, नमक और आग वगैरा, और एक क़ौल यह है कि माऊन से मुराद ज़कात है, अर्थात जो क़ियामत के दिन के बदले पर ईमान नहीं रखते वे ऐसे कन्जूस होते हैं कि ज़कात नहीं दे सकते, बल्कि ऐसे लोग ऐसी चीजें भी आरियत में नहीं देना चाहते जिसे साधारण लोग देने से नहीं हिचकिचाते।

[11] कौसर जन्नत की एक नहर का नाम है जिसे अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ और आप की उम्मत के सम्मान का कारण बनाया है।

[12] इस से मुराद पाँचों समय फ़र्ज़ नमाज़ों की अदायगी है, लोग ग़ैरुल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ते और क़ुर्बानियां करते थे, अल्लाह तआला ने अपने नबी को आदेश दिया कि आप अपनी नमाज़ और क़ुर्बानी अल्लाह के लिए शुद्ध कीजिए, क़तादा, अता और इक्रमा कहते हैं कि मुराद ईद की नमाज़, और बक़्रईद की क़ुर्बानी है।

[13] अवश्य तेरा शत्रु ही ऐसा है कि उसके मरने के बाद उसका कोई नामलेवा नहीं रहेगा। ابتر ऐसे व्यक्ति को कहते जिसकी कोई नरीना संतान न हो, जब रसूलुल्लाह ﷺ के बेटे की वफ़ात हुई तो कुछ मुश्रिक कहने लगे कि इनकी जड़ कट गई और यह बे-नसल होगए, तो उसके जवाब में अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी।

[14] इस सूरत का शाने नुज़ूल यह है कि काफ़िरों ने अल्लाह के रसूल के सामने यह मांग रखी कि आप एक साल उनके उपास्यों की पूजा करें, और एक साल वे आप के माबूद की इबादत करेंगें, तो उस समय अल्लाह तआला ने आप को उन से यह कहने का आदेश दिया।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ
ترتيبها ١٠٩ — آياتها ٦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾
وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ﴿٤﴾
وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾

سُورَةُ النَّصْرِ
ترتيبها ١١٠ — آياتها ٣

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ
يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾

سُورَةُ الْمَسَدِ
ترتيبها ١١١ — آياتها ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿١﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا
كَسَبَ ﴿٢﴾ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾ وَامْرَأَتُهُ
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴿٥﴾

2 न तो मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।[1]
3 और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।[2]
4 और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।[3]
5 न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।[4]
6 तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है और मेरे लिये मेरा धर्म है।[5]

सूरतुन्नस्र – 110 [6]

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

1 जब अल्लाह की मदद और विजय प्राप्त हो जाए।[7]
2 और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुण्ड के
झुण्ड आता देख ले।[8]
3 तो अपने रब की पाकी करने लग प्रशंसा के साथ [9],
और उससे माफ़ी की दुआ कर [10], बे-शक वह बड़ा ही तौबा
स्वीकार करने वाला है।[11]

सूरतुल्लहब – 111

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रह़म करने वाला है।

1 अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह (स्वयं) नाश हो गया।[12]
2 न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई।[13]
3 वह जल्द ही भड़कने वाली आग में जाएगा।[14]
4 और उसकी पत्नी भी (जाएगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।[15]
5 उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुयी रस्सी होगी।[16]

---

[1] अर्थात जिन बुतों की इबादत का तुम प्रस्ताव रख रहे हो मैं उनकी इबादत नहीं कर सकता।

[2] और न तुम जब तक अपने शिर्क और कुफ़्र पर क़ायम रहोगे उस अल्लाह की इबादत करने वाले होगे जिस की इबादत मैं करता हूँ।

[3] अर्थात मैं भविष्य में भी तुम्हारे उन उपास्यों की पूजा नहीं कर सकता जिन की तुम पूजा करते हो।

[4] अर्थात तुम अपनी भविष्य काल में जब तक अपने कुफ़्र और शिर्क पर क़ायम रहोगे अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते, क्योंकि यदि तुम इबादत करो भी तो वह स्वीकार नहीं होगी। और एक क़ौल यह है कि इन आयतों में तकरार है जिसका उद्देश्य काफ़िरों के दिलों से इस भ्रम को निकाल बाहर करना है कि आप उन की मांग मान लेंगें।

[5] अर्थात यदि तुम अपने धर्म से प्रसन्न हो जो कि शिर्क, और महान पाप है, और उसे नहीं छोड़ सकते, तो मैं भी अपने धर्म से प्रसन्न हूँ, जो कि ख़ालिस सत्य ईश्वर "अल्लाह" की इबादत है, और भला मैं इसे कैसे छोड़ दूँ। हमारे लिए हमारा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा।

[6] इस सूरत को सूरते-तौदीʼअ् भी कहते हैं, अहमद और इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि जब यह सूरत नाज़िल हुई तो अल्लाह के रसूल ने फ़र्माया इस में मुझे मेरी मौत की ख़बर दी गई है।

---

[7] अर्थात ऐ मुह़म्मद! जब आप के पास क़ुरैश के विरुद्ध जिन्होंने आप से दुश्मनी कर रखी है अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का विजय होजाए।
نصر से मुराद अल्लाह की मदद है जिससे आपके शत्रु पराजित हो जाएं और आप उन पर ग़ालिब हो जाएं। और **فتح** से मुराद है उनके ठिकानों को पराजित कर देना तथा उनके घरों में घुस जाना, और उनके दिलों को ह़क़ स्वीकार करने के लिए खोल देना।

[8] अर्थात लोगों को अल्लाह के धर्म में झुण्ड के झुण्ड आता देख ले, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल ने मक्का फ़तह़ किया तो अरब-वासी कहने लगे कि जब मुह़म्मद को ह़रम वालों पर सफ़लता मिल गई जिन्हें अल्लाह तआला ने हाथी वालों से पनाह दी थी, तो इसका अर्थ यह है कि वह सत्य पर हैं और तुम उन्हें पराजित नहीं कर पाओगे, इसलिए लोग इस्लाम में झुण्ड के झुण्ड आने लगे, जबकि इस से पहले लोग इस्लाम में इक्का दुक्का आ रहे थे। चुनांचे पूरे का पूरा क़बीला इस्लाम में दाखिल होने लगा।

[9] इसमें अल्लाह की तस्बीह़ और ह़म्द दोनों का एक साथ चर्चा है, तस्बीह़ में इस बात पर तअज्जुब किया गया है कि अल्लाह ने आप को ऐसी चीज़ों की तौफ़ीक़ दी है और उन्हें आप के लिए सरल कर दिया है, जिनके बारे में आप को या दूसरों को गुमान तक न था, और ह़म्द इस महान एहसान पर है कि अल्लाह ने आप की मदद की, मक्का फ़तह़ कराया, और लोगों को झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में दाख़िल कराया।

[10] अर्थात आप अल्लाह के सामने झुकते हुए अपने गुनाहों की माफ़ी मांगिए।

[11] क्योंकि वह बड़ा ही तौबा स्वीकार करने वाला है, क्योंकि उसकी शान यही है कि जो भी उससे माफ़ी चाहे उसकी माफ़ी स्वीकार करे। इमाम बुख़ारी वगैरः ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़र्माया : कि इस सूरत में अल्लाह तआला ने अल्लाह के रसूल को आप की मौत की ख़बर दी है, और कहा है कि जब अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का फ़तह़ होजाए, तो यह इस बात की निशानी है कि आप की मौत का समय क़रीब आचुका है, इसलिए आप अपने रब की तस्बीह़ में रहिए और उससे बख़्शिश तलब करने में लग जाइए, अवश्य वह बड़ा ही तौबा स्वीकार करने वाला है।

[12] **يدا، يد** की तस्निया (द्वीवचन) है, मुराद इससे उसकी जान है, अर्थात जो शाप उसने नबी को दी थी "तुम्हारी हलाकत हो, क्या तुमने हमें इसी लिए इकट्ठा किया था" कह कर, उलट कर स्वयं उसी पर आएगी और वही नष्ट होगा। अबू लहब नबी का चचा था, और उसका नाम अब्दुल्उज़्ज़ा था।

[13] अर्थात जो बर्बादी उसे आई उसे न तो उसका इकट्ठा किया हुवा माल उससे दूर कर सका, न उसकी सरदारी और न ही उसका सम्मान।

[14] जल्द ही वह भड़कती हुई आग में जाएगा जो उसकी चमड़ी जला देगी, जो कि जहन्नम की आग है।

[15] और उसके साथ उसकी पत्नी भी उस भड़कती हुई आग में जाएगी, और वह अबू सुफ़यान की बहन उम्मे जमील बिन्ते हर्ब है जो कि कांटे-दार झाड़ ढो ढो कर लाती और रात में आपके रास्ते में डाल दिया करती थी।

[16] **مسد** उस पत्ती को कहते हैं जिस से रस्सी बटी जाती है, उसके पास एक क़ीमती हार था, उसने कहा कि लात और उज़्ज़ा की क़सम मैं इसे मुह़म्मद की दुश्मनी पर खर्च कर दूंगी तो क़ियामत के दिन उसकी सज़ा यही होगी कि उस हार की जगह उसकी गर्दन में यह रस्सी होगी।

सूरतुल् इख़्लास – 112

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

1 (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।[1]
2 अल्लाह (तआला) बे-नियाज़ है [2] (किसी के अधीन नहीं सभी उसके अधीन हैं)।
3 न उससे कोई पैदा हुवा और न वह किसी से पैदा हुवा।[3]
4 और न कोई उसका हमसर (समकक्ष) है।[4]

सूरतुल् फ़लक़ – 113

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

1 आप कह दीजिये कि मैं सवेरे के रब की शरण में आता हूँ।[5]
2 प्रत्येक उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है।[6]
3 और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधकार फैल जाए।[7]
4 और गाँठ (लगा कर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)[8]
5 और ह़सद करने वाले की बुराई से भी जब वह ह़सद करे।[9]

सूरतुन्नास – 114

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रह़म करने वाला है।

1 आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की शरण में आता हूँ।[10]
2 लोगों के मालिक की।[11] (और)।

---

[1] उबै बिन कअब ﷛ से रिवायत है कि मुश्रिकों ने नबी ﷺ से कहा : ऐ मुहम्मद! तुम अपने रब का नसब बयान करो, तो यह सूरत नाज़िल हुई। इस शाने नुज़ूल की रौशनी में इसका अर्थ यह हुवा कि यदि तुम उसके नसब की स्पष्टता चाहते हो तो जान लो कि वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं।

[2] **صمد** ऐसी हस्ती को कहते हैं जिसकी ओर हाजत लेकर जाया जाए, क्योंकि वह उसे पूरी करने की शक्ति रखता है। इब्ने अब्बास कहते हैं कि: समद वह सरदार है जो अपनी सरदारी में पूरा हो, और वह शरीफ़ है जो अपनी बड़ाई में पूरा हो, और वह बुर्दबार है जो अपनी बुर्दबारी में पूरा हो, और वह बे-नियाज़ है जो अपनी बे-नियाज़ी में पूरा हो, और वह ज्ञानी है जो अपने ज्ञान में पूरा हो, और वह हकीम है जो अपनी हिक्मत में पूरा हो, और ऐसी हस्ती मात्र अल्लाह की हस्ती है, और समदियत ऐसा गुण है जो अल्लाह के सिवाय किसी और को शोभा नहीं देता।

[3] अर्थात उसकी कोई संतान नहीं है और न वह स्वंय किसी का संतान है, इसलिए कि कोई उसका हम-जिंस नहीं, और इसलिए भी कि उसकी ओर पहले और बाद दोनों की निस्बत मुहाल है, क्योंकि यदि वह पैदा हुवा तो इसका अर्थ है कि वह पैदा होने से पहले नहीं था, क़तादः कहते हैं कि अरब के मुश्रिक कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं, और यहूदी कहते थे कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं, और ईसाई कहते थे कि ईसा अल्लाह के बेटे हैं, तो अल्लाह तआला ने इसे नकारा, और कहा : **لم يلد ولم يولد** "उसने न किसी को जना है और न वह जना गया है"।

[4] अर्थात उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता, और उसके गुणों में कोई उसका साझी नहीं है।

[5] **فلق** का अर्थ सवेरा है इसलिए कि वह रात को फाड़ कर निकलता है, और एक क़ौल के अनुसार इससे मुराद वह सारी सृष्टि हैं जो किसी चीज़ को फाड़ कर निकलती हैं। और एक क़ौल यह भी है कि इस से इशारा इस बात की ओर है कि जो हस्ती इस पूरी दुनिया से रात के अंधकार को खतम करने की शक्ति रखती है वह इसी तरह इस बात की भी शक्ति रखती है कि पनाह में आने वाले व्यक्ति से वे सारी चीज़ें दूर कर दे जिस का उसे डर है।

[6] अर्थात मैं अल्लाह के शरण में आता हूँ उसकी सृष्टि में से प्रत्येक उस चीज़ की बुराई से जिसे उसने पैदा किया है, यह आम है इसमें शैतान उसकी संतान, जहन्नम इत्यादि प्रत्येक वह वस्तु सम्मिलित है जिससे इन्सान को हानि हो सकती है।

[7] अर्थात मैं रात के अंधकार से जब वह आकर हर चीज़ को ढाक लेता है अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। इसलिए कि रात ही में दरिन्दे अपने झाड़ों से जानवर अपने बिलों से और मुज्रिम लोग अपने नापाक मंशा को लेकर निकलते हैं, इन शब्दों द्वारा इन सारी चीज़ों से पनाह मांगी गई है।

[8] अर्थात मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ जादूगर्नियों की बुराई से, उन्हें **نفاثات** इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह जादू करते समय धागे के गाँठ पर फूंकती थीं। (इससे जादू का काला कर्तूत करने वाले मर्द और औरत दोनों मुराद हैं।)

[9] अल्लाह तआला ने जिस पर इन्आम किया है उससे नेमत के छिन जाने की तमन्ना करना ह़सद कहलाता है, और यह एक महान पाप है जो नेकियों को खाजाता है।

[10] लोगों का रब वही है जिसने उन्हें पैदा किया, और जो उनके समस्याओं को सुलझाता है।

[11] लोगों के ह़क़ीक़ी बादशाह के शरण में जिसकी पूरे संसार पर राज है।

سُورَةُ الإِخۡلَاصِ — آياتها ٤ — ترتيبها ١١٢

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ٢ لَمۡ يَلِدۡ
وَلَمۡ يُولَدۡ ٣ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ ٤

سُورَةُ الفَلَقِ — آياتها ٥ — ترتيبها ١١٣

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ٢ وَمِن
شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي
ٱلۡعُقَدِ ٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ٥

سُورَةُ النَّاسِ — آياتها ٦ — ترتيبها ١١٤

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ٢ إِلَٰهِ
ٱلنَّاسِ ٣ مِن شَرِّ ٱلۡوَسۡوَاسِ ٱلۡخَنَّاسِ ٤ ٱلَّذِي
يُوَسۡوِسُ فِي صُدُورِ ٱلنَّاسِ ٥
مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ٦

3 लोगों के मा'बूद की (शरण में)[12]
4 शंका डालने वाले[13] पीछे हट जाने वाले[14] की बुराई से।
5 जो लोगों के सीने में[15] शंका डालता है।[16]
6 (चाहे) वह जिन्न में से हो या इन्सान में से।[17]

---

[12] क्योंकि बादशाह कभी पूजनीय होता है कभी नहीं होता, **إله الناس** कह कर यह स्पष्ट कर दिया गया कि **إلٰه** "माबूद" शब्द उसी ह़क़ीक़ी बादशाह के साथ खास है जिस की पूरे संसार पर राज है, जिसमें उसका कोई भी साझी नहीं।

[13] **وسوسة** छुपी आवाज़ को कहते हैं, **وسواس** से मुराद शैतान है, क्योंकि वह बहुत ही छुपे तरीक़े से इन्सान के दिल में बुरी बातें डाल देता है।

[14] **خناس** का अर्थ खिसक जाने वाला है, यह शैतान का गुण है, जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो खिसक जाता है, और जब अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल होजाया जाए तो फैल कर दिल पर छा जाता है, और वसवसा डालता है।

[15] शैतान का वसवसा उसका ऐसी धीमी आवाज़ में अपने अनुकरण की ओर बुलाना है जो दिल तक पहुंच जाए, पर कान से सुनी न जासके।

[16] आगे अल्लाह तआला ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि वसवसे डालने वाले शैतान दो प्रकार के हैं, एक जिन्न में से और दूसरा इन्सान में से।

[17] जिन्नी शैतान लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है, जैसा कि ऊपर इसका चर्चा किया गया, और इन्सानी शैतान भी लोगों के दिलों में वस्वसा डालतें हैं पर वे उन्हें ख़ैरख़ाह दिखाई देते हैं। जबकि वह जिन्नी शैतानों की सुझाई हुई बातों को बड़े ही अच्छे अन्दाज़ में उनके दिलों में डालते हैं, और एक क़ौल यह है कि इब्लीस इन्सानों के दिलों में वस्वसे डालता है, इब्ने अब्बास से रिवायत है कि जो बच्चा भी पैदा होता है उस पर शैतान मुसल्लत कर दिया जाता है, जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है तो वह खिसक कर पीछे होजाता है, और जब वह ज़िक्र से गाफ़िल होजाता है तो आकर दिल में अनेक प्रकार के वसवसे डालता है। उसकी चालों से और वसवसों से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न

1- मुसलमान अपने अक़ीदे के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त करे? वह अपने अक़ीदे के बारे में जानकारी अल्लाह तआला की किताब और उसके उस नबी ﷺ की सहीह़ ह़दीस से प्राप्त करे जो अपनी ओर से कोई बात नहीं कहता ﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴾ "वह तो मात्र वह्य है जो उतारी जाती है"। और यह जानकारी सह़ाबए किराम رضي الله عنهم और सलफ़ सालिह़ीन की समझ के अनुसार होनी चाहिए।

2- यदि हमारे बीच इख़्तिलाफ़ होजाए तो उसका ह़ल कहाँ है? उसके ह़ल के लिए हम शरीअत की ओर लौटें, इस बारे में हुक्म (फैसला) अल्लाह की किताब और उस के रसूल ﷺ की सुन्नतों में है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ فَإِن تَنَٰزَعْتُمْ فِى شَىْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ ﴾ "फिर यदि किसी बात में इख़्तिलाफ़ करो तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ"। और नबी ने फ़रमायाः "मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ जब तक तुम इन्हें मज़्बूती से थामे रहोगे गुम्राह नहीं होगे : एक अल्लाह की किताब है और दूसरी चीज़ है उसके रसूल की सुन्नत"। (हाकिम)

3- क़ियामत के दिन नजात पाने वाली जमाअत कौन सी है? नबी ﷺ ने फ़रमाया : " मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों में बट जाएगी, सारे फ़िर्क़े जहन्नम में जाएंगे सिवाए एक के, सह़ाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी जमाअत होगी? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः यह वह जमाअत होगी जो मेरे और मेरे सह़ाबए किराम के तरीक़े पर होगी। " (अहमद और तिर्मिज़ी) अतः ह़क़ उस चीज़ में है, जिस पर आप और आप के सह़ाबए किराम थे, इसलिए यदि तुम नजात और आमाल की क़ुबूलियत चाहते हो तो उनकी पैरवी करो और बिद्अतों से बचो।

4- नेक कर्म के स्वीकार होने की क्या शर्तें हैं? इसकी तीन शर्तें हैं : ❶ अल्लाह और उसकी तौह़ीद पर ईमान लाना; अतः मुश्रिक का कर्म स्वीकार नहीं होता। ❷ इख़्लास, अर्थात् कर्म द्वारा मात्र अल्लाह की मर्ज़ी चाही जाए। ❸ नबी ﷺ की मुताबअत, वह इस तरह की आप की सुन्नत के अनुसार कर्म किया जाए। अतः आप के बताए हुए तरीक़े मुताबिक़ ही अल्लाह की इबादत की जाए। और यदि इनमें से कोई भी एक शर्त नहीं पाई गई तो उसका कर्म रद्द कर दिया जाएगा, अल्लाह तआला का फ़रमान है :﴿ وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُوا۟ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا ﴾ "और उन्होंने जो जो कर्म किए थे हमने उनकी ओर बढ़कर उन्हें कणों (ज़र्रों) की तरह तहस-नहस कर दिया"।

5- इस्लाम धर्म के कितने मर्तबे हैं? तीन हैं : इस्लाम, ईमान और एह़सान।

6- इस्लाम का अर्थ क्या है, और इसके कितने अर्कान हैं? तौह़ीद को स्वीकारते हुए अपने आप को अल्लाह के सपुर्द कर देने, उस की इताअत (आज्ञा पालन) करने, और शिर्क और मुश्रिकों से बराअत (संपर्क न रखने) का नाम इस्लाम है। इसके पाँच अर्कान हैं, जिन्हें नबी ﷺ ने अपनी ह़दीस में ज़िक्र किए हैं : " इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर क़ायम है; इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और यह कि मुह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) का ह़ज्ज करना, और रमज़ान का रोज़ा रखना "। (बुख़ारी और मुस्लिम)

7- ईमान का अर्थ क्या है और इसके कितने अर्कान हैं? दिल से एतिक़ाद, ज़ुबान से इक़्रार और अंगों से अमल करने का नाम ईमान है जो नेकी करने से बढ़ता है, और पाप करने से घटता है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ لِيَزْدَادُوٓا۟ إِيمَٰنًا مَّعَ إِيمَٰنِهِمْ ﴾ "ताकि वे अपने ईमान के साथ और भी ईमान में बढ़ जाएं"। और नबी ﷺ ने फ़रमाया : " ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, इनमें सब से बुलन्द 'ला-इलाहा इल्लल्लाह' कहना है, और सब से कमतर रास्ते से कष्ट-दायक चीज़ को हटा देना है, और शर्म व ह़या ईमान का एक ह़िस्सा है। "

(मुस्लिम) इस बात की ताकीद इस से भी होती है कि नेकियों के मौसम में एक मुसलमान अपने मन में नेकी के कामों में चुस्ती महसूस करता है जब्कि पाप करने के कारण बुझा बुझा सा रहता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ ٱلْحَسَنَٰتِ يُذْهِبْنَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ﴾ "अवश्य नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं"। और ईमान के 6 अर्कान हैं जैसा कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि : " तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, और अच्छी और बुरी क़िस्मत पर ईमान ले आओ "। (बुख़ारी और मुस्लिम)

8- ला-इलाहा इल्लल्लाह का क्या अर्थ है? गैरुल्लाह के इबादत का ह़क़दार होने का इन्कार करना और मात्र अल्लाह तआला के लिए इबादत को साबित करना।

9- क्या अल्लाह हमारे साथ है? हाँ, अल्लाह तआला अपने इल्म द्वारा हमारे साथ है, वह हमारी बातों को सुनता है, हमें देखता है, हमारी रक्षा करता है, हमें घेरे हुए है, वह हम पर क़ादिर है, हमारे अन्दर उसकी मशीयत (चाहत) चलती है। लेकिन उसकी ज़ात मख़लूक़ो (सृष्टि) के अन्दर मिली हुई नहीं है, और न ही कोई मखलूक़ उसे घेरे में ले सकती है।

10 क्या अल्लाह तआला को आँखों द्वारा देखा जा सकता है? मुसलमानों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि संसार में अल्लाह तआला को नहीं देखा जा सकता है, पर मोमिन बन्दे परलोक में मैदाने मह़शर में और जन्नत में अल्लाह तआला को देखेंगे, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾ "उस दिन बहुत से चेहरे रौनक़ वाले होंगे, जो अपने रब की ओर देखते होंगे"।

11 अल्लाह तआला के नाम और गुण जानने से क्या लाभ होगा? अल्लाह तआला ने बन्दे पर सब से पहले अपने बारे में जानकारी प्राप्त करने को फ़र्ज़ किया है, तो जब लोग अपने रब के बारे में जान लेंगे तो कमा हक़्क़ुहू (यथायथ) उसकी इबादत करेंगे, उसका फ़रमान है : ﴿فَٱعْلَمْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسْتَغْفِرْ لِذَنۢبِكَ﴾ "आप जान लें कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और अपने पापों की बख़्शिश मांगा करें"। चुनाँचे अल्लाह का उसकी विस्तार रह़्मतों के साथ ज़िक्र करना उससे उम्मीद रखने का कारण है, और उसकी कठोर सज़ाओं का चर्चा उससे ख़ौफ़ को वाजिब करता है, और अकेले उसके मुनइम (एहसान करने वाला) होने का चर्चा उसके शुक्र को लाज़िम करता है।

और अल्लाह तआला के नामों और उसके गुणों द्वारा उसकी इबादत करने का अर्थ यह है कि : सेवक को इन चीज़ों की जानकारी हो, उनके अर्थ की समझ हो, और उनके अनुसार उसका अमल हो, अल्लाह तआला के कुछ नाम और गुण ऐसे हैं कि जिन्हें अपनाना बन्दे के लिए प्रशंसा का पात्र है, जैसे : इल्म, दया और इंसाफ़, और कुछ ऐसे हैं जिन को अपनाने से बन्दे की मज़म्मत होती है, जैसे : उलूहियत (इबादत की योग्यता) तजब्बुर (ग़ल्बे वाला होना) तकब्बुर (बड़ाई वाला होना), और बन्दों के कुछ गुण ऐसे हैं जिन पर उनकी प्रशंसा होती है, और जिनका उन्हें आदेश दिया जाता है, जैसे : बन्दगी, फ़क़ीरी, मुह़ताजी, आजिज़ी, सवाल इत्यादि। लेकिन यह गुण अल्लाह तआला के नहीं हो सकते, और अल्लाह तआला के पास सबसे अधिक मह़बूब (पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता है, और मब्गूज़ (ना-पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला ना-पसन्द करता है।

12 अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का अर्थ क्या है? : अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا﴾ "और अच्छे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, सो इन नामों से

उसी को पुकारा करो”। और नबी ﷺ से साबित है कि आप ने फ़र्माया : “**अल्लाह तआ़ला के ९९ नाम हैं, १०० में १ कम, जिसने उन्का इह़सा किया वह जन्नत में दाख़िल होगया**”। बुख़ारी और मुस्लिम। इह़सा का अर्थ है : ① उस के शब्द तथा संख्या की गिन्ती करना। ② उस के अर्थ को समझना और उस पर ईमान लाना। चुनान्चि जब बन्दा (अल्-ह़कीम) कहता तो अपनी सारी चीज़ें अल्लाह के ह़वाले कर देता है; क्योंकि सारी चीज़ें उसी की हिक्मत के आधार पर होती हैं। और जब (अल्-क़ुद्दूस्) कहता है तो उस के ध्यान में यह चीज़ आती है कि वह हर प्रकार की कमी से पवित्र है। ③ इन नामों द्वारा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करना। दुआएं दो प्रकार की होती हैं। ❶ जिसमें प्रशंसा और इबादत हो, ❷ जिसमें तलब और मांग हो। और क़ुर्आन व सुन्नत का ततब्बु’अ् (अनुसन्धान) करने वाला इन नामों को इन प्रकार पाएगा :

नाम	अर्थ
अल्लाह :	उपास्य, जो सारी सृष्टि की इबादत का ह़क़दार है, चूनान्चि वही वह सत्य उपास्य और मा’बूद है जिस के लिए झुका जाता, रूकूअ् और सज्दा किया जाता, और हर तरह की इबादत उसी के लिए ख़ास की जाती हैं।
अर्रह़्मान :	अल्लाह तआ़ला के इस नाम मे यह अर्थ पाया जाता है ि कवह सारी सृष्टि पर दयावान है, और यह नाम मात्र अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास है, दूसरे के लिए इस का प्रयोग सह़ीह़ नहीं है।
अर्रह़ीम :	लोक तथा प्रलोक में मोमिनों पर मेहर्बान है, उस ने संसार में उन्हें अपनी इबादत की राह दिखाई और आख़िरत में जन्नत अ़ता करके उनका सम्मान करेगा।
अल्-ग़फ़ूर :	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डाल देता है, और उन्हें रुसवा नहीं करता, न उन के पाप पर उन्हें सज़ा देता है।
अल्-ग़फ़्फ़ार :	क्षमा चाहने वाले बन्दे के ग़ुनाहों को बह़ुत अधिक माफ़ करने वाला।
अर्रऊफ़ :	यह रा’फ़त से है जिसका अर्थ होता है हद दर्जा मेहर्बान, यह दया संसार में सारी सृष्टि के लिए आम है, और आख़िरत में मो’मिन औलिया के लिए ख़ास है।
अल्-ह़लीम :	शक्ति के बावजूद जो सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, बल्कि यदि वह माफ़ी चाहें तो उन्हें माफ़ कर देता है।
अत्तौवाब :	जो अपने बन्दों में से जिसे चाहे तौबा की तौफ़ीक़ देता है, और उन्के तौबा को क़बूल करता है।
अस्सित्तीर :	जो अपने बन्दे के ग़ुनाहों पर पर्दा डालता है, और उन्हें सरे आम रुस्वा नहीं करता, और वह यह पसन्द भी करता है कि बन्दा स्वयं अपने और दूसरे के ऐब को पर्दे में रख्खे, और अपनी गुप्ताङ की रक्षा करे।
अल्-ग़नी :	जो अपने परिपुर्ण विशेष्ताओं के कारण किसी का मुह़ताज नहीं है, जब्कि सारी मख़्लूक़ उस की मुह़ताज है, और उसके उपहार अैर दया के जरूरतमन्द हैं।
अल्-करीम :	बह़ुत अधिक भलाई वाला और अ़ता करने वाला, जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, जो चाहता है, जैसे चाहता है सवाल या बिना सवाल किए देता है, इसी तरह ग़ुनाहों को माफ़ करता है, और लोगों के ऐब पर पर्दा डालता है।
अल्-अक्रम :	जो बेइन्तिहा करम वाला है, जिसमें उस की कोई बराबरी करने वाला नहीं, चुनान्चि सारी भलाई उसी की ओर से है, और वही मोमिनों को अपने फ़ज़्ल से बदला देता है, और मुंह मोड़ने वाले का ह़िसाब अपनी अद्ल की बुन्याद पर करता है।
अल्-वह्हाब :	बह़ुत अधिक देना वाला, जो बिना किसी बदले और मक़सद के देता है, और बिना सवाल किए इन्आ़म करता है।
अल्-जौवाद :	जो अपनी सम्पुर्ण सृष्टि को बहुत अधिक देने वाला और उन पर फ़ज़्ल करने वाला है, और उस के जूद-व-करम का एक बड़ा ह़िस्सा मोमिनों के नसीब में है।

अस्सुब्बूहू,:	अपने वलियों से मुहब्बत करता है, उन्हे माफ़ करता है, अपनी नेमतों को उन पर निछावर करते हुए उन से ख़ुश होता है, उनके कर्मों को स्वीकार करता है, और दुनिया वालों के दिलों में उन्की मुहब्बत डाल देता है।
अल्-मुʼअ़ती :	अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपने ख़ज़ाने से अ़ता करता है, और उस में से उस के वलियों का एक बड़ा हिस्सा है, और वही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया और उन की सूरत बनाई।
अल्-वासिʼअ् :	महान सिफ़तों वाला है, कमा हक्क़ूहू कोई उस की ताʼरीफ़ नहीं कर सकता, वह बड़ाई वाला, महान सलतनत वाला है, बहुत अधिक माफ़ करने वाला दयावान है, और बहुत ही अधिक फ़ज़्ल और इह़सान करने वाला है।
अल्-मुह्सिन् :	जो अपने नाम, सिफ़ात, कर्म और व्यक्तित्व में सब से सुन्दर है, और जिसने हर चीज़ सुन्दर बनाई, और उन पर इह़सान किया।
अर्राज़िक़् :	जो सारी मख़्लूक़ को रोज़ी देता है, जिसने उन्हें पैदा करने के पहले ही उनकी रोज़ी मुक़द्दर दी, जो उन्हें हर ह़ाल में मिल कर रहेगी।
अर्रज़्ज़ाक़् :	जो बहुत अधिक मात्रा में सृष्टि को जिविका प्रदान करता है, चुनान्चि प्रश्न करने से पहले वह उन्हें रोज़ी देता है, बल्कि नाफ़र्मानी के बावजूद वह उन्हें रोज़ी देता है।
अल्लतीफ़् :	जिसे हर छोटी बड़ी चीज़ की जानकारी है, चुनान्चि कोई भी चीज़ उस से छूपी हुई नहीं है, वह ख़ैर-व-भलाई को बन्दे तक ऐसे छिपे रास्ते से पहुंचाता है कि उन्हें उसका ग़ुमान तक नहीं होता।
अल्-ख़बीर :	वह छुपी हूई और बातिनी चीज़ों को भी जानता है जैसा कि उसे ज़ाहिरी चीज़ों की जानकारी है।
अल्-फ़त्ताह् :	जो अपनी ह़िक्मत और ज्ञान स्वरूप जितना चाहता है अपनी सल्तनत, रहमत और रोज़ी के ख़ज़ाने को खोलता है।
अल्-अ़लीम :	जिसे ज़ाहिरी और बातिनी, ढकी और छुपी, और गुजरी हुई, मौजूदा और भविष्य की जानकारी है, चूनान्चि उस से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं है।
अल्-बर्र :	जो अपनी मख़्लूक़ पर बहुत अधिक इह़सान करने वाला है, इस क़दर अ़ता करता है कि कोई उन्हें शुमार नहीं कर सकता, वह अपने वादे में सच्चा है, बन्दों के गनाहों से दरगुज़र करता, उनकी मदद करता और उनकी सहायता करता है, थोड़ी चीज़ों को भी स्वीकार करके उनमें बर्कत देता है।
अल्-ह़कीम :	जो सारी चीज़ों को उचित स्थान देता है, और उसके निज़ाम में किसी प्रकार की कमी कोताही नहीं होती।
अल्-ह़कम :	जो न्याय के साथ मख़्लूक़ के बीच फ़ैसला करता है, और किसी पर अन्याय नहीं करता, और उसी ने अपनी ग़ालिब किताब क़ुर्आन नाज़िल फ़र्माई ताकि लोगों के बीच फ़ैसला करने वाला हो।
अश्शाकिर :	जो अपने इत़ाअत-गुज़ारों की प्रशंसा करता है, और कर्म चाहे थोड़ा ही क्यों न हो उस पर उन्हें बदला देता है, जो उस की नेमतों पर शुक्र बजा लाते हैं उन्हें दुनिया में अधिक देता है और आख़िरत में बदला उत्तम बदला देता है।
अश्शकूर :	जिस के पास बन्दे का थोड़ा कर्म भी बढ़ जाता है और उस पर उन्हें कई गुन्ना बढ़ाकर बदला देता है, चूनान्चि अल्लाह का बन्दे के लिए शुक्र अदा करने का मतलब है बन्दे की शुक्रगुजारी पर सवाब देना और उनकी इत़ाअ़त क़बूल करना।
अल्-जमील :	जिसकी व्यक्तित्व, नाम, सिफ़ात और कर्म खूबसूरत तर हैं, और सृष्टि की सारी सुन्दरता उसी द्वारा है।
अल्-मजीद् :	जिस के लिए आकाश तथा धर्ती में फ़ख़्र, करम, प्रतिष्ठता और बुलन्दी है।
अल्-वली :	जो अपनी सलत़नत् का निज़ाम चलाने वाला कारसाज़ है, और अपने वलियों का मददगार और सहायक है।
अल्-ह़मीद् :	जिसके नाम, विशेष्ता और कर्म पर उसकी तारीफ़ होती है, और उसी की व्यक्तित्व है जो ख़ुशी ग़मी, सख़्ती और नर्मी के हर अवसर में प्रशंसा योग्य है, क्योंकि वह अपनी विशेष्ताओं में परिपुर्ण है।

अल्-मौला :	वही रब है, मलिक है, सैयिद है और अपने वलियों का सहायक और मददगार है।
अन्नसीर :	वह अपनी मदद से जिसकी चाहे सहायता करता है, चूनान्चि जिस की उसने सहायता की कोई उस पर ग़ालिब नहीं होसकता, और जिसे उसने रुस्वा कर दिया कोई उसका सहायक नहीं होसकता।
अस्समीअ् :	जो कि हर भेद और कानाफूसी को, ज़ाहिर और खुले को, बल्कि सारी धीमी और तेज़ आवाज़ को सुनता है, और वही है जो दुआ करने वाले की सुनता है।
अल्-बसीर :	वही है जिसकी निगाह ने लोक और प्रलोक की सारी चीज़ों को वह चाहे जितनी खुली या छिपी हों, छोटी या बड़ी हों अपने घेरे में ले रख्खी है।
अश्शहीद :	जो कि निगहबान है अपनी सृष्टि पर, जिस ने अपने लिए वह्दानियत और इन्साफ़ के साथ क़ायम रहने की गवाही दी है, और मुमिन यदि उसकी वह्दानियत बयान करते है तो उनकी सच्चाई पर गवाह है, और अपने रसूलों और फ़रिश्तों के लिए भी गवाह है।
अर्रक़ीब :	जिसे अपनी सृष्टि की पूरी जानकारी है, उनके कर्मों को एक-एक करके गिन रख्खा है, लिहाज़ा कोई चीज़ उस से फ़ौत नहीं होसकती।
अर्रफ़ीक़ :	जो अपने कर्मों में नर्मी बरतता है, और थोड़ा थोड़ा करके पैदा करता और आदेश देता है, और अपने बन्दों से नर्मी का मुआमला करता है, उन पर ऐसी चीज़ें फ़र्ज़ नहीं करता जिस के करने की उन्हें ताक़त न हो। और वह अपने बन्दों में से नर्मी करने वालों को पसन्द करता है।
अल्-क़रीब :	जो अपने ज्ञान और शक्ति द्वारा अपनी आम सृष्टि से क़रीब है, और नर्मी और सहायता द्वारा मोमिनों से क़रीब है, जबकि वह अर्श पर है, और किसी मख़्लूक़ के अन्दर नहीं है।
अल्-मुजीब :	वही है जो अपने इल्म और हिक्मत के आधार पर दुआ करने वाले की दुआ और मांगने वाले की मांग को पूरी करता है।
अल्-मुक़ीत :	वही है जिसने रोज़ी पैदा करके मख़्लूक़ तक उसे पहूंचाने की जिम्मादारी ले रख्खी है। और वही है उस का और बन्दों के कर्मों का बिना कमी किए रक्षा करने वाला।
अल्-हसीब :	वही है जो अपने बन्दों के लिए दीन और दुनिया के सारे गमों की ओर से काफ़ी होता है, और ख़ास कर मुमिनों के लिए, और वही है जो उनके कर्मों के आधार पर उनका मुहासबा करेगा।
अल्-मुअ्मिन् :	अपने रसूलों और उनके पैरोकारों की तस्तीक़ करने वाला उन्की सच्चाई की गवाही देकर, और उन्हें मो'अ्जज़ा अ्ता करके, चूनान्चि दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की शान्ति क़ायम करने वाला वही है, और जो उस पर ईमान लाता है वह उसकी ओर से अत्याचार, अज़ाब और क़ियामत के दिन की घब्राहट से सुरक्षित रहता है।
अल्-मन्नान् :	बहुत अधिक देने वाला, महान इन्आम करने वाला, और वाफ़िर मात्रा में इह्सान करने वाला।
अत्तैयिब् :	वह हर प्रकार के ऐब और कमी से पवित्र तथा परिपूर्ण है, उसी के लिए सुन्दरता है, और वह अपने बन्दे को बहुत अधिक मात्रा में भलाई से नवाज़ता है, और वही कर्म तथा सद्क़ा स्वीकार करता है जो पवित्र तथा सुध हो।
अश्शाफ़ी :	जो दिल तथा शरीर को हर प्रकार की बीमारी से निरोग करता है, लोगों के पास मात्र दवाएं हैं जबकि शिफ़ा अल्लाह के होथ में है।
अल्-हफ़ीज़ :	जो अपने फ़ज़्ल द्वारा अपने मु'मिन् बन्दों और उन्के कर्मों का रक्षा करता है, और अपनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि की हेर चाह करता है।
अल्-मुतवक्किल्:	जिसने अपने जिम्मे संसार को बनाने और उसके इन्तिज़ाम की ज़िम्मेदारी ले रख्खी है, चुनान्चि उसी ने इसे बनाया और संवारा है, और वह मु'मिनों का कारसाज़ है जिसने करने से पहले उसके ज़िम्मे अपने काम सौंप दिए, और करते समय उस से मदद चाही, तौफ़ीक़ मिलने पर उसका शुक्रिया अदा किया, और आज़्माइश पर रिज़ामन्दी ज़ाहिर की।
अल्-ख़ल्लाक़ :	अल्लाह तआला के लिए अनगिनित पैदा करने का माना इस नाम में पाया जाता है, चूनान्चि अल्लाह तआला हमेशा से पैदा कर रहा है, और अभी भी उसकी यह महान सिफ़त है।
अल्-ख़ालिक् :	जिसने सारी सृष्टि बिना किसी उदाहरण के अनोखी बनाई।
अल्-बारिअ् :	जिसने निर्धारित सृष्टि को पैदा किया और उन्हें वुजूद में लाया।
अल्-मुसौविर् :	जिस ने अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा किया

अर्रब्ब् :	जो अपनी नेमतों द्वारा अपनी मख़्लूक की तर्बियत करता है, उन्हें पर्वान चढ़ाता है, और अपने वलियों की ऐसी तर्बियत करता है, जिस से उनके दिलों इस्लाह होजाए, और वही स्रष्टा, मालिक और सैय्यिद है।
अल्-अ़ज़ीम् :	जो अपनी व्यक्तित्व, नाम और सिफ़ात में महान है, इसी लिए सृष्टि पर उसकी महानता और बड़ाई करना वाजिब है, और यह भी कि उसके आदेश का पालन करें।
अल्-क़ाहिर : अल्-क़ह्हार :	जो अपने बन्दों को अपने अधिन में रखता है, उन्हें अपना दास बनाता है, और वह उन से उच्चतर है, वह ग़ालिब है जिस के लिए गर्दनें झुक गईं, और चेहरे ताबेदार होगईं, और क़ाहिर से मुबालग़ा का सेग़ा है।
अल्-मुहैमिन् :	सारी चीज़ों पर क़ायम, उनका निगरां, उन पर गवाह और उन्हें अपने घेरे में रखने वाला।
अल्-अज़ीज़् :	उस के लिए सम्पूर्ण प्रकार की अभिमानता है, वह शक्तिशाली है, कोई उस पर ग़ालिब नहीं होसकता, वह किसी का मुह्ताज नहीं, सभों को उस की ज़रूरत है, और वही है क़हर ढाने वाला प्रभुत्व जिस की अनुमति के बिना कोई चीज़ हिल नहीं सकती।
अल्-जब्बार् :	जिसकी इच्छा पूरी होती है, जिस की अधिनता में सारी मख़लूक़ है, जिस की महानता के आगे झुकी हुई है, और जिस के आदेशों का पालन करती है, और वही है जो कमी पूरी करता है, फ़क़ीर को धनी बनाता है, कठिन को सहज बनाता है, और रोगी को निरोग करता है।
अल्-मुतकब्बिर :	महान, हर प्रकार की बीमारी और कमी से उच्च, बन्दों पर अत्याचार करने से पवित्र, तानाशाहों को निचे करने वाला, जिस के लिए बड़ाई की सिफ़त है, और जो उसे प्राप्त करना चाहता है उसे तोड़ देता और सज़ा देता है।
अल्-कबीर् :	जो अपनी व्यक्तित्व, सिफ़ात और नाम में महान है, और कोई भी चीज़ उस से बड़ी नहीं है, बल्कि उस के सिवाय सारी चीज़ें उस की महानता के आगे निच्च है।
अल्-ह़यीय्य् :	वह ह़या और शर्म करता है जैसा कि उस के पूर नूर चेहरे और महान सल्तनत के लायक़ है, अल्लाह की करम, नेकी, उदार और महिमा की ह़या है।
अल्-हैय्य् :	जिस के लिए परिपुर्ण स्थायी जीवन है, और ऐसी अस्तित्व है जिसकी न तो कोई शुरूआत है और न अंत। और हर जिवित वस्तु को उसी ने जीवन प्रदान की है।
अल्-क़ैय्यूम् :	जो ख़ुद से क़ायम है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, आकाश और पृथ्वि में बसने वाले सभों को थामने वाला है, और सब उसके जरूरतमंद हैं।
अल्-वारिस् :	सृष्टि के फ़ना होजाने के बाद भी जो बाक़ी रहेगा, और सारी चीज़ें फ़ना होकर उसी की ओर पलट कर जाने वाली हैं, और जो भी चीज़ हमारे पास है वह अमानत है जो एक न एक दिन अपने मालिक के ओर पलट कर चली जाएगी।
अद्दैय्यान् :	सारी चीज़ें जिसके अधिन में हैं, और जो अपने बन्दों को कर्मों पर बदला देता है, यदि कर्म नेक हो तो बढ़ा कर देता है, और यदि बुरा हो तो उस पर सज़ा देता है या माफ़ कर देता है।
अल्-मलिक् :	जो आदेश देता है, मना करता है, और ग़ालिब है, वही है जिस के आदेश सृष्टि पर लागू होते हैं, वह स्वयं अपनी सलतनत का देख रेख करता है, उस पर किसी की इह्सान नहीं है।
अल्-मालिक् :	जो शुरू से ही मालिक है और उसका हक़्दार है, जब से उसने संसार का निर्माण किया मालिक है, उसमें कोई उसका साझी नहीं, और उस समय भी वही मालिक होगा जब कि इसका अंत होगा।
अल्-मलीक् :	इस नाम के अन्दर उसके मुतलक़ मालिक होने का अर्थ पाया जाता है, जो कि मलिक से बढ़कर है।
अस्सुब्बूह़ :	जो कि हर ऐब और कमी से पवित्र है, क्योंकि उसकी सिफ़ते सुन्दर तथा परिपुर्ण हैं।
अल्-क़ुद्दूस :	जो कि किसी भी तरह की कमी और ऐब से पवित्र और पाक है; क्योंकि वही तने तन्हा परिपुर्ण सिफ़तों मुत्तसिफ़ है, लिहाज़ा उस के लिए मिसाल नहीं दी जासकती।
अस्सलाम् :	जो समपुर्ण प्रकार की ऐब और कमी से सालिम है, अपनी व्यक्तित्व में, नाम में, सिफ़ात में और कर्मों में, और दुनिया तथा आख़िरत में हर प्रकार की सलामती उसी की ओर से है।
अल्-ह़क़्क़ :	जिस के बारे में किसी प्रकार का शंका नहीं है, न तो उस के नाम में, न सिफ़ात में, न बन्दगी में, वही सच्चा माबूद है, जिसके सिवाय कोई पूजा के योग्य नहीं।

अल्-मुबीन् :	वह्दानियत, हिक्मत तथा रहमत में जिसका मामला स्पष्ट है, और जो अपने बन्दों के लिए भलाई का मार्ग स्पष्ट करता है ताकि उसकी ताबेदारी करें, और बूराई का मार्ग भी ताकि उस से बचें।
अल्-क़वी :	जो कि परिपूर्ण इच्छा के साथ शक्तिमान है।
अल्-मतीन् :	जो कि अपनी ताक़त और शक्ति में ठोस है, और जिसे अपने कर्म में किसी प्रकार की कठिनाई, परीशानी और थकन नहीं होता।
अल्-क़ादिर् :	जिस की शक्ति तले हर चीज़ है, आकाश और पृथ्वि में कोई भी चीज़ उसे मग़लूब नहीं कर सकती, और वही हर चीज़ को निर्धारित करने वाला।
अल्-क़दीर :	यह भी अल्-क़ादिर के अर्थ में है, मगर इसमें अल्लाह तआ़ला के लिए प्रशंसा का मात्रा अधिक पाया जाता है।
अल्-मुक़्तदिर :	अपने ज्ञान अनुसार तक़दीर लागू करने तथा पैदा करने पर अल्लाह तआ़ला के अधिक शक्तिशाली होने का अर्थ इस नाम में पाया जाता है।
अल्-अ़ली : अल्-आ'ला :	जो अपनी शान, क़हर, और ज़ात में उच्च्य तथा महान है, सारी चीज़ें उस की सलतनत के अधिन में है, और कोई भी चीज़ उस से बालातर नहीं है।
अल्-मुतआ़ल् :	जिसकी बुलन्दी के आगी सारी चीज़ें झुकी हुई हैं, और कोई भी चीज़ उस के ऊपर नहीं है, बल्कि हर चीज़ उसके नीचे, और उस की सलतनत के अधिन में है।
अल्-मुक़द्दिम् :	जो वस्तूओं को आगे बढ़ाता है, और अपनी चाहत तथा हिक्मत अनूसार सारी चीज़ों को उसके समान जगह देता है, और अपने इल्म और फ़ज़्ल के अनूसार किसी सृष्टि को दूसरे पर बढ़ावा देता है।
अल्-मुअख़्ख़िर्:	जो प्रत्येक वस्तु को उचित स्थान देता है, और अपनी हिक्मत से जिसे चाहे आगे पीछे करता है, और जो अज़ाब को टाले रखता है ताकि बन्दे तौबा करके के उसकी ओर पलट आएं।
अल्-मुसअ़्इर्:	जो सामान का मोल, उसका सम्मान और प्रभाव बढ़ाता है, या कम करता है, चूनान्चि उसकी हिक्मत और इल्म के आधार पर चीज़ें सस्ती और महंगी होती हैं।
अल्-क़ाबिज़् :	जो रूह क़ब्ज़ करता है, और अपनी हिक्मत और शक्ति के आधार पर जिस की चाहे रोज़ी तंग कर देता है, ता कि उन्हें आज़माए।
अल्-बासित् :	जो अपनी सखावत और रहमत के कारण जिस की चाहे रोज़ी बढ़ा देता, और अपनी हिक्मत से इस द्वारा भी उस की आज़माइश करता है, और क़ुकर्मियों के लिए तौबे के साथ दोनों हाथों का भैलाता है।
अल्-अव्वल् :	जिस से पहले कोई चीज़ नहीं थी, बल्कि समपुर्ण सृष्टि उस द्वारा रचना में आईं, और स्वयं उस की शूरूआ़त की कोई सीमा नहीं है।
अल्-आख़िर् :	जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी, वह सदा बाक़ी रहने वाला है, और संसार में जो भी है वह फ़ना होजाने वाला है, फिर उसी की ओर उसे पलट कर जाना है, और उस के वूजूद की कोई अंत नहीं है।
अज़्ज़ाहिर् :	जो कि हर चीज़ के ऊपर है, और कोई भी चीज़ उस से ऊपर नहीं है, जो कि हर चीज़ को अपने अधिन में रख्खे हुए है, और उन्हें घेरे हूए है।
अल्-बातिन् :	जिस के वरे कोई चीज़ नहीं है, वह सब से क़रीब है, उन्हें घेरे में लिए हूए है, और संसार में मख़्लूक़ की निगाहों से ओझल है।
अल्-वित्र :	वह अकेला है जिसका कोई साझी नहीं है, तन्हा है जिस जैसा कोई नहीं है।
अस्सैइद् :	जिसे अपनी सृष्टि पर पूरी सरदारी प्राप्त है, वह उनका मालिक और प्रभू है, और वे उसके बन्दे और दास हैं।
अस्समद् :	ऐसा सरदार जो अपनी सरदारी में कामिल है, सारी मख़्लूक़ सख़्त मुहताजी के कारण जिस की ओर अपनी ज़रूरत पूरी होने के लिए ध्यान लगाती हैं। वही है जो खिलाता है और खिलाया नहीं जाता।
अल्-वाहिद् : अल्-अहद् :	जो अपनी सारी ख़ुबियों में यकता है, उन्में उसका कोई साझी नहीं है, और न ही कोई उस जैसा है, और यह ख़ूबी यह लाज़िम करती है कि इबादत के लायक़ मात्र वह अकेले है, जिसमें कोई उस का साझी नहीं है।
अल्-इलाह् :	सच्चा मा'अ़्बूद, दूसरों के सिवाय तन्हा इबादत के लायक़।

13 अल्लाह के नाम और उसके गुण में क्या फ़र्क़ हैं? पनाह लेने और क़सम खाने में दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है, लेकिन कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन में दोनों में फ़र्क़ है, जिन में से महत्वपुर्ण यह हैं : ❶ अल्लाह तआला के नामों के द्वारा दुआ करना, और उसके नामों के आगे अब्द बढ़ाकर नाम रखना जायज़ है, किन्तु उसके गुणों के द्वारा जायज़ नहीं, जैसे (अब्दुल् करीम) नाम रखना जायज़ है, लेकिन (अब्दुल् करम) नाम रखना जायज़ नहीं है, और (या करीम) कह कर दुआ करना जायज़ है, लेकिन (या करमल्लाह) कह कर दुआ करना जायज़ नहीं है। ❷ अल्लाह के नामों द्वारा उसके गुण साबित होते हैं जैसे उसके नाम (अर्रह़्मान) द्वारा उसकी सिफ़त (रह़्मत) साबित हुई। लेकिन उसकी सिफ़तों द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जा सकते जिनका चर्चा क़ुर्आन और ह़दीस में न हुवा हो, जैसे उसकी सिफ़त (अलूइस्तिवा) द्वारा उसके लिए (अलूमुस्तवी) नाम नहीं रखा जा सकता। ❸ अल्लाह तआला के कामों के द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जासकते जिनका चर्चा क़ुर्आन और ह़दीस में न हुवा हो, अल्लाह तआला के कामों में से (अलूग़ज़ब) ग़ुस्सा होना है, लेकिन यह नहीं कहा जाएगा कि अल्लाह तआला के नामों में से एक (अलूग़ाज़िब) है, अलबत्ता उसके कामों से उसकी सिफ़त साबित होगी, तो उसके लिए हम (ग़ज़ब) ग़ुस्सा होने की सिफ़त साबित करेंगे, इसलिए कि ग़ुस्सा होना भी उसके कामों में से है।

14 फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ क्या है? उन पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि उनके अस्तित्व को स्वीकार किया जाए, और इस बात को भी कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी इबादत और अपने आदेश-पालन के लिए पैदा किया है, ﴿ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُۥ بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ﴾ **"उसके सम्मानित बन्दे हैं, किसी बात में अल्लाह पर पहल नहीं करते, बल्कि उसके आदेश पर कारबन्द हैं"**। और उन पर ईमान लाना चार चीज़ों को शामिल है : ❶ उनके अस्तित्व पर ईमान लाना। ❷ उन में से जिनके नाम को जानते हैं उन पर (उनके नामों के साथ) ईमान लाना, जैसे जिब्रईल। ❸ उनके जिन गुणों को जानते हैं उन गुणों पर ईमान लाना, जैसे उनकी महान ख़िल्क़त। ❹ उनके जिन ख़ास कामों को जानते हैं उन पर ईमान लाना। जैसे मलकुलूमौत पर ईमान लाना कि उनका काम रूह़ क़ब्ज़ करना है।

15 क़ुर्आन क्या है? क़ुर्आन अल्लाह तआला का कलाम है, जिसकी तिलावत इबादत है, उसी से आरम्भ हुवा है, और उसी की ओर पलट जाएगा, ह़क़ीक़त (वास्तव) में अक्षर और आवाज़ के साथ अल्लाह तआला ने उसे बोला हैं, जिब्रईल عليه السلام ने अल्लाह तआला से उसे सुना फिर उसे मुह़म्मद ﷺ तक पहुँचाया, और सारी आसमानी किताबें अल्लाह तआला का कलाम हैं।

16 क्या हम क़ुर्आन को लेकर नबी ﷺ की सुन्नत (हदीसों) से बेनियाज़ हो सकते हैं? यह जायज़ नहीं, बल्कि सुन्नत के अनुसार अमल करना ज़रूरी है, अल्लाह तआला ने इसका आदेश देते हुए फ़रमायाः ﴿ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ ﴾ **"और तुम्हें जो कुछ रसूल दे उसे ले लो, और जिससे रोके रुक जाओ"**। और सुन्नत, क़ुर्आन की तफ्सीर है, दीन की तफ़्सील जैसे नमाज़ के बारे में इस के बिना नहीं जाना जा सकता, नबी ﷺ ने फ़रमाया : " **सुन लो! मुझे किताब दी गई है, और उसके साथ उसी जैसी (सुन्नत), सुन लो! क़रीब है कि कोई आसूदा आदमी अपनी मसनद पर टेक लगाए हुए कहे : तुम मात्र इस क़ुर्आन को लाज़िम पकड़ो, और इसमें जो चीज़ें ह़लाल हैं उन्हें ह़लाल जानो, और जो ह़राम हैं उन्हें ह़राम जानो** "। (अबू दाऊद)

17 रसूलों पर ईमान लाने का क्या अर्थ है? रसूलों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि यह विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआला ने हर समुदाय में उन्हीं में से एक रसूल मात्र अपनी

इबादत की ओर दावत देने, और ग़ैरों की इबादत को नकारने के लिए भेजे हैं, और वे सब सच्चे, भले, इज़्ज़त वाले, नेक, मुत्तक़ी, अमीन, हिदायत याफ़्ता, और मार्ग-दर्शक हैं, उन्होंने हम तक धर्म को पहुँचाया, वे अल्लाह के सब से अफ़ज़ल मख़्लूक़ हैं, और वे पैदाइश से लेकर मौत तक अल्लाह के साथ शिर्क करने से पाक हैं।

18 क़ियामत के दिन शफ़ाअत की कितनी क़िस्में होंगी? शफ़ाअत कई प्रकार की होगी, इनमें सब से बड़ी शफ़ाअत ❶ (शफ़ाअते उज़्मा) होगी, जो कि हश्र के मैदान में होगी, बाद इसके कि लोग पचास हज़ार साल तक ठहरे रहेंगे, अपने बीच फ़ैसले के इन्तिज़ार में होंगे, उस समय मुहम्मद ﷺ अपने रब के पास शफ़ाअत करेंगे कि लोगों के बीच फ़ैसला कर दिया जाए, और यह शफ़ाअत हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के लिए खास है, और यही मक़ामे महमूद है जिसका उनसे वादा किया गया है। ❷ दूसरी शफ़ाअत होगी जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाने के लिए, और सब से पहले हमारे नबी मुहम्मद ﷺ जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाएंगे, और सारी उम्मतों में सब से पहले उन्हीं की उम्मत जन्नत में जाएगी। ❸ कुछ तौहीद परस्तों के बारे में शफ़ाअत जिनके जहन्नम में जाने का आदेश होगया होगा, कि उन्हें जहन्नम में न भेजा जाए। ❹ तौहीद परस्तों में से अपने गुनाहों के कारण जो जहन्नम में डाले गए होंगे, उन्हें जहन्नम से निकालने की शफ़ाअत । ❺ कुछ जन्नतियों के दर्जे बुलन्द करने के लिए शफ़ाअत । आख़िरी तीन हमारे नबी के लिए ख़ास नहीं है, लेकिन वह दूसरों पर मुक़द्दम होंगे, और इस सफ़ में आप के बाद दूसरे नबी, फ़रिश्ते, नेक लोग और शहीद लोग होंगे। ❻ कुछ लोगों को बिना हिसाब लिए जन्नत में दाख़िल किए जाने की शफ़ाअत । ❼ कुछ काफ़िरों के अज़ाब में कमी करने के लिए शफ़ाअत , और यह हमारे नबी के लिए खास होगी वह अपने चचा अबू तालिब के अज़ाब में कमी के लिए शफ़ाअत करेंगे। फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से बिना किसी की शफ़ाअत के जहन्नम से ऐसे लोगों को निकाल देगा, जिनकी मृत्यु तौहीद पर हुई थी, और उन्हें अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा। ऐसे लोगों की संख्या केवल अल्लाह ही जानता है।

19 क्या ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना या शफ़ाअत चाहना जायज़ है? हाँ, ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना जायज़ है, बल्कि शरीअत ने एक दूसरे की मदद करने पर उभारा है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَتَعَاوَنُوا۟ عَلَى ٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ﴾ **"नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे का सहयोग करो।"** और नबी ﷺ ने फ़रमाया : " अल्लाह तआला अपने बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है। " (मुस्लिम) और शफ़ाअत की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, इसका अर्थ है किसी के लिए माध्यम बनना। अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ مَّن يَشْفَعْ شَفَٰعَةً حَسَنَةً يَكُن لَّهُۥ نَصِيبٌ مِّنْهَا ﴾ **"और जो व्यक्ति किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा"** और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "शफ़ाअत करो अज्र पाओगे।" (बुख़ारी) और इसके जायज़ होने के लिए कुछ शर्तें हैं: ❶ मदद या शफ़ाअत ज़िन्दा व्यक्ति से तलब की जाए; क्योंकि मुर्दा से उसका तलब करना दुआ (पुकार) कहलाता है और मुर्दा उसकी दुआ (पुकार) में से कुछ भी सुन नहीं सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا۟ دُعَآءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا۟ مَا ٱسْتَجَابُوا۟ لَكُمْ ﴾ अर्थातः "अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं, और अगर (मान लिया कि) सुन भी लें तो फ़र्याद रसी नहीं करेंगे।" पस कैसे मैयत से मदद या श्फ़ाअत तलब की जाएगी, हालाँकि वह ख़ुद ही ज़िंदों की दुआओं के मुहताज है, और उसका अमल उसके मौत से मुनक़तिअ (ख़त्म) हो गया है मगर दुआ वग़ैरा के माध्यम से जो उसको पहुँचे। नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'जब आदम की औलाद मर

जाता है तो उसका अ़मल मुनक़तिअ़ (ख़त्म) हो जाता है सिवाय तीन के: सदक़ा जारिया, वह इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाए या नेक संतान जो उसके लिए दुआ़ करे।' (मुस्लिम) ❷ वह जो बात कह रहा हो समझ में आ रही हो। ❸ जिस व्यक्ति से शफ़ाअत तलब की जा रही है, वह हाज़िर हो। ❹ शफ़ाअत ऐसी चीज़ के बारे में हो जो आदमी के बस में हो। ❺ सांसारिक चीज़ों के बारे में शफ़ाअत हो। ❻ जायज़ काम के लिए शफ़ाअत हो जिस में कोई हानी न हो।

20 वसीले कितने प्रकार के होते हैं? दो प्रकार के होते है : **1– जायज़ वसीला** : और यह तीन प्रकार के होते हैं : ❶ अल्लाह के नामों और उसके गुणों द्वारा वसीला पकड़ना। ❷बन्दे का अपने नेक अमल द्वारा वसीला पकड़ना, जैसे ग़ार वाले तीनों व्यक्तियों ने किया। ❸ किसी उपस्थित ज़िन्दा नेक मुस्लिम व्यक्ती की दुआ द्वारा वसीला पकड़ना जिसकी दुआ के स्वीकार होने की आशा हो। **2– ह़राम वसीला** : और यह दो प्रकार के होते हैं : ❶ अल्लाह तआला से नबी ﷺ या किसी वली के जाह-व-जलाल के माध्यम से सवाल करना, जैसे यह कहना कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे नबी के जाह-व-जलाल के वसीले, या हुसैन के जाह-व-जलाल के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि नबी ﷺ और नेक लोगों के जाह-व-जलाल अल्लाह तआला के नज़दीक महान हैं, लेकिन सहाबए किराम ﷺ ने जो कि हर भलाई के काम में आगे आगे रहते थे क़हत-साली (अकाल) पड़ जाने के अवसर पर नबी ﷺ के जाह-व-जलाल का वसीला नहीं पकड़ा जब्कि आप की क़ब्र उनके पास मौजूद थी। बल्कि उन्होंने आप ﷺ के चचा अब्बास ﷺ की दुआ से वसीला पकड़ा। ❷ नबी ﷺ की या किसी वली की क़सम खाकर अल्लाह तआला से अपनी ह़ाजत को मांगना। जैसे यह कहना ऐ अल्लाह! मैं तेरे फ़लाँ वली के वसीले से, या तेरे फलाँ नबी के हक़ के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। और यह ह़राम इसलिए है कि मख़्लूक़ की मख़्लूक पर क़सम खाना ह़राम है, तो अल्लाह को किसी मख़्लूक़ की क़सम देना और अधिक वर्जित है। और दूसरी बात यह है कि मात्र अल्लाह की इताअत कर लेने से बन्दे का अल्लाह पर कोई ह़क़ वाजिब नहीं हो जाता।

21 आख़िरत के दिन पर ईमान लाने का क्या अर्थ है? इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखा जाए कि क़ियामत क़ायम होगी, और साथ ही मौत पर, मौत के बाद क़ब्र की परीक्षा (आज़माइश), क़ब्र के अज़ाब और उसकी नेमत, सूर में फूँक मारा जाना, लोगों का अपने रब के सामने खड़ा होना, नामए आमाल को फैलाया जाना, मीज़ान (तराज़ू) और पुल-सिरात का क़ायम होना, हौज़े कौसर और शफ़ाअत , फिर उसके बाद जन्नत या जहन्नम की ओर जाने पर ईमान रखना।

22 क़्यामत की बड़ी निशानियाँ क्या क्या हैं? नबी ने फ़रमायाः **“क़्यामत उस समय तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि उससे पहले तुम दस निशानियाँ न देख लो, और इन का चर्चा करते हुए फ़रमायाः धुआं, दज्जाल, जानवर, पश्चिम से सूरज का निकलना, ईसा बिन मर्यम का नाज़िल होना, याजूज माजूज का निकलना, तीन जगहों पर ज़मीन का धंसना, पश्चिम, पूरब और जज़ीरतुल्अरब में, और अन्तिम निशानी के रूप में यमन से आग निकलेगी जो लोगों को महशर में इकट्ठा करेगी”**। (मुस्लिम) इब्ने उमर की ह़दीस के अनुसार इनमें सब से पहली निशानी पश्चिम से सूरज का निकलना है। और इसके अलावा दूसरी बातें भी कही गई हैं।

23 लोगों के लिए सब से बड़ा फ़ित्ना कौनसा होगा? नबी ﷺ ने फ़रमायाः “आदम की पैदाइश से लेकर क़्यामत क़ायम होने तक दज्जाल से बड़ा कोई फ़ित्ना नहीं है”। (मुस्लिम) दज्जाल आदम की औलाद में से है, जो कि अन्तिम ज़माने में निकलेगा, उसकी दोनों आँखों के बीच (ك ف ر) लिखा होगा, जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा, वह दाहिनी आँख का काना होगा, गोया कि अंगूर की तरह उभरी हुई हो, वह जब निकलेगा तो शुरू में सुधार का दावा करेगा, फिर नुबुव्वत और अल्लाह

होने का दावा करेगा, लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, लोग उसे झुठला देंगे, वह उनके पास से वापस होगा तो उनके माल भी उसके पीछे पीछे हो लेंगे, और वे खाली हाथ हो जाएंगे। फिर दूसरे लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, वे उसकी बात मान लेंगे और उसकी पुष्टि करेंगे, वह आकाश को आदेश देगा तो बरसात होगी, ज़मीन को आदेश देगा तो अनाज निकालेगी। वह लोगों के पास पानी और आग के साथ आएगा, उसकी आग ठन्डी होगी और उसका पानी गरम होगा। मोमिन के लिए मुनासिब यह कि हर नमाज़ के अन्त में उसके फित्ने से अल्लाह की पनाह मांगे। और यदि उसे पा ले तो उस पर सूरतु-लू-कह्फ़ की शुरू की आयतें पढ़े। और उससे मुठ-भेड़ करने से बचे ताकि कहीं फ़ित्ने में न पड़ जाए, नबी ﷺ का फ़रमान है: "जो दज्जाल के बारे में सुने वह उससे दूर रहे, इसलिए कि अल्लाह कि क़सम व्यक्ति उसके पास आएगा और वह अपने आप को मोमिन समझ रहा होगा, लेकिन उसके उसके साथ जो शुबहात होंगे उन के कारण उसकी पैरवी करने लगेगा"। (अबू दाऊद) वह संसार में 40 दिन तक रहेगा, पहला दिन एक वर्ष के बराबर होगा, दूसरा दिन एक महीने के बराबर, तीसरा दिन एक सप्ताह के बराबर और बाक़ी दिन साधारण दिनों के तरह होंगे। और मक्का और मदीना के सिवाय बाक़ी सारे शहर और देश में जाएगा, फिर ईसा عليه السلام आकाश से उतरेंगे और उसकी हत्या करेंगे।

24 क्या जन्नत और जहन्नम मौजूद हैं? हाँ दोनों के दोनों मौजूद हैं। अल्लाह ने इन्हें लोगों को पैदा करने से पहले पैदा किया, और यह दोनों न तो फ़ना होंगे न मिटेंगे, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से कुछ लोगों को जन्नत के लिऐ पैदा किया है, और अपने न्याय और अद्ल से कुछ लोगों को जहन्नम के लिए पैदा किया है, और हर किसी के लिए वह चीज़ आसान कर दी गई है जिस के लिए वह पैदा किया गया है।

25 तक़्दीर पर ईमान लाने का क्या अर्थ है? इस बात पर पुख़्ता विश्वास करना कि हर भलाई और बुराई अल्लाह तआला के फ़ैसले और उसकी लिखी हुई तक़्दीर के अनुसार होती है, और वह जो चाहता है करता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : " यदि अल्लाह तआला आकाश वालों, और धरती वालों को अज़ाब दे, तो वह उन्हें अज़ाब देने में ज़ालिम नहीं होगा, और यदि उन पर रह़म करे तो उसकी रह़मत उनके कर्मों से बेहतर होगी, और यदि तूने अल्लाह के रास्ते में उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी ख़र्च किया तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करेगा यहाँ तक कि तू तक़्दीर पर ईमान ले आ और यह जान ले कि जो चीज़ें तुझे मिली हैं वे तुझ से दूर होने वाली नहीं थीं, और जो चीज़ें तुझ से दूर हो गईं वे तुझे मिलने वाली नहीं थीं। और यदि इसके सिवा (दूसरे अक़ीदे) पर तुम्हारी मौत होई तो तू अवश्य जहन्नम में जाएगा"। (अह़्मद और अबू दाऊद) और तक़्दीर पर ईमान लाना 4 चीज़ों को शामिल है : ❶ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला को सारी वस्तुओं की स्पष्ट जानकारी है। ❷ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ने उन्हें लौहे मह़्फ़ूज़ में लिख रखा है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने के 50 हज़ार वर्ष पहले मख़्लूकों की तक़्दीर लिख दी है"। (मुस्लिम) ❸ अल्लाह तआला की लागू होने वाली मशीयत (चाहत) पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ रोक नहीं सकती और उसकी शक्ति पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ बेबस नहीं कर सकती, वह जो चाहता है, होता है, और जो नहीं चाहता, नहीं होता। ❹ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ही ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है और सारी चीज़ों को वुजूद में लाने वाला है, और उसके सिवाय सारी चीज़ें उसकी मख़्लूक़ हैं।

26- क्या मख़्लूक़ के पास भी वास्तविक शक्ति, चाहत और इच्छा है? हाँ, इन्सान के पास भी वास्तविक चाहत, इच्छा और मर्ज़ी है, लेकिन यह अल्लाह की चाहत के दायरे के अन्दर है।

अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ﴾ **"तुम अल्लाह तआला के चाहे बिना कुछ भी नहीं चाह सकते"**। और नबी ﷺ ने फ़रमायाः "कर्म करो; इसलिए कि हर व्यक्ति पर वह कर्म आसान कर दिया गया है जिस के लिए वह पैदा किया गया है"। (बुख़ारी और मुस्लिम) और अल्लाह तआला ने हमें शुद्ध और अशुद्ध में फ़र्क़ करने के लिए बुद्धि, आँख और कान दिए हैं, तो क्या कोई ऐसा बुद्धिमान भी है जो चोरी करने के बाद कहे कि अल्लाह ने हम पर चोरी लिख दी है?! और यदि वह ऐसी बात कहेगा भी तो लोग उसके इस उज़्र को स्वीकार नहीं करेंगे। बल्कि उसे सज़ा देंगे और कहेंगे : अल्लाह तआला ने तुम पर सज़ा भी लिखी है, तो तक़्दीर को हुज्जत और बहाना बनाना जायज़ नहीं है बल्कि वास्तव में यह तक़्दीर को झुठलाना है। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿ سَيَقُولُ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُوا۟ لَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشْرَكْنَا وَلَآ ءَابَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَىْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِم ﴾

"मुश्रिक कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुज़ुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज़ को ह़राम बनाते, इसी तरह इनके पहले के लोग झुठलाए"।

27 एह़सान क्या है? नबी ﷺ ने जिब्रईल عليه السلام के प्रश्न का उत्तर देते हु फ़रमायाः "तुम अल्लाह की इबादत इस तरह से करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो, और यदि तुम नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है"। (बुख़ारी और मुस्लिम और यह लफ़्ज़ मुस्लिम का है)। और दीन के तीनों मर्तबों में यह सब से ऊँचा मर्तबा है।

28 तौह़ीद की कितनी क़िस्में हैं? तीन क़िस्में हैं : ❶ तौह़ीदुर्रूबूबियः अल्लाह तआला को उसके कर्मों में अकेला मानना, जैसे : पैदा करना, रोज़ी देना और जीवन देना इत्यादि। नबी ﷺ के आने से पहले भी काफ़िर तौह़ीद की इस क़िस्म का इक़्रार करते थे। ❷ तौह़ीदुल् उलूहीयः इबादतों के द्वारा अल्लाह तआला को अकेला मानना। जैसे : नमाज़, नज़्र और नियाज़ और सद्क़े इत्यादि। रसूलों को इसी कारण भेजा गया कि मात्र अल्लाह तआला की इबादत की जाए। और इसी कारण किताबें भी उतारी गईं। ❸ तौह़ीदुल् अस्मा वस्सिफ़ात : बिना तह़रीफ़, ता'तील, तक्ईफ़ और तम्सील के अल्लाह तआला के लिए उसके अच्छे नामों और ऊँचे गुणों को जिस तरह स्वयं अल्लाह ने और उसके रसूल ने साबित किए हैं साबित करना।

29 वली कौन है? नेक और परहेज़गार मोमिन जो अल्लाह से डरता हो वही वली है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴾ **"याद रखो अल्लाह के मित्रों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं, ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और गुनाह से परहेज़ करते हैं"**। और नबी ﷺ ने फ़रमायाः "मेरा वली अल्लाह है और नेक मोमिन हैं"। (बुख़ारी और मुस्लिम)

30 सह़ाबए किराम رضي الله عنهم का हमारे ऊपर क्या ह़क़ है? हमारे ऊपर वाजिब है कि हम उनसे मह़ब्बत करें, उनके नामों के साथ رضي الله عنهم कहें, अपने दिलों और ज़ुबानों को उनके बारे में साफ़ सुथरा रखें। उनकी प्रतिष्ठाओं को आम करें, उनकी गलतियों और उनके बीच होने वाले इख़्तिलाफ़ पर चुप रहें, वे गलतियों से मा'सूम नहीं हैं, लेकिन उन्होंने इज्तिहाद किया, तो उन में से जो ह़क़ को पहुँचा उसे दो सवाब मिलेगा, और जिन से गलती हुई उन्हें उनके इज्तिहाद पर एक अज्र मिलेगा। और उनकी गलतियाँ माफ़ हैं, और यदि उनसे गलतियाँ हुई भी तो उनकी नेकियाँ उनके गुनाहों को मिटा देंगी। और वे आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत रखते हैं : उन में सब से अफ़ज़ल दस सह़ाबए किराम हैं : अबू बक्र, फिर उमर, फिर उसमान, फिर अ़ली, फिर तल्हा, ज़ुबैर, अब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सा'द बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद और अबू उबैदा बिन

जर्राह, फिर बाक़ी मुहाजिरीन, फिर मुहाजिरीन और अन्सार में से जो बदर में शरीक हुए, फिर बक़ीया अन्सार, फिर बाक़ी सारे सहाबए कराम। नबी ﷺ ने फ़रमायाः **"तुम मेरे सहाबए किराम को गालियाँ मत दो, क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है यदि तुम में से कोई उहुद के बराबर भी सोना ख़र्च करे तो उनके खर्च किए हुए मुद या आधे मुद के बराबर भी नहीं पहुँच सकता"**। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ने यह भी फ़र्माया : **"जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी उस पर अल्लाह उस के फ़रिश्ते और सारे लोगों की लानत हो"**। तब्रानी।

31 क्या अल्लाह के रसूल की तारीफ़ में मुबालग़ा करना जायज़ है? इसमें कोई शक नहीं है कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ मख़्लूक़ में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं, लेकिन फिर भी उनकी तारीफ़ में सीमा को छलांगना जायज़ नहीं जैसा कि नसारा ने ईसा عليه السلام की तारीफ़ में छलांगा था; क्योंकि नबी ﷺ ने हमें इस से रोका है, आप ﷺ ने फ़रमायाः "तुम मेरी तारीफ़ में हदें उस तरह पार न करना जैसाकि नसारा ने इब्ने मर्यम की तारीफ़ में किया, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ; इसलिए मुझे अब्दुल्लाह और रसूलुल्लाह कहो"। (बुख़ारी)

32 क्या अह्ले किताब (यहूदी और ईसाई) मोमिन हैं? नबी ﷺ की बे'सत के बाद इस्लाम धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों को मानने वाले चाहे वे यहूदी और ईसाई हों या कुछ और सब के सब काफ़िर हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴾ **"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे धर्म को अपनाए, तो उसका धर्म स्वीकार नहीं होगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा"**। और यदि कोई मुस्लिम व्यक्ति उनके काफ़िर होने का अक़ीदा न रखे या उनके धर्म के बातिल होने के बारे में शक करे तो वह काफ़िर है; इसलिए कि उसने अपने कुफ़्र के कारण अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म का विरोध किया। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ مِنَ ٱلْأَحْزَابِ فَٱلنَّارُ مَوْعِدُهُۥ ﴾ **"और सभी गुटों में से जो भी इसका इन्कारी हो तो उसके अन्तिम वादे की जगह नरक है"**। और नबी ﷺ का फ़रमान है : "उस हस्ती की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, इस उम्मत का कोई भी व्यक्ति वह चाहे यहूदी या ईसाई हो मेरे बारे में सुनने के बाद मुझ पर ईमान नहीं लाया तो वह जहन्नम में जाएगा"। (मुस्लिम)

33 क्या काफ़िरों पर अन्याय करना जायज़ है? अन्याय करना हराम है क्योंकि हदीसे क़ुद्सी में अल्लाह तआला का कथन है : "मैं ने अपने आप पर अत्याचार हराम कर लिया है, और इसे तुम्हारे ऊपर भी हराम किया है इसलिए तुम अत्याचार न करो"। (मुस्लिम) काफ़िरों के साथ व्यवहार किए जाने के लिहाज से उन की दो क़िस्में हैं : **1** जिनके साथ मुआहदा (समझौता) हो, और इनकी तीन क़िस्में हैं : **1-** ज़िम्मी : यह वे लोग हैं जो मुस्लिम मुल्क में रहने के लिए जिज़्या (टैक्स) दिया करते हैं, और इन्होंने यह मुआहदा किया हो कि इन पर इस्लामी आदेश लागू होगा। तो इन्हें हमेशा के लिए पनाह दी जाएगी। **2-** मुआहद : जिन्होंने मुसलमानों के साथ उनके देश में बाक़ी रहने के लिए सुलह कर लिया हो। तो इन पर इस्लामी आदेश तो लागू नहीं होंगे, लेकिन इन्हें मुसलमानों से लड़ाई करने से बचना होगा। जैसा कि यहूद नबी ﷺ के ज़माने में थे। **3-** मुस्ता'मन : जो किसी काम के लिए मुसलमानों के देश में आए हों, रहने की इच्छा न हो, जैसे एलची, व्यापारी, सैयाह, पर्यटक, पनाह चाहने वाले और इन जैसे लोग। तो इन्हें क़त्ल नहीं किया जासकता, और न ही इन से जिज़्या लिया जाएगा, पनाह चाहने वाले को इस्लाम की दावत दी जाएगी यदि वह स्वीकार कर लिया तो अच्छा है, और यदि वह अपनी शान्ति-भवन को पहुँचना चाहता है तो उसे वहाँ

पहुँचा दिया जाएगा। ❷ हर्बी काफ़िर : जिनका मुसलमानों से न तो कोई मुआहदा हो, और न ही जिन्हें शान्ति प्रदान की गई हो, बल्कि वे मुसलमानों से लड़ रहे हों, या इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में लड़ाई का एलान कर चुके हों, या इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों की मदद करते हों, तो इन से लड़ाई की जाएगी और इन्हें मारा जाएगा।

34 बिद्अत का अर्थ क्या है? इब्ने रजब कहते हैं : "बिद्अत हर उस चीज़ का नाम है जिसे धर्म के अन्दर बे-बुनियाद जन्म दिया गया हो, और यदि शरीअत में उसकी बुनियाद मौजूद है तो फिर वह बिद्अत नहीं है। चाहे उसे लुग़त में बिद्अत कहा जाता हो"।

35 क्या धर्म में अच्छी और बुरी बिद्अत भी पाई जाती है? आयतों और हदीसों में बिद्अत की निंदा की गई है। नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिसने कोई ऐसा कर्म किया जो हमारे आदेश के विरुद्ध हो तो वह अस्वीकृत है"। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने फ़रमाया : "धर्म में हर नयी ईजाद की जाने वाली चीज़ बिद्अत है, और हर बिद्अत गुम्राही है।" (अबू दाऊद) और इमाम मालिक बिद्अत के बारे में कहते हैं कि "जिस ने धर्म में बिद्अत ईजाद की और उसे उसने अच्छा समझा, तो अवश्य उसने ऐसा सोचा कि मुहम्मद ﷺ ने रिसालत में ख़ियानत की; क्योंकि अल्लाह ﷻ का फ़रमान है : ﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى﴾ **"आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया, और तुम पर अपनी ने'मतें पूरी कर दी"**।

और कुछ हदीसें ऐसी आई हैं जिन्में लुग़वी मायने के लिहाज़ से बिद्अत की प्रशंसा की गई है, और वास्तव में यह हदीसें उन चीज़ों के बारे में हैं जिनकी बुनियाद शरीअत में मौजूद है, लेकिन बाद में वह भुला दी गई हों तो नबी ﷺ ने उन्हें फिर से ज़िन्दा करने पर ज़ोर दिया है, जैसा कि आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने इस्लाम में किसी अच्छी सुन्नत को ज़िन्दा किया तो उसे उसका सवाब मिलेगा, और उसके बाद उसके आधार पर कर्म करने वालों का सवाब भी मिलेगा, और उनके सवाबों में कोई कमी न होगी"। (मुस्लिम) और इसी मायने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ने के बारे में उमर رضي الله عنه का फ़रमान है : "यह क्या ही अच्छी बात है"। क्योंकि ऐसा करना शरीअत द्वारा साबित था, और नबी ﷺ ने तीन रातों में जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी भी थी, लेकिन इस डर से कि वह फ़र्ज़ न कर दी जाए आप ने जमाअत के साथ पढ़ना छोड़ दिया था, तो उमर رضي الله عنه ने अपने दौर में लोगों को इस सुन्नत पर इकट्ठा किया।

36 निफ़ाक़ की कितनी क़िस्में हैं? दो क़िस्में हैं : ❶ निफ़ाक़े एतिक़ादी : इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति ज़ाहिर तो ईमान करे लेकिन कुफ़्र को छुपाए हो, और यह चीज़ धर्म से बाहर निकाल देती है, और यदि इसी अवस्था में व्यक्ति की मृत्यु हो गई तो उसकी मृत्यु कुफ़्र पर हुई, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ فِى ٱلدَّرْكِ ٱلْأَسْفَلِ مِنَ ٱلنَّارِ﴾ **"मुनाफ़िक़ीन तो अवश्य नरक की सब से निचली तह में जायेंगे"**। और इनकी पहचान यह है कि यह अल्लाह और मोमिनों को धोका देते हैं, मोमिनों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन पर काफ़िरों की सहायता करते हैं, और अपने नेक कर्मों के द्वारा सांसारिक लाभ चाहते हैं। ❷ निफ़ाक़े अमली : ऐसा व्यक्ति धर्म से बाहर तो नहीं निकलता, लेकिन यदि तौबा न करे तो बड़े निफ़ाक़ से जा मिलने का डर होता है। और ऐसे व्यक्ति की पहचान यह है कि जब बात करता है तो झूट बोलता है, वादा करता है तो पूरा नहीं करता, लड़ाई करता है तो गाली बकता है, और मुआहदा (प्रतिज्ञा) करता है तो धोका देता है, और जब उसके पास अमानत रखी जाती है तो उस में ख़यानत करता है। तो भाईयो! अपने आप को इस तरह की चीज़ों से बचाओ और अपने नफ़्स का हिसाब करो।

क्या मुसलमान पर निफ़ाक़ से डरना वाजिब है? हाँ, सहाबए किराम رضي الله عنهم भी कर्मों में निफ़ाक़ से डरा करते थे। इब्ने मुलैका رحمه الله कहते हैं : मेरी मुलाक़ात 30 सहाबए किराम से हुई वे सब

अपने ऊपर निफ़ाक़ से डरते थे। और इब्राहीम तैमी ﷺ कहते हैं : मैं ने जब भी अपने कथन को अपने कर्मों के ऊपर नापा तो मुझे अपने झूठे होने का डर हुआ। ह़सन बसरी ﷺ कहते हैं : निफाक़ से मोमिन ही डरता है, और मुनाफ़िक़ ही निडर रहता है। और उमर ﷺ ने हुज़ैफ़ा ﷺ से पूछा : मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूँ, क्या नबी ﷺ ने मुझे भी मुनाफ़िक़ों में शुमार किया है? तो हुज़ैफ़ा ने कहा : नहीं, और आप के बाद मैं किसी की भी सफ़ाई नहीं दूँगा।

37 अल्लाह तआला के यहाँ सब से बड़ा पाप क्या है? अल्लाह तआला के साथ साझी बनाना सब से बड़ा पाप है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ **"अवश्य शिर्क सब से बड़ा पाप है"**। और जब आप ﷺ से पूछा गया कि कौनसा पाप सब से बड़ा है? तो आप ने फ़रमाया: "तू अल्लाह के साथ दूसरे को साझी बनाए, जबकि उसने तुझे पैदा किया है"। (बुख़ारी और मुस्लिम)

38 शिर्क की कितनी क़िस्में हैं? दो क़िस्में हैं : ❶ शिर्के अक्बर : इतना बड़ा पाप है कि यह शिर्क करने वाले व्यक्ति को इस्लाम धर्म के दायरे से बाहर निकाल देता है। और ऐसे मुश्रिक व्यक्ति की मृत्यु यदि शिर्क से बिना तौबा किए हो गई तो उसकी कभी भी माफी नहीं होगी। अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ﴾ **"नि:सन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को नहीं क्षमा करता, और इस के अतिरिक्त पाप जिसके चाहे क्षमा कर देता है।"** **और इसकी चार क़िस्में हैं : 1.** दुआ में शिर्क करना। **2.** नियत, इरादे और इच्छा में शिर्क करना। जैसे ग़ैरुल्लाह के लिए नेक कर्म करना। **3.** पैरवी में शिर्क करना। जैसे अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को ह़लाल किया है, उन्हें ह़राम ठहराने में या जिन्हें ह़राम किया है उन्हें ह़लाल ठहराने में आलिमों की बातें मानना। **4.** मह़ब्बत में शिर्क करना, अर्थात अल्लाह तआला जैसी मह़ब्बत दूसरे से करना।

❷ शिर्के अस्ग़र : यह पाप शिर्क करने वाले व्यक्ति को धर्म के दायरे से बाहर नहीं निकालता। और यह दो प्रकार के होते हैं : ① ज़ाहिर : चाहे उस का सम्बंध कथन से हो जैसे ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना, या यह कहना : जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, या यह कहना : अल्लाह न होता और आप न होते। या उस का सम्बंध कर्म से हो जैसे मुसीबत टालने या दूर करने के कड़ा और छल्ला पहन्ना, या धागा बांधना, या नज़र से बचने के लिए तावीज लटकाना, या चरा, नाम, शब्द और जगह से बद्फ़ाली लेना। ② और छुपे हुए : औश्र यह नियत, मक़्सद और इरादे में शिर्क करना, जैसे रिया।

39 शिर्के अक्बर और शिर्के अस्ग़र में क्या फ़र्क़ है? दोनों में अन्तर यह है कि शिर्के अक्बर करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर माना जाएगा, और आख़िरत में वह सदा के लिए जहन्न में जलेगा। लेकिन शिर्के अस्ग़र करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर नहीं माना जाएगा, और न ही आख़िरत में वह सदा के लिए जहन्न में जलेगा। इसी तरह शिर्के अक्बर सारे कर्मों को नष्ट कर देता है, लेकिन शिर्के अस्ग़र मात्र उसी कर्म को नष्ट करता है जिसमें वह शामिल हो। लेकिन एक बात में मतभेद है कि क्या शिर्के अस्ग़र से माफ़ी के लिए तौबा ज़रूरी है? या वह भी दूसरे बड़े गुनाहों की तरह अल्लाह की मशीयत तले है? बहरहाल दोनों सूरतों में मुआमला ख़त्रनाक है।

40 क्या छोटा शिर्क होने से पहले इससे बचाव का कोई रास्ता या हो जाने के बाद इसका कोई कफ्फारा है? इससे बचाव का रास्ता यह है कि अल्लाह की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए कर्म करे, और यदि थोड़ा सा हो तो दुआ द्वारा इससे पनाह तलब करे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "लोगो! इस शिर्क से बचो जो चीटी की चाल से अधिक छिपा हुआ है, तो लोगों ने

पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! जब यह चीटी की चाल से भी अधिक़ छिपा है तो हम इससे कैसे बचें? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यह दुआ किया करो «اللّٰهُمَّ إِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ نُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَعْلَمُهُ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لا نَعْلَمُ» "ऐ अल्लाह! हम जान बूझ कर तेरे साथ शिर्क करने से तेरी पनाह में आते हैं, और जो नहीं जानते हैं उससे तेरी माफ़ी चाहते हैं"। (अह़मद) और ग़ैरुल्लाह की क़सम खाने का कफ़्फ़ारा यह है कि لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ कहे जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस ने लात और उज़्ज़ा की क़सम खाई तो वह لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ कहे"। (बुखारी और मुस्लिम) और बद्-फ़ाली के कफ़्फ़ारे के बारे में नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिसे बद्-फ़ाली ने अपनी ज़रूरत पूरी करने से रोक दिया, तो उसने यक़ीनन् शिर्क किया"। लोगों ने पूछा : तो इसका कफ़्फ़ारा क्या है? आप ने फर्माया : यह दुआ पढ़े : «أَنْ تَقُوْلَ:اَللّٰهُمَّ لا خَيْرَ إِلا خَيْرُكَ،وَلا طَيْرَ إِلا طَيْرُكَ، وَلا إِلَهَ غَيْرُكَ» "ऐ अल्लाह! सारी भलाइयाँ तुझ ही से हैं, और तेरी फाल के अतिरिक्त कोई फाल नहीं, और तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं"। (अह़मद्)

41 कुफ्र की कितनी क़िस्में हैं? दो क़िस्में हैं। ❶ बड़ा कुफ्र जो कि व्यक्ति को इस्लाम के दायरे से बाहर निकाल देता है। और इसकी पाँच क़िस्में हैं : 1- झुठलाने का कुफ्र। 2- तस्दीक़ के साथ घमण्ड करने का कुफ्र। 3- शक का कुफ्र। 4- मुंह फेरने का कुफ्र 5- निफ़ाक़ के द्वारा कुफ्र करना। ❷ छोटा कुफ्र, और इसे कुफ्रे ने'मत भी कहते हैं। और यह पाप है लेकिन इससे व्यक्ति इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं निकलता। जैसे किसी मुस्लिम व्यक्ति की हत्या करना।

42 नज़्र का क्या हुक्म है? नबी ﷺ ने नज़्र को नापसन्द करते हुए फरमाया : " इससे कोई भलाई नहीं आती"। (बुखारी) यह बात उस अवस्था की है जब कि नज़्र मात्र अल्लाह के लिए मानी गई हो, यदि किसी क़ब्र या वली के लिए नज़्र मानी जाए तो फिर नज़्र मानना ह़राम है जो पूरी नहीं की जाएगी।

43 काहिन या ज्योतिशी के पास जाने का क्या हुक्म है? ह़राम है, यदि उनके पास लाभ की उम्मीद से गया और उनकी बातों को सच नहीं माना तो उसकी 40 दिन की नमाज़ें स्वीकार नहीं होंगी, नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिसने ज्योतिशी के पास आकर उससे कुछ पूछा तो उसकी 40 रात की नमाज़ें नहीं स्वीकार होंगी"। (मुस्लिम) और यदि उसने उनके ग़ैबी इल्म के दावे को सत्य मान लिया तो उसने मुह़म्मद ﷺ के धर्म के साथ कुफ्र किया, नबी ﷺ का फ़रमान है : "जो व्यक्ति ज्योतिशी या काहिन के पास आया और उस की बात को सच मान लिया तो उसने मुह़म्मद पर उतारे गए धर्म के साथ कुफ्र किया"। (अबू-दाऊद)

44 नक्षत्रों (तारों) से बारिश तलब करना बड़ा शिर्क कब होगा और छोटा शिर्क कब होगा? जिसकी यह आस्था हो की वर्षा बरसाने में अल्लाह तआला की चाहत के बिना नक्षत्रों की अपनी तासीर होती है, वही पानी बरसाते हैं तो यह बड़ा शिर्क है। पर जो यह आस्था रखे कि अल्लाह तआला की चाहत से नक्षत्रों का प्रभाव होता है, वर्षा बरसाने के लिए अल्लाह तआला ने उन्हें माध्यम बनाया है, जब वह नक्षत्र होता है तभी पानी पड़ता है तो यह छोटा शिर्क है। इसलिए कि उसने शरीअत की दलील के बिना उसे सबब बनाया। अलबत्ता मौसम और वर्षा के समय की जानकारी के लिए इसके द्वारा अनुमान लगाना जायज़ है।

45 मुस्लिम हुक्मरान (शासक) के तईं क्या वाजिब है? ख़ुशी और ग़मी हर अवस्था में उनकी बातों को सुनना और मानना वाजिब है, यदि वे अत्याचार भी करें तब भी उनके विरोध बग़ावत करना ह़राम है, उन्हें शरापना जायज़ है और न ही उनकी इताअत से मुंह मोड़ना जायज़ है, बल्कि हम उनकी भलाई और दुरुस्तगी के लिए दुआ करेंगें, और जब तक वे हमें बुराई का आदेश न दें उनकी इताअत को हम अल्लाह तआला की इताअत का ह़िस्सा समझते

हैं, और यदि उन्होंने बुराई का आदेश दिया तो उसमें उनकी इताअत नहीं की जाएगी बाक़ी इताअत की चीज़ों में भलाई के साथ उनकी इताअत की जाएगी। नबी ﷺ ने फ़रमायाः "हाकिम की बात सुनो और उसकी इताअत करो, अगरचे तुम्हें मारा जाए और तुम्हारा माल छीन लिया जाए तो भी सुनो और इताअत करो"। (मुस्लिम)

46 क्या अम्र और नह्य (करने या न करने के आदेशों) के बारे में अल्लाह की हिक्मत का प्रश्न करना जायज़ है? हाँ जायज़ है, लेकिन इस शर्त के साथ कि हिक्मत की जानकारी पर ईमान लाना या कर्म करना निर्भर न हो। बल्कि यह जानकारी इस लिए हो कि मोमिन व्यक्ति हक़ पर और पुख़्ता होजाए। लेकिन प्रश्न किए बिना स्वीकार कर लेना पूरी बन्दगी, अल्लाह और उसकी कामिल हिक्मत पर ईमान की दलील है। जैसा कि सहाब-ए-कराम ﵃ का हाल था।

47 अल्लाह तआला के इस फ़रमान ﴿ مَّآ أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ ٱللَّهِ ۖ وَمَآ أَصَابَكَ مِن سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ﴾ "तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह तआला की ओर से है, और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने ख़ुद की ओर से है" का क्या मतलब है? आयत में ﴿ حَسَنَةٍ ﴾ से मुराद ने'मत और ﴿ سَيِّئَةٍ ﴾ से मुराद बुराई है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की ओर से मुक़द्दर हैं, पर ने'मत की निस्बत अल्लाह तआला की ओर की गई है इस्लिए की इन्आमकर्ता वही है, लेकिन बुराई को भी अल्लाह तआला ने ही ख़ास हिक्मत के कारण पैदा किया है, और बुराई को इस नज़रिया से देखा जाए तो वह अल्लाह तआला की ओर से एहसान है, इसलिए कि वह कभी बुराई करता ही नहीं, बल्कि उस के सारे काम अच्छे हैं, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः "हर प्रकार की भलाई तेरे दोनों हाथों में है, और बुराई की निस्बत तेरी तरफ़ नहीं की जासकती"। (मुस्लिम) बन्दों के कर्मों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, और साथ ही साथ स्वयं बन्दे की अपनी कमाई भी है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया : ﴿ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَٱتَّقَىٰ ۝٥ وَصَدَّقَ بِٱلْحُسْنَىٰ ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهُۥ لِلْيُسْرَىٰ ﴾ "तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा, और अच्छी बातों की पुष्टि करता रहा, तो हम भी उसके लिए आसानी पैदा कर देंगे"।

48 क्या यह कहना जायज़ है कि फ़लाँ व्यक्ति शहीद है? किसी ख़ास व्यक्ति को शहीद कहना वैसे ही है जैसे उसे जन्नती कहा जाए, और इस सम्बंध में अह्ले सुन्नत-वल्-जमाअत का मज़हब यह है कि जिनके बारे में नबी ﷺ ने जन्नती या जहन्नमी होने की ख़बर दी है उनके सिवाय किसी भी मुस्लिम को जन्नती या जहन्नमी न कहा जाए, क्योंकि हक़ीक़त पोशीदा है, और किस स्तिथि में उस व्यक्ति की मौत हुई इसकी जानकारी हमें नहीं है, और अन्तिम कर्मों का ही एतेबार होगा, और नियत की जानकारी मात्र अल्लाह तआला को है, लेकिन नेकी करने वाले के लिए सवाब की उम्मीद करते हैं, और पापी पर सज़ा से डरते हैं।

49 क्या किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति को काफ़िर कह सकते हैं? किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़्र, शिर्क या निफ़ाक़ का हुक्म लगाना जायज़ नहीं है, यदि उससे इस तरह का कोई कर्म ज़ाहिर न हो। और उसकी भेद को हम अल्लाह के हवाले कर देंगे।

50 क्या का'बा के अलावा दूसरी जगहों का तवाफ़ करना जायज़ है? का'बा के अलावा दूसरी किसी भी जगह का तवाफ़ करना जायज़ नहीं है, और न ही किसी भी जगह की बराबरी उससे करना जायज़ है चाहे उस जगह की फ़ज़ीलत कितनी भी अधिक क्यों न हो। और जिसने का'बा के अलावा किसी जगह का उसकी ताज़ीम करते हुए तवाफ़ किया तो उसने अल्लाह की नाफरमानी की।

दिलों के कर्म

अल्लाह तआला ने दिल को पैदाकरके उसे सारे अंगों का बादशाह बनाया, और अंगों को उसका लश्कर, यदि दिल भला हो तो सारे लश्कर भले रहते हैं, नबी ﷺ ने फ़र्माया :

«وَإِنَّ فِي الجَسَدِ مُضْغَة إذا صَلَحَتْ صَلَحَ الجَسَدُ كُلُهُ، وَإذا فَسَدَتْ فَسَدَ الجَسَدُ كُلُّهُ ألا وَهِيَ القَلْبُ»

"यक़ीनन् दिल में एक टूकड़ा है, यदि वह ठीक होजाए तो पूरा बदन ठीक रहता है, और यदि वह ख़राब होजाए तो पूरा जिस्म ख़राब होजाता है, और यह दिल है।" (बुख़ारी तथा मुस्लिम) तो दिल या तो ईमान और तक़्वा की जगह है, या कुफ्र, निफ़ाक़ और शिर्क की। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "तक़्वा यहां है, और आप ﷺ ने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा किया"। (मुस्लिम)

✱ आस्था, बचन तथा कर्म का नाम ईमान है, अर्थात दिल से आस्था रखना, ज़ुबान से इक़्रार करना और दिल तथा अंगो द्वारा कर्म करना। चुनांचि दिल ईमान लाता है और तस्दीक़ करता है, जिसके नतीजे में ज़ुबान कल्मए-शहादतैन की गवाही देता है, फिर दिल में जो मुह़ब्बत, डर और उम्मीद जगती है उसके नतीजे में ज़ुबान ज़िक्र करने लगता है, क़ुर्आन की तिलावत करता है, और अल्लाह ﷻ की नजदीकी प्राप्त करने के लिए शरीर में मौजूद बाक़ी दूसरे अंग रूकुअ़, सज्दा और नेकी करने में व्यस्त होजाते हैं; चुनांचि शरीर दिल का ग़ुलाम है, इसी लिए दिल में जो बात भी घर कर जाती है किसी न किसी तरह से उसका असर अंगों द्वारा प्रकट होजाता है।

✱ दिल के आमाल से मुराद ऐसे कर्म हैं जिन की जगह दिल है, उन कर्मों का दिल से गहरा नाता है, और इनमें सब से महान कर्म अल्लाह तआला पर ईमान लाना है; क्योंकि ईमान की जगह दिल है, इसी प्रकार इक़्रार करना और ऐसी तस्दीक़ करना जो शरीअत का पाबन्द बनाए दिल के महान कर्मों में से है, साथ ही साथ इन्सान के दिल में अल्लाह ﷻ के लिए पैदा होने वाले यह सारे कर्म भी हैं, जैसे मुह़ब्बत, डर, भय, उम्मीद, उस की ओर वापसी, उस पर भरोसा, सब्र, विश्वास और ख़ुशूअ़ ख़ुज़ुअ़ इत्यादि।

✱ दिल के हर कर्म के मुक़ाबले में दिल की बीमारी भी है, जैसे ख़ुलूस इसकी ज़िद्द दिखलावा है, यक़ीन के बरख़िलाफ़ शंका है और मुह़ब्बत के बरअक्स नफ़रत इत्यादि, लिहाज़ा यदि हम अपने दिलों को सुधारने से चूक गए तो उस पर गुनाहों का तह लगते चले जाएंगे, जो उसे बर्बाद करदेंगे। जैसा कि नबी ﷺ का फ़र्मान है :

«إنَّ العَبْدَ إذا أخْطَأَ خَطِيئَةً نُكِتَ فِي قَلْبِهِ نُكْتَةٌ فَإنْ هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صُقِلَتْ فَإنْ عَادَ زِيْدَ فِيْهَا وَإنْ عَادَ زِيْدَ فِيهَا حَتَّى تَعْلو فِيْهِ فَهُوَ الرَّانُ الذَّي ذَكَرَ الله: ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾» **"बन्दा जब पाप करता है तो उस के दिल पर एक काला नुक़्ता पड़ जाता है, यदि तौबा इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, पर यदि वह फिर गुनाह पर गुनाह करता जाता है, तो वह कालक बढ़ती जाती है, यहां तक कि उस के पूरे दिल पर छा जाती है, और यही वुह रैन है जिस का चर्चा अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन में किया है : ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾ यूँ नहीं, बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म के कारण मोर्चा चढ़ गया है"** तिमएॅज़ी।

और नबी ﷺ ने यह भी फ़र्माया कि : "फ़ित्ने दिलों से इस प्रकार चिमटते चले जाएंगे जैसे चटाई बुन्ने में एक एक करके सींक पिरोई जाती है, तो जिस दिल में बुराई घर कर लेती हैं उस में एक काला नुक़्ता पड़ जाता है, और जो दिल भी उसे नकार देता है उस पर एक सफेद नुक़्ता पड़ जाता है, यहां तक के दिल दो प्रकार के हो जाते हैं, एक सफेद पत्थर की तरह जिस पर आकाश और धर्ती के रहने समय तक फ़ित्ने का असर न होगा, और दूसरा गदले

काले की तरह होजाता जैसे झुका हुआ कूज़ा हो जिसे अपनी नफ़सानी खाहिश के सिवा न तो भलाई की पहचान होती है और न ही बुराई की" मुस्लिम।

✸ और अंगों से जुड़ी इबादतों के मुक़ाबले में, दिल से जुड़ी हुई इबादतों की जानकारी अधिक अहम है; क्योंकि यह बुनियाद हैं, और अंगों वाली इबादतें इनकी शाखें हैं, इन से दिली इबादतें पूरी होती हैं, और यह उन्हीं के फल स्वरूप हैं। चुनान्चि दिल ज्ञान और फ़िक्र कि जगह है, और इसीलिए अल्लाह के पास लोगों में से बेहतर वह है जिस के दिल में ईमान, विश्वास और इख़लास इत्यादि ने घर कर लिया हो। हसन बसरी ने फ़र्माया है : "अल्लाह की क़सम अबू बक्र ने नमाज़ अथवा रोज़े के द्वारा सहबए कराम पर सबक़त नहीं प्राप्त किया बल्कि उस ईमान द्वारा किया जो उनके दिल में बस चुका था"।

✸ दिल के कर्मों का अंगों के कर्मों पर महानता के कई कारण हैं :

1- दिल की इबादतों में गड़बड़ी के कारण अंगों की इबादतें बर्बाद हो जाती है, जैसे दिखलावे के लिए कर्म करना। **2-** दिल की इबादतें असल हैं, लिहाज़ा दिल के इरादे के बिना यदि मुंह से कोई शब्द निकल आए या शरीर द्वारा कोई अश्लिल हर्कत होजाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं होती। **3-** इनके द्वारा जन्नत में बुलन्द मुक़ाम प्राप्त होते हैं, जैसे ज़ुह्द और तक़्वा। **4-** यह अंगों वाले कर्मों से अधिक कठिन हैं, इब्ने मुन्कदिर कहते हैं कि : "मैंन 40 साल तक अपने दिल का इलाज किया फिर जाकर वह मेरा ताबेदार बना"। **5-** इनके बड़े सुन्दर प्रभाव होते हैं, जैसे अल्लाह के लिए प्रेम करना। **6-** इन पर बहुत अधिक सवाब मिलते हैं, अबुद्दरदा ؓ कहते हैं कि : "कुछ समय ध्यान लगाना रात भर क़ियाम करने से उत्तम है"। **7-** इनके द्वारा अंगें हरकत में आती हैं। **8-** यह अंगों के कर्मों के महान होने का कारण बनते हैं या उन्हें घटान और बर्बाद करने का, जैसा कि ख़ुशुअ के साथ नमाज़ पढ़ना। **9-** यह कभी कभार अंगों के कर्मों के बदले का सबब बनते हैं, जैसे धन न होने के बावजूद भी सदक़े की नियत करना। **10-** इन पर मिलने वाले सवाब की कोई सीमा नहीं है, जैसे सब्र के कारण मिलने वाले सवाब। **11-** यदि अंग करना बन्द करदे तो भी इनका सवाब जारी रहता है। **12-** अंगों द्वारा कर्म करने से पहले और कर्म के दौरान भी यह पाए जाते हैं।

अंगों के कर्म करने से पहले दिल कई एक अवस्था से गुज़रता है, ❶ किसी भी कर्म के लिए दिल में सोंच पैदा होती है। ❷ फिर उस के लिए जगह बनती है। ❸ फिर वह उसे करने या छोड़ने के बारे में मंझधार में रहता है। ❹ फिर करने का इरादा ग़ालिब होता है। ❺ फिर उसे करने के लिए इरादे में पुख़्तगी आती है। चुनान्चि पहले के तीनों अवस्था में न तो नेकी के कर्म पर उसे सवाब मिलता है और न ही कुकर्म पर गुनाह। अलबत्ता इरादे के कारण नेकी के इरादे पर उसे एक सवाब मिलता है, अैर बूराई के इरादे पर गुनाह नहीं मिलता। लेकिन इरादा यदि पुख़्ता हो जाए तो नेकी के कर्म का पुख़्ता इरादा करने पर उसे सवाब मिलता है, और इसी तरह पाप के करने का पुख़्ता इरादा करने पर गुनाह मिलता अगणच पाप न कर पाये। क्योंकि शक्ति के साथ किसी कर्म के करने का इरादा करने से उस कर्म का होना लाज़िम आता है। अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحِبُّونَ أَن تَشِيعَ ٱلۡفَٰحِشَةُ فِي ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴾ "जो लोग मुसलमानों में बे-हयाई फैलाने के आर्जू में रहते उनके लिए कष्ट-दायक अज़ाब हैं"। और अल्लह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : "यदि दो मुसमान तलवार लेकर आमने सामने होगए तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नमी हैं", सहाबी कहते हैं

: मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो भला क़ातिल है पर मक़्तूल का क्या जुर्म है? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "वह भी अपने साथी की हत्या करना चाहता था"। बुख़ारी।

यदि पुख़्ता इरादा कर लेने के बाद भी पाप नहीं करता तो वास्तव में इसके 4 प्रकार हैं: ❶ या तो उसे अल्लाह के डर से छोड़ा हो, फिर तो उसे सवाब मिलेगा। ❷ या लोगों के डर से छोड़ा हो, तो ऐसा व्यक्ति पापी क़रार पाएगा; क्योंकिं पाप न करना इबादत है, जिसे अल्लाह के लिए होना लाज़िम है। ❸ निर्बस होने के कारण उसे न कर पाया हो, और उसे करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका भी प्रयोग न किया हो तो ऐसा व्यक्ति भी अपने पुख़्ता इरादे के कारण पापी क़रार पाएगा। ❹ पाप करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका प्रयोग तो किया हो लेकिन बेबसी के कारण उसकी इच्छा पूरी न हो पाई तो ऐसे व्यक्ति पर पाप करने वाले के बराबर पूरा पूरा गुनाह लिख्खा जाएगा; जैसा कि पिछली ह़दीस द्वारा स्पष्ट है। और जब कभी भी बन्दे के अन्दर किसी बुराई के करने का इरादा हो तो उसकी उस पर पकड़ होगी, चाहे उस ने बूराई पहले किया हो या बाद में, चुनान्चि जिस व्यक्ति ने कभी ह़राम काम किया हो, और शक्ति होने के साथ ही दोबारा उसे करना चाहता हो, तो गोया कि वह अपने पाप पर मुसिर है; लिहाज़ा वह अपनी इस नियत के कारण पापी क़रार पाएगा; अगणच वह इसे दोबारा न कर पाए।

✸ दिल के कुछ कर्म :

✸ नियत : नियत का अर्थ है इरादा और इच्छा करना, नियत के बिना कोई कर्म स्वीकार नहीं होता, जैसा कि नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**कर्मों के सवाब का दारोमदार नियत पर है, और हर व्यक्ति को वही चीज़ प्राप्त होती है जिसकी वह इच्छा करता है**"। इब्ने मुबारक रहमतुल्लाह अलैह फ़र्माते हैं : "बहुत से छोटे कर्म नियत के कारण महान होजाते हैं, और बहुत से महान कर्म नियत के कारण तुच्छ होजाते हैं"। और फ़ुज़ैल रहे ने फ़र्माया : "अल्लाह तआला तुझ से मात्र तुम्हारी नियत और इरादा चाहता है, चुनान्चि कर्म यदि अल्लाह तआला के लिए हो तो उस का नाम इख़्लास है, और इख़्लास यह कि किसी भी कर्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी दूसरे की ह़िस्सेदारी न हो, और यदि ग़ैरुल्लाह के लिए कर्म किया गया हो तो इसका नाम रिया, या निफ़ाक़ आदि है।

फ़ाइद: ज्ञानी लोगों के इलावा बाक़ी सारे लोग बर्बाद होने वाले है, और सारे के सारे ज्ञानी बर्बाद होने वाले हैं सिवाय कर्म करने वालों के, और सारे के सारे कर्म करने वाले हलाक होने वाले हैं सिवाय मुख़्लिसों के। चुनान्चि जिस बन्दे के अन्दर कर्म करने का इच्छा हो उसके लिए सब से पहले नियत के बारे में ज्ञान लेने की आवश्यक्ता है, फिर सच्चाई और इख़्लास की वास्तविक्ता को समझ कर नियत को कर्म द्वारा सुधारे, क्योंकि बिना नियत के कर्म करने से मात्र थकान हासिल होता है, और नियत के अन्दर यदि इख़्लास न हो तो फिर वह रिया और दिखलावा है, और ईमान के बिना इख़्लास भूस जैसा है।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं : ❶ कुकर्म : अच्छी नियत गुनाह के कामों को नेकी में नहीं बदल देती, बल्कि बूरी नियत के कारण गुनाह अधिक बढ़ जाता है। ❷ मुबाह़ात : जायज़ और मुबाह कर्म जिसे कई प्रकार की नियत से किया जासकता है, जो उसे नेकी में भी बदल देती है। ❸ सुकर्म : नेकी के कामों के सह़ीह़ होने तथा उन पर सवाब मिलने का आधार

नियत है [1], यदि नेक कर्म द्वारा दिखलावा मक़्सूद हो फिर तो यह पाप, और छोटा शिर्क है, जो बड़ा शिर्क भी होसकता है। और इसकी 3 स्तिथी हो सकती है : ① इबादत शुरू ही की हो दिखलावे के लिए तो यह शिर्क है और ऐसी इबादत बातिल है। ② इबादत अल्लाह के लिए शुरू की हो, फिर बीच में दिखलावे की नियत पैदा होजाए, तो यदि इबादत का अन्तिम हिस्सा पहले हिस्से पर निर्धारित न हो जैसे सदक़ा, तो इसका पहला भाग सहीह है और अन्तिम भाग बर्बाद है, और यदि पहला भाग अन्तिम भाग से मिला हुआ हो जैसे नमाज़, तो इसकी दो हालत है : क : रिया को दूर करने का प्रयास करे, तो इबादत पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। ख : रिया के साथ ही इबादत पूरी करे तो पूरी इबादत बातिल होजाएगी। ③ इबादत से फ़ारिग़ होने के बाद रिया की नियत पैदा है, तो यह वास्तव में शैतानी वस्वसा है, जिसका इबादत और आबिद पर कोई असर नहीं होता। इनके इलावा भी रिया के चोर दरवाज़े हैं जिनकी जानकारी प्राप्त करना और उन से बचना ज़रूरी है।

अल्बत्ता यदि नेक कर्मों द्वारा मक़्सद संसार प्राप्त करना हो तो बन्दे की नियत के आधार पर उसे सवाब या गुनाह मिलेगा। जिस की तीन हालतें हैं : ❶ नेकी का मक़्सद मात्र दुनिया प्राप्त करना हो; जैसे कोई व्यक्ति नमाज़ में इमामत मात्र पैसा हासिल करने के लिए करता हो तो ऐसा व्यक्ति गुनहगार क़रार पाएगा। नबी ﷺ ने फ़र्माया : "जिस ने ऐसा इल्म जिस से अल्लाह ﷻ की ख़ुशी प्राप्त होती है मात्र दुनिया कमाने के लिए हासिल किया तो क़ियामत के दिन उसे जन्नत की हवा तक नसीब न होगी"। अबू दाऊद। ❷ नेकी का मक़्सद अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के साथ-साथ दुनिया प्राप्त करना भी हो; जैसे कोई व्यक्ति हज्ज और व्यापार दोनों की नियत से हज्ज करे; तो वास्तव में ऐसे व्यक्ति में ईमान और इख़्लास की कमी है; लिहाज़ा उसे उसके इख़्लास के बराबर सवाब मिलेगा। ❸ नेकी का मक़्सद मात्र

---

[1] नबी ﷺ ने फ़र्माया : "जिस व्यक्ति ने नेकी का इरादा किया पर उसे कर न सका तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उसने नेकी कर भी ली तो अल्लाह तआला उस के लिए दस नेकियों से लेकर सात सौ गुन्ने तक नेकियां लिख देता है और इस से भी कितने गुन्ने अधिक। और जिस व्यक्ति ने बूराई का इरादा किया पर उसे नहीं किया तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उस ने बूराई कर भी ली तो उस पर एक गुनाह लिखता है"। बुख़ारी तथा मुस्लिम। और आप ﷺ ने यह भी फ़र्माया कि : "इस उम्मत की मिसाल चार क़िसिम के लोगों की तरह है; एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ﷻ ने माल और इल्म से नवाज़ा, तो वह इल्म की रौशनी में अमल करते हुए अपने माल को मुनासिब जगहों में खर्च करता है, और दूसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने इल्म से नवाज़ा पर उसे माल अता न किया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी इस व्यक्ति जैसा धन होता तो मैं भी इसी की तरह उसे अल्लाह के रासते में खर्च करता, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : इन दोनों को बराबर सवाब मिलेगा। और तीसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने माल से नवाज़ा पर उसे इल्म अता नहीं किया, तो वह अपने माल का हक़ अदा नहीं करता और उसे गलत जगहों में खर्च करता है, और चौथा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने न तो इल्म दिया न धन दिया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह बूराई की जगहों में ख़र्च करता। नबी ﷺ ने फ़र्माया : इन दोनों को बराबर गुनाह मिलेगा"। तिणमज़ी। इस हदीस से पता चला कि दूसरे और चौथे किसीम के लोगों को उनकी नियत का बदला मिला, जिस की तमन्ना करते हुए उन्होंने कहा था : "यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह कर्म करता"। चुनान्चि उन में से हर कोई अपनी नियत के बदले सवाब या गुनाह में अपने साथी का साझी होगया। इब्ने रजब रहे कहते हैं कि हदीस के इस जुम्ले : "वह दोनों सवाब में बराबर होंगे" का अर्थ यह है कि वे नेकी के असली सवाब में बराबर होंगे, न कि इज़ाफ़ी सवाब में; क्योंकि नियत करने वाले के बजाय मात्र कर्म करने वाले के सवाब में इज़ाफ़ा होगा। और यदि हर लिहाज से दोनों को बराबर माना जाए तो इस से लाज़िम आएगा कि कर्म करने वाले की तरह नियत करने वाले को भी दस गुन्ना सवाब मिले, जो कि दलीलों के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह ﷻ की ख़ुशी हासिल करना हो, पर तन्खाह भी लेता हो ताकि नेकी पर क़ायम रहे; तो इसे बिना किसी कमी के पूरा सवाब मिलेगा। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "तुम जिस चीज़ पर उज्रत लेते हो उनमें सब से अधिक उज्रत लेने के लायक़ अल्लाह तआला की किताब है"। बुख़ारी।

और यह जान रख्खो कि मुख़्लिस लोगों के भी कई एक दरजे हैं : ❶ कमतर दरजा उनका है जो सवाब की उम्मीद से या अज़ाब से बचने की ख़ातिर नेकी करें। ❷ बिचला दर्जा उनका है जो अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए और उसके आदेश का पालन करते हुए नेकी करें। ❸ सब से बुलन्द दर्जा उनका है जो अल्लाह ﷻ से मुहब्बत, उस की बड़ाई, उसकी महानता और उस से डरते हुए नेकी करें। और सिद्दीक़ो का दरजा है।[1]

तौबा : इन्सान पर हमेशा तौबा करते रहना वाजिब है। और इस से गलती का होजाना कोई बड़ी बात नहीं, नबी ﷺ ने फ़र्माया : "आदम की हर औलाद पापी है, पर उनमें बेहतर वे हैं जो बहुत अधिक तौबा करते रहते हैं"। तिर्मीज़ी। और नबी ﷺ ने यह भी फ़र्माया : "यदि तुम पाप न करोगे तो अल्लाह तुम्हें मिटा देगा और ऐसी क़ौम ले आएगा जो गुनाह करेगी, फिर उससे माफ़ी मांगेगी तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा"। मुस्लिम। तौबा करने में देरी करना, और गुनाह पर गुनाह करते जाना ग़लतत है। और शैतान की चाहत होती है कि इन्सान को सात बड़े जालों में से किसी एक जाल में फंसाए, यदि वह पहले में सफ़ल नहीं हो पाता है तो दूसरे के लिए प्रयास करता है, ❶ उसका पहला जाल होता है उसे शिर्क और कुफ़्र में फंसाना, यदि उसमें सफ़ल न हो पाया तो ❷ एतिक़ादी बिद्अत में फंसाना, और उसे नबी ﷺ और सहाब-ए-किराम رضي الله عنهم की इक़्तिदा से वंचित कर देना, ❸ यदि यह भी सम्भव न हो सका तो उसे बड़े पाप में, ❹ नहीं तो छोटे पाप में फंसाना, ❺ नहीं तो अधिक मात्रा में मुबाह़ काम करवाना, ❻ और यदि इनमें भी सफल न होपाया तो अधिक नेकी वाले कर्म को छोड़वाकर कम नेकी वाले कर्म कराना, ❼ नहीं तो अन्त में इन्सानों और जिन्नातों के शैतानों को उस पर मुसल्लत कर देना।

पाप दो प्रकार के होते हैं: ❶ बड़े पाप : जिसके करने पर संसार में हद्द लागू किया जाए, या आख़िरत में सज़ा की धमकी दी गई हो, या उसके करने वाले पर ग़ज़ब हो या ला'नत हो, या उससे ईमान का इन्कार किया गया हो। ❷ छोटे पाप : जो इनके अलावा हों। **लेकिन कुछ कारण ऐसे जिन से छोटे पाप भी बड़े बन जाते हैं?** उनमें अहम कारण हैं गुनाहों पर डटे रहना, या उन्हे बार बार करना, या उन्हें हक़ीर समझना, या उनके पाने पर गर्व करना, या उन्हें लोगों के सामने करना।

और हर प्रकार के गुनाह से तौबा किया जा सकता है, और पश्चिम से सूरज निकलने तक तौबा करने का समय बाक़ी है, या जाँकनी (प्राण निकलने की अवस्था) तक उसका समय

---

[1] अल्लह तआ़ला का फ़र्मान है मूसा عليه السلام के बारे में : ﴿وَعَجِلۡتُ إِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضَىٰ﴾ **"तेरी ओर जलदी इसलिए की कि तू खूश होजाए"**। मुसा عليه السلام ने मात्र आदेश का पालन करते हुए जलदी नहीं की बल्कि अल्लाह को खुश करने के लिए भी उन्होने ऐसा किया। और इसी प्रकार मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने में भी कमतर दर्जा यह है कि नाफ़र्मानी के डर से उन से अच्छा बर्ताव किया जाए, बीच का दर्जा यह है कि उन की फ़र्माबर्दारी अल्लाह तआ़ला का अनुकरण करते हुए उन के इह़सान का बदला चुकाने के लिए की जाए, क्योन्कि उन्होंने ही बचपन में पाला पोषा, और दुनिया में आने का सबब बने, और उत्तम दर्जा यह है कि उन की फ़र्माबर्दारी अल्लाह के आदेश की बड़ाई करते हुए और उस से मह़ब्बत करते हुए की जाए।

बाक़ी है। और तौबा करने वाला यदि अपने तौबा में सच्चा है तो उसके गुनाहों को नेकियों में बदल दिया जाता है, उसके पाप चाहे आकाश के किनारों तक क्यों न पहुँचे हों।

और तौबा स्वीकार होने के लिए कुछ शर्तें हैं, ❶ गुनाहों को छोड़ देना। ❷ पिछले गुनाहों पर पछतावा खाना। ❸ भविश्य में न करने का पुख़्ता इरादा करना। और यदि पाप का सम्बंध लोगों के हुक़ूक़ और अधिकार से हो तो उसे उन तक वापस लौटाना ज़रूरी है।[1]

तौबा करने वाले लोग चार प्रकार के होते हैं : ❶ एक वह व्यक्ति जो अपनी अन्तिम जीवन तक तौबा पर क़ायम रहे, और दोबारा पाप करने के बारे में सोंचे तक भी नहीं, सिवाय कुछ लग्ज़िशों के जिस से कि कोई भी व्यक्ति नहीं बच पाता, तो इस का नाम तौबा पर इस्तिक़ामत है, और ऐसे व्यक्ति को साबिक़ बिल्-ख़ैरात अर्थात नेकीयों में तरक़्क़ी करने वाला कहा गया है, और इस तौबा का नाम "नसूह़" अर्थात सच्चा और ख़ालिस तौबा है। और इस नफ़्स को इत्मीनान वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ❷ दूसरा व्यक्ति वह जो बड़ी नेकियों पर क़ायम है, लेकिन बिना इरादे के अन्जाने में उस से कुछ गलतियां हो जाती हैं, जिन पर अपने आप को कोसता भी है, और भविष्य में पाप की ओर ले जाने वाले उन असबाब से बचने का पुख़्ता इरादा करता है। और इस नफ़्स को लौवामा अर्थात निन्दा करने वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ❸ तिसरा व्यक्ति वह जो कुछ समय तक अपने तौबा पर क़ायम रहता है, फिर उस पर ख़ाहिश ग़ालिब आजाती है और कुछ पाप कर बैठता है। लेकिन साथ ही नेकी करना नहीं छोड़ता, बल्कि ख़ाहिश और शक्ति के बावजूद दूसरे गुनाहों से बचता है, और जब कभी एक दो बार पाप कर बैठतो तो उस पर अपने आप को कोसता भी है, और उस से तौबा करना चाहता है, तो इस आत्मा से पूछ-ताछ होगी, बल्कि तौबा करने में देरी के कारण इसका अन्जाम बड़ा खतरनाक होसकता है, क्योंकि तौबा किए बिना भी इस की मौत हो सकती है, जबकि ह़िसाब के दिन एतिबार अन्तिम कर्मों का ही होगा। ❹ चौथा व्यक्ति वह है जो कुछ समय तक अपने तौबा पर क़ायम रहने के बाद फिर से गुनाहों में लिप्त होजाता है, तौबे के बारे में सोंचता तक भी नहीं है, और न ही अपने कर्तूत पर पछतावा खाता है, और यही वह आत्मा है जो बुराई का आदेश देती है। और ऐसे व्यक्ति पर बूरी मौत मरने का डर होता है।

सच्चाई : सच्चाई दिल के सारे कर्मों का जड़ है, 6 मआनी में इस का प्रयोग होता है : ❶ बात की सच्चाई। ❷ कस्दो इरादे की सच्चाई अर्थात (इख़्लास)। ❸ पुख़्ते इरादे की सच्चाई। ❹ इरादा पूरा करने की सच्चाई। ❺ कर्म की सच्चाई। इस प्रकार कि बाहिरी कर्म भित्री कर्म अनुसार हो। ❻ पुर्ण रूप से धर्म को अपनाने की सच्चाई। और यह सच्चाई का सब से उच्च

---

[1] रिवायत में आता है कि नबी ﷺ ने फ़र्माया : "अल्लाह तआ़ल के पास रजिस्टर तीन प्रकार के होंगे, एक वह जिस की अल्लाह तआ़ला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, दूसरा वह जिस में से अल्लाह तआ़ला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, तीसरा वह जिसे कि अल्लाह तआ़ला बिल्कुल मुआ़फ़ नहीं करेगा, तो वह रजिस्टर जिसे कि अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ नहीं करेगा शिर्क का रजिस्टर होगा, अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُ﴾ "अवश्य जिस ने शिर्क किया अल्लाह के साथ तो अल्लाह ने उस पर जन्नत को ह़राम कर दिया और उस का ठिकाना जहन्नम है"। और वह रजिस्टर जिस की अल्लाह तआ़ला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, वह है बन्दे का अपने आप पर अन्याय करना जो उस के और उस के रब के बीच हो, तो यदि अल्लाह तआ़ला चाहेगा तो उसे मुआ़फ़ कर देगा, और वह रजिस्टर जिस में से अल्लाह तआ़ला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बन्दों का आपस में एक दूसरे पर अत्याचार करना, तो अल्लाह तआ़ला उन से लाज़िमी बदला दिलाएगा"। इस रिवायत को अह़मद ने किया और इस में कम्ज़ोरी है।

तथा प्रस्थित स्थान है। जैसा कि डर, उम्मीद, बड़ाई, ज़ुह्द, रिज़ामन्दी, भरोसा, प्रेम और दिल के सारे कर्म में सच्चाई। तो जिस व्यक्ति में इन सारी चीज़ों में सच्चाई पाई जाती है, वह सिद्दीक़ है, इसलिए कि वह सच्चाई की अन्तिम सीमा तक पहुंचा हुवा है। और नबी ﷺ का फ़र्मान है : "तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि सच्चाई भलाई का रास्ता दिखाता है, और भलाई जन्नत का रास्ता दिखाता है, और आदमी सदा सच्च बोलता रहता है, और सच्चाई के खोज में रहता है यहां तक कि अल्लाह तआला के पास सिद्दीक़ लिख दिया जाता है"। बुख़ारी और मुस्लिम।
और जिस व्यक्ति पर हक़ के बारे शंका होगया और उस ने नफ़सानी ख़ाहिश के बिना सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर से राहनुमाई चाही तो अधिकतर उसे राहनुमाई मिल जाती है। और यदि हक़ की राहनुमाई न मिल सके तो अल्लाह कहां वह मा'ज़ूर माना जाता है।
सच्चाई का विपरित झूट है, और जूंही झूट दिल से ज़ुबान की ओर बढ़ता है, उसे बर्बाद कर देता है, और इसी ओर अंगों की ओर बढ़ता है और उसे भी बर्बाद कर देता है जिस प्रकार कि ज़ुबान की बातों को बर्बाद कर दिया था, फिर झूट का क़ब्ज़ा हो जाता है उस की बातों पर, उस के कर्मों पर और सारी अवस्था पर।

महब्बत : अल्लाह उस के रसूल और मोमिनों की महब्बत द्वारा ईमान का मीठास प्राप्त होता है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : "जिस व्यक्ति में तीन आदतें हों तो उस ने उन के द्वारा ईमान का मीठास पालिया : ❶ पहला यह कि अल्लाह और उस के रसूल उस के पास बाकी सारे लोगों से अधिक प्रिय हों, ❷ दूसरा यह कि वह लोगों से अल्लाह की ख़ातिर महब्बत करता हो, ❸ तीसरा यह कि वह कुफ्र की ओर लौटना जब कि अल्लाह तआला ने उस से उस को बचा लिया है, इसी तरह ना पसन्द करता है जैसा कि आग में डाला जाना नापसन्द करता है"। बुख़ारी और मुस्लिम। चुनान्चि जब दिल में महब्बद का पौदा गाड़ दिया जाए, और इख़्लास तथा नबी ﷺ की पैरवी द्वारा उस की सीचाई हो, तो अनेकों प्रकार के फल आते हैं, और अल्लाह की मर्ज़ी से यह फल सदा आते रहते हैं। **महब्बत की 4 क़िस्में हैं :** ❶ अल्लाह की महब्बत, जो कि ईमान की बुनियाद है। ❷ अल्लाह तआला के लिए महब्बत[1] और यह वाजिब है।

---

1 **दोस्ती और दुश्मनी के लिहाज़ से लोगों की तीन क़िस्में हैं :** ❶ जिन से ख़ालिस दोस्ती की जाए, ऐसी दोस्ती जिसमें दुश्मनी शामिल न हो, और यह मात्र ख़ालिस मोमिनों से होगी, जैसे अम्बिया और सिद्दीक़ीन से, और इनमें हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उनकी पत्नियाँ, उनकी बेटियाँ और सहाबए किराम رضي الله عنهم सूची में सब से ऊपर हैं। ❷ जिन से बिलकुल दोस्ती जायज़ नहीं, बल्कि उनसे बराअत की जाएगी। और यह हर प्रकार के काफ़िर मुश्रिक और मुनाफ़िक़ हैं। ❸ जिन से उनके गुणों के कारण दोस्ती की जाएगी और अवगुणों के कारण बराअत। और यह पापी मुसलमान हैं, जिनसे इनके ईमान के कारण दोस्ती की जाएगी, और इनके पाप के कारण बैर रख्खा जाएगा। **और काफ़िरों से बराअत** इस प्रकार होगी कि उनसे बैर रखा जाए, उनसे सलाम करने में पहल न किया जाए, उनके सामने न तो झुका जाए और न ही उनसे भयभीत हुवा जाए, और उनके देश से हिजरत की जाए। **और मोमिनों से दोस्ती** इस प्रकार होगी कि यदि शक्ति हो तो मुस्लिम देश की ओर हिजरत की जाए, जान और धन से उनकी सहायता की जाए, उन पर आने वाली मुसीबतों पर दुःखी हुवा जाए, और उनके लिए भलाई पसन्द की जाए। **और काफ़िरों से दोस्ती की दो क़िस्में हैं :** ❶ ऐसी दोस्ती जिसके कारण व्यक्ति इस्लाम के दायरे से निकल जाता है। जैसे उनके धर्म के लिए उन से महब्बत करना। ❷ ऐसी दोस्ती जो कि बड़े पाप, हराम और मक्रूह के दायरे में आती है। जैसे संसारिक बुनियाद पर उन से महब्बत करना। लेकिन जिन काफ़िरों से लड़ाई न हो उनसे अच्छा बर्ताव करने में कोई आपत्ति नहीं है। जैसे उनके कम्ज़ोरों के साथ नरमी बरतना, तथा कृपा का प्रदर्शन करते हुए, डरते हुए नहीं, उनके साथ नरम बातें करना। तो अल्लाह तआला ने इसका आदेश दिया है ﴿لَّا يَنْهَىٰكُمُ ٱللَّهُ عَنِ ٱلَّذِينَ لَمْ يُقَٰتِلُوكُمْ فِى ٱلدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَٰرِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوٓا۟ إِلَيْهِمْ﴾ "जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथा अच्छा

❸अल्लाह तआला जैसी महब्बत : अल्लाह तआला की महब्बत में दूसरों को साझी करना, जैसा कि मुश्रिकों का अपने देवताओं से महब्बत करना, तो यही असल शिर्क है। ❹ फ़ित्री महब्बत : जैसे माँ बाप, और बच्चों से महब्बत, खाने इत्यादि से महब्बत। और यह जायज़ है।

◗ **तवक्कुल :** मक़सद प्राप्त करने के लिए और मक्रूह दूर करने के लिए शरई अस्बाब को अपनाते हुए दिल को अल्लाह की ओर फेर कर उसी पर भरोसा करने का नाम तवक्कुल है। चुनान्चि अस्बाब को न अपनाना अक़्ल में कमी है और दिल को अल्लाह की ओर न फेरना यह तौहीद पर हमला है, किसी भी काम को करने से पहले तवक्कुल किया जाता है, जो कि विश्वास और यक़ीन का फलस्वरूप है। तवक्कुल की तीन क़िस्में हैं : ❶ **वाजिब :** जिन चीज़ों के करने की ताक़त अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी दूसरे को प्राप्त नहीं है, उनके बारे में मात्र अल्लाह पर भरोसा करना, जैसे : निरोग करना। ❷ **ह़राम :** इस की दो क़िस्में हैं। ① शिर्के अक्बर : सम्पुर्ण रूप से अस्बाब पर भरोसा करलेना कि उन्हीं के कारण हमें नफ़ा या नुक़्सान होता है।[1] ② शिर्के अस्ग़र : जैसे रोज़ी के बारे में किसी व्यक्ति पर भरोसा करलेना, सम्पुर्ण रूप से उसके प्रभाव का अक़ीदा न रखता हो लेकिन उसे सबब से बढ़कर समझता हो। ❸ जायज़ : खरीदने और बेचने जैसी चीज़ में जिसकी इन्सान ताक़त रखता हो, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के ऊपर भरोसा करना। लेकिन यहां पर यह कहना जायज़ न होगा कि मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया फिर आप पर, बल्कि यूँ कहे : मैं ने आप को वकील बनाया।

◗ **शुक्र :** दिल में ईमान, ज़ुबान पर ता'रीफ़ और अंगों द्वारा कर्म के रूप में बन्दे पर अल्लाह की नेमतों का असर प्रकट होने का नाम शुक्र है। जो कि स्वयं मक़्सूद है, जबकि सब्र

सुलूक और एह़सान करने, और न्याय वाला बर्ताव करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता"। और उनसे दुश्मनी और बैर रखने का भी आदेश दिया है :
﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَتَّخِذُواْ عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمۡ أَوۡلِيَآءَ تُلۡقُونَ إِلَيۡهِم بِٱلۡمَوَدَّةِ﴾ "हे वे लोग जो ईमान लाये हो! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ कि तुम दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजो"। तो उनसे कीना और बैर रखने के साथ साथ उनके मामलों में उनके साथ न्याय किया जा सकता है। जैसा कि नबी ﷺ ने मदीना के यहूदियों के साथ किया।

[1] किया अस्बाब अपनाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ है? इस के कई रूप हैं : ❶ ऐसे फ़ाइदा की प्राप्ति के लिए प्रयास करना जो कि मौजूद नहीं है : और इस की तीन क़िस्में हैं : ① ऐसा सबब जो कि यक़ीनी है, जैसे बच्चा पाने के लिए निकाह़ करना, तो बच्चा पाने के लिए इस सबब को न अपनाना तवक्कुल नहीं बल्कि पागलपन है। ② जो कि यक़ीनी नहीं है, लेकिन आम तौ़र पर उन के बिना मक़्सूद ह़ासिल नहीं होता, जैसे बिना यात्रा के सामान के सिहरा का सफ़र करना, तो ऐसा करना तवक्कुल नहीं है, बल्कि सामान लेकर जाने का आदेश आया है, बल्कि नबी ﷺ ने हिज्रत के समय स्वयं रास्ते का सामान लिया और एक गाइड भी साथ में रख्वा। ③ ऐसे अस्बाब जो मक़्सूद तक पहुंचा सकते हैं लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जासकता है, जैसे कोई अनेक रास्ते द्वारा जिविका प्राप्त करने के लिए प्रयास करे, तो यह तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है, उमर رضي الله عنه ने फ़र्माया : "तवक्कुल करने वाला वह है जो बीज को धर्ती में डालता है और अल्लाह पर भरोसा करता है"। ❷ जो चीज़ मौजूद उसे सुरक्षित करना : तो जिसे जिविका प्राप्त हो गया हो और वह उसे स्टोर कर रहा हो तो यह तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है, खासकर जब कि वह बाल-बच्चे वाला हो, नबी ﷺ बनू नज़ीर की खजूर से बेचते थे और अपनी फैमिली के लिए साल भर का खाना बचा के रखते थे। बुखारी और मुस्लिम। ❸ सबब द्वारा ऐसी मुसीबत को दूर करना जो अभी आई नहीं है, और यह तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है, जैसे जिरः पहनना या ऊँट को भागने के डर से रस्सी से बांधे रखना, पर भरोसा सबब पर नहीं बल्कि मुसब्बि (अल्लाह) पर करे, और उस के हर फ़ैसले से राज़ी हो। ❹ जो मुसीबत आ पड़ी है उसे दूर करने के लिए सबब अपनाना। और इस की तीन किस्में हैं : ① यक़ीनी हो, जैसा कि पानी पियास को बुझाता है, लिहाज़ा पानी न पीना तवक्कुल नहीं है। ② जो कि यक़ीनी न हो, जैसे पछना लगवाना, तो यह भी तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है, क्योन्कि नबी ﷺ ने स्वयं उपचार कराया और उस का आदेश भी दिया। ③ जो कि वहमी हो, जैसे निरोग अवस्था में रोगी न होने के लिए दगवाना, तो यह परिपुर्ण तवक्कुल के ख़िलाफ़ है।

दूसरों के लिए वसीला होता है, और इसका भी सम्पर्क दिल, ज़ुबान और अंगों से होता है, और शुक्र का अर्थ होता है कि नेमतों का प्रयोग अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त के लिए की जाए।

सब्र : दुःख और तकलीफ़ पर गैरुल्लाह से शिकायत न करके अल्लाह पर भरोसा रखते हुए धैर्य करना। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है : ﴿إِنَّمَا يُوَفَّى ٱلصَّٰبِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ **"सब्र करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है"।**

और नबी ﷺ ने फ़र्माया : وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ الله وَمَا أُعْطِيَ أَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ **"और जो सब्र के लिए प्रयास करता है अल्लाह तआ़ला उसे सब्र अ़त़ा कर देता है, और किसी भी व्यक्ति को सब्र से अफ़ज़ल और बढ़कर कोई चीज़ नहीं दी गई"।**

और उमर ﷛ का फ़र्मान है : "मुझ पर जो भी मुसीबत आई उस में अल्लाह तआ़ला की ओर से चार नेमतें थीं; एक तो यह कि वह मेरे दीन में नहीं थी, दूसरी यह कि वह उस से बड़ी नहीं थी, तिसरी यह कि उस पर राज़ी होने से मैं महरूम नहीं हुआ, और चौथी यह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है"।

और सब्र के कई एक दर्जे हैं : कम्तर दर्जा : यह है कि बन्दा दुःख तक्लीफ़ को ना-पसन्द करे पर किसी से उसका शिक्वा न करे। बीच का दर्जा : यह है कि अपनी तक़्दीर पर राज़ी होते हुए किसी से अपनी तक्लीफ़ का शिक्वा न करे। उत्तम दर्जा : यह है कि मुसीबत पर अल्लाह तआ़ला की ता'रीफ़ करे। और यदि मज़्लूम व्यक्ति ने अत्याचारी को श्रापा तो गोया उसने अपनी मदद चाही और अपना ह़क़ प्राप्त कर लिया और उसने सब्र नहीं किया।

सब्र की दो क़िस्में हैं : ❶ शरीरिक सब्र : हमें इसके बारे में यहां पर चर्चा नहीं करना है। ❷ नफ़सानी सब्र : दिल की ख़ाहिशात पर आत्मा द्वारा सब्र करे।[1]

और इन्सान को दुनिया में जो भी चीज़ लाह़िक़ होती है उसकी दो क़िस्में हैं : ❶ या तो उसके इच्छा अनुसार हो तो इसमें भी अल्लाह का ह़क़ अदा करने के लिए सब्र की ज़रूरत है, ताकि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और गुनाह के लिए उसका प्रयोग न करे। ❷ उसकी ख़ाहिश के ख़िलाफ़ हो, और इस की तीन क़िस्में हैं : ① अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त पर सब्र करना, जो कि उनमें से फ़र्ज़ अदा करने वाजिब है और नफ़्ल अदा करने के लिए मुस्तह़ब है। ② अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानी से दूर रहने के लिए सब्र करना, जो कि उनमें से ह़राम काम को छोड़ने के लिए वाजिब है, और मक्रूह को छोड़ने के लिए मुस्तह़ब है। ③ अल्लाह तआ़ला की बनाई हूई तक़्दीर पर सब्र करना, और वाजिब है कि ज़ुबान को शिकवा करने से रोके रख्खे, दिल को तक़्दीर पर एतिराज़ करने तथा नाराज़ होने से रोके, और इसी प्रकार जिन चीज़ों से अल्लाह नाराज़ होता है उन से अंगों को रोके, जैसे मातम करना, कपड़े फाड़ना, चेहरा पीटना इत्यादि। और इस बारे में मुस्तह़ब यह है कि अल्लाह की बनाई हुई तक़्दीर से बन्दा राज़ी हो जाए।

---

[1] यदि पेट और लिंग सम्बन्धित चीज़ों पर सब्र किया जाए तो इसे : "इफ़्फ़त" कहते हैं, और यदि युद्ध में सब्र किया जाए तो इसे : "शुजाअ़त" कहते हैं। यदि गुस्सा पी लिया जाए तो इसे : "ह़िल्म" कहते हैं, यदि किसी चीज़ को छुपाने के लिए सब्र किया जाए तो इसे : "कितमाने सिर्र" कहा जाता है। यदि जीवन की फालतू सुख छोड़ने के लिए हो तो इसे : "ज़ुह्द" कहते हैं। और यदि मामूली सुख चैन छोड़ने के लिए हो तो इसे : "क़िनाअ़त" कहते हैं।

इन दोनों व्यक्तियों में से कौन सर्वश्रेष्ठ है : शुक्र करने वाला मालदार, या सब्र करने वाला फ़क़ीर? यदि धनी व्यक्ति अपने माल को अल्लाह के रास्ते में खर्च करता है, या अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए इकट्ठा करता है तो यह फ़क़ीर से उत्तम है, और यदि वह अधिक ख़र्च मुबाह़ चीजों में करता है तो फिर फ़क़ीर उत्तम है।

◗ **रिज़ामन्दी :** जो मिल जाए उसी को काफ़ी समझना और उस पर खुश रहना। किसी भी काम के होने के बाद रिज़ामन्दी की बात आती है, और अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले से राज़ी रहना यह सेवकों का उच्च मुक़ाम है, जो कि अल्लाह से मह़ब्बत और उस पर भरोसा रखने का फल है। और यह बात भी स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआ़ला से दु:ख और मोसीबत को टालने की दुआ़ करना उस की तक़्दीर पर रिज़ामन्दी के ख़िलाफ़ नहीं है।

◗ **खुशूअ़ :** आजिज़ी, इन्किसारी और नर्मता का नाम खुशूअ़ है, हुज़ैफ़ा ﵁ ने कहा कि निफ़ाक़ वाले खुशूअ़ से बचो। लोगों ने पूछा क्या मतलब? तो उन्हों जवाब दिया, मतलब यह है कि : शरीर से आजिज़ी प्रकट हो जब कि दिल पर उस का कोई प्रभाव न हो। और हुज़ैफ़ा ﵁ ने ही कहा कि : तुम अपने धर्म में से सब से पहले खुशूअ़ को खो दोगे। और जिस इबादत के लिए खुशूअ़ अनिवार्य है तो उस इबादत का सवाब खुशूअ़ के आधार पर ही होगा, जैसे नमाज़ : नबी ﷺ ने नमाज़ी के बारे में कहा कि उसे नमाज़ के सवाब का आधा, एक चौथाई, पांचवा ह़िस्सा, ... दसवां ह़िस्सा प्राप्त होता है, बल्कि बिल्कुल खुशूअ़ न पाए जाने के कारण वह पूरे सवाब से महरूम होजाता है।

◗ **रह़मत की उम्मीद :** इस का विपरित ना-उम्मीदी है, और उम्मीद के सहारे नेकी करना डर के कारण करने से उत्तम है, क्योन्कि उम्मीद द्वारा सेवक अल्लाह के बारा अच्छा गुमान रखता है। और अल्लाह तआ़ला कहता है : "मैं अपने सेवक के गुमान अनुसार रहता हूं"। मुस्लिम। और इस के दो दर्जे हैं : **उत्तम दर्जा** यह है कि बन्दा नेकी करे और सवाब की उम्मीद रख्खे। आइशा ﵂ ने पुछा ऐ अल्लाह के रसूल! ﴿وَٱلَّذِينَ يُؤۡتُونَ مَآ ءَاتَواْ وَّقُلُوبُهُمۡ وَجِلَةٌ﴾ "**और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, और उनके दिल कपकपाते रहते हैं**" यह डरने वाले वह हैं जो कि चोरी करते, बलात्कार करते, शराब पीते? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : सिद्दीक़ की बेटी यह नहीं हैं, बल्कि वह लोग हैं जो कि नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, सद्क़ा करते हैं, और उन्हें डर होता है कि कहीं स्वीकार न हो। ﴿أُوْلَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ فِي ٱلۡخَيۡرَٰتِ﴾ "**और यही हैं जो जलदी जलदी भलाइयां प्राप्त कर रहे हैं**"। तिर्मीज़ी। और **कम्तर दर्जा :** उस तौबा करने वाले पापी का है जो की रह़मत के आस में है। अल्बत्ता ऐसा पापी जो कि पाप पर पाप किए जाता और तौबा के बारे में सोंचता तक भी नहीं और साथ अल्लाह की रह़मत के आस में भी है, तो यह वास्तव में तमन्ना करना है, न कि उम्मीद रखना। और यह चीज़ बूरी है, जबकी उम्मीद लगाए रहना प्रशंसा के क़ाबिल है। चुनान्चि मोमिन भलाई करते हुए भी डरता रहा, जब्कि मुनाफ़िक़ बुराई करता रहा और स्वयं को सुरक्षित समझा।

◗ **डर :** किसी दु:ख या तक्लीफ़ के पहुंचने का सोंच कर लाह़िक़ होने वाला ग़म, यदि दु:ख का पहुंचना निश्चत हो तो उसे ख़श्यत (डर) कहते है, जिसका विपरित शान्ति है, और यह उम्मीद के विपरित नहीं है, क्योन्कि डर, भय के कारण पैदा होता है, जब्कि उम्मीद चाहत के कारण जगती है, और इबादत में मह़ब्बत, डर और उम्मीद का सन्गम ज़रूरी है, इब्ने क़ैयिम ﵀ कहते हैं : अल्लाह की ओर लगने में दिल का उदाहरण चरा की तरह है, मह़ब्बत उस

का सर है, और डर तथा उम्मीद उस के दोनों पर हैं, यदि दिल में भय अपना स्थान बना ले तो शहतों को जला कर रख देगा, और दुनिया के मोह को उस से दूर कर देगा।

और वाजिबी डर वह है जो फ़र्ज़ इबादतों के करने और ह़राम चीज़ों के छोड़ने पर आमादा करे। और **मुस्तह़ब डर वह है** जो मुस्तह़ब कामों के करने और मक्रूह कामों के छोड़ने पर आमादा करे, **और इस की कई एक क़िस्में हैं :** ❶ **वाजिब :** भित्री डर जिस का अल्लाह तआला के लिए होना वाजिब है, और किसी दूसरे इस प्रकार भय करना बड़ा शिर्क है, जैसा कि मुश्रिकों के माबूदों (उपास्यायों) से डरना कि वे उन्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचा दें। ❷ **ह़राम :** लोगों के डर से किसी वाजिब काम को छोड़ देना या ह़राम काम करना। ❸ **जायज़ :** फ़ित्री डर जैसे भेड़िए इत्यादि से डरना।

◗ **ज़ुह्द :** अपने आत्मा की चाहत को तुच्छ इच्छा के बजाए भलाई की ओर फेरना ज़ुह्द कहलाता है। और दुनिया की मोह से अपने आप को दूर रखना दिल तथा शरीर के लिए आराम-दायक है, और इस की चाहत में खोजाना सोंच तथा फ़िक्र को बढ़ावा देता है, दुनिया की चाहत हर बूराई की जड़ है, और उसे तुच्छ जानना हर नेकी का सबब है, और दुनिया के बारे में ज़ुह्द यह है कि आप उसे अपने दिल से निकाल बाहर करें, न कि अंगों द्वारा दूरी प्रकट करें और दिल में उसी की मह़ब्बत बसी हो, यह जाहिलों का ज़ुह्द है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : "अच्छे व्यक्ति के लिए अच्छा माल क्या ही सुन्दर है"। अह़मद। **फ़क़ीर व्यक्ति का माल के साथ पाँच अवस्था है :** ❶ माल को ना-पसन्द करते हुए और उस की परिशानियों में उलझने से बचते हुए उसे अपनाने से दूर भागे, और ऐसा व्यक्ति ज़ाहिद कहलाता है। ❷ माल प्राप्त होने पर खुश न होता हो, और नहीं उसे इतना ना-पसंद करता कि उस के कारण उसे तक्लीफ़ हो ऐसा व्यक्ति राज़ी कहलाता है। ❸ माल का होना न होने से अधिक मह़बूब हो, और उसे पसन्द भी करे, पर ऐसा नहीं कि उसे पाने के लिए मेहनत करता हो, बल्कि यदि मिल गया तो अपना ले, और उस पर खुश भी हो, और यदि पाने के परिश्रम करना पड़े तो उस से दूर रहे, और ऐसा व्यक्ति क़ानिअ़ कहलाता है। ❹ निर्बस होने के कारण वह माल पाने की प्रयास न करता हो, वर्ना उस के भित्र माल पाने की चाहत मौजूद हो, और यदि परिश्रम द्वारा भी उसे पा सकता हो तो उस के लिए प्रयास करना न छोड़े। और ऐसा व्यक्ति ह़रीस कहलाता है। ❺ जिस माल को प्राप्त करने की प्रयास कर रहा हो उसे पाने के लिए मुज़्त़र हो जैसे भूका और नंगा व्यक्ति, जिस के पास न तो खाना हो न कपड़ा। और ऐसा व्यक्ति मुज़्त़र कहलाता है।

एक गंभीर बात-चीत

नीचे की यह बात-चीत ऐसे दो व्यक्तियों के बीच हुई है जिन में से एक का नाम **अब्दुल्लाह** और दूसरे का नाम **अब्दुन्नबी** है, **अब्दुल्लाह** की भेंट जब पहली बार **अब्दुन्नबी** से हुई तो इस नाम से उसे कुछ अचंभा सा हुवा, और वह अपने दिल में सोचने लगा कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करे, चुनाँचे आश्चर्य करते हुए उसने **अब्दुन्नबी** से यह पूछा कि : क्या आप अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा करते है?

अब्दुन्नबी : कदापि नहीं, मैं तो ख़ालिस मुसलमान हूँ, मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ।

अब्दुल्लाह : फिर आप का यह कैसा नाम है? यह तो ईसाइयों जैसा नाम है, जो अपने नाम अब्दुल् मसीह़ रखते हैं, और उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे ईसा عليه السلام को अपना उपास्य मानते हैं, और उनकी पूजा करते हैं।

आपका यह नाम जो भी सुनेगा उसके दिमाग़ में यही बात आएगी कि आप नबी के बन्दे हैं, और मुसलमान का आस्था अपने नबी ﷺ के बारे ऐसा कदापि नहीं है, बल्कि हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह यह अक़ीदा रखे कि नबी ﷺ अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन हमारे नबी ﷺ सब से उत्तम व्यक्ति हैं, और सारे रसूलों के सरदार हैं, हम अपना यह नाम तबर्रुक के लिए रखते हैं, और नबी की उस मर्यादे से जो अल्लाह के पास उन्हें प्राप्त है अल्लाह की नज़दीकी चाहते हैं, यही कारण है कि हम नबी ﷺ से उनके उसी मर्यादे के कारण जो उनके रब के पास उन्हें प्राप्त है शफ़ाअत चाहते हैं, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरा एक भाई है उसका नाम **अब्दुल्-हुसैन** है, और मेरे पिता का नाम **अब्दुर्रसूल** है, इस तरह के नाम पुर्खों से चले आरहे हैं, और यह लोगों में प्रसिद्ध है, हमने अपने पुर्खों को इसी अक़ीदे और आस्थे पर पाया है, इसलिए आप को इस मामले में सख़्ती से काम नहीं लेना चाहिए क्योंकि धर्म आसान है।

अब्दुल्लाह : यह तो पहले से भी अधिक भयानक और भयंकर ग़लती है कि आप ग़ैरुल्लाह से ऐसी चीज़ मांगे जिसे देने पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को शक्ति प्राप्त न हो, चाहे जिससे यह चीज़ मांगी गई हो वह नबी हों, या उनसे कम दर्जे का बुज़ुर्ग या वली, जैसे हुसैन, या कोई और ही क्यों न हो। यह तौह़ीद और "لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ" के विरुद्ध है।

मैं आप से कुछ प्रश्न करुंगा ताकि आप पर मामले का भयानकपन और इस तरह के नाम रखने के बुरे परिणाम स्पष्ट होजाएं, इससे मेरा उद्देश्य मात्र सत्य की पैरवी और उसकी इत्तेबा'अ् है, असत्य की स्पष्टता और उससे दूरी है, और भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है, इसके सिवाय मेरा कोई और उद्देश्य नहीं। وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْهِ التُّكْلَانُ، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

मैं आपके सामने अल्लाह तआला का यह फ़रमान पेश करता हूँ :

﴿إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾ **"ईमान वालों का कहना यह होता है : जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उसका रसूल उनमें फ़ैसला करदे तो वे कहते हैं हम ने सुना और मान लिया।"**

और उसने यह भी फ़रमाया: ﴿فَإِن تَنَٰزَعْتُمْ فِى شَىْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ﴾

"फिर यदि तुम किसी चीज़ में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर लौटाओ यदि तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो।"

अब्दुल्लाह : अभी आप ने कहा है कि आप अल्लाह को एक मानते और इस बात की गवाही देते हैं कि उसके सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, तो क्या आप हम से यह स्पष्ट करेंगे कि उसका मतलब क्या है?

अब्दुन्नबी : तौहीद यह है कि आप इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह आकाश और धरती का सृष्टा है, वही जीवित रखता है और मृत्यु देता है, वही पृथ्वी का मुदब्बिर और व्यवस्थापक है, और पूरी सृष्टि को वही जीविका प्रदान करता है।

अब्दुल्लाह : यदि यही तौहीद की तारीफ़ है तो इस तारीफ़ की रू से फ़िरऔन और अबू जहल इत्यादि सभी तौहीद परस्त होंगे; क्योंकि उनमें से कोई भी इन चीज़ों का जिन्हें आप ने अभी ज़िक्र किया है इन्कार नहीं करता था। फ़िरऔन जिसने अपने रब होने का दावा किया था, वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानता था, और यह भी स्वीकार करता था कि पृथ्वी का व्यवस्थापक अल्लाह ही है। इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿وَجَحَدُوا۟ بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا﴾ **"उन्होंने इसका इन्कार किया हालांकि उनके दिल विश्वास कर चुके थे, मात्र उद्दंडता और घमंड के कारण।"** इसका यह एतराफ़ उस समय खुल कर सामने आगया जब वह डूबने लगा था।

तौहीद यह नहीं है, बल्कि वास्तव में वह तौहीद जिसकी वजह से रसूल भेजे गए, किताबें उतारी गईं और कुरैश से लड़ाई की गई वह इबादत और पूजा में अल्लाह को एक मानना है, इबादत एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ में सारे ज़ाहिरी और बातिनी कथन और कर्म को इकट्ठा किए हुए है जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है और जिन से खुश होता है। لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ में إِلَٰه के माय्ने ऐसे उपास्य के है, जिसके सिवाय किसी और की इबादत ठीक नहीं।

अब्दुल्लाह : क्या आपको इसकी जानकारी है कि धरती पर रसूलों को क्यों भेजा गया, जिन में सब से पहले रसूल नूह عليه السلام हैं?

अब्दुन्नबी : हाँ, रसूलों को इसलिए भेजा गया ताकि वे शिर्क करने वालों को मात्र अल्लाह की इबादत करने और गैरुल्लाह (जिन्हें वे अल्लाह की इबादत में साझी बनाते थे उन) की इबादत छोड़ देने की ओर बुलाएं।

अब्दुल्लाह : अच्छा आप यह बता सकते हैं कि नूह عليه السلام के समुदाय के शिर्क का कारण क्या था?

अब्दुन्नबी : मैं नहीं जानता कि इसका क्या कारण था।

अब्दुल्लाह : अल्लाह ने नूह عليه السلام को उनके समुदाय की ओर इसलिए भेजा कि उनके समुदाय ने अपने बुज़ुर्ग और नेक व्यक्ति : वद्द, सुवा'अ्, यगूस, यऊक़ और नस्र के बारे में गुलू और सीमा पार किया था।

अब्दुन्नबी : क्या आपकी मुराद यह है कि वद्द, सुवा'अ्, यगूस, यऊक़ और नस्र उनके समुदाय के बुज़ुग और नेक लोगों के नाम हैं, सरकश काफ़िरों के नाम नहीं?

अब्दुल्लाह : हाँ, यह उनके उपास्यों के नाम हैं जिनकी वह लोग इबादत करते थे, और उन्हीं की आज्ञाकारी अरब-बासी भी कर रहे थे, यह वास्तव में उनकी क़ौम के नेक और परहेज़गार व्यक्तियों के नाम हैं, इसका प्रमाण उस हदीस में है जिसे इमाम बुख़ारी رحمه الله ने इब्ने अब्बास رضي الله عنهما से रिवायत किया है कि : यह नूह عليه السلام के समुदाय के नेक व्यक्ति थे, जब यह मर गए तो शैतान ने इनकी क़ौम के दिलों में यह बात डाल दी कि तुम उनके मूर्ती बनाकर अपनी बैठकों में जिनमें तुम बैठते हो रख लो, और उन मूर्तीयों के भी वही नाम रख लो जो उन नेक व्यक्तियों के थे, तो उन्हों ने ऐसा ही किया, पर उन्हों ने ऐसा उनकी पूजा करने के लिए

नहीं किया था, बल्कि मात्र इसलिए किया था कि इससे उनकी याद ताज़ा रहेगी, फिर जब यह लोग मर गए और ज्ञान भुला दिया गया तो उन मूर्तियों की पूजा होने लगी।

अब्दुन्नबी : यह तो अचंभे वाली बात है।

अब्दुल्लाह : क्या मैं इससे भी आश्चर्य-जनक बात न बताऊँ? आप यह भी जान लीजिए कि अन्तिम नबी मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने एक ऐसी क़ौम की ओर रसूल बनाकर भेजा, जो इबादत करते थे, हज्ज करते थे, दान-दक्षिना देते थे, लेकिन साथ-साथ अल्लाह की मख़्लूक़ात को अपने और अल्लाह के बीच वसीला और वास्ता बनाते थे, और कहते थे कि हम उनके द्वारा नज़दीकी चाहते हैं, अल्लाह के यहाँ हम फ़रिश्तों की, ईसा عليه السلام की, और उनके अलावा दूसरे नेक व्यक्तियों की सिफ़ारिश चाहते हैं, तो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को नबी बनाकर भेजा, ताकि आप उनके लिए उनके पिता इब्राहीम عليه السلام के धर्म को दोबारा से जीवित करें, और उन्हें यह बताएं कि इस तरह का तक़र्रुब और आस्था मात्र अल्लाह का हक़ है, इसमें से ग़ैरुल्लाह के लिए कोई भी चीज़ जायज़ नहीं, अल्लाह ही अकेला पैदा करने वाला है, उसमें उसका कोई साझी नहीं, मात्र वही जीविका प्रदान करता है, उसमें भी उसके साथ कोई और शरीक नहीं।

और सातों आकाश और धरती और जो भी इनमें हैं सब उसके बन्दे, सेवक और दास हैं, सारी चीज़ें उसके अधीन हैं और वही उनका उपायकर्ता है, यहाँ तक कि वे सारे उपास्य भी जिन की वे पूजा करते थे वे भी यही स्वीकारते थे कि वे उसी की उपाय के अधीन हैं।

अब्दुन्नबी : यह तो बड़ी महत्व की बात है, इसका कोई प्रमाण भी है?

अब्दुल्लाह : हाँ, बहुत से प्रमाण हैं, उन्हीं में से अल्लाह का यह फ़रमान है :

﴿ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴾

"आप कहिए कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा अधिकार रखता है? और कौन है जो ज़िन्दा को मरे हुए से निकालता है? और मरे हुए को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन है जो सारे कामों की तद्बीर करता है? तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?" और यह भी फ़र्माया:

﴿ قُل لِّمَنِ ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴾

"पूछिए तो सही कि धरती और उसकी सारी चीज़ें किसकी हैं, बताओ यदि तुम जानते हो? तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं लेते? पूछिए कि सातों आकाशों का और बड़े अर्श का रब कौन है? वह लोग जवाब देंगे अल्लाह ही है, कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते? पूछिए कि सारी चीज़ों का अधिकार किस के हाथ में है? जो शरण देता और जिसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दिया जाता यदि तुम जानते हो तो बतलादो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो?"

मुश्रिक़ीन हज्ज के तल्बिया में यह कहते थे: لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، إِلَّا شَرِيْكًا هُوَ لَكَ تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ हाज़िर हूँ, हे अल्लाह हाज़िर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं सिवाय एक साझी के, जो तेरे ही लिए है तू ही उसका मालिक है, और उन चीज़ों का भी जिसका वह मालिक है।

इस इक़्रार ने कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है क़ुरैश के मुश्रिकीन को इस्लाम में प्रवेश न करा सका, बल्कि उनके ख़ून और धन को मात्र इस चीज़ ने ह़लाल कर दिया कि वे अपने लिए फ़रिश्तों, नबियों और वलियों की सिफ़ारिश चाहते थे।
इसलिए हर तरह की दुआ, नज़र और क़ुर्बानी मात्र अल्लाह के लिए करना और मात्र अल्लाह ही से सहायता चाहना, और प्रत्येक क़िस्म की इबादत को मात्र उसी के लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है।
अब्दुन्नबी : "अल्लाह के होने का इक़्रार करना, और इस बात का इक़्रार करना कि वही संसार में फेर-बदल करने वाला है", आपके गुमान के अनुसार यदि यह तौह़ीद नहीं है, तो फिर तौह़ीद है क्या?
अब्दुल्लाह : जिस तौह़ीद के कारण रसूलों को भेजा गया, और जिसका मुश्रिकों ने इन्कार किया, वह तौह़ीद मात्र एक अल्लाह तआला की इबादत करना है; तो किसी भी तरह की इबादत चाहे वह दुआ हो, या नज़र हो, या ज़ब्ह़ करना, फ़र्याद करना, और सहायता मांगना वग़ैरह हो अल्लाह के सिवाय दूसरों के लिए नहीं की जासकती। और यही वह तौह़ीद है जिसका इक़्रार आप لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ के द्वारा करते हैं; क्योंकि क़ुरैश के मुश्रिकीन के नज़्दीक إِلَٰه वह है जिसका इन इबादतों द्वारा क़स्द किया जाए, चाहे वह फ़रिश्ता हो, या नबी हो, या वली हो, या पेड़ हो, या क़ब्र हो, या जिन्न हो, और उन्होंने إِلَٰه का अर्थ पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, या बन्दोबस्त करने वाला नहीं समझा, इसलिए कि वह यह जानते थे कि यह सारी चीज़ें मात्र अल्लाह की हैं, जैसा कि पीछे गुज़र चुका। और नबी ﷺ उनके पास कल्मए तौह़ीद لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ की दावत देने और उसके अर्थ को अपनी जीवन पर लागू करने के लिए आए थे न कि मात्र इसलिए कि ज़ुबान से इस कल्मे को कह लें।
अब्दुन्नबी : गोया कि आप यह कहना चाहते हैं कि क़ुरैश के मुश्रिकीन لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ के अर्थ को हमारे इस ज़माने के बहुत से मुसलमानों से अधिक जानते थे?
अब्दुल्लाह : हाँ, यह दुःख-दायक वास्तविक्ता है, और बड़े अफ़सोस की बात है कि जाहिल काफिर यह जानते थे कि इस कल्मे से नबी ﷺ की मुराद : इबादत को मात्र अल्लाह के लिए ख़ालिस करना है, और अल्लाह के सिवाय जिन जिन चीज़ों की पूजा की जाती है उन सब का इन्कार करना और उनसे अपनी बराअत ज़ाहिर करना है; क्योंकि जब आप ﷺ ने उनसे यह कहा कि तुम لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ कहो, तो उन्होंने जवाब में कहा : ﴿ أَجَعَلَ ٱلْـَٔالِهَةَ إِلَٰهًا وَٰحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ﴾ **क्या इसने इतने सारे मा'बूदों (उपास्यों) का एक ही मा'बूद (उपास्य) कर दिया, वास्तव में यह बहुत ही अजीब बात है।**
जबकि वह यह ईमान भी रखते थे कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है, तो तअज्जुब है इस्लाम के उन दावेदारों पर जिन्हें इस कल्मे का उतना भी अर्थ मालूम नहीं जितना कि जाहिल काफ़िरों को था। बल्कि वह समझता हैं कि इन ह़र्फ़ों को मात्र ज़ुबान से इनके अर्थ का दिल में विश्वास रखे बिना अदा कर लेना ही काफ़ी है, और उनमें जो अपने आप को होश्यार जानते हैं वह इसका अर्थ यह समझते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा पैदा नहीं करता, रोज़ी नहीं देता, और न ही बन्दोबस्त करता है, तो इस्लाम के ऐसे दावेदारों में कोई भलाई नहीं है जिन के मुक़ाबले में जाहिल काफ़िर لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ के अर्थ को अधिक बेहतर जानते हों।
अब्दुन्नबी : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ही पैदा करता वही रोज़ी देता वही अकेले लाभ और हानि पहुँचाता इनमें उसका कोई साझी नहीं है, और यह कि स्वयं मुहम्मद ﷺ भी अपने लिए लाभ और हानि की शक्ति

नहीं रखते, और न ही अली رضي الله عنه हूसैन رضي الله عنه और अब्दुल् क़ादिर رحمه الله वग़ैरा, लेकिन मैं पापी हूँ, और इन नेक लोगों का अल्लाह के पास ऊँचा मक़ाम है और उन्हीं के द्वारा मैं अल्लाह के पास उनकी सिफ़ारिश चाहता हूँ।

अब्दुल्लाह : इसके जवाब में मैं आप से वही कहूँगा जो इस से पहले कह चुका हूँ, कि नबी ﷺ ने जिन लोगों से लड़ाई की वे भी इन सारी चीज़ों को मानते थे, और यह भी मानते थे कि उन की मुर्तियाँ संसार में कोई हेर फेर नहीं करती हैं, वे मात्र उनसे सिफ़ारिश चाहते थे, जैसा कि हम क़ुरआनी प्रमाण द्वारा इस से पहले बता चुके हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन वे आयतें तो उनके बारे में उतरी हैं जो मूर्तियों की पूजा करते थे, तो आप नबियों और नेक लोगों को मूर्तियों के जैसे कैसे बना सकते हैं?

अब्दुल्लाह : इस बात पर पहले इत्तिफ़ाक़ होचुका है कि कुछ मूर्तियों के नाम नेक लोगों के नाम पर रखे गए थे, जैसा कि नूह़ عليه السلام के ज़माने में हुवा, और काफ़िरों ने उनके द्वारा अल्लाह के नज़दीक मात्र सिफ़ारिश ही चाही, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उनका ऊँचा मक़ाम है, इसके प्रमाण में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿ وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَ مَا نَعۡبُدُهُمۡ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلۡفَىٰٓ ﴾ **और जिन लोगों ने अल्ला के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उन की इबादत मात्र इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से क़रीब करदें।**

आप का यह कहना कि तुम वलियों और नबियों को बुत कैसे कह रहे हो? तो हम इस बारे में आप को यह बता देना चाहते हैं कि जिन काफ़िरों के पास अल्लाह के नबी भेजे गए उनमें ऐसे भी लोग थे जो वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَدۡعُونَ يَبۡتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ ٱلۡوَسِيلَةَ أَيُّهُمۡ أَقۡرَبُ وَيَرۡجُونَ رَحۡمَتَهُۥ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُۥٓۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحۡذُورٗا ﴾

"जिन्हें यह लोग पुकारते हैं स्वयं वे अपने रब की क़ुर्बत की तलाश में रहते हैं कि उनमें कोई अधिक क़रीब होजाए, वह स्वयं उसकी रह़मत की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं।"

और उनमें से कुछ ईसा عليه السلام और उनकी माँ को पूकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿ وَإِذۡ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَى ٱبۡنَ مَرۡيَمَ ءَأَنتَ قُلۡتَ لِلنَّاسِ ٱتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيۡنِ مِن دُونِ ٱللَّهِ ﴾ **"और वह समय भी याद करने के क़ाबिल है जबकि अल्लाह फ़रमाए गा कि ऐ ईसा बिन मर्यम क्या तुम ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय मा'बूद (उपास्य) बना लो?"**

और इसी तरह उनमें से कुछ फ़रिश्तों को पुकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿ وَيَوۡمَ يَحۡشُرُهُمۡ جَمِيعٗا ثُمَّ يَقُولُ لِلۡمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمۡ كَانُواْ يَعۡبُدُونَ ﴾ **"और जिस दिन अल्लाह तआला सभों को इकट्ठा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?"**

इन आयतों पर ज़रा ध्यान दीजिए अल्लाह तआला ने उन्हें काफ़िर क़रार दिया जो मूर्तियों से मांगते थे, और इसी प्रकार बिना कोई फ़र्क़ किए उन्हें भी काफ़िर क़रार दिया जो नेक लोगों को पुकारा करते थे चाहे वे पुकारे जाने वाले अमबिया हों, या फ़रिश्ते या औलिया। और नबी ﷺ ने इसी कारण उन से जिहाद किया और इस बारे उनमें फ़र्क़ नहीं किया।

अब्दुन्नबी : लेकिन हमारे और काफ़िरों में तो फ़र्क़ है, काफिर उन्हीं से फ़ाइदा चाहते हैं, जबकि मैं तो यह गवाही देता हूँ कि फ़ाइदा पहुँचाने वाला, नुक्सान पहुँचाने वाला और इन्तिज़ाम करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और हम यह चीज़ें मात्र उसी से चाहते हैं,

नेक लोगों को कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है, हम तो उनसे मात्र यह चाहते हैं कि वे हमारे लिए अल्लाह से सिफ़ारिश कर दें।

अब्दुल्लाह : आप की यह बात ठीक काफ़िरों की बात जैसी है, दोनों में कुछ भी फ़र्क़ नहीं है, दलील के लिए अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِ ﴾ **और यह लोग अल्लाह के सिवाय ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुँचा सके और न लाभ, और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह हमारे सिफ़ारिशी हैं।**

अब्दुन्नबी : लेकिन मैं तो इनकी इबादत नहीं करता हूँ, मैं तो मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ, रहा उनसे फ़र्याद करना और उन्हें पुकारना तो यह इबादत तो नहीं है।

अब्दुल्लाह : मेरा आप से एक प्रश्न है, क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने मात्र अपनी इबादत आप पर फ़र्ज़ की है? और यह उसका आप पर हक़ है जैसा कि उसने फ़रमायाः

﴿ وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعْبُدُواْ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ ﴾ **"उन्हें इसके सिवाय कोई आदेश नहीं दिया गया कि मात्र अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को ख़ालिस रखें इब्राहीम ह़नीफ़ के दीन पर।"**

अब्दुन्नबी : हाँ, उसने इसे मुझ पर फ़र्ज़ किया है।

अब्दुल्लाह : अल्लाह ने आप पर इख़्लास के साथ जो इबादत फ़र्ज की है उसे आप ज़रा स्पष्ट कर दें।

अब्दुन्नबी : मुझे आप की बात समझ में नहीं आई, फिर से स्पष्ट करें।

अब्दुल्लाह : मैं आप को बताता हूँ ध्यान दे कर सुनें, अल्लाह ﷻ का फ़रमान है :

﴿ ٱدْعُواْ رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُعْتَدِينَ ﴾ **"तुम लोग अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ा कर भी और चुपके चुपके भी, वह (अल्लाह तआला) अवश्य उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो सीमा पार कर जाएं।"**

तो क्या दुआ करना अल्लाह की इबादत है या नहीं?

अब्दुन्नबी : क्यों नहीं, बल्कि यही इबादत का मग़्ज़ है, जैसा कि ह़दीस में आया है :

(الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ) **"दुआ ही इबादत है।"**

अब्दुल्लाह : जब आप ने यह स्वीकार कर लिया कि दुआ अल्लाह की इबादत है, और किसी ज़रूरत के लिए अल्लाह से डरते हुए और आशा रखते हुए आप ने दिन और रात में उसे ही पुकारा, और उसी ज़रूरत के लिए आप ने नबी, या फ़रिश्ता, या किसी नेक व्यक्ति को पुकारा जो अपनी क़ब्र में है, तो क्या आप ने इस इबादत में शिर्क नहीं किया?

अब्दुन्नबी : हाँ, यह तो मुझ से शिर्क हुवा। आप की यह बात तो बहुत स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : मैं आप को एक दूसरा उदाहरण देता हूँ : जब आप को अल्लाह तआला के इस क़ौल : ﴿ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ﴾ **"आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और उसी के लिए क़ुर्बानी किजिए।"** के बारे में जानकारी होगई, और आप ने उस के आदेश का पालन किया और उसी के लिए क़ुर्बानी की, तो क्या आप की यह ज़बह़ और क़ुर्बानी अल्लाह ﷻ की इबादत मानी जाएगी?

अब्दुन्नबी : हाँ, यह तो इबादत है।

अब्दुल्लाह : तो यदि आपने अल्लाह के साथ किसी मख़्लूक़ के लिए भी ज़बह़ किया चाहे वह मख़्लूक़ नबी हो, या जिन्न, या कोइ और, तो क्या आप ने इस इबादत में गैरुल्लाह को साझी नहीं बना लिया?

अब्दुन्नबी : निःसन्देह यह तो शिर्क है।
अब्दुल्लाह : मैं ने मात्र दुआ और ज़बह़ का उदाहरण दिया है, इसलिए कि ज़ुबानी इबादतों में दुआ और बदनी इबादतों में ज़बह़ सबसे महत्वपुर्ण हैं, और मात्र इन्हीं दो चीज़ों का नाम इबादत नहीं है बल्कि नज़र, क़सम, पनाह मांगना और सहायता चाहना वग़ैरा भी इबादत हैं, और यह बताएं कि मुश्रिकीन जिनके बारे में क़ुर्आन उतरा क्या वे फ़रिश्ते, नेक लोगों और लात वग़ैरा की इबादत करते थे?
अब्दुन्नबी : हाँ, वे तो उनकी इबादत किया करते थे।
अब्दुल्लाह : मुश्रिकीन जो उनकी इबादत किया करते थे, यह इबादत तो दुआ, ज़बह़, इस्तिआज़ा (पनाह मांगना), इस्तिआना (मदद चाहना), और इल्तिजा के द्वारा ही तो थी, नहीं तो वे तो यह स्वीकार कर रहे थे कि वे अल्लाह के दास हैं, उस के अधीन हैं, और वही सारी चीज़ों का बन्दोबस्त करने वाला है, लेकिन सिफ़ारिश और जाह के लिए उन्होंने गैरुल्लाह को पुकारा, और यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट है।
अब्दुन्नबी : अच्छा अब्दुल्लाह साह़ब हमें यह बताएं कि क्या आप अल्लाह के रसूल की सिफ़ारिश का इन्कार करते और उससे बराअत करते हैं?
अब्दुल्लाह : नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, मैं न तो उसका इन्कार करता और न ही उस से बराअत करता हूँ, बल्कि उन पर मेरे मां बाप क़ुर्बान हों, वह तो महशर में सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश स्वीकार होगी, और हम उन की सिफ़ारिश की उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन शफ़ाअत मात्र अल्लाह के लिए है, जैसा कि उसका फ़रमान है : ﴿قُل لِّلَّهِ ٱلشَّفَٰعَةُ﴾ **"कह दीजिए कि शफ़ाअत सभी अल्लाह के लिए है।"**
नबी ﷺ की शफ़ाअत उस समय होगी जब अल्लाह इसकी अनुमति देगा, जैसा कि उसने फ़रमायाः ﴿مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦ﴾ **"कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके?"**
किसी के लिए भी उस समय तक शफ़ाअत नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के बारे में शफ़ाअत की अनुमति न दे दे, जैसा कि उसने फ़रमायाः ﴿وَلَا يَشۡفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرۡتَضَىٰ﴾ **"वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते मगर जिस से अल्लाह ख़ुश हो।"**
और अल्लाह मात्र तौह़ीद ही से ख़ुश होगा, जैसा कि उसने इर्शाद फ़रमायाः
﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ﴾ **"और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय कोई और धर्म चाहेगा तो अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह आख़िरत में घाटा पाने वालों में से होगा।"**
तो जब सारी की सारी शफ़ाअत का ह़क़ मात्र अल्लाह ही को है, और मात्र उसकी अनुमति के बाद ही शफ़ाअत की जाएगी, और नबी या कोइ भी किसी के लिए शफ़ाअत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि उस के लिए शफ़ाअत की अनुमति न दे दीजाए, और अल्लाह तआला मात्र तौह़ीद परस्तों के लिए ही अनुमति देगा, तो जब यह बात स्पष्ट होगई कि सारी की सारी शफ़ाअत मात्र अल्लाह तआला के लिए है तो मैं उसी से तलब करता हूँ, और यह दुआ कर रहा हूँ : ऐ अल्लाह! तू मुझे उनकी शफ़ाअत से महरूम न करना, ऐ अल्लाह! तू अपने रसूल को मेरा सिफ़ारिशी बनाना। और इस जैसी दूसरी दुआएं।

अब्दुन्नबी : हमारा इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ मांगना जायज़ नहीं है जिसका वह मालिक न हो, और जबकि अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को शफ़ाअत अता किया है, तो आप उसके मालिक होगए, इसलिए मेरे लिए आप से शफ़ाअत तलब करना जायज़ हो गया क्योंकि आप उसके मालिक हैं, और यह शिर्क न होगा।

अब्दुल्लाह : हाँ, आप की यह बात उस समय दुरुस्त होती जब अल्लाह ने इससे रोका न होता, लेकिन अल्लाह ﷻ ने फ़रमायाः ﴿فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا﴾ **"तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।"** और शफ़ाअत तलब करना दुआ है, और नबी ﷺ को जिसने शफ़ाअत अता की वह अल्लाह है, और उसी अल्लाह ने तुम्हें ग़ैरों से किसी भी तरह की चीज़ तलब करने से रोका है, और एक दूसरी चीज़ यह भी है कि नबी के सिवाय दूसरों को भी शफ़ाअत अता की गई है, चुनांचे फ़रिश्ते भी शफ़ाअत करेंगे, बालिग़ होने से पहले जो बच्चे मर गए वे भी शफ़ाअत करेंगे, औलिया भी शफ़ाअत करेंगे, तो क्या अब आप यह कहेंगे कि अल्लाह ने इन सभों को शफ़ाअत अता की है इसलिए मैं इन सभों से शफ़ाअत तलब करुंगा? यदि आप का जवाब हाँ में है, तो गोया आप नेक लोगों की इबादत की ओर पलट गए जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में की है, और यदि जवाब इन्कार में है, तो आप का यह कहना कि : - अल्लाह ने उन्हें ﷺ शफ़ाअत अता की है, और हम आप ﷺ से वही चीज़ मांग रहे है जो आप को दी गई है - बातिल है।

अब्दुन्नबी : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता; क्योंकि सालेहीन से इल्तिजा करना शिर्क नहीं है।

अब्दुल्लाह : क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने शिर्क को हराम क़रार दिया है, इसे माफ़ नहीं करेगा, और इसकी हुर्मत ज़िना से भी बढ़कर है?

अब्दुन्नबी : हाँ, मैं इसे मानता हूँ और यह अल्लाह के कलाम में स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : अभी आप ने अपने आप से उस शिर्क का इन्कार किया है जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, तो अल्लाह के वास्ते ज़रा आप मुझे बताएं तो सही कि वह कौनसा शिर्क है जिसे आप नहीं करते, और अपने आप से उसका इन्कार करते हैं?

अब्दुन्नबी : यह शिर्क मूर्तियों की पूजा है, उनकी ओर जाना, उन से मांगना और डरना है।

अब्दुल्लाह : मूर्ति पूजा का अर्थ क्या है? क्या आप ऐसा गुमान रखते हैं कि क़ुरैश के काफ़िरों का यह अक़ीदा था कि यह लकड़ियाँ, और पत्थर पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जो उन्हें पुकारते हैं वे उनके कामों का इन्तिज़ाम कर देते हैं?! वे कदापि ऐसा अक़ीदा नहीं रखते थे।

अब्दुन्नबी : और मेरा भी अक़ीदा इस तरह का नहीं है, बल्कि मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि जिसने लकड़ी, या पत्थर, या क़ब्र पर बनी इमारत की ओर दुआ करने या ज़बह करने के लिए गया, और यह कहा कि यह हमें अल्लाह से क़रीब कर देंगे, और इनकी बर्कत से अल्लाह हमारी परेशानी दूर कर देगा, तो यही चीज़ें वास्तव में मूर्ति पूजा है।

अब्दुल्लाह : आप ने बिल्कुल ठीक कहाँ लेकिन यही सब कुछ आप क़ब्रों, उनकी जालियों और उन पर बनी इमारतों के पास करते हैं। और क्या आप ऐसा अक़ीदा रखते हैं कि शिर्क मात्र मूर्तियों के साथ खास है, और सालिहीन से दुआ करना और उन पर भरोसा करना शिर्क न होगा?

अब्दुन्नबी : हाँ, मेरा मक़्सद यही है।

अब्दुल्लाह : फिर आप उन बहुत सारी आयतों के बारे में क्या कहेंगे जिन में अल्लाह ने नबियों, नेक लोगों और फ़रिश्तों का सहारा लेने को ह़राम ठहराया है, और ऐसा करने वालों को काफ़िर कहा है? जैसा कि स्पष्ट रूप से पहले मैंने इसका चर्चा किया है।

अब्दुन्नबी : लेकिन जो लोग फ़रिश्तों और नबियों को पुकारते हैं, उन्हें इस पुकारने के कारण काफ़िर नहीं कहा गया, बल्कि उन्हें फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ, और ईसा عليه السلام को अल्लाह का बेटा कहने के कारण काफ़िर कहा गया है, और हम यह नहीं कहते हैं कि अब्दुल् क़ादिर अल्लाह के बेटे हैं और न ही यह कहते हैं कि ज़ैनब अल्लाह की बेटी हैं।

अब्दुल्लाह : अल्लाह की ओर संतान की निस्बत करना मुस्तक़िल कुफ़्र है, जैसा कि उसने फ़रमायाः ﴿ قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴾ **"ऐ नबी ﷺ कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है, उसने न तो किसी को जन्म दिया है, और न ही किसी से जन्म लिया है।"**[1] तो जिसने इन आयतों का इन्कार किया चाहे वह अन्तिम आयत का इन्कार करे या न करे तो उसने कुफ़्र किया। और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमायाः ﴿ مَا ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُۥ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ﴾ **"न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया, और न उसके साथ और कोई मा'बूद (उपास्य) है, नहीं तो हर मा'बूद अपनी अपनी मख़्लूक़ को लिए फिरता, और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता।"**

तो अल्लाह तआला ने दोनों कुफ़्रों के बीच फ़र्क़ किया। और इसकी दलील यह भी है कि जिन लोगों ने लात जैसे नेक व्यक्ति से दुआ करके कुफ़्र किया उन्होंने लात को अल्लाह का बेटा नहीं माना था, और जिन्होंने जिन्नों की इबादत के द्वारा कुफ़्र किया उन्होंने भी जिन्नों को बेटा नहीं कहा था, और इसी तरह चारों मज़्हब में मुर्तद के हुक्म में यह चर्चा करते हैं कि जिसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुरतद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने कुफ़्र किया, तो फ़ुक़हा भी इन दोनों क़िस्मों में फ़र्क़ करते हैं।

अब्दुन्नबी : लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿ أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ ٱللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴾ **"याद रखो! अल्लाह के दोस्तों पर न कोई डर है और न ही वह ग़म्गीन होते हैं।"**

अब्दुल्लाह : हम भी यही कहते हैं और यही सत्य है, लेकिन उन की इबादत नहीं की जासकती, और हम मात्र अल्लाह के साथ उनकी इबादत करने और उन्हें साझी बनाने का इन्कार करते हैं, नहीं तो उन से महब्बत करना, उनकी पैरवी करना और उनकी करामतों को स्वीकारना सब पर वाजिब है, और उनकी करामतों का वही लोग इन्कार करते हैं जो बिद्अती हैं, अल्लाह का दीन कमी बेशी से पवित्र है, वह ऐसी हिदायत है जो दो गुम्राहियों के बीच है, और ऐसा ह़क़ है जो दो बातिलों के बीच है।

अब्दुन्नबी : जिन लोगों के बारे में क़ुर्आन उतरा वे لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ की गवाही नहीं देते थे, अल्लाह के रसूल को झुठलाते थे, दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करते थे, क़ुर्आन को झुठलाते थे, और उसे जादू कहा करते थे, और हम यह गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, क़ुर्आन को सच्च मानते हैं, दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, तो फिर हमें आप उन जैसे कैसे ठहराते हैं?

---

1 अह़द वह हस्ती है जिसका कोई साझी नहीं, और हर ज़रूरत के लिए जिस की ओर जाया जाए उसे समद कहते हैं।

अब्दुल्लाह : लेकिन उलमा के बीच इस बारे में कोई दो राय नहीं है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुछ चीज़ों में अल्लाह के रसूल की तस्दीक़ की और कुछ चीज़ों में उन्हें झुठलाया तो वह काफ़िर है, वह अब तक इस्लाम में प्रवेश नहीं किया, और इसी तरह यदि किसी ने क़ुर्आन के कुछ हिस्से पर ईमान रखा और कुछ का इन्कार किया तो वह भी काफ़िर है, जैसे किसी ने तौहीद को तो स्वीकारा लेकिन नमाज़ का इन्कार किया, या तौहीद और नमाज़ को तो स्वीकारा लेकिन ज़कात वाजिब होने का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन रोज़ा का इन्कार किया, या इन सारी चीज़ों को तो स्वीकारा लेकिन हज्ज का इन्कार किया, और नबी ﷺ के ज़माने में जब कुछ लोग हज्ज के लिए नहीं निकले तो उनके बारे में यह आयत उतरी : ﴿ وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنِ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴾ **"अल्लाह तआला ने लोगों पर जो उस की ओर रास्ता पा सकते हों इस घर का हज्ज फ़र्ज़ कर दिया है, और जो कोइ कुफ़्र करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सारी दुनिया से बे-परवाह है।"**

और यदि दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करे तो इस बात पर इज्मा'अ् (एकमत) है कि उसने कुफ़्र किया, और इसीलिए अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इसे स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कुछ चीज़ों पर ईमान रखा और कुछ चीज़ों का कुफ़्र किया वह निःसन्देह काफ़िर है, अल्लाह तआला का आदेश है कि पूरे इस्लाम को अपनाया जाए, और जिसने कुछ चीज़ों को अपनाया और कुछ को छोड़ दिया तो उसने कुफ़्र किया, तो क्या आप इस बात को मानते हैं कि जिसने कुछ को अपनाया और कुछ को छोड़ा उसने कुफ़्र किया?

अब्दुन्नबी : हाँ, हम इसे मानते हैं, और यह तो क़ुर्आन में स्पष्ट है।

अब्दुल्लाह : तो जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने किसी चीज़ में रसूल की तस्दीक़ की, और नमाज़ के वाजिब होने का इन्कार किया, या सारी चीज़ों को स्वीकार किया लेकिन दोबारा उठाए जाने का इन्कार किया तो वह काफ़िर है, उसकी जान और माल हलाल है, सारे मतों (मस्लकों) का इस पर इत्तिफ़ाक़ है, और क़ुर्आन ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है जैसा कि ऊपर इसका चर्चा हो चुका, तो आप यह जान लीजिए कि नबी जो शरीअत लेकर आए उसमें तौहीद सब से बड़ा फ़रीज़ा है, और यह नमाज़, ज़कात और हज्ज से भी बढ़ कर है, तो भला यह कैसे हो सकता है कि इन्सान इन चीज़ों में से यदि किसी चीज़ का इन्कार करे तो वह काफ़िर हो जाए, और तौहीद जो कि सारे रसूलों का धर्म है उसे इन्कार करे तो काफ़िर न हो?! सुब्हानल्लाह! यह कितनी बड़ी जिहालत और नादानी है।

और सहाबए किराम رضي الله عنهم के बारे में ध्यान दे कर सोचो कि उन्होंने यमामा में बनू हनीफ़ा के लोगों से जिहाद किया, जबकि वे नबी ﷺ के ज़माने में इस्लाम ले आए थे, कल्मए لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ ٱللَّهِ को स्वीकार करते थे, नमाज़ पढ़ते थे और अज़ान देते थे।

अब्दुन्नबी : लेकिन वे मुसैलमा को नबी मानते थे, और हम यह कहते हैं कि मुहम्मद ﷺ के बाद कोई नबी नहीं है।

अब्दुल्लाह : लेकिन आप लोग अली رضي الله عنه या अब्दुल् क़ादिर जीलानी رحمة الله عليه या नबियों या फ़रिश्तों के रुत्बे को धरती और आकाश के जब्बार के रुत्बे के बराबर पहुंचा देते हैं, जब्कि यदि किसी ने किसी व्यक्ति के रुत्बे को नबी के बराबर कर दिया तो वह काफ़िर होगया, उसकी जान और माल हलाल होगए, कल्मा और नमाज़ उसे फ़ायदा नहीं देंगे, तो जो उन्हे अल्लाह तआला के रुत्बे तक पहुँचाए वह तो अवश्य काफ़िर होगया। और इसीलिए अली رضي الله عنه

ने उन्हें आग में जला दिया था जबकि वे इस्लाम का दावा करते थे, और वे अली ﷺ के साथियों में से थे, सहा़बए किराम से उन्होंने शिक्षा लिया था, लेकिन उन्होंने अली ﷺ के बारे में वही अक़ीदा रखा जो आप लोग अब्दुल् क़ादिर वग़ैरा के बारे में रखते हैं, फिर सारे सहाबए किराम ﷺ ने उन के क़त्ल और उनके काफ़िर होने पर कैसे इत्तिफ़ाक़ कर लिया? क्या आप यह समझते हैं कि सहाबए किराम ﷺ मुसलमानों को काफ़िर कहा करते थे?! या आप इस भ्रम में हैं कि सैयद अब्दुल् क़ादिर जीलानी और इन जैसे लोगों के बारे में ऐसा अक़ीदा रखना हानिकारक नहीं, और अली ﷺ के बारे में ऐसा अक़ीदा रखना कुफ्र है?

और यह बात भी कही जा सकती है कि पहले के लोग इसलिए काफ़िर ठहरे कि उन्होंने शिर्क के साथ-साथ, रसूल ﷺ और क़ुरआन को झुठलाया, दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने वग़ैरा का इन्कार किया, तो फिर उस बात का क्या अर्थ है जिसे हर मस्लक के उलमा ने अपनी किताबों में बांधा है: (باب حكم المرتد) **"मुर्तद के हुक्म का बयान"**? मुर्तद वह मुस्लिम व्यक्ति है जो इस्लाम लाने के बाद फिर काफ़िर हो जाए, और उस बाब में बहुत सारी चीज़ों का चर्चा किया गया है जिन में से किसी भी एक को करना बन्दे को काफ़िर बना देता, और उसके ख़ून और माल को ह़लाल कर देता है, यहाँ तक कि उन्होंने छोटी चीज़ों का भी चर्चा किया है, जैसा कि अल्लाह की नाराज़गी की बात को मुंह से निकालना, चाहे वह उसका अक़ीदा न रखता हो, या मज़ाक़ में उनका चर्चा करना, और इसी तरह से वे लोग भी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने चर्चा करते हुए फ़रमाया:

﴿ قُلْ أَبِاللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۝٦٥ لَا تَعْتَذِرُوا۟ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ ﴾ **"कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी निशानियां और उसके रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं? अब तुम बहाना न बनाओ इसलिए कि ईमान लाने के बाद अवश्य तुम काफ़िर होगए।"**

तो यह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह ईमान के बाद काफ़िर होगए, यह अल्लाह के रसूल के साथ ग़ज़्वए तबूक में थे, और उन्होंने एक ऐसी बात कही जिसके बारे में वे कहते रहे कि हंसी मज़ाक़ में वे कहे थे।

और यहाँ उसका भी चर्चा कर देना अच्छा होगा जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने बनू इस्राईल के बारे में किया है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और तक़्वा के होते हुए भी मूसा ﷺ से कहा : ﴿ ٱجْعَل لَّنَآ إِلَٰهًا ﴾ **"हमारे लिए भी एक ऐसा ही मा'बूद (उपास्य) बना दीजिए।"**

और कुछ सहाबए किराम ﷺ ने कहा : "हमारे लिए जाते अन्वात बना दीजिए" तो नबी ﷺ ने क़सम खाकर कहा कि यह तो ठीक वही बात है जो बनू इस्राईल ने कही थी :

﴿ ٱجْعَل لَّنَآ إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ ءَالِهَةٌ ﴾ **"हमारे लिए भी एक मा'बूद (उपास्य) ऐसा ही बना दीजिए, जैसे उनके यह मा'बूद हैं।"**

अब्दुन्नबी : लेकिन बनू इस्राईल और इसी तरह वह लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ से ज़ाते अन्वात बनाने को कहा था इसके कारण काफ़िर नहीं हुए।

अब्दुल्लाह : इसका उत्तर यह है कि बनू इस्राईल और इस तरह जिन्होंने नबी ﷺ से ज़ाते अन्वात बनाने का मुतालबा किया था उन्होंने ऐसा किया नहीं, और यदि ऐसा कर लिए होते तो काफ़िर हा ेजाते, और इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जिन्हें ज़ाते अन्वात बनाने से रोका, यदि वे आप की बात न मानते और ज़ाते अन्वात बना लेते तो काफ़िर होजाते।

अब्दुन्नबी : लेकिल मेरे पास एक प्रश्न है, और वह है उसामा बिन ज़ैद का क़िस्सा कि जब उन्होंने एक لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ कहने वाले व्यक्ति को क़त्ल कर दिया तो नबी ﷺ उन पर नाराज़ हुए

और कहा कि : क्या उसके لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहने के बाद भी तुम ने उसे क़त्ल कर दिया? और इसी तरह आप ﷺ का यह फ़रमान : (أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُوْلُوْا : لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ) **"मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूं यहाँ तक कि वे لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहने लगें।"** तो जो बात आप ने कही है और जो इन दोनों ह़दीसों में है, आप थोड़ी मेरी राहनुमाई करें कि दोनों को मैं इकट्ठा कैसे कर सकता हूँ?

अब्दुल्लाह : इस बात की जानकारी सब को है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने यहूदियों से जिहाद किया और उन्हें क़ैदी बनाया हालांकि वे لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ का इक़्रार करते थे, और सहाबए किराम رضي الله عنهم ने बनू ह़नीफ़ा से जिहाद किया और वे भी لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की गवाही दे रहे थे, और नमाज़ पढ़ रहे थे, यही हाल उनका भी था जिन्हें अली رضي الله عنه ने जलाया था, और आप स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार किया उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल करना जायज़ होगया। और यह भी स्वीकार करते हैं कि जिसने لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहने के बाद भी इस्लाम के किसी रुक्न का इन्कार किया तो उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल किया जाएगा। तो ज़रा सोचिए किसी फरई मस्अले का इन्कार करता है तो لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता, तो भला जब किसी बुनियादी मस्अले का इन्कार करेगा तो لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ उसे कैसे फ़ाइदा देगा?! और शायद आप ने इन ह़दीसों का मतलब नहीं समझा।

उसामा की ह़दीस का अर्थ यह है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर दिया जिसने इस्लाम का दावा किया यह समझ कर कि वह अपनी जान और माल की रक्षा की खातिर ऐसा कर रहा है, जबकि इस्लामी आदेश अनुसार किसी भी व्यक्ति को जो इस्लाम का दावा कर रहा है उसे क़त्ल करना ह़राम है यहाँ तक कि उसके ख़िलाफ़ कोई चीज़ स्पष्ट होजाए जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُواْ﴾ **"ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में जा रहे हो तो छान बीन कर लिया करो।"** तो आयत में यह प्रमाण है कि ऐसे लोगों से हाथ रोक लेना और उनकी छान बीन करना वाजिब है, और छान बीन करने के बाद यदि इस्लाम के ख़िलाफ़ किसी चीज़ का पता चले तो उसे अल्लाह तआला के क़ौल ﴿فَتَبَيَّنُواْ﴾ की रौशनी में क़त्ल किया जाएगा, और यदि उसे क़त्ल करना जायज़ न होता तो छान बीन करने का कोई फ़ाइदा ही न होता।

और इसी तरह दूसरी ह़दीस का अर्थ भी यही है कि जिसने तौह़ीद और इस्लाम को ज़ाहिर किया उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा, लेकिन जब उससे इस्लाम के विरुद्ध कोई चीज़ ज़ाहिर होजाए तो उसका खून ह़लाल होजाएग। और इसकी दलील यह है कि जिस रसूल ﷺ ने यह बात कही : أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ؟ यानी 'उसामा! तुमने उसे ला इलाह इल्लल्लाह कहने के बाद भी क़त्ल कर दिया?' और यह कही : أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُوْلُوْا : لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ यानी 'मुझे लोगों से लड़ाई करने का हुक्म दिया गया है यहाँ तक कि वह कह दें: ला इलाह इल्लल्लाह।' उसी रसूल ﷺ का ख़वारिज के बारे में यह भी कहना है : فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ "जहाँ भी तुम उन्हें पाओ उन्हें क़त्ल कर दो।"

जबकि यह ख़वारिज लोगों में सब से अधिक इबादत और तस्बीह़ करने वाले थे, यहाँ तक कि सहाबए किराम इन की इबादतों के सामने अपनी इबादत को हेच समझते थे, और इन्होंने सहाबए किराम से ही इल्म सीखा था, लेकिन इसके बावजूद जब उनसे शरीअत की मुख़ालफ़त

ज़ाहिर हूई तो उन्हें لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ के कहने, अधिक इबादत करने और इस्लाम का दावा करने ने कोई फ़ाइदा नहीं पहुँचाया।

अब्दुन्नबी : क़्यामत के दिन फ़र्याद के बारे में नबी करीम ﷺ से जो ह़दीस साबित है कि लोग आदम के पास आएंगे, फिर नूह़ के पास, फिर इब्राहीम, फिर मूसा, फिर ईसा عليهم السلام के पास और वे लोग मा'ज़रत कर देंगे, तो अन्त में नबी ﷺ के पास आएंगे, तो इससे पता यह चला कि गैरुल्लाह से इस्तिग़ासा (फर्याद) करना शिर्क नहीं है।

अब्दुल्लाह : मस्अला आप पर गडमड होगया है, ज़िन्दा और मौजुद व्यक्ति से ऐसी चीज़ का फ़र्याद करना जिसकी वह शक्ति रखता हो हम इसका इन्कार नहीं करते यह तो क़ुर्आन में साबित है : ﴿ فَٱسْتَغَٰثَهُ ٱلَّذِى مِن شِيعَتِهِۦ عَلَى ٱلَّذِى مِنْ عَدُوِّهِۦ ﴾ **"उसकी क़ौम वाले ने उससे फ़र्याद की उसके ख़िलाफ़ जो उसके दुश्मनों में से था।"**

और जैसा कि इन्सान लड़ाई वगैरा में अपने साथियों से ऐसी चीज़ें मांगता है जिसकी वह शक्ति रखते हैं, हमने उस फ़र्याद का इन्कार किया है जो तुम इबादत के तौर पर औलिया के क़ब्रों पर या उनकी गैर हाज़िरी में करते हो, और उनसे ऐसी चीज़ें मांगते हो जिन्हें देने की शक्ति मात्र अल्लाह तआला ही को है, और लोग क़्यामत के दिन नबियों से जो फ़र्याद करेंगे, इसलिए करेंगे ताकि जल्द ह़िसाब होने के लिए वे अल्लाह से दुआ करें, ताकि जन्नती मौक़िफ़ की परेशानियों से छुटकारा पा लें, और यह तो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह जायज़ है कि आप किसी नेक व्यक्ति के पास आएं जो आप के साथ उठता बैठता हो, और उससे अपने लिए अल्लाह से दुआ करने की दर्खास्त करें, जैसा कि सहाबए किराम नबी ﷺ की जीवन में किया करते थे, लेकिन मौत के बाद उन्होंने हर्गिज़ (कदापि) ऐसा नहीं किया, उन्होंने आप के क़ब्र के पास जाकर आप से सवाल नहीं किया, बल्कि सलफ़ सालिह़ीन ने क़ब्र के पास अल्लाह से दुआ करने से भी रोका है।

अब्दुन्नबी : आप इब्राहीम عليه السلام के क़िस्से के बारे में क्या कहेंगे जब वह आग में डाले गए तो फ़ज़ा में जिब्रईल عليه السلام उनके पास आए, और पूछा क्या आप को मेरी कोई ज़रूरत है? तो इब्राहीम عليه السلام ने कहा : हमें आप की ज़रूरत नहीं है। तो यदि किसी से फ़र्याद करना शिर्क होता तो जिब्रईल عليه السلام मदद के लिए अपने आप को कभी भी पेश न करते।

अब्दुल्लाह : यह सन्देह भी पहले वाले सन्देह की तरह ही है, और इस बारे में जिब्रईल के जिस असर का आपने उदाहरण दिया वह सहीह नहीं है, और यदि उसे सह़ीह़ भी मान लिया जाए तो वास्तव में जिब्रईल عليه السلام ने उनके सामने एक ऐसी बात रखी थी जिस की उन्हें शक्ति थी, क्योंकि अल्लाह तआला का उनके बारे में फ़रमान है : ﴿ عَلَّمَهُۥ شَدِيدُ ٱلْقُوَىٰ ﴾ **"उसे पूरी शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।"**

तो यदि अल्लाह तआला उन्हें यह आदेश दे देता कि वह इब्राहीम عليه السلام की आग और उसके आस पास की धरती और पर्वत को पूरब या पश्चिम में कहीं लेजाकर फेंक दें तो वह ऐसा करने पर बेबस नहीं थे, और इसका उदाहरण उस धनी व्यक्ति जैसे है जो किसी ग़रीब को उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए क़र्ज़ देने की पेशकश करे, तो वह अपनी ग़रीबी पर सब्र करे और माल लेने से इन्कार करदे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल से रोज़ी अ़ता करदे, जिसमें किसी का थोड़ा सा भी एह़सान न हो। तो आप इस की बराबरी इबादत में फ़र्याद और शिर्क के साथ कैसे कर सकते हैं?!

और मेरे भाई आप इस चीज़ को अच्छी तरह समझ लीजिए कि पहले ज़माने के वे मुश्रिक़ीन जिनकी ओर नबी ﷺ को भेजा गया तीन कारणों से उनका शिर्क हमारे ज़माने के मुश्रिकीन से कम्तर था :

1. पहले के मुश्रिकीन मात्र सुख के समय शिर्क किया करते थे, और दुःख के समय मात्र अल्लाह की इबादत किया करते थे, प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला का फ़रमान है :
﴿ فَإِذَا رَكِبُوا۟ فِى ٱلْفُلْكِ دَعَوُا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴾ **"तो यह लोग जब नौकों पर चढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, उसी के लिए इबादत को ख़ालिस करके, फिर वह जब उन्हें भूमी पर बचा लाता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं।**
और दूसरी जगह फ़रमाया: ﴿ وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَٱلظُّلَلِ دَعَوُا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ فَلَمَّا نَجَّىٰهُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِـَٔايَٰتِنَآ إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴾
"और जब उन पर मौजें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह ख़ुलूस के साथ आस्था रख कर अल्लाह ही को पुकारते हैं, फिर वह जब उन्हें ख़ुश्की की ओर बचा लाता है, तो कुछ उनमें से अपने वादे पर जमे रहते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार मात्र वही करते हैं जो वादे तोड़ने वाले और नाशुक्रे हों।"
तो मक्का के मुश्रिकीन जिन से नबी ﷺ ने जिहाद किया, सुख के समय में अल्लाह को पुकारते थे, और उसके साथ दूसरों को भी शरीक करते थे, पर तंगी में मात्र अल्लाह को पुकारते थे, और अपने सरदारों को भूल जाते थे, लेकिन हमारे ज़माने के मुश्रिकीन सुख और दुःख दोनों समय में ग़ैरुल्लाह को पुकारते हैं, और जब वह अधिक तंगी में होते हैं तो या रसूलल्लाह और या हुसैन इत्यादि के द्वारा दुआएं करते हैं। लेकिन कौन है जो इस वास्तविकता को समझे?

2. पहले के लोग अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के मुक़र्रबीन में से होते, या तो नबी होते, या वली, या फ़रिश्ता, या पत्थर और पेड़ जो अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि उसकी फ़र्मांबर्दारी ही करते, और हमारे ज़माने के लोग ऐसे लोगों को भी पुकारते हैं जो सबसे बड़े पापी होते।
और जो नेक लोगों को अल्लाह के साथ साझी करने का आस्था रखे, या ऐसी चीज़ों को साझी करने का आस्था रखे जो नाफ़रमानी न करती हों, तो उसका शिर्क अवश्य उनके शिर्क से कम दरजे का होगा जो अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझी करने का आस्था रखे स्पष्ट रूप से पापी हो।

3. नबी ﷺ के ज़माने के सारे मुश्रिकीन का शिर्क मात्र तौहीदे उलूहीयत (इबादत) में था, वे तौहीदे रुबूबीयत में शिर्क नहीं करते थे, बरख़िलाफ़ हमारे ज़माने के मुश्रिकीन के यह जिस तरह तौहीदे उलूहीयत में शिर्क करते हैं उसी तरह अधिकतर तौहीदे रुबीयत में भी शिर्क करते हैं, तो वह काएनात में तबीअत (NATURE) को ही मारने और जिलाने का व्यवस्थापक समझते हैं।
और शायद मैं अपनी बात को एक महत्वपुर्ण मस्अले का चर्चा करके जो ऊपर की बातों से आसानी के साथ सम्झा जासकता है ख़तम करदूँ, और वह यह है कि इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि तौहीद का आस्था दिल में होना ज़रूरी है, और बन्दा ज़ुबान से उसे स्वीकार करे और अंगों के द्वारा उसके अनुसार अमल करे। और यदि इनमें से कोई भी एक चीज़ नहीं पाई गई तो इन्सान मुसलमान नहीं रह जाता, यदि उसने तौहीद को जान लिया लेकिन उसके अनुसार अमल नहीं किया तो वह फ़िरऔन और इब्लीस जैसे धर्म का दुश्मन और काफ़िर है। और इस बारे में अधिकतर लोग गलती करते हैं, वे सत्य को स्वीकार करते हैं लेकिन कहते हैं कि हम इसके अनुसार अमल करने की शक्ति नहीं रखते, या कहते हैं कि हमारे देश या नगर

में ऐसा करना जायज़ नहीं, और उनकी बुराई से बचने के लिए उनकी मुवाफ़क़त ज़रूरी है। लेकिन बेचारे को पता नहीं कि अधिकतर कुफ़्र के अगुवाओं को सत्य का ज्ञान था, लेकिन कोई न कोई उज़्र पैदा करके उसे छोड़ा दियां, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿ اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴾ **"उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम पर बेच दिया, और उसके रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।"**

और जिसने देखावे के लिए तौहीद के अनुसार अमल किया लेकिन वह उसे समझता नहीं और न ही उस को दिल से मानता है तो वह मुनाफ़िक़ है। और वह काफ़िर से भी बुरा है, इसलिए कि उसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ﴾ **"मुनाफ़िक़ तो अवश्य जहन्नम के सब से नीचे के दर्जे में जाएंगे"**

और जब लोगों की बातों पर ध्यान देंगे तो उस समय यह मस्अला स्पष्ट होजाएगा, आप उन में से कुछ को पाएंगे कि सत्य जानते हुए भी संसार में घाटे, मर्यादा तथा राज्य के कारण उसके अनुसार अमल नहीं करते जैसे कि क़ारून, हामान और फ़िरऔन ने किया।

और कुछ को आप ऐसा भी पाएंगे कि मात्र दिखावे के लिए अमल करते हैं, अपने अक़ीदा (आस्था) के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं।

अब आप के लिए ज़रूरी है कि आप क़ुर्आन की दो आयतों को ध्यान देकर समझें :

पहली आयत : वही है जिसका चर्चा ऊपर हो चुका है : ﴿ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾ **"तुम बहाने न बनाओ, अवश्य तुम अपने ईमान के बाद काफ़िर हो गए।"**

आप ने जब यह जान लिया कि जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल के साथ मिलकर रूमियों से जिहाद किया, उनमें से कुछ एक कल्मा कहने के कारण काफ़िर क़रार पाए, जिसे उन्होंने हँसी मज़ाक़ में कहा था, तो इस के द्वारा आप पर यह बात स्पष्ट हो गई कि जो व्यक्ति मान मर्यादा और धन सम्पत्ति में कमी होने के डर से या किसी का लिहाज़ करते हुए कुफ़्र का शब्द मुख से निकालता है, या उसके अनुसार कर्म करता है, तो उसका पाप उस व्यक्ति के पाप से बढ़कर है जो कोई शब्द हँसी मज़ाक़ में बोल देता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति आम तौर से दिल में उन शब्दों पर आस्था नहीं रखता है जिसे वह लोगों को हँसाने के लिए कहता है। रहा वह व्यक्ति जो किसी डर या किसी चीज़ की लालच में कुफ़्र के शब्द मुंह से निकालता है तो गोया कि उसने शैतान के वायदे : ﴿ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ﴾ **"शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेह़याई का आदेश देता है।"**

को सत्य कर दिखाया। और उसके धमकावे : ﴿ إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ﴾ **"और यह शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है।"**

से डरा। और रह़मान के वायदे : ﴿ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ﴾ **"और अल्लाह तुम से अपनी माफ़ी और मेहर्बानी का वायदा करता है।"**

की तस्दीक़ नहीं की। और जब्बार की सज़ा : ﴿ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴾ **"तो तुम उनसे न डरो मुझ से डरो यदि तुम मोमिन हो।"**

से नहीं डरा। तो आप स्वंय निर्णय करें ऐसा व्यक्ति रह़मान के औलिया में से होने का ह़क़्दार है, या शैतान के औलिया में से होने का?

दूसरी **आयत** यह है : ﴿ مَن كَفَرَ بِاللَّهِ مِن بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴾

“जो व्यक्ति अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाय उसके जिसे मज्बूर किया जाए और उसका दिल ईमान से मुत्मइन (संतुष्ट) हो, मगर जो लोग दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।”

अल्लाह तआला ने उन्हें लाचार नहीं जाना, सिवाय उन लोगों के जिन्हें विवश कर दिया गया हो, और उनका दिल ईमान से संतुष्ट हो, रहे उनके अतिरिक्त लोग तो वे अपने ईमान के बाद काफ़िर होगए, चाहे उन्होंने उसे किसी डर या लालच से किया हो या किसी का लिहाज़ रखते हुए, या अपने देश, बाल बच्चे, खान्दान, या धन से मोह के कारण किया हो, या हँसी मज़ाक़ में किया हो, या कोई और उद्देश्य रहा हो, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे विवश कर दिया गया हो, लेकिन उसका दिल संतुष्ट हो इसलिए कि दिल के अक़ीदा पर किसी को विवश नहीं किया जासकता है। और इस आयत में: ﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا عَلَى ٱلْءَاخِرَةِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْكَٰفِرِينَ﴾ **“यह इसलिए कि उन्होंने दनियावी जीवन से आख़िरत से अधिक प्रेम किया, अवश्य अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता”**

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अज़ाब उनके अक़ीदा, या धर्म से अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि इस कारण होगा कि उन्होंने सांसारिक चीज़ों को धार्मिक चीज़ों पर तर्जीह़ (प्रधानता) दी।

अल्लाह आप को हिदायत दे, क्या इन सारे प्रमाणों को सुनने के बाद भी वह समय नहीं आया कि आप अपने पापों से तौबा करें, अल्लाह की ओर पलटें, और इन ख़ुराफ़ात को छोड़ दें, क्योंकि जैसा कि आपने सुना मामला अधिक खतरनाक है, और इसका परिणाम बहुत ही भयंकर है।

अब्दुन्नबी : मै अल्लाह की माफ़ी चाहता हूँ, उसकी ओर पलटता हूँ, और यह गवाही दे रहा हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत के लायक़ नहीं है, और मुह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह के सिवाय मैं जितनी चीज़ों की इबादत करता था उन सभों का इन्कार कर रहा हूँ, और अल्लाह से दुआ कर रहा हूँ कि वह मेरे पिछले पाप को माफ़ करदे, मेरे साथ नरमी, क्षमा और रह़मत का मामला करे, और अपने से मिलने तक मुझे तौह़ीद और सत्य अक़ीदा पर साबित रखे। और उससे यह दुआ करता हूँ कि इस नसीह़त पर आप को सवाब और पुण्य दे; क्योंकि धर्म नसीह़त का नाम है, और आप ने मेरे नाम का जो इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब मिले, और अब मैंने अपना नाम अब्दुन्नबी से बदल कर अब्दुर्रह़मान रख लिया। और मेरे अन्दर की पोशीदा बुराई पर जो आपने इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब दे; क्योंकि यह ऐसा भ्रष्ट अक़ीदा था कि यदि उस पर मेरी मौत होजाती तो मैं कभी सफल नहीं हो पाता।

लेकिन अन्त में मेरी आप से एक मांग है कि आप मुझे ऐसी बुराईयों से अवगत कराएं जिनके बारे में लोग गलतियों में पड़े हुए हैं।

अब्दुल्लाह : कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनिए।

✱ किताब और सुन्नत के जिन प्रमाणों में इख़्तिलाफ़ हुआ है उनमें फित्ना और तावील की ख़ातिर इख़्तिलाफ़ी चीज़ों की पैरवी से बचो, और वास्तव में उनकी जानकारी तो मात्र अल्लाह तआला ही को है। और उनके बारे में तुम्हारी भूमिका मज़्बूत इल्म वालों के भूमिका की तरह हो जो इन मुतशाबिह प्रमाणों के बारे में कहते हैं : ﴿ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا﴾ **“हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की ओर से है”**। और इख़्तिलाफ़ी प्रमाणों के बारे में नबी

ﷺ का फ़रमान है : **"जिनके बारे में शक हो उन्हें छोड़ कर वह कर्म करो जिनके बारे में शक न हो"**। (अहमद और तिर्मिज़ी) और आप ﷺ ने फ़रमायाः **"जो शक वाली चीज़ों से बचा उसने अपने धर्म और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त की और जो शक वाली चीज़ों में पड़ा वह ह़राम में पड़ गया"**। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फ़रमायाः **"पाप वह है जो तुम्हारे सीने में खटके, और तू नापसन्द करे कि लोगों को इसकी जानकारी हो"**। (मुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फ़रमायाः **"अपने दिल से पूछो, अपने नफ्स से पूछो -तीन बार आप ﷺ ने कहा- नेकी वह है जिस पर दिल संतुष्ट हो, और पाप वह है जो दिल में लगे और सीने में खटके, अगरचे लोग तुम्हें फ़त्वा दें और फ़त्वा दें"**।

✸ ख़्वाहीशात की पैरवी से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला ने इससे डराते हुए फ़रमायाः ﴿ أَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَـٰهَهُۥ هَوَىٰهُ ﴾ **"क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़्वाहीशात को अपना देवता बनाये हुए है"**।

✸ लोगों की राय और बाप-दादा के आस्थाओं पर तअस्सुब करने से बचो; क्योंकि यह इन्सान और ह़क़ के बीच रुकावट है। बल्कि ह़क़ तो मोमिन का खोया हुआ सामान है, जहाँ भी पा ले वह उसका अधिक ह़क़दार है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ٱتَّبِعُوا۟ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ بَلْ نَتَّبِعُ مَآ أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَآ ۗ أَوَلَوْ كَانَ ءَابَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْـًٔا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴾ **"और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुज़ुर्गों (बाप-दादा) को पाया, अगरचे उनके बुज़ुर्ग बेवक़ूफ़ और भटके हुए हों"**।

✸ काफ़िरों का रूप अपनाने से बचो, इसलिए कि यह हर मुसीबत की जड़ है, नबी ﷺ ने फ़रमायाः "जिसने किसी क़ौम का रूप अपनाया वह उनमें से है"। (अबू-दाऊद)

✸ ग़ैरुल्लाह पर भरोसा करने से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ ﴾ "और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा"।

✸ अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी के लिए किसी भी व्यक्ति की बात न मानो, नबी ﷺ का फ़रमान है : "अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी में किसी मख़्लूक़ की पैरवी जायज़ नहीं"।

✸ अल्लाह तआला के बारे में बुरा सोचने से बचो; क्योंकि ह़दीसे क़ुद्सी में अल्लाह तआला का फ़रमान है : **"मैं अपने बन्दों के गुमान के पास होता हूँ"**। (बुख़ारी और मुस्लिम)

✸ मुसीबत टालने या दूर करने के लिए कड़ा, छल्ला और धागा इत्यादि पहनने से बचो।

✸ बुरी नज़र से बचने के लिए ता'वीज़ लटकाने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमायाः "जिसने कोई चीज़ लटकाई वह उसके सिपुर्द कर दिया गया"। (अहमद और तिर्मिज़ी)

✸ पेड़, पत्थर, निशान और प्रासादों से तबर्रुक लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है।

✸ किसी भी चीज़ से बद्-फ़ाली लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है। नबी ﷺ ने फ़रमायाः **"बद्-फ़ाली लेना शिर्क है, बद्-फ़ाली लेना शिर्क है"**। (अह़मद् और अबू दाऊद)

✸ जादूगरों और ज्योतिशियों की पुष्टि करने से बचो जो कि इल्मे-ग़ैब का दावा करते हैं, और राशिफल ज़ाहिर करते हैं, लोगों के लिए भलाई या बुराई की बातें करते हैं, इन बातों में उनकी पुष्टि करना शिर्क है; क्योंकि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता।

✸ बरसात बरसने की निस्बत नक्षत्रों की ओर करने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, बल्कि उसकी निस्बत अल्लाह तआला की ओर करो।

✸ गैरुल्लाह की क़सम खाने से बचो, जिसकी क़सम खाई जा रही हो वह व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो; क्योंकि यह शिर्क है। ह़दीस शरीफ़ में आया है : **"जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उसने कुफ्र किया या शिर्क किया"**। (अह़मद् और अबू दाऊद) जैसे कि नबी ﷺ की क़सम खाना, या अमानत, या इज़्ज़त, या जीवन इत्यादि की क़सम खाना।

✸ ज़माने को, हवा को, या सूरज को, या ठंडी को, या गर्मी को गाली देने से बचो; क्योंकि यह वास्तव में अल्लाह तआला को गाली देना है जिसने उन्हें बनाया है।

✸ दु:खी होने पर अगर मगर कहने से बचो; क्योंकि यह शैतान के दर्वाज़े को खोलता है, और अल्लाह की बनाई हूई तक़्दीर पर आपत्ति जताने के बराबर भी है, लेकिन यह कहा करो, अल्लाह ने इसे मुक़द्दर किया और उसे जो मन्जूर था उसने किया।

✸ क़ब्रों को मस्जिद बनाने से बचो; क्योंकि उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती जिसमें क़ब्र हो, बुख़ारी और मुस्लिम में आइशा رضي الله عنها से रिवायत है, वह फ़रमाती हैं : अवश्य अल्लाह के रसूल ﷺ ने जाँकनी की अवस्था में फ़रमायाः **"अल्लाह यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे जिन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाली। आप ﷺ उनके कर्तूत से डरा रहे थे"**। आइशा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि यदि इसका डर न होता तो आप ﷺ की क़ब्र भी उभारी जाती। और आप ﷺ ने फ़रमायाः **"तुम से पहले जो लोग थे अपने नबियों और नेक लोगों की क़ब्रों को मस्जिद बना लेते थे, सो तुम क़ब्रों को मस्जिदें न बनाना, मैं तुम्हें इस से रोकता हूँ"**। (अबू-अवाना)

✸ आप ﷺ से और नेक लोगों से वसीला पकड़ने के बारे में उन रिवायतों की पुष्टि करने से बचो जिनकी निस्बत झूठे लोग नबी ﷺ की ओर करते हैं; क्योंकि यह सारी रिवायतें गढ़ी हुई हैं, इन्हीं में से यह रिवायतें भी हैं : **"मेरे जाह-व-जलाल के माध्यम से वसीला पकड़ो; क्योंकि अल्लाह तआला के पास मेरा मर्यादा महान है"**। और यह रिवायत : **"जब तुम परीशानी में पड़ो तो क़ब्र वालों का सहारा लो"**। और यह रिवायत कि : **"अल्लाह तआला हर वली की क़ब्र के पास एक फ़रिश्ता नियुक्त कर देता है जो लोगों की हाजतें पूरी करता है"**। और यह रिवायत भी कि : **"यदि तुम पत्थर के बारे में भला सोचो तो वह तुम्हें लाभ देगा"**। इनके इलावा भी बहुत सी गढ़ी हूई झूटी रिवायतें हैं।

✸ मीलादुन्नबी ﷺ, इस्रा और मे'राज और शबे-बरात इत्यादि के जश्न मनाने से बचो; क्योंकि यह सारी चीज़ें बाद की बनावटी हैं, जिनके करने की रसूलुल्लाह ﷺ से कोई दलील है, और न ही सहाब-ए-किराम ने किया है, जो कि हम से अधिक अल्लाह के रसूल से महब्बत करने वाले थे, और भलाई के कामों के लिए हम से ज़्यादा ह़रीस थे, और यदि इन्हें करना भी भलाई का काम होता तो वे हम से पहले कर गुज़रे होते।

ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही

لا إلـه إلا الله इस कलिमा के दो रुक्न हैं, **1-अस्वीकृती :** गैरुल्लाह की इबादत का इनकार करना। **2- स्वीकृती :** वास्तविक इबादत को मात्र अल्लाह ﷻ के लिए साबित करना। अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है: ﴿ وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّنِى بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۝٢٦ إِلَّا ٱلَّذِى فَطَرَنِى فَإِنَّهُۥ سَيَهْدِينِ ﴾ और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने पीता और अपनी क़ौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूं जिनकी तुम इबादत करते हो। सिवाय उस ताक़त के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा। चुनान्चि मात्र इबादत करना काफ़ी नहीं है बल्कि ज़रूरी है कि इबादत अल्लाह ﷻ के लिए ख़ालिस हो, और तौहीद उस समय तक लाभ-दायक नहीं हो सकता जब तक कि मात्र एक अल्लाह ﷻ की इबादत करने के साथ साथ शिर्क और मुश्रिकों से अलग न हुआ जाए।

और असर में आता है कि ला-इलाहा इल्लल्लाह् जन्नत की कुंजी है, लेकिन क्या हर ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहने वाला व्यक्ति इसका ह़क़्दार है कि उस के लिए जन्नत खोल दिया जाए? वह्ब बिन मुनब्बिह् से पूछा गया : क्या ला-इलाहा इल्लल्लाह् जन्नत की कुंजी नहीं है? तो उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं, लेकिन हर चाबी के दांत होते हैं, यदि दांत वाली चाबी लेकर आओगे तो तुम्हारे लिए ताला खुलेगा, नहीं तो नहीं।

और नबी ﷺ ने अन्गिन्त ह़दीसों में इस चाबी के दांत बयान किए हैं; आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने इख़्लास के साथ ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहा", "दिल में विश्वास रखते हुए कहा", "अपने दिल से ह़क़ जानते हुए कहा", तो इन ह़दीसों में और इसी तरह की दूसरी ह़दीसों में जन्नत में जाने के लिए यह शर्त लगाई गई कि ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहने वाला व्यक्ति उसका अर्थ जानता हो, मरने तक उस पर साबित रहा हो, और उसके अनुसार अपना जीवन बिताया हो।

दलीलों की रौशनी में उलमा ने ला-इलाहा इल्लल्लाह् के कुछ शर्त बयान किए हैं, हर व्यक्ति में जिनका पाया जाना और उनके विरोधी चीज़ों से दूर रहना ज़रूरी है, ताकि यह कल्मा जन्नत की कुंजी बने, अपने कहने वाले को लाभ दे, और यह शर्तें ही इसके दांत हैं, जिनकी संख्या सात है:

❶ इल्म (ज्ञान): प्रत्येक शब्द का एक अलग अर्थ होता है, इसी लिए ला-इलाहा इल्लल्लाह् का अर्थ इस तौर पर जानना ज़रूरी है कि इन्सान से जहालत दूर होजाए, यह कल्मा ग़ैरुल्लाह की इबादत को नकारता है, और इबादत को मात्र अल्लाह तआला के लिए साबित करता है, इसका अर्थ है : अल्लाह के सिवाय कोई भी सत्य मा'बूद (उपास्य) नहीं, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ إِلَّا مَن شَهِدَ بِٱلْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴾ **"(सिफ़ारिश के लायक़ वे हैं) जो सच बात को स्वीकार करें और उन्हें जानकारी भी हो"**। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस की मौत इस ह़ालत में हुई कि वह जानता हो कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं तो वह जन्नत में दाख़िल होगया"। (मुस्लिम)

❷ यक़ीन (विश्वास) : आप को उसके अर्थ पर यक़ीन हो; क्योंकि शक, गुमान, दुबिधा और शक की इसमें कोई गुन्जाइश नहीं है, बल्कि पुखता यक़ीन ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया: ﴿ إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ﴾ **"ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लायें, फिर शक न करें, और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहें, (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं"**।

चुनांचि केवल ज़ुबान से इक़्रार करना काफी नहीं है, बल्कि दिल से विश्वास करना ज़रूरी है, यदि दिल में यक़ीन न हो तो यही निफ़ाक़ है, नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः "**कलमए शहादतैन के साथ जो व्यक्ति भी अल्लाह से मुलाक़ात करेगा, और उसे इस में शक न हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगा**"।

3 क़ूबूल : जब आप को इसके माने की जानकारी हो गई और उस पर यक़ीन भी हो गया, तो ज़रूरी है कि आप पर उसका छाप भी दिखाई दे, और वह इस तरह से कि इसके मुतालबे दिल और ज़ुबान से आप को क़ूबूल हों, तो जिस ने तौहीद की दावत का इन्कार किया और उसे स्वीकार नहीं किया तो वह काफ़िर हो गया, चाहे उसका यह इन्कार घमण्ड, दुश्मनी और ह़सद के कारण ही क्यों न हो, और अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों के बारे में जिन्होंने घमण्ड करते हुए इसका इन्कार कर दिया फ़रमायाः ﴿ إِنَّهُمْ كَانُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴾ "**ये वे लोग हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई मा'बूद नहीं, तो यह घमण्ड करते हैं**"।

4 इन्क़ियाद : तौह़ीद के लिए पूरी ता'बेदारी हो, और यही वास्तव में ह़क़ीक़ी मज़्बूती और ईमान की अमली नुमाइश है, जो कि अल्लाह तआला की शरीअत के अनुसार अमल करने और उसकी रोकी हुई चीज़ों से दूर रहने से पूरी होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿ وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى ٱللَّهِ عَٰقِبَةُ ٱلْأُمُورِ ﴾ "**और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और वह है भी परहेज़गार, तो यक़ीनन उसने मज़बूत कड़ा थाम लिया, सभी कर्म का नतीजा अल्लाह की ओर है**"। और यही कामिल ता'बेदारी है।

5 सच्चाई : ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहने वाला व्यक्ति अपनी बात में सच्चा हो, यदि किसी ने मात्र ज़ुबान से कहा हो और उसका दिल इन्कारी हो तो वह मुनाफ़िक़ है, और इसकी दलील मुनाफ़िक़ीन की मज़म्मत में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِى قُلُوبِهِمْ ﴾ "**यह लोग अपनी ज़ुबानों से वह बाते कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है**"।

6 मह़ब्बत : मोमिन व्यक्ति इस कलमा से महब्बत करे, इसके मांग अनुसार अमल करना पसंद करे, और जो लोग इसके अनुसार अमल करते हैं उनसे मह़ब्बत करे, बन्दे का अपने रब से मह़ब्बत करने की निशानी यह है कि जो चीज़ें अल्लाह तआला को पसन्द हैं उन्हें वह महत्व दे चाहे वे उसकी चाहत के ख़िलाफ़ ही क्यों न हों, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दोस्ती रखते हैं उन से दोस्ती करे, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करते हैं उन से दुश्मनी करे, और अल्लाह के रसूल की पैरवी करे, उनके नक्शे क़दम को क़ूबूल करे, और उनका मार्ग-दर्शन स्वीकार करे।

7 इख़्लास : इस कल्मा के इक़्रार द्वारा उसकी चाहत मात्र अल्लाह तआला की ख़ूश्नूदी हो, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ ﴾ "**उन्हें इसके सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें इब्राहीम हनीफ के दीन पर।**" और नबी ﷺ ने फ़रमायाः "**अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को जहन्नम पर ह़राम कर दिया जिसने ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहा और इसके द्वारा अल्लाह की ख़ुश्नूदी चाहता हो**"।

क़ब्र में मैयत का इम्तिहान होगा और उससे तीन प्रश्न किए जाएंगें, यदि उसने उनका उत्तर दे दिया तो सफल होगया नहीं तो हलाक होगया, और उनमें से एक प्रश्न यह होगा مَنْ نَبِيُّكَ؟ **तेरा नबी कौन है?** इस प्रश्न का उत्तर वही व्यक्ति दे सकेगा जिसे अल्लाह ने संसार में इसके शराएत पूरी करने की तौफ़ीक़ दी होगी, मरते समय दीन पर साबित रख्खा होगा, और क़ब्र में इल्हाम किया होगा, तो आख़िरत में भी यह उसके लिए लाभदायक होगा, जिस दिन माल और संतान लाभ न देंगे। यह हैं इसकी चार शर्तें :

❶ **जिन चीज़ों का आपने आदेश दिया है, उनमें आपकी इताअत करना :** क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें आपकी फ़र्मांबर्दारी का हुक्म दिया है, फ़रमायाः ﴿مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَ﴾ **"उस रसूल की जो फ़र्मांबर्दारी करे उसी ने अल्लाह की फ़र्मांबर्दारी की"**। और फ़रमायाः ﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ﴾ **"कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से मह़ब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो स्वयं अल्लाह तुम से मह़ब्बत करेगा"**। और जन्नत में दाखिला आप ﷺ की इताअत पर निर्भर है, आप ﷺ ने फ़रमायाः **"मेरी उम्मत का हर कोई जन्नत में जाएगा सिवाय उसके जिसने जाने से इन्कार कर दिया, लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में जाने से कौन इन्कार करेगा? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया"**। (बुख़ारी) और जिसे आप ﷺ से मह़ब्बत है, वह ज़रूर आप की फ़र्माबर्दारी करेगा, इसलिए कि इताअत मह़ब्बत का फल है, और यदि कोई आप ﷺ की ताबेदारी के बिना आप से मह़ब्बत का दावा करता है तो वह अपने दावे में झूटा है।

❷ **जिन चीज़ों की आपने ख़बर दी है उनमें आप की तस्दीक़ करना :** जिस व्यक्ति ने अपनी ख़ाहिश या हवस की बुन्याद पर आप ﷺ से साबित चीज़ों को झुटलाया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल को झुटलाया, क्योंकि आप ﷺ ग़लती और झूट से मासूम हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَا يَنطِقُ عَنِ ٱلۡهَوَىٰٓ﴾ **"और न वह अपनी खाहिश से कोई बात कहते हैं"**।

❸ **जिन चिज़ों से आप ने रोका है उन से दूर रहना :** कबीरः गुनाह शिर्क और दूसरे बड़े और हलाक करने वाले गुनाहों से बचते हुए छोटे गुनाहों और मकरूह चीज़ों से बचना, चुनांचि अपने नबी ﷺ से मुस्लिम व्यक्ति की मह़ब्बत जिस क़दर अधिक होगी उसी के बराबर उसका ईमान भी अधिक होगा, और जब उसका ईमान ज़्यादा होगा तो अल्लाह तआला नेकियों को उसके दिल में मह़बूब कर देगा, और कुफ़्र, फ़िस्क़ और गुनाह के कामों से घृणा पैदा कर देगा।

❹ **और अल्लाह की इबादत उसी तरह हो जिस तरह खुद अल्लाह तआला ने अपने नबी की ज़ुबानी मश्रू'अ् (शरीयत सम्मत) की है :** क्योंकि इबादत में अस्ल प्रतिबंध है, इसलिए अल्लाह के रसूल से जो चीज़ें साबित हैं उनके बजाए अल्लाह की इबादत करना जायज़ नहीं है, आप ﷺ ने फ़रमायाः "जिस व्यक्ति ने कोई ऐसा काम किया जिसका हमने आदेश नहीं दिया है तो वह मर्दूद है"।

फ़ाइदा : यह जान लो कि नबी ﷺ की मह़ब्बत वाजिब है, और मात्र मह़ब्बत काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि वह तुम्हारी सारी चीज़ों से अधिक मह़बूब हों यहाँ तक कि तुम्हारी जान से भी; क्योंकि जो इन्सान किसी चीज़ से महब्बत करता है तो वह उसे और उसकी मुवाफ़क़त को तर्जीह़ देता है, और आप की मह़ब्बत में सच्चा वह व्यक्ति है जिस से मह़ब्बत

की निशानी ज़ाहिर हो, वह आपका ताबेदार हो, कर्म में आपकी सुन्नत का पाबन्द हो, आपके आज्ञा का पालन करता हो, प्रतिबन्धित चीज़ों से बचता हो, कठिनाई और आसानी में खूशी और ग़मी में आप के स्वभावों को अपनाता हो, इसलिए कि इताअत और ताबेदारी महब्बत का फल है, और इसके बिना महब्बत सच्ची नहीं हो सकती।

नबी ﷺ की महब्बत की बहुत सी निशानियां हैं, उन निशानियों में से एक यह है कि अधिक से अधिक आपको याद किया जाए, आप पर दुरूद भेजा जाए, क्योंकि ह़बीब अपने मह्बूब का अधिक चर्चा किया करता है। एक निशानी यह भी है कि आप से भेंट करने का शौक़ हो, क्योंकि ह़बीब को अपने मह्बूब से मुलाक़ात की चाहत होती है। एक निशानी यह भी है कि जब आप का चर्चा हो तो आप की बड़ाई (ताज़ीम) और इज़्ज़त की जाए। इस्ह़ाक़ رحمه الله कहते हैं : (आप ﷺ के बाद सहाबए कराम ﵃ जब भी आप का चर्चा करते तो उन पर रिक़्क़त तारी होजाती, उनके रौंगटे खड़े होजाते, और वे रोने लगते)। एक निशानी यह भी है कि आप से कीना रखने वालों से बुग़ज़ किया जाए, आप के दुश्मनों से दुश्मनी की जाए, और बिद्अतियों और मुनाफ़िक़ों से जो आप की सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं उन से दूर रहा जाए। एक निशानी यह भी है कि आप ﷺ ने जिन लोगों से महब्बत की है उन से महब्बत की जाए वह चाहे अह्ले बैत हों, या आप की नेक पत्नियां हों, या मुहाजिर और अन्सार सहाबए कराम हों, और जो इन से दुश्मनी करे उस से दुश्मनी की जाए, इन्हें गाली देने वालों से बुग़ज़ रख्खा जाए। और एक निशानी यह भी है कि आप के सुन्दर अख़्लाक़ की पैरवी की जाए, क्योंकि आप सारे लोगों से सुन्दर स्वभाव के मालिक थे, यहाँ तक कि आइशा رضي الله عنها ने कहा कि : आप कुर्आन के अमली नमूना थे। वही काम करते थे जिसका कुर्आन ने आप को आदेश दिया था।

नबी ﷺ के गुण : आप सब से बहादुर थे, खास कर लड़ाई के मैदान में, आप करम नवाज़ थे, सब से बड़े दानी थे, खासकर रमज़ान के महीने में, लोगों के सब से बड़े ख़ैर-ख़ाह थे, रहम दिल थे, अपने लिए किसी से बदला नहीं लेते थे, लेकिन अल्लाह तआला के बारे में थोड़ी सी भी मुरौवत नहीं बरतते (सब से ज़्यादा सख़्त) थे, सन्जीदा मिज़ाज बा-वक़ार थे, कन्या से भी अधिक शरम करने वाले थे, अपने घर वालों के लिए सब से बेहतर थे, लोगों के लिए दयालु और मेहर्बान थे, --- और भी आप के बहुत से गुण थे।

ऐ अल्लाह तू हमारे नबी, उनके आल, उनकी पत्नियों, उनके साथियों और क़ियामत के दिन तक उनकी पैरवी करने वालों पर रहमतें और सलामतियाँ नाज़िल कर।

तहारत

[1]नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुक्न है, जो त़हारत के बिना स्वीकार नहीं होती, और तहारत पानी या मिट्टी से हासिल होती है।

पानी की क़िस्में : ❶ त़ाहिर (पवित्र) : जो कि स्वंय पाक हो और पाक करने वाला हो, यह पवित्र पानी नापाकी को दूर करता है, और गन्दगी को मिटा देता है।

❷ नजिस (अपवित्र) : थोड़ा पानी जिसमें नापाकी गिर गई हो, और यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने के कारण उसके औसाफ़ में से मज़ा या रंग या बू बदल गई हो।

नोट : पानी यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने से जब तक उसके तीनों औसाफ़ (मज़ा, रंग और बू) में से कोई वस्फ़ न बदल जाए नापाक नहीं होता है, लेकिन यदि पानी थोड़े मात्रा में हो तो मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक होजाता है, और पानी को अधिक उस समय माना जाएगा जब वह लगभग 210 लीटर से ज़्यादा हो।

बर्तन : सोना और चाँदी के बर्तन के सिवाय हर पवित्र बर्तन को प्रयोग में लाना जायज़ है, और यदि सोना और चाँदी के बर्तन में पानी रख कर तहारत हासिल की गई तो तहारत तो होजाएगी लेकिन साथ में उन्हें प्रयोग करने का गुनाह भी होगा, और काफ़िरों के पाक कपड़ों और बर्तनों को प्रयोग में लाना मुबाह (जायज़) है।

मुर्दे का चमड़ा : बिल्कुल अपवित्र है, और मुर्दे दो तरह के होते हैं : ❶ जिनका खाना ह़राम हो। ❷ जिन्हें खाया जाता हो लेकिन वह ज़बह न किए गए हों, तो जिन जानवरों को खाया जाता हो और उन्हें ज़बह़ न किया गया हो उनके चमड़ों को दबाग़त देने के बाद उन्हें गीली चीजों के बजाए सूखी चीज़ों में प्रयोग करना जायज़ है।

इस्तिन्जा : पेशाब और पाखाने के रास्ते से निकलने वाली गन्दगी को दूर करना, यदि पानी से दूर किया जाए तो इसे इस्तिन्जा कहते हैं, और यदि पत्थर और टिशु-पेपर इत्यादि से दूर किया जाए तो इसे इस्तिज्मार कहते हैं, अल्बत्ता इस्तिज्मार के लिए शर्त यह है कि वह पाक हो, मुबाह हो, सफ़ाई करने वाला हो, और उसे खाया न जाता हो, और तीन या उस से अधिक पत्थरों द्वारा हो। इस्तिन्जा या इस्तिज्मार हर निकलने वाली गन्दगी को दूर करने के लिए ज़रूरी है।

क़ज़ाए ह़ाजत करने वाले व्यक्ति पर समय से अधिक अपवित्रता की स्तिथी में रहना ह़राम है, इसी तरह पानी के घाट, आम रास्ते, साए के नीचे, फ़ल्दार पेड़ के नीचे और ख़ाली जगहों में और फज़ा में काबा की ओर चेहरा करके ह़ाजत पूरी करना ह़राम है।

और यह मकरूह है कि शौचालय में ऐसी चीज़ लेकर प्रवेश करे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र हो, और इसी तरह ह़ाजत पूरी करते समय बात करना, सूराख इत्यादि में पेशाब करना, दाहने हाथ से शरम-गाह छूना, और शौचालय के अन्दर काबा की ओर चेहरा करके ह़ाजत पूरी करना **मकरूह** है। और ज़रूरत के समय यह चीजें जायज़ हैं।

और क़ज़ाए ह़ाजत करने वाले व्यक्ति के लिए यह मुस्तह़ब है कि पानी या पत्थर ताक़ (अद्वितीय) ले, और यह भी मुस्तह़ब है कि पहले सफ़ाई करे फिर पानी इस्तेमाल करे।

मिस्वाक : पीलू इत्यादि की नरम लकड़ी से मिस्वाक करना मुस्तह़ब है, जो कि नमाज़ से पहले, क़ुरआन पढ़ने और वुज़ू करते समय कुल्ली से पहले, सो कर उठने के बाद, मस्जिद या घर में प्रवेश करते समय, और मुंह का मज़ा बदल जाने के समय सुन्नते मुअक्कदा है।

---

[1]तह़ारत, सलात, ज़कात, सियाम और ह़ज्ज सम्बन्धित जो अह़काम ज़िक्र किए गए हैं यह इज्तिह़ाद की बुन्याद पर हैं, जिन्हें जमअ करने वाले ने अपने इल्म की रौश्नी में राजिह़ समझा है, इस से इख़्तिलाफ़ भी किया जा सकता है, बहर हाल मुस्लिम व्यक्ति के लिए धर्म सम्बन्धित मसाइल में मश्हूर उलमाए दीन जैसे अबू ह़नीफ़ा, मालिक, शाफ़ई और अह़मद की इत्तिबाअ़ करनी चाहिए।

मिस्वाक करने और तहारत के समय दाएं ओर से शुरू करना मुस्तहब है, और यह भी मुस्तहब है कि गन्दगी को दूर करने के लिए बाएं हाथ का प्रयोग किया जाए।

वुज़ू : वुज़ू के अर्कान : ❶ चेहरे को धुलना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना इस में शामिल है, ❷ दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर दोनों केहनियों तक धुलना। ❸ दोनों कानों समेत पूरे सर का मसह करना। ❹ दोनों पैरों को टख़्नों समेत धुलना। ❺तर्तीब के साथ वुज़ू करना। ❻ मुवालात अर्थात लगातार वुज़ू करना, इस तरह कि एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में इतनी देर न की जाए कि पहला अंग सूख जाए।

वुज़ू के वाजिबात : वुज़ू से पहले बिस्मिल्लाह कहना, रात की नींद से सोकर उठने वालों के लिए पानी में हाथ डालने से पहले तीन बार उसे धो लेना।

वुज़ू की सुन्नतें : मिस्वाक करना। शुरू में दोनों हथेलियों को धुलना, चेहरा धुलने से पहले कुल्ली करना और नाक में पानी खींचना, जो व्यक्ति रोज़े से न हो उसके लिए कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते समय मुबालग़ा करना, घनी दाढ़ीयों का ख़िलाल करना, उँगलियों का ख़िलाल करना, दाईं ओर से शुरू करना, अंगों को दुसरी और तीसरी बार धुलना, दाएं हाथ से नाक में पानी खींचना और बाएं हाथ से झाड़ना, अंगों को रगड़ना, वुज़ू पूरा करना, और सुन्नत से जो दुआ साबित है उसे पढ़ना।

वुज़ू के अन्दर मकरूह चीज़ें : ठंडे या गरम पानी से वुज़ू करना, एक अंग को तीन बार से अधिक धोना, अंगों से पानी छिड़कना, आँख का अन्दरूनी हिस्सा धुलना, अल्बत्ता वुज़ू के बाद तौलिया इस्तेमाल करना जायज़ है।

नोट : कुल्ली करने में पानी को मुंह के अन्दर घुमाना ज़रूरी है। और नाक में पानी डालते समय पानी को सांस के द्वारा खींचना ज़रूरी है, मात्र हाथ से डालना काफ़ी नहीं है, इसी तरह झाड़ते समय सांस के द्वारा झाड़ना ज़रूरी है।

वुज़ू का तरीक़ा : वज़ू का तरीक़ा यह है कि : दिल से नियत करे, फिर "बिस्मिल्लाह" कहे, और अपने दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे, और एक चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए, फिर पूरे चेहरे को (सर के बाल उगने की जगह से लेकर दोनों दाढ़ों और ठुड्डी के निचले हिस्से तक लम्बाई में, और एक कान की जड़ से लेकर दूसरे कान की जड़ तक चौड़ाई में) तीन बार धोए, और दाढ़ी घनी हो तो उसका खिलाल करे, और यदि हल्की हो तो धोना जरूरी है, फिर दोनों हाथों को दोनों केहनियों तक तीन बार धोए, फिर सर का दोनों कानों समेत इस तरह मसह़ करे कि दोनों हाथों को सर के अगले हिस्से से गुज़ारते हुए गुद्दी तक लेजाए, फिर उन्हें सर के अगले हिस्से तक वापस ले आए, शहादत की दोनों उँगलियों को कान में डाल ले और अंगूठे से जाहिरी हिस्से का मसह करे, फिर दोनों पैरों को टखनों समेत तीन बार धोए। फिर दुआ पढ़े।

नोट : दाढ़ी यदि हल्की हो तो उस के नीचे का चम्ड़ा धुलना ज़रूरी है, और यदि घनी हो तो मात्र ज़ाहिरी हिस्से को धोले।

मोज़ों पर मसह करना : मोज़े चाहे चमड़े के हों या धागा इत्यादि के, यदि वे ऊन के हैं तो उन्हें जौरब कहा जाता है, और मात्र छोटी नापाकी से तहारत के लिए ही इन पर मसह़ करना दुरुस्त है। जिस के लिए कुछ शर्तें हैं : ❶ मुकम्मल तहारत के बाद मोज़े पहने हों। ❷ पानी से तहारत ह़ासिल की हो। ❸ मोज़ा टखने के ऊपर तक हो। ❹ दोनों मोज़े मुबाह़ (जायज़) हों। ❺ और वह पाक चीज़ से बनाए गए हों।

इमामा (पगड़ी) : कुछ शर्तों के साथ इमामा पर मसह़ करना जायज़ है : ❶ इमामा बांधने वाला व्यक्ति नर हो। ❷ आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो। ❸ मसह़ छोटी नापाकी से तहारत के लिए कर रहा हो। ❹ पानी से तहारत ह़ासिल किया हो।

दुपट्टा : कुछ शर्तों के साथ दुपट्टे पर मसह़ करना जायज़ है : ❶ दुपट्टा औरत के सर पर हो। ❷ ह़लक़ के नीचे से उसे घुमाया गया हो। ❸ मसह़ छोटी नापाकी से तहारत के लिए हो। ❹ पानी से तहारत ह़ासिल की हो। ❺ आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

मसह़ की मुद्दत (अवधि) : मुक़ीम के लिए एक दिन और एक रात, और मुसाफ़िर (यात्री) के लिए यदि उसकी यात्रा में नमाज़ क़स्र करना जायज़ हो (अर्थात 85 कि0 मि0 का सफर हो) तो तीन दिन और तीन रात।

मसह़ की शुरूआत : पहनने के बाद पहली नापाकी के समय से यह मुद्दत शुरू होगी। मुक़ीम के लिए अगले 24 घंटे तक के लिए, और मुसाफ़िर के लिए 72 घंटे तक के लिए।

फ़ाइदा : जिसने यात्रा के दौरान मसह़ किया फिर मुक़ीम हो गाया, या इक़ामत (अवस्थान) के दौरान मसह़ किया फिर मुसाफ़िर होगया, या उसे मसह की शुरूआत के बारे में शक होगया तो वह मुक़ीम की तरह मसह़ करेगा।

पलास्टर : हड्डियों के उपचार के लिए जो पलास्टर बांधे जाते हैं उन पर मसह़ करने की कुछ शर्तें हैं : ❶ पलास्टर की उसे ज़रूरत हो। ❷ ज़रूरत से अधिक जगह पर पलास्टर न लगा हो। ❸ मसह़ करने और बाक़ी अंगों को धुलने में मुवालात हो। पलास्टर या पट्टी ज़रूरत से अधिक ह़िस्से पर लगी है तो उसे हटा देना ज़रूरी है, लेकिन यदि नुक़्सान का डर हो तो मसह करना काफ़ी होगा।

मोज़ों पर मसह़ करने की मिक़्दार : पैर की उँगलियों से लेकर पिंडली तक मसह़ किया जाएगा। सारी उँगलियाँ खुली हों, और दाएं हाथ की उँगलियों से दाएं पैर का और बाए हाथ की उँगलियों से बाएं पैर का मसह़ किया जाएगा।

फ़ाइदे : अफ़ज़ल यह है कि दोनों पैरों का मसह़ एक साथ किया जाए। मोज़े के नीचे या पीछे मसह़ करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है, और मात्र उसी (निचले या पिछले हिस्से) पर मसह़ करना काफ़ी नहीं है। मसह़ करने के बजाए पैरों को धुलना और एक बार से अधिक मसह़ करना मक्रूह है। इमामा और दुपट्टा के अधिक ह़िस्से पर मसह़ करना वाजिब है।

वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें : ❶ पेशाब और पाखाने के रास्ते किसी चीज़ का निकलना चाहे वह पाक हो जैसे हवा और मनी या नापाक हो जैसे पेशाब और मज़ी। ❷ नींद और बेहोशी के कारण अक़्ल का न होना, थोड़ी सी ऊँघ के अतिरिक्त जो बैठे बैठे अथवा खड़े खड़े आजाए, क्योंकि इस से वुज़ू नहीं टूटता। ❸ पेशाब और पाखाने का अपने रास्ते के इलावः से निकलना। ❹ पेशाब और पाखाने के सिवाय शरीर से किसी दूसरी नापाकी का अधिक मात्रा में निकलना, जैसे अधिक मात्रा में ख़ून निकलना। ❺ ऊँट का गोश्त खाना। ❻ बिना कप्ड़े वगैरः के हाथ से शरमगाह (इन्द्रिय) छूना। ❼ मर्द और औरत का शहवत के साथ बिना कपड़े के एक दूसरे को छूना। ❽ इस्लाम से फिर जाना। और जिसे पाक होने का विश्वास हो और नापाकी के बारे में शक हो, अथवा नापाकी के बारे में विश्वास हो और पाकी के बारे में शक हो तो वह विश्वास के अनुसार अमल करे, यही चीज़ बेहतर है।

ग़ुस्ले जनाबत : 6 चीजों के कारण ग़ुस्ल वाजिब होता है : ❶ सोने या जगने के अवस्था में मनी का निकलना पर पर जगने के अवस्था में लज़्ज़त के साथ निकलना शर्त है। ❷पुरुष

के लिंग का हश्फा (खतने में कटा हुआ हिस्सा) स्त्री के इंद्रिय में घुसना, चाहे मनी निकले या न निकले, ❸ काफ़िर का इस्लाम लाना। ❹ हैज़ (माहवारी) के खून ❺ और निफ़ास (बच्चा जन्ने के बाद आने वाला ख़ून) के ख़ून से पाक होना। ❻ मुस्लिम की मौत।

ग़ुस्ल के फ़रीज़े : नहाने की नीयत से पूरे बदन पर पानी बहाना और मुंह और नाक में पानी डालना काफ़ी है। और 9 चीज़ों के द्वारा ग़ुस्ल कामिल होता है : ❶ जनाबत से स्नान की नियत करे। ❷ बिस्मिल्लाह कहे। ❸ अपने दोनों हाथों को बर्तन में डालने से पहले तीन बार धोए। ❹ संभोग के बाद की शरमगाह पर लगी गंदगी को धोए। ❺ वुज़ू करे। ❻ अपने सर पर तीन लप पानी डाले, और उन से बालों की जड़ों को भिगोए और बालों का खिलाल करे। ❼ और पूरे शरीर पर पानी बहाए। ❽ अपने दोनों हाथों से पूरे शरीर को मले। ❾ और दाहिनी तरफ से शुरू करे।

और किसी भी व्यक्ति को जब छोटी नापाकी होजाए तो उस के लिए तीन चीजें हराम होजाती हैं : ❶ किसी आड़ के बिना मुसहफ को छुना। ❷ वुज़ू से रोकने वाले किसी उज़्र के बिना फ़र्ज या नफ़्ल नमाज़ पढ़ना। ❸ का'बा का तवाफ़ करना।

और यदि बड़ी नापाकी हो तो उपर्युक्त चीजों के साथ नीचे दर्ज की हूई चीजें भी हराम हो जाती हैं : ❹ क़ुर्आन पढ़ना। ❺ और वुज़ू किए बिना मस्जिद में रुकना।

और वुज़ू किए बिना नापाकी के अवस्था में सोना मक्रूह है। और इसी तरह ग़ुस्ल करने में अधिक पानी बहाना भी मक्रूह है।

तयम्मुम : तयम्मुम की शर्तें : ❶ पानी का न मिलना। ❷ तयम्मुम मुबाह़ और पाक मिट्टी द्वारा हो जिसके गर्द हों, और जो जला हुआ न हो।

तयम्मुम के अर्कान : पुरे चेहरे का मसह़ करना, और दोनों कलाईयों तक दोनों हाथों का मसह़ करना, सिलसिलावार करना और बिना देरी किए करना।

तयम्मुम तोड़ देने वाली चीज़ें : ❶ हर वह चीज़ जो कि वुज़ू को तोड़ने वाली हो। ❷ यदि तयम्मुम पानी न मिलने के कारण किया हो तो पानी का मिल जाना। ❸ तयम्मुम को मुबाह़ करने वाली चीज़ का ख़तम होजाना। जैसे रोग के कारण तयम्मुम करने वाले का निरोग होजाना।

तयम्मुम की सुन्नतें : ❶ बड़ी नापाकी से तयम्मुम करते समय तर्तीब और मुवालात क़ायम रखना। ❷ अन्तिम समय तक के लिए देरी करना। ❸ तयम्मुम के बाद वुज़ू की दुआएं पढ़ना।

तयम्मुम में मक्रूह चीज़ : एक बार से अधिक मिट्टी पर मारना।

तयम्मुम करने का त़रीक़ा : नियत करे फिर बिस्मिल्लाह कहे, और मिट्टी पर अपने दोनों हाथों से एक बार मारे, फिर हथेली के भीतरी ह़िस्से को अपने चेहरे और दाढ़ी पर फेरे, फिर अपने दोनों हथेलियों का मसह़ करे, दाईं के बाहरी ह़िस्से पर बाईं के भित्री ह़िस्से को फेरे, फिर बाईं के बाहरी ह़िस्से पर दाईं के भीतरी ह़िस्से को फेरे।

नपाकी को दूर करना : नापाकी दो तरह की होती है : ❶ ऐनी नापाकी : जिसे पाक करना सम्भव नहीं जैसे सूवर; उसे जितना भी नहलाया जाए वह पाक नहीं हो सकता। ❷ हुक्मी नापाकी : कपड़े और धर्ती इत्यादि जो कि असल में पाक हैं इन पर नापाकी का लग जाना।

आयान (सजीव तथा निर्जीव वस्तु)तीन तरह के होते हैं		हुक्म
जान्वर :	नापाक	जैसे कुत्ता, सूवर, और इनकी शरीर से निकलने वाली चीज़ें। और वे सभी परिन्दे और पशु जिनके गोश्त न खाए जाते हों और वे बिल्ली से बड़े हों। और इस तरह के मवेशी के पेशाब, गोबर, थूक, पसीना, मनी, दूध, रींट और क़ै सभी नापाक हैं।
	पाक	1) आदमी, इसका मनी, पसीना, थूक, दूद्ध, रींट, बल्ग़म, और स्त्री के शरमगाह की तरी, और इसी तरह इसके सभी अंग और सभी निकलने वाली चीज़ें सिवाय पेशाब पाखाना, मज़ी, वदी और ख़ून के पाक हैं।
		2) हर वह जानवर जिसका गोश्त खाया जाता है, उसका पेशाब, गोबर, मनी, दूध, पसीना, थूक, रींट, क़ै, मज़ी और वदी पाक है।
		3) जिससे बच पाना कठिन हो, जैसे गधा, बिल्ली और चूहा, तो इनके मात्र थूक और पसीना पाक हैं।
मुर्दे	सभी मुर्दे नापाक हैं सिवाए आदमी की मैयत के, और मछली, टिड्डी, और उन जानवरों के जिन की शरीर से ख़ून न बहता हो, जैसे : बिच्छू, चीऊँटी, और मच्छर।	
बे-जान चीज़ें	तो यह पाक हैं, जैसे धरती, पत्थर, पहाड़ इत्यादि। पर पिछली बेजान चीज़ें इस में शामिल नहीं हैं।	

फ़ाएदे : ✷ ख़ून और पीप नापाक हैं, लेकिन नमाज़ इत्यादि के अवस्था में पाक जानवर का थोड़ा सा ख़ून और पीप माफ़ है। ✷ दो चीज़ों के ख़ून पाक हैं : मछली का ख़ून, और जबह़ किए हुए जानवर के गोश्त और नलियों में बाक़ी रह जाने वाला ख़ून। ✷ ज़िन्दा जानवर से काटा हुवा गोश्त, और ख़ून और गोश्त का लोथड़ा नापाक है। ✷ गन्दगी दूर करने के लिए नियत शर्त नहीं है, तो यदि वह वर्षा से धुल जाए तो पाक हो जाएगा। ✷ गन्दगी के छू लेने से या उस पर चलने से वुज़ू नहीं टूटता, हाँ शरीर और कपड़े में जिस जगह गन्दगी लगी है उस जगह को धुलना ज़रूरी है। ✷ गन्दगी की पाकी के लिए कुछ शर्तें हैं : ❶ उसे पाक पानी से धुला जाए। ❷ यदि वह निचोड़ा जा सकता हो तो पानी के बाहर उसे निचोड़ा जाए। ❸ यदि गन्दगी मात्र धुलने से ख़तम न होती हो तो उसे खुर्चा जाए। ❹ यदि कुत्ते की नापाकी हो तो सात बार धुला जाए और एक बार मिट्टी लगाकर।

नोट : ✷धरती पर की नापाकी यदि बहने वाली हो तो उस पर मात्र पानी बहा देना काफ़ी होगा यहाँ तक कि गन्दगी दूर हो जाए, और उसकी बदबू और रंग मिट जाए। और यदि पाखाना इत्यादि हो तो उसे और उसकी निशानी को दूर करना ज़रूरी है। ✷ यदि पानी के बिना गन्दगी दूर न हो सकती हो तो पानी द्वारा उसे दूर करना ज़रूरी है। ✷ यदि नापाकी की जगह की जानकारी न हो तो उसे धुला जाएगा यहाँ तक कि उसके धुल जाने का विश्वास होजाए। ✷ जिस व्यक्ति ने नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के लिए वुज़ू किया हो तो वह उससे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ सकता है। ✷ सोने वाले व्यक्ति पर या जिसकी हवा निकल गई हो उस पर इस्तिन्जा करना वाजिब नहीं है; क्योंकि हवा पाक है, हाँ, यदि वह नमाज़ पढ़ना चाहता है तो उस पर वुज़ू करना फ़र्ज़ है।

हैज़ और इस्तिहाज़ा के मसाएल

मसाइल	हुक्म
हैज़ आने की उम्र (आयु)	हैज़ आने कि कम से कम उम्र 9 वर्ष है, और अधिक की कोई सीमा नहीं है। औरे यदि 9 वर्ष से पहले ख़ून आए तो वह इस्तिहाज़ा है। [1]
कम से कम हैज़ आने की मुद्दत (अवधि)	एक दिन और एक रात (24 घंटे) है, यदि इससे कम हो तो वह इस्तिहाज़ा है।
हैज़ आने की सर्वाधिक अवधि	15 दिन हैं, यदि 15 दिन से अधिक ख़ून आए तो वह इस्तिहाज़ा है।
दो हैज़ के बीच पाकी की मुद्दत	13 दिन हैं, यदि 13 दिन पूरे होने से पहले ख़ून आजाए तो वह इस्तिहाज़ा है।
अधिकतर औरतों के ख़ून आने की मुद्दत	6 दिन या 7 दिन हैं।
अधिकतर औरतों के पाक रहने की मुद्दत	23 दिन या 24 दिन हैं।
क्या ह़मल (गर्भ) के बीच आने वाला ख़ून हैज़ का ख़ून है?	ह़ामिला औरत को आने वाला ख़ून, या[2] मटयालापन या [3] पीलापन इस्तिहाज़ा का ख़ून है।
औरत को पाकी की जानकारी कब होती है?	औरतें दो तरह की होती हैं : ❶यदि वह सफ़ेद लैसदार[4] चीज़ देखती हो तो उसके देखने के बाद। ❷और यदि वह उसे नहीं देखती है तो शरमगाह का ख़ून, मटयालापन और पीलापन से सूख जाने के बाद वह पाक होजाती है।
पाकी की अवस्था में औरत की शरमगाह से निकलने वाली तरी का क्या हुक्म है?	यदि यह पतला या सफ़ेद लैसदार हो तो पाक है, और यदि यह ख़ून हो या उसमें मटयालापन या पीलापन हो तो यह नापाक है और इन सब से वुज़ू टूट जाता है, और यदि यह निकलता रहे तो इस्तिहाज़ा है।
मटयालापन या पीलापन का क्या हुक्म है?	यदि हैज़ के ख़ून के साथ मिला हुवा हो चाहे पहले हो या बाद में तो यह हैज़ है, और यदि मिला न हो तो इस्तिहाज़ा है।
हैज़ के दिन पूरे होने से पहले पाक होजाने का क्या हुक्म है?	यदि ख़ून आना बन्द होजाए और औरत पवित्रता देखले तो वह पाक मानी जाएगी, चाहे उसके दिन पूरे न हुए हों।
हैज़ का समय से पहले आजाने या देर से आने का क्या हुक्म है?	यदि उसमें हैज़ की निशानियां पाई जाती हों तो यह हैज़ का ख़ून है, इस शर्त के साथ कि दो हैज़ों के बीच 13 दिन का अर्सा हो। नहीं तो इसे इस्तिहाज़ा माना जाएगा।
हैज़ की मुद्दत में कमी या बेशी होजाए तो इसका क्या हुक्म है?	15 दिन तक उसे हैज़ माना जाएगा।
औरत को महीने भर या उससे भी अधिक ख़ून आए तो इसका क्या हुक्म है?	इसकी 3 स्तिथियां हैं : ❶जिसे ख़ून आने के दिन और तारीख़ की जानकारी हो, लेकिन उसका ख़ून एक ही तरह का हो। तो वह समय और दिन का एतिबार करेगी। ❷जिसे तारीख़ की जानकारी हो लेकिन दिनों की जानकारी न हो, तो वह तारीख़ के ह़िसाब से 6 या 7 दिन तक हैज़ शुमार करेगी। ❸जिसे दिनों के बारे में जानकारी हो लेकिन तारीख़ की जानकारी न हो, तो वह हर हिज्री महीने के शुरू के दिनों में से जितने दिन उसे आते थे हैज़ का दिन शुमार करेगी।

1 **हैज़:** बिना किसी बीमारी या बच्चे की पैदाइश के तन्दुरुस्ती के साथ हर महीने औरत से आने वाले ख़ून का नाम हैज़ है। **इस्तिहाज़ा :** यह बीमारी का ख़ून है जो बच्चे-दानी के नीचे की रग से निकलता है, हैज़ और इस्तिहाज़ा में फ़र्क़ यह है कि : ❶हैज़ का ख़ून लाल सियाही माएल होता है, और इस्तिहाज़ा का ख़ून गहरा लाल होता है, गोया कि वह नक्सीर का ख़ून हो। ❷ हैज़ का ख़ून गाढ़ा होता है, कभी-कभार उसके टुकड़े भी होते हैं, और इस्तिहाज़ा का ख़ून पतला होता है गोया कि वह घाव से बह रहा हो। ❸ अधिकतर हैज़ के ख़ून में बदबू होती है, लेकिन इस्तिहाज़ा का ख़ून आम ख़ून की तरह होता है। और हुक्म के लिहाज़ से हैज़ के कारण यह सारी चीज़ें ह़राम होती हैं : सुहबत करना, इस अवस्था में त़लाक़ देना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, त़वाफ़ करना, क़ुर्आन पढ़ना, या उसे छूना और मस्जिद में बैठना इत्यादि।

2 **कुद्रः** यह बहता हुवा गदले रंग का ख़ून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

3 **सुफ्रः** यह बहता हुवा पीला माएल ख़ून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।

4 **क़स्सतुल् बैजा'अ् :** यह बहती सफ़ेद चीज़ है जो कि पवित्रता के समय औरत की शरमगाह से निकलती है। और यह क़स्सा पवित्र है लेकिन इस से वुज़ू टूट जाता है।

निफ़ास के मसाएल

मसाइल	हुक्म
बच्चा जनने के बाद खून का न आना।	ऐसी औरत पर निफ़ास वाली औरत का हुक्म लागू नहीं होगा। उस पर स्नान करना भी वाजिब न होगा, और न ही उसका रोज़ा टूटेगा।
स्त्री का बच्चा जन्म होने की निशानी देखना।	यदि उसे जन्म से काफ़ी समय पहले दर्द के साथ खून और पानी आए तो ऐसे खून को निफ़ास नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
जन्म के समय निकलने वाले खून का हुक्म।	इसे निफ़ास का खून माना जाएगा, चाहे बच्चा आधा जन्मा हो, या जन्मा ही न हो, और उस पर इस बीच आने वाली नमाज़ की क़ज़ा नहीं है।
निफ़ास के दिन का शुमार कब से होगा?	मां के पेट से पूरे तौर पर बच्चे के निकल जाने के बाद से निफ़ास के दिन का शुमार होगा।
निफ़ास की कम से कम मुद्दत (अवधि) क्या है?	कम से कम की कोई मुद्दत नहीं है, इसी लिए यदि बच्चा जन्म होने के बाद से ही उसे खून न आए तो औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना वाजिब होगा, और वह 40 दिन पूरा होने का इन्तिज़ार नहीं करेगी।
निफ़ास की अधिक से अधिक मुद्दत क्या है?	अधिक से अधिक मुद्दत 40 दिन है, यदि 40 दिन से अधिक तक खून आए तो उसे निफ़ास नहीं माना जाएगा, बल्कि उस औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ होगा, हाँ यदि वह समय उसके हैज़ आने का हो तो उसे हैज़ का खून माना जाएगा।
जिसने 2 या 2 से अधिक बच्चे जन्म दिए हों?	पहले बच्चे के जन्म के बाद से दिन शुमार किया जाएगा।
इस्क़ाते ह़मल (गर्भ-पात) के बाद आने वाला खून?	यदि 80 दिन या उससे कम का गर्भ हो तो उसके बाद आने वाला खून, इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा, और 90 दिन के बाद गर्भ-पात हुवा हो तो उसके बाद आने वाला खून, निफ़ास का खून माना जाएगा। और यदि 80 और 90 दिन के बीच का गर्भ हो तो उसका ढांचा देखा जाएगा, यदि इन्सानी ढांचा तैयार होगया हो तो आने वाले खून को निफ़ास का खून माना जाएगा, नहीं तो इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
40 दिन से पहले पाक होजाए लेकिन दोबारा 40 दिन के अन्दर खून आना शुरू होजाए?	40 दिन के भीतर की पाकी को पाकी मानेगी और इस बीच स्नान करके नमाज़ पढ़ेगी, और यदि फिर दोबारा खून आजाए तो नमाज़ छोड़ देगी, यहाँ तक कि 40 दिन बीत जाए।

नोट : ✱ हैज़ और निफ़ास वाली स्त्री पर वह सारी चीज़ें ह़राम होंगी जो बड़ी नापाकी वालों पर ह़राम होती हैं। ✱ इस्तिहाज़ा वाली औरत पर नमाज़ पढ़ना वाजिब है। और वह हर नमाज़ के लिए वुज़ू किया करेगी। ✱ यदि कोई औरत सूरज डूबने से पहले हैज़ या निफ़ास के खून से पाक होजाए तो उसे उस दिन की ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ पढ़नी होगी। और यदि फ़ज्र होने से पहले पाक होजाए तो उसे उस रात की मग़्रिब और इशा की नमाज़ पढ़नी होगी। ✱ नमाज़ का समय होजाने के बाद यदि किसी औरत को हैज़ आए तो उस पर उस नमाज़ की क़ज़ा नही है।

✱ हैज़ या निफ़ास से पाकी के लिए स्नान करते समय बालों के जूड़ों को खोलना लाज़िम है, लेकिन जनाबत के गुस्ल के लिए खोलना वाजिब नहीं है।

✱ इस्तिहाज़ा वाली औरत से सुह़बत करना **मकरूह** है, लेकिन ज़रूरत के समय जायज़ है।

✱ हैज़ का स्नान कर लेने के बाद इस्तिहाज़ा वाली औरत का हर नमाज़ के लिए वुज़ू करना वाजिब है, यहां तक कि खून आना रुक जाए।

✱ ह़ज्ज और उम्रः के अर्कान पूरे करने के लिए, या रमज़ान के रोज़े पूरे करने के लिए औरत कोई ऐसी दवा प्रयोग कर सकती है जिस से कुछ समय के लिए हैज़ का खून न आए, लेकिन शर्त यह है कि उसे प्रयोग करने में कोई हानि न हो।

इस्लाम में औरतों का मुक़ाम

ईमान और कर्म के आधार पर औरत और मर्द दोनों के दोनों अल्लाह तआला के पास सवाब और फ़ज़ीलत में बराबर हैं। नबी ﷺ का फ़र्मान है : « إِنَّمَا النِّسَاءُ شَقَائِقُ الرِّجَالِ » "**अवश्य औरतें मर्दों जैसी हैं**"। अबूदाऊद। औरतें अपने हक़ के लिए मांग कर सकती हैं, इसी प्रकार अन्याय के विरोध में आवाज़ भी उठा सकती हैं, क्योंकि शरीअ़त में औरतों और मर्दों को एक साथ ही ख़िताब किया गया है, हां कुछ चीज़ों में दोनों में फ़र्क़ है जो कि बहुत थोड़े हैं, और यह फ़र्क़ भी इन के जिसमानी ढांचे और शक्ति का एतिबार करते हुए किया गया है, अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴾ "**क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी है**" चुनान्चि औरतों का अलग मजाल है और मर्दों का मजाल अलग है।

बल्कि घर में रहते हुए भी औरतों को मर्दों के बराबर सवाब दिया गया है, अस्मा बिन्ति यज़ीद से रिवायत है कि वह नबी ﷺ के पास आई, उस समय नबी ﷺ सहाबा ؓ के साथ थे, उन्हों ने कहा मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, मैं औरतों की ओर से सफ़ीर हूं, और मेरी जान भी आप पर कुर्बान हो, पुरब और पश्चिम में रहने वाली कोई भी ऐसी औरत नहीं है जो मेरे इस निकलने के बारे में सुनी हो या सुने मगर उस का विचार मेरी ही तरह का होगा, अल्लाह ने आप को मर्दों और औरतों की ओर हक़ के साथ भेजा है, सो हम ने आप पर और आप के मा'बूद पर जिस ने आप को भेजा है ईमान लाया, पर हम औरतें घिरी हुई हैं, आप मर्दों के घरों में बैठी हुई हैं, आप की खाहीशे पूरी करती हैं, आप के बच्चों का गर्भ उठाती हैं, और आप सारे मर्द जुम्अ़ा, जमाअ़त, बीमारों की इयादत, ह़ज्ज पर ह़ज्ज करके, बल्कि इस से भी बढ़कर यह कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा हम पर फ़ज़ीलत दिए गए हैं, जब्कि आप मर्द हज़्रात जब हज्ज, उम्रा या जिहाद के लिए जाते हैं, तो हम ही आप के माल की हिफ़ाज़त करते हैं, आप के कपड़े सिलते हैं, आप के बच्चों को पालते हैं, तो ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अज्रो-सवाब में आप के साझी नहीं हो सकते? रावी कहते हैं कि नबी ﷺ ने सहाबए कराम की ओ अपना चिहरा किया और उन से पूछा : "**क्या तुम ने धर्म सम्बन्ध में इस से उत्तम प्रश्न किसी औरत से कभी सुना है?**" तो उन्होंने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल हमें ऐसा नहीं लगता था कि कोई औरत भी इस तरह का प्रश्न कर सकती है। फिर नबी ﷺ ने उस ख़ातून की ओर अपना चेहरा किया और फ़र्माया : "**ऐ ख़ातून! लौट जा, और अपने पीछे वालियों को बता दे कि तुम्हारा अपने पति के साथ उत्तम बर्ताव करना, उनकी खाहिशें पूरी कर देना, और उन की बातें मान लेना इन सभों के बराबर है**"। रावी कहते हैं कि वह ख़ातून ख़ूशी के मारे तक्बीर और तहलील करते हुए वापस लौटी। बैहक़ी। और इसी तरह कुछ औरतों ने आकर नबी ﷺ से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मर्द ह़ज़्रात तो अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा फ़ज़ीलत में हम से काभी आगे बढ़ गए तो क्या हमारे लिए कोई ऐसा कर्म नहीं है जिस के द्वारा हम मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त कर सकें? तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : "**अपने घर के काम काज द्वारा तुम्हें मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त होता है**"। बैहक़ी। बल्कि किसी क़रीबी औरत पर इह़सान का शरीअत में बहुत महत्व है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : "जिस ने अपनी दो बेटियों, या दो बहनों, या दो क़रीबी औरतों पर खर्च किया यहां तक कि अल्लाह ने उन के लिए बन्दोबस्त कर दिया या उन्हें मालदार कर दिया, और इस खर्च द्वारा उस ने सवाब की उम्मीद रख्खी हो तो यह दोनों उस के लिए जहन्नम से पर्दा होंगी"। अह़मद और तब्रानी।

औरतों से संबन्धित कुछ आदेश

✸ किसी ग़ैर मह़रम[1] मर्द का किसी अजनबी औरत के साथ तन्हाई में मिलना ह़राम है। नबी ﷺ ने फ़र्माया : "**मह़रम के बिना कोई मर्द किसी अजनबी और के साथ अकेला न हो**"। बुख़ारी और मुस्लिम।

✸ औरत के लिए मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मुबाह़ है, पर यदि फितने का डर है तो मक्रूह है, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़र्माती हैं : "औरतों ने जो कुछ कर रख्खा है, यदि नबी ﷺ ने इसे देखा होता तो मस्जिद आने से रोक देता, जिस प्रकार बनू इस्राईल की औरतें रोक दी गई थीं"। बुख़ारी और मुस्लिम। और जिस प्रकार मर्दों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है उसी प्रकार औरतों को घर में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है। एक ख़ातून नबी ﷺ के पास आईं और कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूं। तो आप ﷺ ने फ़र्माया : "**मैंने जान लिया कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो, पर तेरा अपने घर के भित्री रूम में नमाज़ पढ़ना बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ना घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ना अपने मुह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है**"। अह़मद। और आप ﷺ ने फ़र्माया : "**औरतों की बेहतर मस्जिद उनका घर है**"।

✸ यदि साथ में सफ़र करने वाला मह़रम न हो तो औरतों पर ह़ज्ज या उम्रा वाजिब नही है। और मह़रम के बिना उन के लिए यात्रा करना भी जायज़ नहीं है; नबी ﷺ का फ़र्मान है: "**मह़रम के बिना कोई औरत तीन रात से अधिक का सफर न करे**"। बुख़ारी और मुस्लिम।

✸ औरतों के लिए क़ब्र की ज़ियारत करना और जनाज़ा के साथ चलना ह़राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**क़ब्र की ज़ियारत करने वालियों पर अल्लाह ने लानत भेजी है**"। और उम्मे अ़त़ीया रिवायत करती हैं कि : "**हमें जनाज़ा के पीछे चलने से रोक दिया गया। पर सखती नहीं की गई**"। बुखारी और मुस्लिम।

✸ औरत के लिए काले के सिवाय किसी भी कलर का बाल डाई करना जायज़ है, इस शर्त के साथ कि उस में निकाह़ का पैग़ाम देने वाले के लिए धोका न हो।

✸ औरतों को मीरास में से ह़िस्सा देना वाजिब है, और उन्से मीरास रोक लेना ह़राम है, नबी ﷺ से मर्वी है कि आप ने फ़र्माया : "**जिस ने अपने वारिस का मीरास रोक लिया, अल्लाह क़ियामत के दिन जन्नत में उस का मीरास रोक लेगा**"। इब्ने माजा।

✸ पती पर भलाई के साथ पत्नि के खाने पीने, पहन्ने और घर का खर्च उठाना वाजिब है। अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : "**हैसियत वाले को अपनी हैसियत से खर्च करना चाहिए और जिस पर उस की रोज़ी की तंगी की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसे दे रख्खा है उसी में से अपनी हैसियत अनुसार दे**" पर यदि वह पति वाली न हो तो उस के बाप या भाई या बेटे पर उस का खर्च उठाना वाजिब है। पर यदि उस का कोई क़रीबी मर्द नातेदार न हो सारे लोगों पर उस का खर्च उठाना मुस्तह़ब है; नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**बेवा**

---

1 औरत के लिए मह़रम वह व्यक्ति है जिस से जीवन में कभी भी शादी करना जायज़ नहीं है, जैसे : बाप, दादा पर्दादा वग़ैरह, बेटे, पोते, परपोते वग़ैरह, भाई, भतीजे, भान्जे, चच्चा, मामू, ससूर, सौतेले बेटे, रिज़ाई बाप, बेटा और भाई, दामाद और मां का शौहर।

औरतों और गरीब लोगों पर खर्च करने वाले का सवाब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है, या उस व्यक्ति के सवाब की तरह जो रात में क़ियाम करता है और दिन में रोज़ा रखता है”। बुख़ारी और मुस्लिम।

✸ औरत अपने छोटे बच्चे के पालण-पोषण करने का ह़क़दार जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से शादी नहीं कर लेती। और जब तक बच्चा मां के पास है उस के पिता पर खर्च उठाना लाज़िम होगा।

✸ औरत से सलाम करने में पहल करना मुसतह़ब नहीं है खासकर यदि वह जवान हो, या बुराई का डर हो।

✸ प्रत्येक सप्ताह बग़ल का बाल उखाड़ना, नाभी के नीचे का बाल मुंडना, और नाखुन काटना मुसतह़ब है, और चालीस दिन से अधिक तक छोड़े रखना मक्रूह है।

✸ चेहरे और भौं के बाल को उखाड़ना ह़राम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “**अल्लाह ने लानत भेजी भौं बनाने वाली और बनवाने वालियों पर**”। अबू-दाऊद।

✸ **सोग मनाना** : औरत पर शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए 3 दिन से अधिक सोग मनाना ह़राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “**किसी औरत के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो यह जायज़ नहीं कि पति कि सिवाय किसी दूसरे मैयत पर 3 दिन से अधिक सोग मनाए**”। चुनान्चि शौहर पर 4 महीने 10 दिन सोग मनाना वाजिब है। सोग के दिनों में श्रंगार करना, खुश्बू जैसे ज़ाफ़रान लगाना, ज़ेवर पहनना, चाहे अंगूठी ही क्यों न हो, डिज़ाइन वाले रंगीन लाल, पीले कपड़े पहनना, मेंहदी लगाना, मेक-अप करना, काला सुर्मा लगाना, या खुश्बूदार तेल लगाना ह़राम है। सोग के दिनों में नाख़ून काटना, बाल उखाड़ना, और नहाना जायज़ है। ऐसी औरत पर किसी ख़ास रंग का जैसे काला कपड़ा पहनना वाजिब नहीं है। इद्दत के दिनों में इसका उसी घर में रहना वाजिब है, जिस में शौहर की मृतयु के समय थी। बिना ज़रूरत के उस के लिए जगह बदलना ह़राम है। और इसी प्रकार बिना ज़रूरत के दिन में घर से बाहर भी न निकले।

✸ बिना ज़रूरत औरत के लिए अपने सर का बाल मुंडवाना ह़राम है, काटना जायज़ है पर उस में मर्दों की नक़्क़ाली न हो, क्योन्कि ह़दीस में नबी ﷺ ने उन औरतों पर लानत भेजी है जो मर्दों का रूप धारती हैं। तिर्मिज़ी। और इसी प्रकार इस कटिंग में काफ़िर औरतों की भी नक़्क़ाली न हो; क्योंकि ह़दीस में है : **जिसने दूसरी क़ौम का रूप धारा तो उस की गिन्ती उसी में होगी। अबू-दाऊद**।

✸ औरत का घर से निकलते समय अपनी शरीर को ऐसी चादर से ढकना अनिवार्य है जिसमें निम्न शर्तें पाई जाती हों। ❶ पूरे शरीर को ढांपे हो। ❷ उसमें नक़्शो-निगार न हो। ❸ इतनी मोटी हो कि शरीर न दिखे। ❹ तंग न हो। ❺ उसमें खुश्बू न लगी हो। ❻ मर्दों के कपड़ों जैसा न हो। ❼ काफ़िर औरतों के कपड़े की तरह न हो। ❽ जिस के पहन्ने में शोहरत न हो। और ऐसा कपड़ा जिसमें इन्सान या जानवर का पिक्चर हो उसे पहन्ना, या उसे लटकाना या उसे दीवार इत्यादि का पर्दा बनाना या उसे बेचना जायज़ नहीं है।

✸ दूसरों के सामनें औरतों की शरीर का प्रदा तीन प्रकार का है : ❶ उस का शौहर उस के पूरे जिस्म को देख सकता है। ❷ औरतें और उस के मह़रम के लिए उस के जिस्म का मात्र उतना ही हिस्सा देखना जायज़ है जो साधारण तौर पर खुला रहता है। जैसे : चेहरा,

बाल, गर्दन, हाथ, बाजू और पैर इत्यादि। ❸ अजनबी मर्दों के लिए उस के जिस्म के किसी भी हिस्से का देखना सिवाय ज़रूरत के जायज़ नहीं है, जैसे निकाह़ के ख़ितबे या इलाज इत्यादि के लिए। इस लिए कि औरत का असल फ़ितना उस के चेहरे में है, और फ़ाति़मा बिन्ति मुन्ज़िर फ़र्माती हैं : "**हम मर्दों से अपने चेहरे को छुपाया करती थीं**"। हाकिम। और आइशा फ़र्माती हैं : "हम **अल्लाह के रसूल के साथ इह़राम की ह़ालत में थीं जब हमारे सामने से क़ाफ़ले वाले गुज़रा करते थे, वह जब हमारे बराबरी में होते तो हम औरतें अपने दुपट्टे अपने सर से अपने चेहरे पर डाल लिया करती थीं, और जब वे आगे निकल जाते तो अपने चेहरे खोल लिया करती थीं**"। अबू-दाऊद।

✸ **इ़द्दत** : कई प्रकार की होती है। ❶ ह़ामिला के लिए त़लाक़ और शौहर की वफ़ात की इ़द्दत है बच्चा जन्म देना। ❷ जिस के शौहर की वफ़ात हो गई हो उस की इ़द्दत 4 महीने 10 दिन है। ❸ जिस औरत को ह़ैज़ आता हो उसकी त़लाक़ की इ़द्दत तीन ह़ैज़ है जो कि तीसरे ह़ैज़ से पाक होने के साथ पूरी होजाती है। ❹ जिसे ह़ैज़ न आता हो उसकी इ़द्दत 3 महीने है। रजई त़लाक़ की इ़द्दत गुज़ारने वाली औरत पर शौहर के घर ही में रह कर इ़द्दत पूरी करना वाजिब है, इस बीच शौहर के लिए उसके किसी भी अंग को देखना और अकेले में उसके साथ रहना जायज़ है, हो सकता है अल्लाह तआला उन दोनों के बीच सुलह़ करादे।

शौहर के यह कहने से कि मैं ने तुझे वापस लौटाया, या सुहबत करने से बीवी निकाह़ में लौट आती है, रजई त़लाक़ हो तो लौटाने के लिए बीवी की रिज़ामन्दी ज़रूरी नहीं है।

✸ औरत स्वयं अपनी शादी नहीं कर सकती है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**जिस औरत ने भी वली की मर्ज़ी के बिना शादी की तो उस का निकाह़ बाति़ल है**"। अबू-दाऊद।

✸ औरतों पर अपने बालों के साथ दूसरे बालों को जोड़ना, या जिस्म पर गोदाई गोदना ह़राम है, बल्कि यह बड़े गुनाहों में से है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**अल्लाह की लानत है बालों को जोड़ने और जोड़वाने वाली पर, और गोदना गोदने और गोदवाने वाली पर**"। बुख़ारी और मुस्लिम।

✸ औरतों पर अपने शौहर से बिना किसी सबब के त़लाक़ मांगना ह़राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : "जिस किसी औरत ने भी बिना किसी कारण के अपने पति से त़लाक़ मांगा तो उस पर जन्नत की ख़ुश्बू ह़राम है"। अबू-दाऊद।

✸ औरतों पर भलाई के साथ अपने पति की बात मानना वाजिब है, और खास कर बिछौना पर जाने के लिए। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "**पति ने अपनी पत्नी को यदि बिस्तर पर बुलाया और वह आने से इन्कार कर दी, फिर पति ने गुस्से में रात गुज़ारी तो सवेरे तक फ़रिश्ते पत्नी पर लानत भेजते रहते हैं**"। बुख़ारी और मुस्लिम।

✸ औरतों पर यदि रास्ते में अजनबी मर्दों से मिलने की जानकारी हो तो उन पर ख़ुश्बू लगाना भी ह़राम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "यदि औरत ख़ुश्बू लगाकर लोगों के बीच उसे सुंघाने के लिए गई तो वह इस इस प्रकार की है, अर्थात वेश्या है"। अबू-दाऊद।

नमाज़

अज़ान और इक़ामत : हज़र (मुक़ीम होने की हालत) में अज़ान देना और इक़ामत कहना मर्दों पर फ़र्ज़े किफ़ाया है, पर यात्री और अकेले नमाज़ी के लिए सुन्नत है, और औरतों के लिए **मकरूह** है, और समय से पहले अज़ान देना जायज़ नहीं है, मात्र फ़ज्र की पहली अज़ान आधी रात के बाद दे सकते हैं।

नमाज़ की शर्तें : 9 हैं : **1.** इस्लाम, **2.** अक़्ल, **3.** तम्ईज़ (पहचान), **4.** शक्ति हो तो पाकी हासिल करना, **5.** नमाज़ का समय होना, **ज़ुह्र का समय** सूरज ढलने के बाद से हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक रहता है, **फिर अस्र का समय** शुरू होजाता है, और इसका इख़्तियारी समय हर चीज़ का साया उसके दुगना होने तक रहता है, फिर सूरज डूबने तक ज़रूरत का समय बाक़ी रहता है, **फिर मग़्रिब का समय** शुरू होजाता है आसमान की लाली गायब होने तक, **फिर इशा का समय** शुरू होजाता है, और इस का इख़्तियारी समय आधी रात तक होता है, फिर फ़ज्र उदय होने तक ज़रूरत का समय बाक़ी रहता है। और इसके बाद से **फ़ज्र का समय** सूरज निकलने तक रहता है। **6.** शरमगाह को छुपाना[1] **7.** शक्ति भर शरीर, कपड़े और जा-ए-नमाज़ से नापाकी दूर करना। **8.** शक्ति भर का'बा की ओर चेहरा करना। **9.** दिल से नियत करना।

नमाज़ के अर्कान : 14 हैं : **1.** ताक़त हो तो फ़र्ज़ नमाज़ों में खड़ा होना। **2.** तक्बीरतुल् इह्राम कहना। **3.** सुरतुल् फ़ातिहा पढ़ना। **4.** हर रकअत में रुकुअ् करना। **5.** रुकुअ् से उठना। **6.** रुकुअ् के बाद खड़े होकर एतिदाल करना। **7.** सात अंगों पर सज्दा करना। **8.** दोनों सज्दों के बीच बैठना। **9.** अन्तिम तशह्हुद पढ़ना। **10.** अन्तिम तशह्हुद के लिए बैठना। **11.** अन्तिम तशह्हुद में नबी ﷺ पर दरूद भेजना। **12.** पहला सलाम। **13.** इन सभी अर्कान को इत्मीनान से करना। **14.** और इन्हें सिलसिलावार करना।

इन अर्कान को किए बिना नमाज़ सहीह नहीं होगी। और इन में से किसी भी एक रुक्न को छोड़ देने या भूल से उस के छूट जाने के कारण नमाज़ बातिल होजाती है।

नमाज़ के वाजिबात : 8 हैं : **1.** तक्बीरतुल् इह्राम के सिवाय बाक़ी सभी तक्बीरें। **2.** इमाम और अकेले नमाज़ी का **"समिअल्लाहु लिमन् हमिदह्"** कहना। **3.** रुकुअ् से उठने के बाद **"रब्बना व लकल् हम्द्"** कहना। **4.** रुकुअ् में एक बार **"सुब्हान रब्बियल् अज़ीम"** कहना। **5.** सज्दा में एक बार **"सुब्हान रब्बियल् आ'ला"** कहना। **6.** दोनों सज्दों के बीच **"रब्बिग्फ़िर्ली"** कहना। **7.** पहला तशह्हुद। **8.** पहले तशह्हुद के लिए बैठना। इन वाजिबात को यदि जान बूझ कर छोड़ दिया हो तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। और यदि भूल से छुट गए हों तो सज्द-ए-सह्व करना होगा।

नमाज़ की सुन्नतें : नमाज़ में पढ़े और किए जाने वाले बाक़ी कर्म हैं, जिन्हें जान बूझ कर भी छोड़ देने से नमाज़ बातिल नहीं होती। पढ़ी जाने वाली सुन्नतों का चर्चा नीचे किया जारहा है : दुआ-ए-सना, अऊज़ु बिल्लाह् और बिस्मिल्लाह पढ़ना। आमीन कहना, और इसे जह्री नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से कहना। सुरतु-ल्-फ़ातिहा के बाद दूस्री सुरतें मिलाना, जह्री नमाज़ों में इमाम का ऊँची आवाज़ से पढ़ना, मुक़्तदी ऊँची आवाज़ से नहीं पढ़ सकता, पर

---

[1] इन्सान की शरमगाह और वह चीज़ जिस से उसे हया आए। सात साल के बच्चे पर दोनों शरमगाह का पर्दा है, और 10 के हो जाने पर नाफ़ से घुटने के बीच का पर्दा वाजिब है। और बालिग़ा आज़ाद औरत पर मुकम्मल पर्दा है सिवाय उसके चेहरे, दोनों हथेली और दोनों पैर के, इन्हें नमाज़ में ढाँपना मकरूह, परन्तु अजनबी मर्दों की मौजूदगी में इन्हें ढाँपना ज़रूरी है। अतः यदि नमाज़ या तवाफ़ में उस के बाज़ू खुले हों तो उस की नमाज़ बातिल है, जो कि क़बूल नहीं होगी। और नमाज़ के अलावा भी दोनों शरमगाहों का पर्दा सखती के साथ ज़रूरी है। तन्हाई और अन्धेरे में भी बिना ज़रूरत उन्हें खोलना मकरूह है।

अकेले पढ़ने वाले व्यक्ति को इख़्तियार है। **"रब्बना व लक-लू-ह़म्द्"** के बाद **"ह़म्दन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-सू-समावाति व मिल्अ-लू-अर्ज़ि ..."** अन्तिम तक पढ़ना। और रुकुअ् और सज्दे में एक बार से अधिक तस्बीह़ पढ़ना, इसी तरह "रब्बिग़्फिर्लि" एक बार से अधिक पढ़ना, और सलाम से पहले दुआएं पढ़ना। और की जाने वाली सुन्नतें यह हैं : तक्बीरतु-लू-इह्राम के समय, रुकूअ् करते समय, रुकूअ् से उठते समय और पहले तशह्हुद् से खड़ा होने के समय रफउ-लू-यदैन करना, और क़ियाम के समय दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रख कर छाती पर बांधना, दोनों पैरों के बीच दूरी रखना, सज्दे की जगह पर देखना, सज्दा करते समय धरती पर पहले दोनों घुटनों को फिर दोनों हाथों को, फिर पेशानी और नाक को रखना, और दोनों बाज़ूओं को पहलू से, और पेट को अपने दोनों जांघों से, और जांघों को दोनों पिन्डिलियों से दूर रखना, और दोनों घुटनों के बीच दूरी रखना, दोनों पैरों को खड़ा रखना, उँग्लियों को काबे की ओर किए रखना, और दोनों हाथों को मोढे की बराबरी में रखना, उँग्लियां समेटे रखना, पैरों के बल, दोनों हाथों से दोनों घुटनों पर सहारा लेते हुए खड़ा होना। दोनों सज्दों के बीच और पहले तशह्हुद में बायां पैर बिछाकर उस पर बैठना और दायां पैर खड़ा रखना, और अन्तिम तशह्हुद में बाएं पैर को दाएं पैर के नीचे से निकालना और ज़मीन पर बैठना। और दोनों सज्दों के बीच और इसी प्रकार तशह्हुद में दोनों हाथों को फैलाकर दोनों जांघों पर रखना, उँग्लियां मिलाए रखना। पर दाएं हाथ के किनारे वाली दोनों उँग्लियों को समेटे रखे, और अंगूठे से बीच वाली उँग्ली के साथ गोल घेरा बनाए और शहादत की उँगली से अल्लाह की वह्दानियत का इशारा करता रहे, और सलाम फेरते समय दाएं और बाएं ओर घूमे, पहले दाईं ओर से शुरू करे।

सज्द-ए-सह्व : यदि किसी मश्रूअ् ज़िक्र को भूल कर दूसरी जगह पढ़ दिया जैसे सज्दे में क़ुरआन पढ़ने लगा तो ऐसी स्तिथि में सज्द-ए-सह्व करना मस्नून है, और यदि किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो सज्द-ए-सह्व करना मुबाह़ है, और यदि रुकुअ् या सज्दा, या क़ियाम, या क़ा'दा अधिक कर दिया या नमाज़ पूरी होने से पहले सलाम फेर दिया, या ऐसी गलती कर बैठा जिस से मतलब बदल जाए, या वाजिब छोड़ दिया, या नमाज़ के बीच ही उसे अधिक पढ़ लेने का शक हुवा तो उस पर सज्द-ए-सह्व करना वाजिब है, और जान बूझ कर वाजिब सज्द-ए-सह्व छोड़ देने से नमाज़ बातिल हो जाती है। और यदि चाहे तो सलाम से पहले या तो सलाम के बाद सज्द-ए-सह्व करे, और यदि सज्द-ए-सह्व करना भूल गया और समय भी अधिक हो गया तो फिर करने की ज़रूरत नहीं।

नमाज़ का तरीक़ा : जब नमाज़ के लिए खड़ा हो तो क़िब्ले की ओर चेहरा करे, और **"अल्लाहु अक्बर"** कहे, यदि इमाम हो तो मुक़्तदी को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ में तक्बीर कहे, तक्बीर कहते समय अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों तक उठाए, फिर दाईं हथेली से बाईं हथेली पकड़े और उसे अपने सीने पर बांध ले, और नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, पस्त आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे : **"सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बिह़म्दिक व तबारकस्मुक व तआ़ला जद्दुक व लाइलाह ग़ैरुक"** फिर अऊज़ु बिल्लाह् पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-लू-फ़ातिहा पढ़े, जह्री नमाज़ों में इमाम के सक्तों में पढ़ना मुस्तह़ब है, फिर कोई और सूरत मिलाए, सवेरे की नमाज़ में तिवाले मुफ़स्सल पढ़ना, मग़्रिब में क़िसारे मुफ़स्सल और बाक़ी नमाज़ों में अवसाते मुफ़स्सल पढ़ना मुस्तह़ब है। तिवाले मुफ़स्सल सूरते **"क़ाफ़"** से लेकर सूरते **"अम्म"** तक है, और अवसाते मुफ़स्सल **"सूरतुज़्ज़ुह़ा"** तक है, और **"अन्नास"** तक क़िसारे मुफ़स्सल है। फ़ज्र की नमाज़ में और मग़्रिब और इशा की पहली दोनों रक्अतों में इमाम ऊँची

आवाज़ में क़िराअत करे, और बाक़ी नमाज़ों में आवाज़ पस्त रखे। फिर **"अल्लाहु अक्बर"** कहे, तक्बीरतुल्-इह्राम में रफ्उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़्उ-ल्-यदैन करे, और रुकूअ् में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रख्खे, उँग्लियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार **"सुब्ह़ान रब्बिय-ल्-अ़ज़ीम"** कहे, फिर **"समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह्"** कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-ल्-इह्राम में रफ्उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़्उ-ल्-यदैन करे, जब सीधा खड़ा होजाए तो **"रब्बना व लक-ल्-ह़म्दु ह़म्दन् कसीरन् तैयेबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-स्-समावाति व मिल्अ-ल्-अर्ज़ि व मिल्अ माबैनहुमा व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइ-म्-बा'द्"** पढ़े। फिर "अल्लाहु अक्बर कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाज़ूओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रख्खे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रख्खे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रख्खे, उँग्लियों को काबे की ओर करे, और सज्दे में 3 बार **"सुब्ह़ान रब्बिय-ल्-आअ्ला"** कहे, और चाहे तो दूसरी दुआएं भी मिलाए, फिर "अल्लाहु अक्बर" कहते हुए सर उठाए, और बायां पैर बिछा कर उस पर बैठे, और दायां पैर खड़ा रख्खे, और उँग्लियों को काबे की ओर मोड़ ले, या दोनों पैरों को गाड़ ले और उँग्लियां काबा की ओर मोड़ ले, और एड़ी पर बैठे, और 3 बार **"रब्बिग़्फ़िर्ली" कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, "वर्ह़म्नी, वज्बुर्नी, वर्फ़अ्नी, वर्ज़ुक़्नी, वन्सुर्नी, वह्दिनी, व आफ़िनी, वअ्फ़ु अन्नी",** फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर "अल्लाहु अक्बर" कहते हुए सर उठाए, और दोनों पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाए, और पहली रक्अत की तरह दूसरी रक्अत पढ़े, दूसरी रक्अत पढ़ कर तशह्हुद के लिए बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच में बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर रख्खे, और दाएं को दाएं जांघ पर, किनारे की दोनों उँग्लियों को मोड़ले, और अंगूठे और बीच वाली उँग्ली का गोल घेरा बनाले, और शहादत की उँग्ली से इशारा करता रहे, और तह़ीयात पढ़े : **"अत्तहि़यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्नबियु व रह़्मतुल्लाहि व बरकातुह्, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहि़स्सालिह़ीन्, अश्ह़दु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्ह़दु अन्न मुह़म्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुह्"।** फिर "अल्लाहु अक्बर" कहते हुए तीसरी रक्अत के लिए उठे, और रफ़्उ-ल्-यदैन करे, और चौथी रक्अत के लिए उठते हुए रफ़्उ-ल्-यदैन न करे, पहली रक्अत ही की तरह तीसरी और चौथी रक्अत भी पढ़े, लेकिन इन्में दूसरी सूरतें न मिलाए, और न ही आवाज़ उँची करे, फिर अन्तिम तशह्हुद के लिए तवर्रुक करके बैठे, बायां पैर बिछाकर उसे दाएं पैर के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को गाड़े रख्खे, और धरती पर बैठे, मात्र अन्तिम तशह्हुद में तवर्रुक करना सुन्नत है, फिर तह़ीयात पढ़े, फिर सलात पढ़े : **"अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुह़म्मद्, कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदुम्मजीद्, अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुह़म्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुह़म्मद्, कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदुम्मजीद्,"** और **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिल्क़ब्रि व अ़ज़ाबिन्नारि व फ़ित्नति-ल्-मह़्या वल्ममाति व शर्रि-ल्-मसीहि़द्दज्जालि"** और दूसरी दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है, फिर दोनों ओर सलाम फेरे, दाएं ओर चेहरे को करते हुए **"अस्सलामु अ़लैकुम व रह़्मतुल्लाह्"** कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। और सलाम के बाद यह दुआएं पढ़े।[1]

---

[1] तीन बार "अस्तिग्फ़िरुल्लाह्" कहे, फिर पढ़े : "अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल्जलालि व-ल्-इक्राम्, लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर्, ला ह़ौल व ला क़ूवत

रोगी की नमाज़ : यदि रोगी को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से बीमारी बढ़ जाने का डर हो, या वह खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की शक्ति न रखता हो, तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, यदि इस की भी शक्ति न रखता हो पहलू के बल नमाज़ पढ़े, और यदि यह भी सम्भव न हो तो पीठ के बल लेट कर नमाज़ पढ़े।

और यदि रुकु'अ् और सज्दा करने की शक्ति न हो तो इशारा से रुकु'अ् और सज्दा करे, और ज़रूरी है कि छूटी हूई नमाज़ों की क़ज़ा करे। और यदि बीमारी के कारण नमाजों को अपने अपने समय पर पढ़ने की शक्ति न रखता हो तो जुह्र और अस्र की नमाज़ इकट्ठा कर के जुह्र या अस्र के वक्त में और इसी तरह मग्रिब और इशा की नमाज़ इकट्ठा कर के मग्रिब या इशा के समय में पढ़ सकता है।

मुसाफ़िर की नमाज़ : यदि मुसाफ़िर की यात्रा की दूरी लगभग 80 कि0 मी0 से अधिक हो, और उस का सफ़र मुबाह़ हो तो उस के लिए अफ़ज़ल यह है कि 4 रक'अत वाली नमाज़ों को क़स्र कर के 2 रक'अत पढ़े, वैसे 4 रक'अत भी पढ़ना जायज़ है। और यदि वह यात्रा के बीच किसी जगह 4 दिन (20 नमाज़) से अधिक ठहरना चाहता हो तो वहाँ पहुँच कर क़स्र किए बिना नमाज़ें पूरी पढ़े। और यदि उस ने मुक़ीम की इमामत में नमाज़ पढ़ी, या जाएक़ियाम (निवासस्थान) की भूली हूई नमाज़ उसे यात्रा के बीच याद आई या इस के बरख़िलाफ तो इन सभी अवस्था में उसे नमाज़ पूरी पढ़नी होगी।

जुम्आ की नमाज़ : जुम्आ की नमाज़ जुह्र की नमाज़ से अफ़ज़ल है, जो कि जुह्र के अलावा मुस्तक़िल एक नमाज़ है, न कि जुह्र की क़स्र नमाज़ है, इसलिए इसे 4 रक'अत पढ़ना जायज़ नहीं, और न ही जुह्र की नियत से पढ़ने से यह नमाज़ होती है, इसी तरह इसे अस्र की नमाज़ के साथ इकट्ठा करके पढ़ना भी जायज़ नहीं है, चाहे इकट्ठा करने का सबब मौजूद ही क्यों न हो।

वित्र की नमाज़ : वित्र की नमाज़ सुन्नत है, जिसका समय इशा से लेकर फ़जर उदय होने तक रहता है, इस की कम से कम संख्या 1 रक'अत है, और अधिक 11 रक'अत है, प्रत्येक 2 रक'अत के बाद सलाम फेरना अफ़ज़ल है, 2 सलाम के साथ 3 रक'अत पढ़ना यह अद्ना (न्यूनतम) कमाल है, इन्में पहली रकअत में सुरतुल् आ'ला, दूसरी में सुरतुल् काफ़िरून, और तीसरी में सुरतुल् इख़्लास पढ़ना मस्नुन है। रुकुअ् के बाद हाथ उठाकर क़ुनूत पढ़ना मुस्तह़ब है, औश्र ऊँची आवाज़ में दुआ करे चाहे अकेले ही क्यों नमाज़ न पढ़ रहा हो।

जनाज़ः की नमाज़ : मुस्लिम मैयत को नहलाना, उसे कफ़न देना, उस पर जनाज़ः की नमाज़ पढ़ना, उसे कंधा देना, और उसे दफ़न करना फ़र्ज़े किफ़ायः है, पर जंग में शहीद होने वाले मैयत को नहलाया नहीं जाएगा, और न ही उसे दूसरे कपड़ों में कफ़न दिया जाएगा, बल्कि उसे ख़ून में ही लत-पत दफ़न कर दिया जाएगा, हाँ उसकी नमाज़े जनाज़ः पढ़ना जायज़ है। मर्द को 3 सफ़ेद चादरों का कफ़न दिया जाएगा, और औरतों को 5 सफ़ेद चादरों का, एक तहबंद होगा, दूसरा दुपट्टा, तीसरी कमीज़ होगी और बाक़ी दो चादरों में उसे लपेटा जाएगा।

इल्ला बिल्लाह्, लाइलाह इल्लल्लाहु व ला ना'अ्बुदू इल्ला इय्याहु लहु-न्-ने'मतु व लहु-ल्-फ़ज़्लु व लहु-स्-सनाउ-ल्-ह़सनु लाइलाह इल्लल्लाहु मुख़्लिसीन लहुद्दीन व लौ करिह-ल्-काफ़िरून, अल्लाहुम्म ला मानिअ़ लिमा आ'अ्तैत व ला मु'अ्तिअ़ लिमा मन'अ्त व ला यन्फ़उ ज-ल्-जद्दि मिनक-ल्-जद्द्" फ़ज्र और मग्रिब की नमाज़ के बाद इन दुआओं के साथ साथ 10 बार "लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-ह़म्दु युह़्यी व युमीतु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर्" कहे, फिर 33 बार सुब्ह़ानल्लह्, 33 बार अल्ह़म्दु लिल्लाह्, 33 बार अल्लाहु अक्बर और एक बार. "लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर्" कहे। फिर आयतु-ल्-कुर्सी पढ़े, फिर ﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ﴾,﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ﴾, और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ﴾ पढ़े, फ़ज्र और मग्रिब के बाद इन तीनों सूरतों को तीन तीन बार दोहराए।

नमाज़े जनाज़: के लिए इमाम का मर्द के सीने के सामने और औरत के शरीर के बीच हिस्से में खड़ा होना सुन्नत है, जनाज़: की नमाज़ में 4 तक्बीर कहे, प्रत्येक तक्बीर के साथ रफ़उ-लू-यदैन करे, पहली तक्बीर के बाद अऊज़ु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पस्त आवाज़ में सूरतु-लू-फ़ातिहा पढ़े, फिर दूसरी तक्बीर कहे और दरूद पढ़े, फिर तीसरी तक्बीर कहे और मैयत के लिए दुआएं करे, फिर चौथी तक्बीर के बाद थोड़ी देर रुके और सलाम फेरे। क़ब्र को एक वित्ता से ऊँची करना, उसे गच करना, उसे चूमना, धूईं देना, उस पर लिखना बैठना या चलना सब कुछ ह़राम है। इसी तरह क़ब्रों पर चिरागाँ करना, उसका त़वाफ़ करना, उस पर मस्जिद बनाना, या मस्जिद में दफ़न करना ह़राम है। और क़ब्रों पर बने कुब्बों को ढा देना वाजिब है।

✸ शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना मना नहीं है, बल्कि इस तरह के शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना जायज़ है : **"आ'अ्ज़मल्लाहु अज्रक व अह्सन अ़ज़ाअक व ग़फ़र लिमैयितिक"**। और काफ़िर की ता'ज़ियत में कहे : **"आ'अ्ज़मल्लाहु अज्रक व अह्सन अ़ज़ाअक"।**

✸ जिसे यह जानकारी हो कि मरने के बाद उसके घर वाले उस पर नौह़ा करेंगें उस के लिए वाजिब है कि नौह़ा न करने की वसीयत करे, नहीं तो उनके रोने धोने के कारण उसे अज़ाब दिया जाएगा।

✸ इमाम शाफ़ई رحمه الله फ़रमाते हैं : ता'ज़ियत के लिए बैठना मकरूह है, चुनान्चि मैयत के घर वालों का ता'ज़ियत के लिए आने वालों की खात़िर किसी जगह बैठने के बजाए अपनी अपनी ज़रूरतों के लिए चले जाना उत्तम है, चाहे वे मर्द हों या औरतें हों।

✸ मैयत के घर वालों के लिए खाना बनाना सुन्नत है, और मैयत के घर वालों के यहाँ खाना खाना मक्रूह है, और यह भी मक्रूह है कि उनके पास इकट्ठा होने वालों के लिए खाना बनाया जाए।

✸ यात्रा किए बिना मुस्लिम व्यक्ति की क़ब्र की ज़ियारत मस्नून है, काफ़िर की क़ब्र की ज़ियारत मुबाह़ है, और काफ़िर को भी मुस्लिम की क़ब्र की ज़ियारत से नहीं रोका जाएगा।

✸ क़ब्रिस्तान में आने वालों के लिए यह कहना सुन्नत है : **"अस्सलामु अ़लैकुम दार क़ौमिम्मोमिनीन, - या कहे : अह्लद्दियारि मिनल्मोमिनीन - व इन्ना इन शा-अल्लाहु बिकुम ल लाह़िकून, यर्ह़मुल्लाहुल् मुस्तक़्दिमीन मिन्ना वल् मुस्ता'ख़िरीन, नस्अलुल्लाहु लना व लकुमुल्आ़फ़ियः, अल्लाहुम्म ला तह़्रिम्ना अज्रहुम, व ला तफ़्तिन्ना बा'दहुम, वग़्फ़िर लना व लहुम"। मुमिनों की जमाअ़त तुम पर शान्ति हो, और इन्शाअल्लाह अवश्य हम भी तुम से मिलने वाले हैं, अल्लाह हमारे पहले और पिछलों पर रह़म करे, अल्लाह तआला से हम अपने लिए और तुम्हारे लिए माफ़ी चाहते हैं, ऐ अल्लाह उनके अज्र से हमें मह़रूम न करना, और उनके बाद हमें परीक्षा में न डालना, और हमें और उन्हें क्षमा कर दे।**

ईदैन की नमाज़ : ईदैन की नमाज़ फ़र्ज़े किफ़ायः है, और इसे अदा करने का समय चाश्त की नमाज़ का समय है, यदि इसकी जानकारी सूरज ढलने के बाद हुई हो तो दूसरे दिन सवेरे इस की क़ज़ा करेंगे, और इसकी भी अदा करने की शर्तें जुम्आ की तरह हैं सिवाए दोनों खुत्बों के, ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले या बाद में नफ़्ल पढ़ना मकरूह है। ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि दो रक'अत नमाज़ पढ़ी जाए, इमाम पहली रक'अत में तक्बीरतुल्इह्राम के बाद अ़ऊज़ुबिल्लाह पढ़ने से पहले 6 अधिक तक्बीरें कहे, और दूसरी रक'अत में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़ने से पहले 5 अधिक तक्बीरें कहे, हर तक्बीर के साथ रफ्उल् यदैन करे फिर अ़ऊज़ुबिल्लाह पढ़े, फिर ऊँची आवाज़ में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़े, पहली रक'अत में

सूरतुल्फ़ातिहा के बाद सब्बिहिस्म रब्बिकल्आ'ला और दूस्री रक्'अत में सूरतुल्ग़ाशियः पढ़े। सलाम फेरने के बाद जुम्आ की तरह दो ख़ुत्बा दे, लेकिन इन दोनों ख़ुत्बों के बीच अधिकतर तक्बीर कहना मस्नून है, ईद की नमाज़ नफ़्ल नमाज़ की तरह पढ़ना भी सह़ीह़ है; इसलिए कि अधिक तक्बीरें कहना और उनके बीच ज़िक्र करना सुन्नत है।

कुसूफ़ की नमाज़ : सूरज या चाँद गहन की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इसका समय गहन लगने से लेकर समाप्त होने तक रहता है, यदि गहन ख़तम होजाए तो इसकी क़ज़ा नहीं की जाएगी। यह नमाज़ 2 रक्'अत पढ़ी जाएगी, इमाम पहली रक़्'अत में ऊँची स्वर में सुरतुल्फ़ातिह़ा और दूस्री लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकु'अ़ करे, फिर समिअल्लाह कहते हुए खड़ा होजाए, रब्बना व लकल् ह़म्द् पढ़ने के बाद सज्दा न करे बल्कि फिर सुरतुल्फ़ातिह़ा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकू'अ़ करे, फिर रुकू'अ़ से उठे, फिर दो लम्बे सज्दे करे, फिर दूसरी रक्'अत पहली रक्अत की तरह पढ़े, फिर तशह्हुद् पढ़े और सलाम फेरे, और यदि मुक़्तदी पहले रुकू'अ़ के बाद आकर मिला हो तो उसकी वह रक्'अत नहीं होगी।

इस्तिस्क़ा की नमाज़ : जब अकाल पड़ जाए, और वर्षा न बरसे तो उस समय वर्षा के लिए इस्तिस्क़ा की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इस नमाज़ को पढ़ने का समय, इसका तरीक़ा और इसके अह़्काम ईद की नमाज़ की तरह हैं, फ़र्क़ इतना है कि नमाज़ के बाद मात्र एक ख़ुत्बा है, जिसमें स्तिथि बदल जाने के लिए नेक फ़ाल लेते हुए चादर पलटना सुन्नत है।

✷ **नफ़्ल नमाज़ें :** यह साबित है कि नबी ﷺ हर दिन फ़र्ज़ नमाज़ के अतिरिक्त १२ रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ें पढ़ा करते थे। जो इस प्रकार थीं : फ़ज्र से पहले २ रक्अ़त, ज़ुहर से पहले ४ रक्अ़त, और बाद में २ रक्अ़त, मग़्रिब के बाद २ रक्अ़त, और इशा के बाद २ रक्अ़त।

✷ **निषिद्ध समय :** कुछ ऐसे समय हैं जिन में नमाज़ पढ़ना या सज्दा इत्यादि करना मना है : ❶ फ़ज्र से सूरज निकलने तक और उसे निकल कर एक नेज़ा बराबर ऊँचा होने तक। ❷ जब सूरज बीच आकाश में आजाए यहाँ तक कि वह ढल जाए। ❸ अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक। पर ऐसे समय में सबब वाली नमाज़ें पढ़ना जायज़ है। जैसे तह़ीयतुल् मस्जिद, त़वाफ़ की २ रक्अ़त, फ़ज्र की २ सुन्नत, जनाज़ा की नमाज़, वुज़ू की २ रक्अ़त, और सज्दए तिलावत एवं शुक्र।

✷ **मस्जिदों के अह़्काम :** ज़रूरत के ह़िसाब से मस्जिदें बनाना वाजिब है, अल्लाह तआला के यहाँ मस्जिदें सब से मह़बूब जगहें हैं, इनमें गाना, ताली बजाना, ढोल बजाना, ह़राम कविता पढ़ना, मर्दों का औरतों के साथ गडमड होना, सुहबत करना, ख़रीदना और बेचना ह़राम है और ऐसे व्यक्ति (खरीदने-बेचने वोल) के बारे में यह कहना जायज़ है : अल्लाह तुम्हारे सौदे में फ़ायदा न दे, इसी तरह किसी खोई चीज़ को तलाश करना ह़राम है, और ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहना जायज़ है, अल्लाह तुम्हारी वह चीज़ न लौटाए। इसमें ऐसे बच्चों को शिक्षा देना जो हानिकारक न हों मुबाह़ है, इसी तरह निकाह़ पढ़ाना, फ़ैसला करना, मुबाह़ कविता पढ़ना, इतिकाफ़ करने वाले व्यक्ति के लिए और दूसरों के लिए भी सोना, मेहमान और रोगी व्यक्ति के लिए रात बिताना मुबाह़ है। इन्हें शोर-शराबे, लड़ाई झगड़े, फ़ुज़ूल बातें, बूरी बात करने और बिना ज़रूरत रास्ता बनाने से बचाना मस्नून है। और इनमें सांसारिक फ़ुज़ूल बातें करना मकरूह है, इनके कारपेट, झूमर या लाइट इत्यादि को शादी विवाह या ताज़ियत की मज्लिस में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ज़कात

ज़कात के माल : चार तरह के मालों में ज़कात फ़र्ज़ है : ❶ चरने वाले चौपायों और पशुओं में। ❷ ज़मीन की उपज में। ❸ नगदी में (सोना चाँदी और करेन्सी नोट में)। ❹ व्यापारिक सामान में।

ज़कात वाजिब होने की शर्तें : जब तक 5 शर्तें न पाई जाएं ज़कात फ़र्ज़ नही होगी : ❶ इस्लाम। ❷ आज़ादी। ❸ (माल का) निसाब को पहुँचना। ❹ पूरी तरह से माल का मालिक होना। ❺ एक साल बीतना सिवाए ज़मीन की उपज के।

चौपायों और पशुओं की ज़कात : मवेशियों और पशुओं की तीन क़िस्में हैं 1- ऊँट। 2- गाय-बैल। 3- और बकरी।

इनमें ज़कात फ़र्ज़ होने की दो शर्तें हैं : 1- वह पूरे साल या साल के अधिकतर दिनों में चर कर अपना पेट भरते हों। 2- वह दूध और नस्ल की बढ़ोतरी के लिए हों, निजी काम (जैसेः खेती-बाड़ी अथवा बोझ ढोने) के लिए न हों। यदि वे व्यापार के लिए हैं तो व्यापारिक सामान की तरह उनकी ज़कात निकाली जाएगी।

ऊँट की ज़कात इस प्रकार है :

संख्या	1 - 4	5 - 9	10 - 14	15 - 19	20 - 24	25 - 35	36 - 45	46 - 60	61- 75	76 - 90	91-120
उसकी ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां	4 बकरियां	1 बिन्ते मख़ाज़	1 बिन्ते लबून	1 हिक़्क़ा	1 जज़ूआ	2 हिक़्क़ा	2 जज़ूआ

जब ऊँट 120 से अधिक हो जाएं तो हर 50 पर 1 हिक़्क़ा, और हर 40 पर 1 बिन्ते लबून देने होंगे।
बिन्ते मख़ाज़ : एक साला ऊँटनी को कहते हैं। **बिन्त लबून** : दो साला ऊँटनी को।
हिक़्क़ा : तीन साला ऊँटनी को। और **जज़ूआ** : चार साला ऊँटनी को कहते हैं।

गाय की ज़कात इस प्रकार है :

संख्या	1-29	30 - 39	40 - 59
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 तबी'अ़ या तबी'आ	1 मुसिन्न या मुसिन्ना

जब गायें 60 या उस से अधिक होजाएं तो हर 30 पर 1 तबी'अ़, और हर 40 पर 1 मुसिन्ना देने होंगे।
तबी'अ़ : एक साला बछड़ा को कहते हैं। तबी'आ : एक साला बछिया को। मुसिन्न् : दो साला बछड़ा को। मुसिन्ना : दो साला बछिया को कहते हैं।

बकरी की ज़कात इस तरह से है :

संख्या	1 - 39	40 - 120	121 - 200	201 - 399
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियां	3 बकरियां

जब भेड़ और बकरी 400 या उस से अधिक होजाएं तो हर 100 पर एक बकरी है। और ज़कात में न अन्डू लिया जाए, न बूढ़ा जानवर लिया जाए, न ऐब वाला और न वह जो बच्चा पोस रही हो और न गाभिन और न क़ीमती ली जाएगी। जज़अ़ उस भेड़ के बच्चे को कहते हैं जो 6 महीने पूरे कर चुका हो। और सनी उस बकरी को कहते हैं जो एक साल पूरा कर चुकी हो।

ज़मीन की उपज में ज़कात : ज़मीन से उपजने वाले सभी अनाजों और फलों में तीन शर्तों के साथ ज़कात वाजिब है : ❶ पहली शर्त यह है कि वह मापी और तौली जा सकती हो, और जमा करके रखी जा सकती हो, जैसे अनाज में से गेहूँ और जौ इत्यादि, और फल में से अंगूर और खजूर इत्यादि। रही ज़मीन से उपजने वाली वह चीज़ें जो मापी न जाती हों और न जमा करके रखी जा सकती हों, जैसे साग और सब्ज़ी और इस तरह की दूसरी चीज़ें तो इसमें ज़कात नहीं है। ❷ दूसरी शर्त यह है कि वह निसाब को पहुँच रही हों, अर्थात् 653 किलो ग्राम हों या इस से अधिक। ❸ तीसरी शर्त यह है कि वह ज़कात के फ़र्ज़ होने के समय उस की मिलकियत हो। ज़कात फलों में वाजिब उस समय होती है जब वह पक कर लाल या पीले होगए हों, और अनाजों में उस समय जब दाने सख़्त होगए हों।

और ज़मीन की उन उपज में जिनकी सींचाई बिना मेहनत और परेशानी उठाए हुई हो, वर्षा और नहर के पानी इत्यादि द्वारा तो उस में (10%) दसवां हिस्सा ज़कात है, रही वह ज़मीनें जो मेहनत और परेशानी से सैराब की गई हों रहट, गधों या ऊँटों द्वारा तो उनमें (5%) बीसवां हिस्सा वाजिब है। रही वह जमीनें जिसकी सिंचाई में कुछ दिन मेहनत करनी पड़ी हो और कुछ दिन बिना मेहनत किए हुई हो तो उसी के हिसाब से अनाज की ज़कात निकालेंगे।

क़ीमती धातुओं की ज़कात : जो कि दो तरह की हैं : नगदी की ज़कात की दो क़िस्में हैं : ❶ सोना। यदि यह 85 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। ❷ चाँदी। यदि यह 595 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। और नगदी रूपये पैसों में भी उस समय तक ज़कात वाजिब नहीं है जब तक कि वह इन दोनों में से किसी एक की क़ीमत तक न पहुँच जाएं। और इनकी ज़कात की मिक़्दार (2.5%) चालीसवां ह़िस्सा है।

और जो ज़ेवर औरत के प्रयोग में हो उस में ज़कात नहीं है, पर जो किराए के लिए हो या उन्हें पूंजी के तौर पर सुरक्षित किया गया तो उन में ज़कात है।

औरतों के लिए सोने और चाँदी के वह सभी ज़ेवर जायज़ और मुबाह़ हैं जो आम तौर से पहने जाते हों। बर्तन में थोड़ी सी चाँदी का प्रयोग भी मुबाह़ है, और उसका थोड़ा सा प्रयोग अंगूठी या चश्मा इत्यादि के रूप मर्दों के लिए भी मुबाह़ है। पर बर्तन में सोना लगाना ह़राम है, पर कपड़े के बटन और दाँत की सिलाई के लिए इसका थोड़ा सा प्रयोग मर्दों के लिए जायज़ है इस शर्त के साथ कि इस में औरतों की मुशाबहत न हो।

और जिस व्यक्ति के पास माल घटता बढ़ता रहता हो, और प्रत्येक माल की ज़कात साल पूरे होने पर निकालना कठिन हो तो ऐसा व्यक्ति साल में एक दिन नियुक्त कर ले, और उस दिन जितने धन का मालिक हो 2.5 उसकी ज़कात निकाले, अगरचे कुछ माल पर साल न बीते हों, और जिसकी फिक्स तन्ख़ाह हो या उसने घर वग़ैरः किराए पर दिए हों लेकिन इससे कुछ बचता न हो तो उसमें ज़कात नहीं है चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों। और यदि कुछ बचता हो तो साल पूरे होजाने पर उस की ज़कात निकाले। नहीं तो साल में एक दिन ख़ास करले और उस दिन अपने माल की ज़कात निकाले।

क़र्ज़ का हुक्म : जिस व्यक्ति का किसी मालदार के जिम्मे क़र्ज हो, या ऐसा माल हो जिसे छुड़ा लेना सम्भव हो, तो जब इन्हें अपने क़ब्जे में करले तो इन पर पिछले सभी सालों की ज़कात फ़र्ज़ होगी, चाहे कितने ही साल क्यों न बीत गए हों, और यदि अपने क़ब्ज़े में लेना उसके लिए सम्भव न हो, जैसे क़र्ज़ किसी ऐसे व्यक्ति के ज़िम्मे हो जिसका दीवालिया हो गया

हो, तो जब तक वह उसे पा न ले, उस पर ज़कात नहीं, और जब पा ले तो मात्र उसी साल की ज़कात होगी, पिछले सालों की नहीं, चाहे जितने साल ही क्यों न बीत चुके हों।

तिजारती सामान की ज़कात : तिजारती सामान में ज़कात नहीं जब तक कि उसमें 4 शर्तें न पूरी हो जाएं : ❶ पहली यह कि सामान उसके क़ब्ज़े में हो। ❷ दूसरी यह कि मिलकीयत व्यापार की नियत से हो। ❸ तीसरी यह कि उस सामान का दाम निसाब के बराबर हो, अर्थात 20 मिसक़ाल सोने या 200 दिर्हम चाँदी के बराबर हो। ❹ चौथी यह कि उस पर पूरा एक साल बीत चुका हो। तिजारती सामान में जब यह चारों शर्तें पाई जाएं तो उनकी क़ीमत में ज़कात निकाली जाएगी, और यदि उसके पास तिजारती सामान में सोना और चाँदी दोनों हों तो सामान की क़ीमत के साथ सोना और चाँदी दोनों की क़ीमतें जोड़ी जाएंगी, और निसाब पूरा करने में दोनों का लिहाज़ किया जाएगा। जब तिजारती सामान को स्वंय प्रयोग करने की नियत करले जैसे कपड़े हों या घर इत्यादि जिन्हें स्वंय प्रयोग करने की नियत करले तो उनमें ज़कात नहीं है, और यदि उसके बाद उनमें फिर व्यापार की नियत करले तो नियत के फिरने के दिन से साल पूरा करे फिर ज़कात दे।[1]

सद्क़ए फ़ित्र : सद्क़ए फ़ित्र हर मुसलमान व्यक्ति पर वाजिब है, बशर्तेकि वह ईद के दिन अपने और अपने बाल बच्चों के खाने पीने से अधिक माल का मालिक हो, सद्क़ए फ़ित्र की मात्रा एक व्यक्ति की तरफ से चाहे वह मर्द हो या औरत 2.25 किलो है, जिसे उस खाने की चीज़ों में से दिया जाएगा जिसे आम तौर पर शहर में खाया जाता हो, और जिस व्यक्ति पर अपना सद्क़ए फ़ित्र लाज़िम है उस पर हर उस व्यक्ति की ओर से भी सद्क़ए फ़ित्र लाज़िम है जिसकी ईद के दिन उस पर ज़िम्मादारी है बशर्तेकि वह उतने माल का मालिक हो जिसे वह उसकी ओर से दे सके। और सद्क़ए फ़ित्र का ईद के दिन नमाज़ से पहले निकालना मुस्तहब है, और ईद की नमाज़ से देर करना जायज़ नहीं है, और ईद से एक या दो दिन पहले निकालना भी जायज़ है, और कई लोगों का सद्क़ए फ़ित्र एक व्यक्ति को देना जायज़ है, इसी तरह एक व्यक्ति का सद्क़ए फ़ित्र भी कई एक लोगों को देना जायज़ है।

ज़कात निकालने का समय : ज़कात निकालने की यदि शक्ति हो तो उसके वाजिब होने के समय से निकालने में देरी करना जायज़ नहीं है, और छोटे बच्चे और पागल व्यक्ति की ओर से उस का वली ज़कात निकालेगा। लोगों को दिखा कर ज़कात निकालना और स्वंय उसे बांटना मस्नून है, ज़कात निकालने के लिए नियत शर्त है, आम सद्क़ा की नियत से बांटा गया माल ज़कात की ओर से काफ़ी नहीं है, चाहे पूरा ही माल सद्क़ा में क्यों न बांट दिया हो, और उत्तम यह है कि देश के ही फ़क़ीरों में उस की तक़्सीम हो। और किसी कारण बस देश से बाहर भेजना भी जायज़ है, धन यदि निसाब के बराबर हो तो अगले साल की ओर से भी ज़कात निकालना जायज़ है।

ज़कात के हक़्दार : ज़कात के हक़्दार 8 हैं : ❶ फ़ुक़रा ❷ मसाकीन। ❸ आमिलीन : इससे मुराद हुकुमत के वह कर्मचारी हैं जिनकी हुकुमत को ज़कात की वसूली और तक़्सीम में ज़रूरत पड़ती हो। ❹ मुवल्लफ़तुल् क़ुलूब : यह वह लोग हैं जो अपने कबीलों के सरदार

---

[1] तिजारती सामान का निसाब 85 ग्राम सोने की क़ीमत है, या 595 ग्राम चाँदी की क़ीमत है। और ज़कात निकालते समय इनमें से कम का एतिबार करेगा।

और अमीर हों, जिन्हें देने से उनकी बुराई से बचना, या उनकी ईमान की मज़बूती, या मुसलमानों से उन्हें दूर करना मक़्सूद हो, या ज़कात न देने वालों से ज़कात की वसूली में उनसे सहायता की उम्मीद की जाती हो। ❺ रिक़ाब : इससे मुराद मुकातिबीन (ऐसे दास जो अपने मालिकों से तय किया हुवा माल देकर आज़ादी के लिए समझौता कर चुके हों) और खरीद कर आज़ाद किए जाने वाले ग़ुलाम हैं। ❻ ग़ारिमीन : अर्थात् : क़र्ज़दार (ऋणी)। ❼ फ़ी सबीलिल्लाह, अल्लाह के रास्ते में ❽ इब्नु-स्सबील, ह़ाजतमंद यात्री। ज़रूरत के अनुसार इन सारे लोगों में ज़कात तक़्सीम की जाएगी, पर कर्मचारी को उसके काम की उज्रत के बराबर दिया जाएगा चाहे वह धनी ही क्यों न हो। ह़ाकिम ने यदि रिज़ामन्दी से या जबरदस्ती ज़कात ली तो वह काफ़ी है, ज़कात लेने में उस ने चाहे न्याय किया हो या अन्याय। यदि ज़कात का माल काफ़िर, दास, धनी, और जिसका ख़र्चा उस पर लाज़िम है, और बनू हाशिम को देता है तो काफ़ी नहीं होगा। इसी तरह अज्ञानता में यदि किसी ऐसे व्यक्ति को ज़कात दे जो कि उस का ह़क़्दार नहीं फिर उसे जानकारी हो जाए तो यह भी काफ़ी नहीं है, पर यदि किसी को फ़कीर समझ कर दिया और वह धनी निकला तो यह काफ़ी होजाएगी।

नफ़्ल सद्क़ा : अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : **"मृत्यु के बाद इन्सान को जो कर्म और नेकी पहुँचती है, यह वह शिक्षा है जिस की उसने ता'लीम दी और फैलाया, या नेक संतान है जिन्हें उसने छोड़ा, या मुस्ह़फ़ है जिसका उसने वारिस बनाया, या मस्जिद है जो उसने बनाई, या घर है जिसे उसने यात्रीयों के लिए बनाया, या नहर है जिसकी उसने खोदाई कराई, या सद्क़ा है जिसे उसने अपने जीवन में स्वस्थ अवस्था में निकाला, तो मौत के बाद यह चीज़ें उसे पहुँचेंगी"**। (इब्ने माजा)

रोज़ा

रमज़ान के रोज़े हर अक़्लमंद और बालिग़ मुसलमान पर जो रोज़ा रखने की शक्ति रखता हो फ़र्ज़ है, सिवाय ऐसी औरत के जिसे माहवारी या निफ़ास का ख़ून आरहा हो। बच्चा यदि रोज़ा रख सकता है तो उसे भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया जाएगा ताकि उसे उसकी आदत पड़ सके। रमज़ान के आने की जानकारी के 2 तरीक़े हैं : ❶ रमज़ान का चाँद दिखाई देना। जिसके लिए एक भरोसेमंद मुस्लिम व्यक्ति की गवाही काफ़ी है जो कि शरीअ़त का मुकल्लफ़ हो। ❷ शाबान के महीने का पूरे 30 दिन का होजाना। यह बात स्पष्ट रहे कि हर दिन सुब्हे सादिक निकलने से लेकर सूरज डूबने तक रोज़ा वाजिब रहता है, और फ़र्ज़ रोज़ों के लिए फ़ज्र से पहले ही नियत करना ज़रूरी है।

रोज़े को फ़ासिद कर देने वाली चीज़े : ❶ पत्नि से सम्भोग करना : इससे रोज़े की क़ज़ा और कफ़्फ़ारः दोनों लाज़िम आता है। कफ़्फ़ारः : एक ग़ुलाम (दास) आज़ाद करना है, जिसके पास ग़ुलाम न हो तो लगातार दो महीने रोज़े रख्खे, और जो रोज़े रखने की शक्ति न रखता हो वह 60 ग़रीबों को खाना खिलाए, और जो उसकी भी शक्ति न रखता हो तो उस पर कुछ नहीं। ❷ औरत को चुम्मा लेने, छूने, या बार बार देखने से मनी का निकलना, या ग़लत तरीक़े से वीर्य-पात करना। ❸ जानबूझ कर खा पी लेना, यदि भूल कर खाया पिया हो तो रोज़ा सहीह है। ❹ शरीर से खून निकालना : चाहे सिंगी के कारण हो, या किसी बीमार की सहायता करने के लिए खून दान करने के कारण। परन्तु थोड़ा खून जो जांच के लिए निकाला गया हो, या ऐसा खून जो बिना इरादे के निकल आया हो जैसे नक्सीर इत्यादि तो इससे रोज़ा फासिद नहीं होता। ❺ जानबूझ कर उल्टी करना।

यदि गले में गर्द चला जाए, या कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते हुए गले में पानी पहुंच जाए, या सोंचने के कारण या सोते समय मनी निकल आए, या बिना इरादे के ख़ून निकल आए या उल्टी होजाए तो इससे रोज़ा नहीं टूटता।

और जो व्यक्ति रात समझ कर खा-पी ले फिर दिन निकल आए तो उस पर रोज़े की क़ज़ा है, और जिसे सुब्हे सादिक़ के होने में शक हो और खा-पी ले तो उसका रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। और यदि सूरज डूबने में शक हो और खा-पी ले तो उस पर उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी।

मुफ्तिरीन (रोज़ा न रखने वालों) के अह्काम : बिना किसी उज़्र के रमम्ज़ान के रोज़े न रखना ह़राम है, पर हैज़, और निफ़ास वाली औरतों पर रोज़ा तोड़ना वाजिब है, और उस व्यक्ति पर जिसे किसी को बचाने के लिए रोज़ा तोड़ने की ज़रूरत हो। और मुबाह़ यात्रा की अवस्था में यदि रोज़ा रखना कष्ट-दायक हो तो ऐसे मुसाफ़िर के लिए रोज़ा तोड़ देना मस्नून है। और ऐसे मुक़ीम के लिए भी रोज़ा तोड़ना मुबाह़ है जिसने दिन में सफ़र किया हो। इसी तरह गर्भवती और दूध पिलाने वाली औरत को अपने या अपने शिशू के बारे में डर हो तो उस के लिए भी रोज़ा न रखना मुबाह़ है। और इन सभों पर मात्र छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा है, पर गर्भवती और दूध पिलाने वाली स्त्री ने यदि मात्र शिशू पर डर के कारण रोज़ा तोड़ा हो तो वे हर दिन के बदले रोज़े की क़ज़ा के साथ साथ एक मिस्कीन को खाना भी खिलाएंगी।

और जो बूढ़ापे या ऐसी बीमारी के कारण जिस से निरोग होने की आशा न हो रोज़ा न रखता हो वह हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाए, और इन पर रोज़ों की क़ज़ा नहीं है।

और जो किसी उज़्र के कारण क़ज़ा में देरी करे यहाँ तक कि दुसरा रम्ज़ान आजाए तो उस पर मात्र क़ज़ा है, और यदि बिना किसी उज़्र के उसने क़ज़ा करने में कोताही की यहाँ तक कि

दूसरा रमज़ान आगया तो क़ज़ा के साथ साथ हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना भी खिलाए। और यदि किसी उज़्र के कारण उसने क़ज़ा करने में देरी की यहाँ तक उसकी मृत्यु हो गई तो उस पर कुछ भी नहीं है, और यदि बिना उज़्र के न रखा तो उस की ओर से हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाया जाएगा, परन्तु यदि वह रोज़े नज़र के हों, या रमज़ान के छूटे हुए रोज़े हो जिनकी क़ज़ा में कोताही हुई हो तो उसकी ओर से उसके क़रीबी लोगों के लिए यह रोज़े रखना सुन्नत है। और हर नज़र पूरी करना उस की ओर से नेकी है।

और यदि किसी ने किसी उज़्र के कारण रोज़ा नहीं रख्खा और अभी दिन में कुछ समय बाक़ी ही था कि उसका उज़्र ख़तम होगया तो ऐसे व्यक्ति पर लाज़िम होगा कि दिन के बाक़ी समय में खाने, पीने, और सम्भोग करने से रुके रहे, और यदि दिन में काफ़िर इस्लाम ले आए, या हैज़ वाली औरत हैज़ से पवित्र हो जाए, या रोगी निरोग होजाए, या यात्री वापस आजाए, या बच्चा बालिग़ होजाए, या पागल ठीक होजाए और यह रोज़े की हालत में न हों तो इन पर रोजों की क़ज़ा लाज़िम है चाहे बचे हुए समय को रोज़ा रख कर ही क्यों न बिताए हों। और रम्ज़ान में जिस के लिए रोज़ा तोड़ देना मुबाह़ हो वह नफ़ली रोज़ा रमज़ान में नहीं रख सकता।

नफ़ली रोज़े : सब से अफ़ज़ल एक दिन रोज़ा रखना और एक दिन इफ़तार करना है, फिर सोमवार और जुम्रात के दिन का रोज़ा है, फिर हर महीने 3 दिन का रोज़ा है, और इसमें अफ़ज़ल ऐयामे बीज़ अर्थात चाँद के ह़िसाब से 13,14 और 15 तारीख़ का रोज़ा है। और मुह़र्रम और शाबान महीने के अधिकतर दिनों का रोज़ा रखना, आशूरा (अर्थात 10 मुह़र्रम) का रोज़ा, अरफ़ा का रोज़ा और शव्वाल के 6 रोज़े रखना मस्नून् है। पर मात्र रजब का रोज़ा रखना, या मात्र जुम्आ या सनीचर का रोज़ा रखना, या शक के दिन रोज़ा रखना जैसे 30 शाबान का रोज़ा जिस दिन चाँद निकलने के बारे में शक हो, तो यह सारे रोज़े मक्रूह हैं। और ईद और बक़्रईद के दिन और इसी तरह अय्यामे तश्रीक़ अर्थात 11,12, और 13 ज़िल्हिज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है, पर जो हज्जे तमत्तु'अ् या क़िरान के क़ुर्बानी के बदले रोज़ा रख रहा है तो उस के लिए अय्यामे तश्रीक़ में रोज़ा रखना मुबाह़ है।

ज़रूरी बातें :

✱ जिसे बड़ी नापाकी लगी हो, जैसे जुन्बी, और हैज़ और निफ़ास वाली औरत जब वे फ़ज्र से पहले पाक हो जाएं तो उनके लिए फ़ज्र की अज़ान के बाद नहाना और नहाने से पहले सह़री खा लेना जायज़ है, और इनका रोज़ा सह़ीह़ है।

✱ रमज़ान में औरत के लिए नेकी के कामों में मुसलमानों के साथ साझी रहने के इरादे से ऐसी दवा लेना जिस से उसकी माहवारी कुछ दिनों के लिए रुक जाए जायज़ है, परन्तु शर्त यह है कि वह उसके लिए हानिकारक न हो।

✱ रोज़ेदार के लिए थूक या खकार यदि मुंह के अन्दर हो तो उसे निगल जाना जायज़ है।

✱ नबी ﷺ का फ़रमान है : "मेरी उम्मत के लोग बराबर भलाई में रहेंगे जब तक वह इफ्तार में जलदी करेंगे, और सहरी में देर करेंगे"। अह़मद। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया: "धर्म उस समय तक ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़्तार करने में जलदी करेंगे; क्योंकि यहूदी और नसरानी देरी करते हैं" (अबू दाऊद)

✱ इफ्तार के समय दुआ करना मुस्तह़ब है, नबी ﷺ का फ़रमान है : "रोज़ा खोलने के समय रोज़ेदार की दुआ लौटाई नहीं जाती"। और इफ़्तार के समय जो दुआएं साबित हैं उनमें

से एक दुआ यह है : “ज़हबज़्ज़मउ वब्तल्लतिल् उरूकु व सबतल् अज्रु इन्शाअल्लाह” “पियास बुझ गई, रगें तर हो गईं, और यदि अल्लाह ने चाहा तो सवाब साबित हो गया”।

✸ सुन्नत यह है कि इफ़्तार रोतब खुजूर से हो, यदि रोतब खजूर न मिल सके तो सुखी खजूर ही काफ़ी है, और यदि वह भी न मिले तो पानी से इफ़्तार करे।

✸ रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि रोज़े की हालत में सुरमा लगाने और आँख या कान में डरॉपस डालने से बचे, विरोध से निकलने के लिए इससे बचना बेहतर है। और यदि दवा डालना ज़रूरी हो तो ऐसा कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, चाहे दवा का मज़ा उसकी ह़लक़ तक पहुंच जाए फिर भी उसका रोज़ा सह़ीह़ होगा।

✸ सहीह क़ौल की रू से रोज़े की अवस्था में किसी भी समय मिस्वाक करना सुन्नत है।

✸ रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि वह ग़ीबत, चुगलखोरी, और झूट जैसी बूरी आदतों से बचे और यदि कोई उसे गाली दे या बुरा भला कहे तो उससे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। और वह अपनी ज़ुबान और दूसरे अंगो को बुराई से बचाकर ही अपने रोज़े की सुरक्षा कर सकता है। इस बारे में नबी ﷺ की ह़दीस है : “जिस ने झूटी बात कहना, और उसके बमोजिब कर्म करना न छोड़ा तो अल्लाह तआला को उसके भूके और प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं है”।

✸ जिसे खाने पर दावत दी गई हो और वह रोज़े से हो तो दावत देने वाले के लिए दुआ़ करे, और यदि रोज़े से न हो तो उस के साथ खाए।

✸ शबे क़द्र साल भर की रातों में सब से महत्वपुर्ण रात है। जिसे रमज़ान की अन्तिम दस रातों में प्राप्त किया जा सकता है, 27 की रात में इसे प्राप्त करने की सम्भावना अधिक होती है। इस एक रात्री में कर्म करना एक हजार महीने में कर्म करने से बेहतर है, इस की कुछ निशानियां हैं : इसके सवेरे सूरज सफ़ेद निकलता है जिस में अधिक चमक नहीं होती। कभी ऐसा भी होता कि मुस्लिम व्यक्ति को इसकी जानकारी नहीं हो पाती है, ताकि वह रम्ज़ान में अधिक इबादत करने की प्रयास करे, ख़ासकर अन्तिम दस रातों में, और किसी भी रात को क़ियाम किए बिना बीतने न दे, और यदि जमाअत के साथ तरावीह़ पढ़ी हो तो मुकम्मल तरावीह़ समाप्त होने से पहले न निकले ताकि उसके लिए पूरी रात का क़ियाम लिख दिया जाए।

✸ नफ़ल रोज़े की नियत करने के बाद उसे पूरा करना वाजिब नहीं मस्नून है। और यदि जानबूझ कर भी उसे तोड़ दे तब भी कोई आपत्ति नहीं है, और इस की क़ज़ा भी नहीं है।

✸ इबादत की ख़ातिर अक़्लमंद, मुसलमान व्यक्ति का मस्जिद को लाज़िम पकड़ लेना एतिकाफ़ कहलाता है। इस के लिए शर्त यह है कि मु'अ़तकिफ़ (एतिकाफ करने वाला) बड़ी नापाकी से पाक हो, और मस्जिद से मात्र ज़रूरी ह़ाजतों के लिए ही बाहर निकले, जैसे खाने के लिए, शौचालय जाने के लिए, या वाजिबी स्नान के लिए आदि। बिना ज़रूरत के निकलने से, या बिवी से सम्भोग करने से एतिकाफ़ बातिल होजाता है। साल में किसी भी समय एतिकाफ़ करना मस्नून है, रमज़ान में एतिकाफ़ करने पर अधिक ज़ोर दिया गया है, ख़ासकर अन्तिम दस दिनों में। एतिकाफ़ कम से कम एक घंटे का होना चाहिए। मुस्तह़ब यह कि 24 घंटे से कम का न हो। औरत अपने पति की अनुमति के बिना एतिकाफ़ न करे, मुतकिफ़ इबादत और ताअ़त में अपने आप को व्यस्त रखे। अधिक मुबाह़ चीज़ें करने से बचे, इसी तरह बिना ज़रूरत की चीज़ों से दूर रहे।

हज्ज तथा उम्रा

हज्ज और उम्रा जीवन में एक बार फ़र्ज़ है, इनके फ़र्ज़ होने की शर्तें नीचे लिख्खी गई हैं : ❶ इस्लाम। ❷ अक़्ल (बुद्धि)। ❸ बुलूग़त। ❹ आज़ादी। ❺ का'बा तक पहुँचने की इस्तिता'अत : इस्तिता'अत का अर्थ यह है कि रास्ते का खर्च और सवारी उसके पास हो। और जिसने इस फ़रीज़ा को अदा करने में कोताही की यहाँ तक की उसकी मौत होगई तो उसके माल से इतनी रक़्म निकाल ली जाएगी जिस से हज्ज और उम्रा अदा हो सके। काफ़िर और पागल का हज्ज और उम्रा सहीह नहीं होगा, और बच्चे और ग़ुलाम का हज्ज और उम्रा करना सहीह है पर यह उनके लिए काफ़ी नहीं होगा अर्थात बच्चे को बालिग़ होने और ग़ुलाम को आज़ाद होने के बाद दोबारा हज्ज और उम्रा करना पड़ेगा, तभी उनसे इस फ़रीज़े की अदाएगी होगी, और जो व्यक्ति हज्ज करने की शक्ति न रखता हो उसका भी हज्ज करना सहीह है, और जो किसी दूसरे की ओर से हज्ज करे और स्वयं अपनी ओर से उसने हज्ज न किया हो तो उसका हज्ज दूसरे की ओर से न होगा बल्कि उस के फ़रीज़े की अदाएगी होगी।

इह्राम : इह्राम बाँधने का इरादा करने वाले व्यक्ति के लिए मुस्तहब है कि वह नहाए, और ख़ुश्बू लगाए, और सिले हुए कपड़े उतार कर लुंगी और चादर पहन ले, जो सफ़ेद और साफ़-सुथरे हों, यदि मात्र उम्रा की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म उम्रतन्" कहे, या मात्र हज्ज की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन्" कहे, और यदि हज्ज और उम्रा दोनों की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन् व उम्रतन्" कहे, और यदि उसे डर हो कि रास्ते में उसे रोक लिया जाएगा, तो यह कहकर शर्त लगाए "फ़इन हबसनी हाबिसुन फ़महिल्ली हैसु हबस्तनी"। कि यदि मुझे कोई रोकावट पेश आगई तो जहाँ मुझे यह रोकावट आएगी वहीं हलाल होजाउंगा।

और उसे इसका अधिकार है कि हज्ज की तीनों क़िस्मों तमत्तु'अ्, इफ़्राद और क़िरान में से जो चाहे करे, **पर सब से अफ़ज़ल हज्जे तमत्तु'अ् है,** और उसका विवरण इस प्रकार है कि हज्ज के महीने में उम्रा का इह्राम बांधे, और उम्रा करके इह्राम खोल दे, और हलाल होजाए, फिर उसी साल के हज्ज का इह्राम बांधे, और **हज्जे इफ़्राद** यह है कि मात्र हज्ज का इह्राम बांधे, और **क़िरान** यह है कि हज्ज और उम्रा दोनों का इह्राम एक साथ बांधे, या उम्रा का इह्राम बांधे फिर तवाफ़ करने से पहले उसमें हज्ज को भी शामिल करले, और जब वह अपनी सवारी पर सीधा बैठ जाए तो तल्बिया पुकारे और कहे : "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्नेअ्मत लक वलमुल्क ला शरीका लक "हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ तेरा कोई साझी नहीं, हाज़िर हूं, तारीफ़, प्रशंसा और ने'मत और बादशाहत तेरी ही है, तेरा कोई साझी नहीं।" और इसे बहुत ज़्यादा और ऊँची आवाज़ से पढ़ना मुस्तहब है, पर औरतें आहिस्ता पढ़ें।

इह्राम की अवस्था में मम्नूअ् (निषिद्ध) चीज़ें : यह पूरे नौ हैं : ❶ बाल काटना। ❷ नाखुन काटना। ❸ मर्द के लिए सिला हुवा कपड़ा पहनना, परन्तु उसके पास लुंगी न हो तो पाजामा पहन सकता है, और यदि जूते न हों तो मोज़े पहन सकता है पर उसे काट दे ताकि टखने से नीचे होजाए। और उसके कारण उसे कोई फ़िद्या नहीं देना होगा। ❹ मर्द के लिए सर ढांपना, और चुंकि दोनों कान भी सर ही का हिस्सा हैं इसलिए उन्हें भी खुला रखना ज़रूरी है। ❺ अपने जिस्म और कपड़े में ख़ुश्बू लगाना। ❻ जंगल के ऐसे पशुओं का शिकार करना जिनका गोश्त खाना जायज़ है। ❼ निकाह करना (निकाह करना हराम है पर इसमें कोई फ़िद्या नहीं)। ❽ सेक्स (खाहिश) के साथ बीवी के बदन को छूना और इसका फिदया यह है कि उस पर एक बक्री की क़ुर्बानी लाज़िम होगी, या 3 दिन का रोज़ा रखना या 6 मिस्कीन को खाना खिलाना। और उसका हज्ज सहीह होगा। ❾ सम्भोग करना, यदि यह तहल्लुले अव्वल से पहले

हो (अर्थात दस तारीख़ के चार कामों में से किसी भी दो काम को करने से पहले हो) तो उसका ह़ज्ज फ़ासिद हो जाएगा, पर इस फ़ासिद ह़ज्ज को पूरा करना उसके लिए वाजिब होगा, और आने वाले साल उसकी क़ज़ा उस पर लाज़िम होगी, और एक ऊँट ज़बह़ करके उसे मक्का के ग़रीबों में बांटना होगा, और यदि तह़ल्लुले अव्वल के बाद हो तो उसे एक ऊँट ज़बह़ करना होगा, और तन्ईम से इह़राम बांध कर फिर से मोहरिम होकर मक्का आकर तवाफ़ करना पड़ेगा, और यदि उसने उम्रा में सम्भोग किया है तो उसका उम्रा फ़ासिद हो जाएगा, और उसे दम के रूप में बक्री ज़बह़ करनी होगी, और उस उम्रे की क़ज़ा करनी होगी। ह़ज्ज और उम्रा को सम्भोग के अतिरिक्त कोई और चीज़ फ़ासिद नहीं करती।

और औरत मर्द ही की तरह है सिवाय इसके कि उसका इह़राम उसके चेहरे में भी होगा, और वह सिला हुवा कपड़ा भी पहनेगी, पर वह बुर्क़'अ्, निक़ाब और दस्ताने नहीं पहन सकती है।

फ़िद्या : फ़िद्ये दो प्रकार के हैं : **1** एक वह है जिसमें उसे अधिकार प्राप्त है : यह बाल मुंडाने, या ख़ुश्बू लगाने, या नाख़ुन काटने, या सिर ढांपने, या सिला हुवा कपड़ा पहनने का फ़िद्या है, इस स्तिथी में उसे अधिकार प्राप्त है कि वह या तो 3 दिन का रोज़ा रख्खे, या 6 ग़रीबों को खाना खिलाए हर एक को आधा सा'अ् अर्थात **1.5** किलो दे, या एक बक्री जबह़ करे। और शिकार का फ़िद्या उसी तरह का पशु है जिस तरह के पशु का उसने शिकार किया है। **2** दूसरी सिलसिलावार है : और यह हज्जे तमत्तु'अ् और क़िरान करने वाले का फ़िद्या है, उस पर (कुर्बानी के तौर पर) एक बक्री लाज़िम होती है, यदि बक्रि न मिल सके तो हज्ज के दिनों में वह 3 दिनों का रोज़ा रख्खेगा और 7 दिन के रोज़े हज्ज से लौटने के बाद रख्खेगा। और सम्भोग करने का फ़िद्या एक ऊँट है यदि न कर सके तो उसपर हज्जे तमत्तु'अ् करने वाले की तरह रोज़े हैं। और जो भी फ़िद्या होगा वह ह़रम के फ़क़ीरों और ग़रीबों के लिए होगा, या जो खाना खिलाए जाएंगे, वह मात्र ह़रम के फ़क़ीरों और गरीबों को खिलाए जाएंगे।

मक्का में दाख़िला (प्रवेश) : हाजी जब खानए का'बा में प्रवेश करे तो जो ज़िक्र मस्जिदों में प्रवेश करते समय की जाती है करे, फिर यदि वह ह़ज्जे तमत्तु'अ् का इह़राम बांधे हो तो उम्रा का तवाफ़ करे, और यदि मुफ़्रिद या क़ारिन हो तो तवाफ़े क़ुदूम करे, और अपनी चादर से इज़्तिबा'अ् करे, इस तरह से कि चादर के बीच के हिस्से को अपने दाएं कन्धे के नीचे करे और उसके दोनों कोनों को बाएं कन्धे पर डाल ले, और शुरू हज्रे अस्वद से करे, और بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ **बिस्मिल्लाह वल्लाहु अक्बर** कह कर उसे छूए या चूमे ले, या उसकी ओर इशारा करे, और ऐसा हर फेरे में करे लेकिन मात्र اللَّهُ أَكْبَرُ **अल्लाहु अक्बर** कहे, फिर खानए का'बा को अपनी बाईं तरफ़ करके उसके सात फेरे लगाए, और पहले तीन फेरों में हज्रे अस्वद से हज्रे अस्वद तक रमल करे और बाक़ी चार फेरों में आम चाल चले, और जब रुक्ने यमानी के सामने हो तो उसे छुए उसे न तो चूमे और न ही उसकी ओर इशारा करे, और रुक्ने यमानी और ह़ज्रे अस्वद के बीच ﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾ "हे हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे, और आख़िरत में भलाई दे और हमें जहन्नम की आग से बचा" पढ़े, और इन सारे फेरों में जो चाहे दुआ करे, फिर मक़ामे इब्राह़ीम के पीछे जाकर 2 रक'अत नमाज़ पढ़े, इन दोनों रक'अतों में सूरतुल् फ़ातिह़ा पढ़ने के बाद पहली रक्अ़त में सूरतुल् काफ़िरून और दूसरी रक्अ़त में सूरतुल् इख़्लास पढ़े, फिर ज़म्ज़म् का पानी पीए और उसे अपने सर पर भी डाले, फिर ह़ज्रे अस्वद के पास वापस आकर यदि आसानी से छू सकता हो तो उसे छूए, फिर मुल्तज़म के पास जो ह़ज्रे अस्वद और का'बा के दर्वाज़े के बीच है दु'आ करे, फिर स़फ़ा की ओर जाए और स़फ़ा पहाड़ी पर चढ़े, और कहे : "अब्दउ बिमा बदअल्लाहु बिह्" और यह आयत पढ़े :

﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ ٱلْبَيْتَ أَوِ ٱعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾

तक्बीर और तह्लील करे, और का'बा की ओर चेहरा करके दोनों हाथ उठाकर दु'आ करे, फिर उतरे और ग्रीन (हरी) लाइट आने तक आम चाल चले, फिर वहाँ से दूसरी ग्रीन लाइट आने तक दौड़े, फिर आम चाल चले यहाँ तक कि मर्वः आजाए, और मर्वः पर भी वैसे ही करे जैसे स़फ़ा पर किया था, पर आयत न पढ़े, फिर मर्वः से उतरे और चलने की जगह में चले और दौड़ने की जगह में दौड़े, इस तरह वह सात फेरे पूरे करे, (स़फ़ा से मर्वः जाना एक फेरा हुवा और मर्वः से स़फ़ा आना दूसरा फेरा)। फिर अपने बाल कटवाए या मुंडवाए, मुंडवाना अफ़ज़ल है, लेकिन ह़ज्जे तमत्तु'अ् करने वाले व्यक्ति के लिए बाल कटाना अफ़ज़ल है ताकि बाक़ी बाल को ह़ज्ज के बाद मुंडवाए। पर हज्जे क़िरान और इफ़्राद करने वाले सई करने के बाद ह़लाल नहीं होंगे, बल्कि वह ईद के जमर-ए-क़ुबा की रम्य करने के बाद ह़लाल होंगे। और औरत के अह्काम मर्द ही की तरह हैं, पर वह तवाफ़ और सई में रमल नहीं करेगी।

ह़ज्ज का तरीक़ा :और जब यौमुत्तर्विया अर्थात आठवीं ज़िल्हिज्जा आए तो जिसने अपना इह़राम खोल दिया हो वह मक्का में अपने डेरे से ही फिर से इह़राम बांधे, और मिना में नौवीं की रात बिताने के लिए मिना जाए, नौवीं तारीख को जब सूरज निकल आए तो चाश्त के समय अरफ़ा के लिए निकल पड़े, और जब सूरज ढल जाए तो जुह्र और अस्र की नमाज़ एक साथ क़स्र करके पढ़े, अरफ़ा के अन्दर कहीं भी ठहर सकता है सिवाय वादिए उरना के, और अरफ़ा में ज़्यादा से ज़्यादा यह दुआ करे : "لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" "लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर"। सूरज डूबने तक बराबर दुआ करता रहे, तौबा करे, और अल्लाह से अपना नाता जोड़े, फिर सूरज डूबने के बाद मुज़्दलिफ़ा के लिए निकले, आराम और शान्ति के साथ चले, बराबर तल्बिया पढ़ता रहे, और अल्लाह का ज़िक्र करता रहे, और जब मुज़्दलिफ़ा पहुंच जाए तो मग़्रिब और इशा क़स्र करके दोनों एक साथ पढ़े, मुज़्दलिफ़ा में रात बिताए, और फ़ज्र की नमाज़ फ़ज्र निकलते ही ग़लस में पढ़े, और मुज़्दलिफ़ा ही में रह कर दु'आ करता रहे, यहाँ तक कि जब खूब उजाला होजाए, तो सूरज निकलने से पहले ही मिना के लिए निकल पड़े, और जब वादिए मोह़स्सिर में पहुंचे तो यदि होसके तो उसे तेज़ी से पार करे, यहाँ तक कि मिना आकर सबसे पहले जम्रए अ़क़्बा की रम्य करे, सात छोटी छोटी कंकरियां अंगूठे और शहादत की उंगली के किनारे में रखकर (एक एक करके) मारे और हर कंकरी के साथ **अल्लाहु अक्बर** कहे, औश्र रम्य करते समय हाथ उठाए। स्पष्ट रहे कि मात्र वही कंकरी शुमार की जाएगी जो हौज़ में गिरेगी चाहे वह उठे हुए खम्बे को लगे या न लगे, और रम्य शुरू करने के साथ ही तल्बिया पुकारना बन्द करदे, फिर अपने हद्य के जानवर की क़ुर्बानी करे, फिर अपना सर मुंडवाए या सर के बाल कटवाए पर मुंडवाना अफ़ज़ल है, और रम्य और ह़लक़ करने के साथ ही वे सारी चीज़ें उसके लिए ह़लाल हो जाएंगी जो इह़राम के कारण ह़राम होगई थीं, सिवाय औरतों के, और इसे तह़ल्लुले अव्वल कहा जाता है, फिर ह़ाजी मक्का आए और तवाफ़े इफ़ाज़ा करे, यह वह फ़र्ज़ तवाफ़ है जिससे ह़ज्ज पूरा होता है, फिर यदि वह ह़ज्जे तमत्तु'अ् कर रहा है या यदि उसने क़िरा और इफ़्राद करने की सूरत में तवाफ़े क़ुदूम के साथ सई न की हो तो स़फ़ा और मर्वः की सई करे, और इस त़वाफ़ के साथ सारी चीज़ें उसके लिए ह़लाल हो जाएंगी यहां तक कि औरत भी ह़लाल हो जाएगी, और इसे तह़ल्लुले सानी कहा जाता है, फिर वह लौट कर मिना जाए और अय्यामे तश्रीक़ (11,12 और 13) की रातें वाजिबी तौर पर मिना में बिताए, और इसके दिनों में सूरज ढलने के बाद जमरात को कंकरी मारे, हर जम्रे को सात कंकरियां मारे, आरम्भ जम्रए ऊला से करे, और ख़ान-ए-का'बा को सामने करके कंकरियां मारे, फिर आगे बढ़े और वहाँ रुक कर अल्लाह से दुआ करे, फिर बीच वाले जम्रा के पास आए, और उसे भी उसी तरह कंकरियां

मारे, और रुक कर दुआ करे, फिर जम्रए अक़्बा को कंकरियां मारे और वहाँ से चल पड़े उसके पास दुआ करने के लिए न रुके, फिर दूस्रे दिन भी इसी तरह कंकरियां मारे, फिर यदि वह पहले दो ही दिन में मिना से जाना चाहे तो सूरज डूबने से पहले निकल जाए, और यदि बारहवीं तारीख़ का सूरज डूब जाए और वह मिना ही में है तो मिना में 13 की रात बीताना ज़रूरी होगा, और तेरहवीं को भी जमरात को कंकरियां मारे, यदि उसने निकलने का इरादा कर लिया हो लेकिन रास्ते में भीड़ के कारण मिना के सीमा से बाहर न निकल सका हो तो निकलने में कोई ह़रज नहीं, चाहे वह सूरज डूबने के बाद ही क्यों न निकले, ह़ज्जे क़िरान करने वाले को भी वही सब कुछ करना पड़ेगा जो ह़ज्जे इफ़्राद करने वाला करता है, अलग से कोई काम उस पर नहीं है, सिवाय इसके कि मुफ़्रिद् पर हद्य नहीं है और क़ारिन और मुतमत्ति'अ् पर हद्य का जानवर ज़बह करना है, और जब वापस घर जाना चाहे तो ख़ान-ए-का'बा का त़वाफ़ किए बिना न जाए, ताकि उसका अन्तिम काम का'बा का तवाफ़ हो, और यदि तवाफ़े विदा'अ् के बाद किसी व्यापार में लग जाए तो वापसी के समय फिर से तवाफ़े विदा'अ् करे, और जो बिना तवाफ़े विदा'अ् किए निकल गया हो तो यदि वह क़रीब हो तो वापस लौट कर तवाफ़ करे, फिर वापस लौटे, और यदि दूर निकल गया हो तो उस पर दम लाज़िम होगा, पर हैज़ और निफ़ास वाली औरत पर तवाफ़े विदा'अ् नहीं है, वह बिना तवाफ़े विदा'अ् किए वापस जा सकती हैं।

ह़ज्ज के 4 रुक्न हैं : ❶ इह़्राम (ह़ज्ज में दाखिले की नियत करना) ❷ अर्फ़ा में ठहरना। ❸ तवाफ़े ज़ियारत करना, इसे तवाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं। ❹ ह़ज्ज की सई करना।

और ह़ज्ज के 7 वाजिबात हैं : ❶ मीक़त से इह़्राम बांधना। ❷ अर्फ़ा में सूरज डूबने तक ठहरना। ❸ मुज़्दलिफ़ा में रात बिताना, यह वुजूब आधी रात के बाद तक है। ❹ मिना में अय्यामे तश्रीक़ (11.12 और 13 जिल्हिज्जा) की रातें बिताना। ❺ जमताजम्रात को कंकरियां मारना। ❻ बाल मुंडवाना या कटवाना। ❼ तवाफ़े विदा'अ् करना। ❽ और मुतमत्तिअ् तथा क़ारिन के कुर्बानी करना।

उम्रा के 3 रुक्न हैं : ❶ इह़्राम (उम्रा में दाखिले की नियत करना) ❷ उम्रा का तवाफ़ करना। ❸ उम्रा की सई करना।

और इसके 2 वाजिबात हैं : ❶ मीक़त से इह़्राम बांधना। ❷ बाल कटवाना या मुंडवाना। जिसने किसी रुक्न को छोड़ दिया तो जब तक उसे अदा न करले उसका ह़ज्ज पूरा नहीं होगा, और जिसने किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दम द्वारा उसकी तलाफी होजाएगी, और जिसने किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो उस पर कोई तावान नहीं है।

त़वाफ़ सह़ीह़ होने की 13 शर्तें हैं : 1- इस्लाम। 2- अक़्ल। 3- ख़ास नियत। 4- त़वाफ़ का समय होना। 5- जिसे शक्ति हो उस के लिए शरमगाह को ढांपना। 6- पवित्र होना, बच्चों के लिए पवित्रता शर्त नहीं है। 7- पुर्ण विश्वास के साथ 7 चक्कर पूरा करना। 8- का'बा को बाईं ओर करके त़वाफ़ करना, और जिन चक्करों में भूल होगई उन्हें फिर से दोहराना। 9- पीठ पीछे की ओर न लौटना। 10- ताक़त रखने वाले के लिए चलना। 11- लगातार चक्कर लगाना। 12- मस्जिदे-हराम के भीतर से त़वाफ़ करे। 13- हज्रे अस्वद से तवाफ़ शुरू करना।

त़वाफ़ की सुन्नतें : ह़ज्रे अस्वद को छूना और उसे चूमना। छूते समय तक्बीर कहना, रुक्ने यमानी को छूना, दाएं कन्धे के नीचे से चादर निकालना, त़वाफ़ के समय दुआ और ज़िक्र करना, का'बा से क़रीब होना, त़वाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम के पीछे 2 रक्अ़त नमाज़ पढ़ना।

सई की 9 शर्तें हैं : ❶ इस्लाम। ❷ अ़क़्ल। ❸ नियत। ❹ लगातार करना। ❺ ताक़त रखने वाले के लिए चलना। ❻ सात चक्कर पूरे करना। ❼ पूरे सफ़ा और मर्वा के बीच चक्कर लगाना। ❽ सह़ीह़ त़वाफ़ के बाद सई करना। ❾ पहला चक्कर सफ़ा से शुरू करना और सातवां चक्कर मर्वा पर ख़तम करना।

सई की सुन्नतें : छोटी और बड़ी नापाकी से पवित्र होना, शरमगाह का पर्दा करना, सई के बीच ज़िक्र और दुआ़ करना, चलने की जगह पर चलना और दौड़ने की जगह पर दौड़ना, सफ़ा और मर्वा पर चढ़ना, त़वाफ़ के तुरन्त बाद सई करना।

नोट : उसी दिन रम्य करना अफ़ज़ल है, यदि अगले दिन तक के लिए लेट कर दिया, या हर दिन की रम्य को अन्तिम दिन के लिए लेट कर दिया तो भी रम्य हो जाएगी।

कुर्बानी : कुर्बानी करना मुवक्कदा सुन्नत है, कुर्बानी करने वाले व्यक्ति पर ज़िल्ह़िज्जा का महीना शुरू होने से लेकर कुर्बानी करने तक बाल, नाखुन, या चमड़ा में से कुछ काटना ह़राम है।

अ़क़ीक़ा : अ़क़ीक़ा करना सुन्नत है, जन्म के सातवें दिन लड़के की ओर से दो बक्रियां ज़बह़ की जाएंगी और लड़की की ओर से एक। सातवें दिन बच्चे का बाल काटना और उसके बराबर चाँदी सदक़ा करना मस्नून है। और उसी समय उसका नाम भी रख्खा जाएगा। अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब से पसन्दीदा नाम अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान है, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों के नामों के शुरू में अ़ब्द जोड़ कर नाम रखना जैसे : अ़ब्दुन्नबी, अ़ब्दुर्रसूल आदि ह़राम है। यदि एक ही समय अ़क़ीक़ा और कुर्बानी पड़ जाए तो एक दूसरे की ओर से काफ़ी होगा।

हज्ज के कर्मों का ख़ुलासा इस प्रकार है :

ह़ज्ज	इह़राम और तल्बिया की शुरूआ़त	फिर	फिर	फिर	8 तारीख़ को ज़ुहर से पहले	9 तारीख़ को सूरज निकलने के बाद	सूरज डूबने के बाद	कुर्बानी के दिन 10 तारीख़ को फ़ज्र के बाद से इश्राक़ से पहले तक				11, 12 के दिन, तथा 13 का दिन लेट करने वाले के लिए	वापसी के समय
तमत्तुअ़	लब्बैक उम्रतन् मुतमत्तिअ़न बिहा इलल् ह़ज्ज	उम्रा का त़वाफ़ करना	उम्रा की सई करना	बाल कटाना और पूरी तरह ह़लाल होजाना	मक्का से इह़राम बांधना और मिना जाना	अ़र्फ़ा जाना और वहाँ ज़ुहर और अ़स्र की नमाज़ इकट्ठी करके ज़ुहर के समय में पढ़ना फिर दुआ़ के लिए फ़ारिग़ होजाना	मुज़्दलिफ़ा लौटना और वहाँ पहुंचते ही मग़्रिब और इशा की नमाज़ पढ़ना, आधी रात तक वहाँ रुकना, और फ़ज्र के बाद तक रुकना मस्नून है	मिना जाकर जम्रए अ़क़्बा को कंकरियां मारना	कुर्बानी करना	बाल कटवाना या मुंडवाना, फिर त़वाफ़े इफ़ाज़ा करना, रम्य, ह़ल्क़ और त़वाफ़ में से किसी दो को करने से पहला तह़ल्लुल ह़ासिल और तीनों को करने से दूसरा तह़ल्लुल होजाता है	ह़ज्ज की सई करना	सूरज ढलने के बाद पहले छोटे जम्रात को फिर बीच वाले को फिर जम्रए अ़क़्बा को कंकरियां मारना	त़वाफ़े विदाअ़ करना जो कि ह़ैज़ अथवा निफ़ास वाली औरत पर वाजिब नहीं है
क़िरान	लब्बैक उम्रतन् व ह़ज्जन्	त़वाफ़े क़ुदूम करना	ह़ज्ज की सई करना	इह़राम की ह़ालत में रहना	मिना जाना				कुर्बानी करना		-		
इफ़्राद	लब्बैक ह़ज्जन्	त़वाफ़े क़ुदूम करना	ह़ज्ज की सई करना	इह़राम की ह़ालत में रहना	मिना जाना				-		-		

✷ **फ़ाइदा :** मस्जिदे नबवी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पहले २ रकअ़त तह़ीयतुल् मस्जिद पढ़े फिर आप ﷺ की मुबारक क़ब्र के पास आए, आप के चेहरए मुबारक की ओर अपना चेहरा करे पीठ का'बा की ओर हो, और दिल आप की अ़ज़मत से भरा हुवा हो गोया कि वह आप ﷺ को देख रहा हो : फिर इन शब्दों में सलाम कहे : "अस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह" यदि अधिक बढ़ाए तो बेहतर है। फिर दाईं ओर एक हाथ जितना बढ़े, और कहे: "अस्सलामु अ़लैक या अबा बक्रिस्सिद्दीक़" "अस्सलामु अ़लैक या उमरल् फ़ारूक़, अल्लाहुम्मज्ज़िहिमा अ़न नबीएहिमा व अ़निल् इस्लामि ख़ैरन्" फिर का'बा की ओर चेहरा कर ले और हुज्रा उस की बाईं ओर हो और दुआ़ करे।

विभिन्न लाभदायक बातें

✸ **गुनाह :** अनेक चीज़ों के द्वारा गुनाह मिटाए जाते हैं, जैसे सच्ची तौबा, बख़्शिश की तलब, नेक काम, परेशानियों द्वारा परीक्षा, सदक़ा, दूसरे व्यक्ति की दुआ, फिर भी यदि कुछ पाप बाक़ी रह गए, और अल्लाह तआला ने उन्हें माफ़ न किए तो क़ब्र में, या क़ियामत के दिन या जहन्नम की आग में पापी को सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि वह गुनाहों से पवित्र होजाए, फिर वह जन्नत में जाएगा यदि उस की मौत तौहीद पर हुई हो, और यदि कुफ़्र, शिर्क या निफ़ाक़ पर मौत हुई हो तो जहन्नम उसका दाइमी ठिकाना होगा। इन्सान पर गुनाहों के प्रभाव कई एक रूप में पड़ते हैं : दिल पर उस का प्रभाव यह होता है कि वह दिल में बेचैनी और अंधेरापन का कारण बनता है, वह उसे रुसवा करता, रोगी बना देता, और अल्लाह तआला से दूर कर देता है। दीन पर भी इस का प्रभाव पड़ता है और इन चीज़ों के साथ साथ उसे इताअत से महरूम कर देता, और नबी, फ़रिश्ते और मोमिनों की दुआ से उसे वंचित कर देता है। जीविका भी प्रभावित होती है, व्यक्ति को वह रोज़ी से महरूम कर देता, उस से नेमत का ख़ातिमा कर देता, और धन दौलत की बर्कत को मिटा देता है। व्यक्तिगत प्रभाव यह पड़ता है कि व्यक्ति की उम्र की बर्कत को मिटा देता, कठोर जीवन का वारिस बनाता, और मामले को कठिन बना देता है। कर्मों को स्वीकार होने से रोक देता, सूसाइटी की अम्न व शान्ति को ख़तम कर देता, महंगाई लाता है, हाकिमों और शत्रुओं को मुसल्लत कर देता है, और आसमान से वर्षा को रोक देता है इत्यादि।

✸ **ग़म :** दिल की राहत और ख़ुशी और उस से ग़मों का दूर होना हर व्यक्ति की चाहत होती है, और इसी द्वारा उसे उत्तम जीवन प्राप्त होता है, इसे हासिल करने के लिए कई एक धार्मिक, फ़ित्री और व्यवहारिक कारण हैं, जो मात्र मोमिनों के लिए एकत्रित हो सकते हैं, इनमें से कुछ का चर्चा किया जारहा है : ❶ अल्लाह तआला पर ईमान लाना। ❷ उसके आदेशों को बजा लाना, और निषिद्ध वस्तुओं से बचना। ❸ वचन, कर्म और नेकी द्वारा मख़्लूक़ पर एहसान करना। ❹ काम काज करते रहना या धार्मिक अथवा सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति में व्यस्त रहना। ❺भविष्य या अतीत के बारे में चिन्ता न करना, बल्कि अपने रोज़ाना के कामों में व्यस्त रहना। ❻ अधिक मात्रा में अल्लाह का ज़िक्र करना। ❼ अल्लाह की ज़ाहिरी और बातिनी नेमतों का चर्चा करना। ❽ अपने से कम्तर व्यक्ति की ओर देखना, सांसारिक जीवन में जो हम से बेहतर है उन पर ध्यान न देना। ❾ ग़म के अस्बाब को दूर करने के लिए प्रयास करना, और ख़ुशी के अस्बाब को प्राप्त करना। ❿ ग़म दूर करने के लिए नबी ﷺ जो दुआएं करते थे उनके द्वारा अल्लाह की पनाह चाहना। ✸ **फ़ाइदा :** इब्राहीम अल्ख़व्वास कहते हैं : ५ चीजें दिल के लिए इलाज हैं : ध्यान देकर क़ुर्आन पढ़ना, पेट का ख़ाली होना, क़ियामुल्लैल करना (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना), रात के अन्तिम पहर में रोना गिड़गिड़ाना, और नेक लोगों के साथ बैठना।

❋ **जब कोई व्यक्ति किसी परीशानी का शिकार हो और अपने दु : ख को हल्का करना चाहता हो तो उसे बड़ा समझ कर उसके सवाब के बारे में सोचे, और उससे भी बड़ी परीशानी में पड़ने का गुमान करे।**

✸ **निकाह़ :** ऐसा व्यक्ति जिस की ख़्वाहिश नार्मल हो जिस से उसे ज़िना का डर न हो तो उसके लिए शादी करना मस्नून है, और जिसके भीतर ख़्वाहिश ही न हो उसके लिए शादी करना मुबाह़ है। पर जिसे ज़िना में पड़ जाने का डर हो तो उसके ह़क़ में शादी करना वाजिब है, जिसे वाजिबी ह़ज्ज पर भी तर्जीह़ दी जाएगी। औ़रतों को देखना ह़राम है, इसी तरह शहवत भरी नज़र से बड़ी उम्र की औ़रत और अम्रद को भी देखना ह़राम है।

निकाह़ की शर्तें : ❶ शौहर और बीवी की ता'ईन। अतः यदि किसी के पास एक से अधिक बेटियां हों तो उसका यह कहना सह़ीह़ नहीं होगा कि मैंने तुम्हारा निकाह़ अपनी एक बेटी से कर दिया। ❷ अक़्लमन्द बालिग़ शौहर की रिज़ामन्दी, और इसी तरह आज़ाद बालिग़ा लड़की की रिज़ामन्दी। ❸ वली का होना, अतः औ़रत का स्वयं अपनी शादी कर लेना सह़ीह़ नहीं है। और न हीं वली के अलावा किसी दूसरे मर्द को उसकी शादी कराने का इख़्तियार है। हाँ उस सूरत में जबकि वली किसी कुफ़्व मर्द से शादी करने में बाधा डाले (तो जायज़ है)। वली की तर्तीब इस प्रकार है : बाप, फिर दादा, फिर उससे ऊपर की पीढ़ी, फिर बेटा, फिर पोता, फिर उससे नीचे की पीढ़ी, फिर सगा भाई फिर अ़ल्लाती भाई, फिर सगा भतीजा ... इत्यादि। ❹ शहादत, दो नेक, अक़्लमन्द और बालिग़ मर्द की गवाही ज़रूरी है। ❺ शौहर और बीवी के निकाह में किसी बाधा दायक कारण का न पाया जाना। जैसे दूध, या नसब या शादी का रिश्ता जो इस निकाह़ के ह़राम होने के कारण हों।

निकाह़ ह़राम ठहराने वाली चीजें : ❶ जिन के कारण हमेशा के लिए निकाह़ करना ह़राम होता। और ये कई प्रकार के हैं : ① नसब के कारण ह़राम होने वाली औ़रतें : मां, दादी और उनके ऊपर की पीढ़ी। बेटी, पोती और इनके नीचे की पीढ़ी। और सारी बहनें उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां। और सारी भतीजियां, उन्की बेटियां, पोतियां और नवासियां और उन से नीचे की पीढ़ी। और फूफी और मौसी और उन की ऊपर की पीढ़ी। ② दुध के कारण ह़राम होने वाी औ़रतें। जो औ़रतें नसब के कारण ह़राम होती है वह सारी दूध पीने के कारण भी ह़राम ठहरती हैं, यहाँ तक की शादी के रिश्ते में भी इसका एतिबार होता है। ③ शादी के रिश्ते के कारण ह़राम होने वाली औ़रतें : सास, बीवी की दादी और नानी ....और बीवी की बेटी और उस से नीचे की पीढ़ी। ❷ जिन के कारण एक सीमित सीमा तक निकाह़ करना ह़राम होता है। और ये दो प्रकार के हैं : ① निकाह़ में एक ही समय में दो को इकट्ठा करना, जैसे एक ही समय में दो बहनों से निकाह़ करना। या उसकी फूफी अथवा मौसी से निकाह़ करना। ② किसी ख़तम होजाने वाली आरिज़ी चीज़ के कारण, जैसे किसी की बीवी से शादी करना।

✸ **फ़ाइदा** : मां बाप को यह ह़क़ ह़ासिल नहीं है कि लड़के को किसी ऐसी लड़की के साथ शादी के लिए मज्बूर करें जिसे वह चाहता न हो। इस मामले में लड़के पर उनकी फ़र्माबर्दारी भी ज़रूरी नहीं है, और न ही इस के कारण वह नाफरमान माना जाएगा।

✸ **त़लाक़** : हैज़, या निफ़ास या ऐसी पाकी की अवस्था में जिसमें बीवी से संभोग किया हो त़लाक़ देना ह़राम है, पर दे देने की सूरत में त़लाक़ हो जाएगी। बिना कारण के त़लाक़ देना मकरूह है। और कारण बस मुबाह़ है। और जिसे निकाह़ के कारण हानि पहुँच रहा हो उस के लिए मस्नून है। त़लाक़ के मामले में वालिदैन की फ़र्माबर्दारी वाजिब नहीं है। और जो व्यक्ति त़लाक़ देना चाहता हो उस पर एक से अधिक त़लाक़ देना ह़राम है, और यह भी वाजिब है कि ऐसी पाकी में त़लाक़ दे जिसमें उसने संभोग न किया हो। एक त़लाक़ देकर छोड़ दे यहाँ तक कि इद्दत पूरी होजाए। जिस औ़रत की त़लाक़ रजइ़ हो (अर्थात जिस त़लाक़ के बाद लौटाना सम्भव हो) उस पर इद्दत पूरी होने से पहले शौहर के घर से निकलना या शौहर का घर से निकालना ह़राम है। मात्र नियत करने से त़लाक़ नहीं होती बल्कि उसे शब्दों द्वारा बोलना वाजिब है।

✸ **क़सम** : क़सम पर कफ़्फ़ारा वाजिब होने के लिए 4 शर्तें हैं : ❶ क़सम का इरादा किया हो, यदि बिना इरादे के क़सम खाई हो तो वह क़सम नहीं है। बल्कि उसे लग़्वे यमीन कहते हैं : जैसे बात करते समय (क़सम से, अल्लाह क़सम आदि) कहना। ❷ क़सम भविष्य के किसी

ऐसी चीज़ के बारे में खाई गई हो जिस का होना संभव हो। अतः यदि अतीत के बारे में अज्ञानता में क़सम खाई हो, या स्वंय को सही समझ कर खाई हो, या जानबूझकर झूटी क़सम खाई हो (इसे यमीने ग़मूस कहते हैं जो कि बड़ा पाप है।) या भविष्य के बारे में स्वयं को सही समझ कर क़सम खाई हो परन्तु मामला उलटा हो जाए तो इन सभों का शुमार क़सम में नहीं होता। ❸ अपनी मर्ज़ी से क़सम खाई हो, क़सम खाने के लिए उसे मज्बूर न किया गया हो। ❹ क़सम में हानिस होजाए, अर्थात जिस चीज़ के न करने की क़सम खाई थी उसे कर ले, या करने की क़सम खाई थी परन्तु उसे न करे। और जिस व्यक्ति ने क़सम खाई हो और साथ ही साथ इन-शाअल्लाह भी कहा हो तो 2 शर्तों की बिना पर उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं होता : ❶ क़सम के साथ ही इन-शाअल्लाह कहा हो। ❷ इन-शाअल्लाह द्वारा क़सम की ता'लीक़ मक़्सूद हो, जैसे कहे :अल्लाह की क़सम इन-शाअल्लाह।

जिस व्यक्ति ने किसी चीज़ की क़सम ली हो लेकिन भलाई उस के विपरीत में हो तो सुन्नत यह है कि क़सम का कफ़्फ़ारा दे और भलाई वाला कर्म करे।

क़सम का कफ़्फ़ारा : क़सम का कफ़्फ़ारा है 10 ग़रीब को खाना खिलाना, हर ग़रीब को आधा सा'अ् अर्थात 1.5 किलो अनाज देना। या 10 ग़रीब को कपड़ा पहनाना। या एक गर्दन आज़ाद करना। यदि इनमें से किसी की भी शक्ति न हो तो लगातार 3 दिन के रोज़े रखना। और जिसने खाना खिलाने या कपड़ा पहनाने की ताक़त रखने के बावजूद रोज़े रखे हों तो उसका ज़िम्मा बरी नहीं होगा। हानिस होने से पहले या बाद में कफ़्फ़ारा देना जायज़ है। और जिसने किसी एक चीज़ पर एक बार से अधिक क़सम खाई हो तो उनकी ओर से मात्र एक कफ़्फ़ारा दे देना काफ़ी है। यदि मामला अलग अलग हो तो उनका कफ़्फ़ारा भी अलग अलग होगा।

✸ **नज़र** : नज़र की क़िस्में : ❶ मुत्लक़ नज़र : जैसे यह कहे : यदि मैं निरोग हो गया तो अल्लाह के लिए नजर दूँगा। फिर चुप होजाए और किसी ख़ास चीज़ की नज़र न माने तो निरोग होजाने पर क़सम का कफ़्फ़ारा देना होगा। ❷ ग़ुस्सा और लिजाज की नज़र : नज़र को मश्रूत करना किसी चीज़ से रोकने या उसके करने पर, जैसे यह कहना : यदि मैं ने तुझ से बात की तो मेरे ऊपर पूरे साल का रोज़ा है। इसका हुक्म ये है कि : उसे उस काम के करने, या बोलने पर क़सम का कफ़्फ़ारा देने का इख़्तियार है। ❸ मुबाह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए कपड़ा पहनना है। इसका हुक्म यह है कि उसे कपड़ा पहनने या क़सम का कफ़्फ़ारा देने का इख़्तियार है। ❹ मकरूह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए अपनी बीवी को तलाक़ देना है। इसका हुक्म यह है कि इस काम को न करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे दे, यदि कर दे तो कफ़्फ़ारा नहीं है। ❺ गुनाह वाली नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए चोरी कना है। इसका हुक्म यह है कि ऐसे काम को करना हराम है, इसलिए क़सम का कफ़्फ़ारा दे। यदि कर दिया तो पापी है और उस पर कफ़्फ़ारः नहीं है। ❻ नेकी करने की नज़र : जैसे अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त करने के मक़सद से यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए यह नमाज़ पढ़ना है। यदि किसी चीज़ के साथ उसे मशरूत किया हो जैसे रोगी का निरोग होना, तो यदि शर्त प्राप्त होजाए तो उस कर्म को करना वाजिब है, और यदि किसी चीज़ के साथ मश्रूत न किया हो तो हर अवस्था में उसे करना वाजिब है।

✸ **रिज़ाअ़त** : दूध पिलाने के सबब वह सारे रिश्ते ह़राम हो जाते हैं जो नसब के कारण होते हैं। पर 3 शर्तों के साथ : ❶ बच्चा जन्म होने के कारण दूद्ध आरहा हो, न कि किसी दूसरी वजह से। ❷ बच्चे ने पैदाइश से 2 साल के भित्र दूद्ध पिया हो। ❸ विश्वासनिय रूप से उस ने 5 रज़्अत या उस से अधिक दूध पिया हो। रज़्अत का अर्थ यह कि बच्चा

छाती को मुंह में लगाकर दूध पिए और अपने से छोड़ दे। रिज़ाअ़त के कारण ख़र्चा देना या विरासत साबित नहीं होती।

✸ **वसीयत** : जिस पर दूसरे का ऐसा हक़ हो जिसका कोई प्रमाण न हो तो मृतयु के पश्चात उसकी अदायगी की वसीयत करना वाजिब है। और जिस के पास अधिक धन हो उस पर पाँचवा हिस्सा धन सद्क़ा करने की वसीयत करना मुस्तहब है। चुनांचि ग़रीब नातेदार के लिए वसीयत करे जो कि वारिस न हो। नहीं तो आम ग़रीब, आ़लिम और नेक व्यक्ति के लिए वसीयत करे। और फ़क़ीर व्यक्ति का जिसके वारिस मौजूद हों वसीयत करना मक्रूह है, हाँ यदि वे धनी हों तो फिर मुबाह़ है। और किसी अजनबी व्यक्ति के लिए एक तिहाई से अधिक की वसीयत करना ह़राम है। इसी तरह वारिस की ख़ातिर थोड़े से धन की भी वसीयत करना ह़राम है, यदि मौत के बाद बाक़ी वरसा अनुमति दे दें तो वसियत नाफिज़ की जा सकती है। वसीयत करने वाले व्यक्ति द्वारा इन शब्दों के कहने से वसीयत बातिल होजाती है : मैं ने अपनी वसीयत लौटाली, या उसे बाति़ल कर दिया। या उसे बदल दिया या इसी तरह के दूसरे शब्द।

वसीयत के आरम्भ में ये लिखना मुस्तह़ब है : बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम हाज़ा मा औसा बिही फुलानुन् अन्नहु यश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, व अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू, व अन्नल् जन्नत हक़्क़ू, व अन्नन्नार ह़क़्क़ू, व अन्नस्साअ़त आतियल्लारैब फ़ीहा, व अन्नल्लाह यब्अ़सु मन् फ़िल्कुबूर्, व ऊसी मन् तरक्तु मिन् अह्ली अैंय्यत्तकुल्लाह व युस्लिहू ज़ात बैनिहिम्, व युतीउल्लाह व रसूलहू इन् कानू मुअ़्मिनीन्, व ऊसीहिम बिमा औसा बिही इब्राहीमु बनीहि व याअ़्कूब : ﴿يَـٰبَنِيَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصۡطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسۡلِمُونَ﴾

✸ नबी ﷺ पर दरूद भेजते समय, एक के बजाए दरूद और सलाम दोनों भेजना मुस्तह़ब है, केवल नबी के अलावा पर दरूद नहीं भेजा जाएगा, इसलिए अबू बक्र सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या अलैहिस्सलाम नहीं कहा जाएगा, और ऐसा करना मकरूह तन्ज़ीही है, पर नबियों के साथ में उन पर दरूद भेजना जायज़ है, जैसा कि इन शब्दों में दरूद भेजना : अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मद् व अ़ला आलि मुह़म्मद् व अस्ह़ाबिही, व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयतिह्। और सहाबा, ताबिईन, उन के बाद आने वाले आ़लिमों, आ़बिदों और सारे नेक लोगों के लिए रज़ियल्लाहु अन्हु, या रह़िमहुल्लाह् कहना मुस्तह़ब है। चुनांचि अबू ह़नीफ़ा, मालिक, शाफ़ई और अह़मद रज़ियल्लाहु अन्हुम्, या रह़िमहुमुल्लाह् कहा जाएगा।

✸ **ज़ब्ह़** : जानवर का गोश्त खाने के लिए उन्हें ज़बह़ करना वाजिब है। जानवर में इन 3 शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है : ❶ जिसका गोश्त खाना मुबाह़ हो। ❷ जो इन्सान के बस में हो। ❸ ख़ुश्की में रहने वाला जानवर हो। और ज़बह़ की 4 शर्तें हैं : ❶ जबह़ करने वाला अ़क़्लमन्द हो। ❷ छूरी तेज़ हो, जो कि हड्डी और दांत की न हो, क्योंकि इन दोनों से ज़बह़ करना जायज़ नहीं है। ❸ गला, और दोनों में से किसी एक रग का कटना। ❹ ज़बह के लिए हाथ हिलते समय बिस्मिल्लाह कहना। यदि बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो कोई आपत्ति की बात नहीं है। बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाहु अक्बर भी कहना मस्नून है।

✸ **शिकार** : जिस जानवर का शिकार किया जाना हो उसके लिए 3 शर्तें हैं : ❶ उसका गोश्त खाना ह़लाल हो। ❷ बिदकना उसकी फ़ित्रत हो। ❸ और जो बस में न आए। और 4 शर्तों के साथ शिकार करना जायज़ है : ❶ शिकारी व्यक्ति में ज़बह़ करने की अहलियत हो। ❷ शिकार करने का आला ऐसा हो जिससे ज़बह़ करना जायज़ हो। और वह तेज़ धारदार बर्छा या तीर या इस तरह का कोई दूसरा आला हो। और यदि शिकारी जानवर जैसे बाज़ या कुत्ता द्वारा शिकार कर रहा हो तो उस जानवर का शिक्षित होना ज़रूरी है। ❸ शिकार करने के

इरादे से तीर वग़ैरा फेंकी गई हो। यदि बिना इरादे के शिकार होजाए तो उसे खाना ह़लाल नहीं है। ❹ तीर वग़ैरा फेंकते हुए या शिकारी जानवर दौड़ाते हुए बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है। इसमें भूल माफ़ नहीं है; इसलिए बिस्मिल्लाह किए बिना जिस जानवर का शिकार किया गया हो उसका गोश्त खाना ह़राम है।

✸ **खाना** : इससे मुराद हर खाई और पी जाने वाली चीज़ है। यदि इन में 3 शर्तें पाई जाती हों तो इनका खाना ह़लाल है : ❶ खाना पाक हो। ❷ खाना में कोई नुक़्सान न हो। ❸ और वह गन्दा न हो।

हर नापाक खाना जैसे ख़ून और मुर्दार ह़राम है, और जिसमें हानि हो जैसे ज़हर, और गन्दी चीजें जैसे : गोबर, मूत, ढील, पिस्सू, और भूमि स्थल के जानवरों में से गधा, और फाड़ खाने वाले जानवर जैसे शेर, चीता, भेड़ीया, तेंदुवा, कुत्ता, सूवर, बन्दर, बिल्ली, और लौमड़ी सिवाय बिज्जू के, और पंजा द्वारा आक्रमण करने वाले पक्षी जैसे उक़ाब (गरुड़), बाज़, सक़्र, बाशिक़, शाहीन, चील, उल्लू, और गन्दगी खाने वाले पक्षी जैसे गिध, रख़म, सारस, और हर वह पक्षी जिसे अरब वासी नापसंद करते हों जैसे चम्गादड़, चूहा, बिर्नी, मक्खी, पतिंगा, हुद्हुद्, साही और सांप यह सब के सब ह़राम हैं। और प्रत्येक प्रकार के कीड़े मकूड़े, चूहा, गुब्रैला, छिपकिली। और हर वह चीज़ जिसे मारने का शरीअ़त ने आदेश दिया है जैसे बिच्छू या उसे मारने से रोका है जैसे चिंवटी। या जो दो जानवरों से जन्म लिए हों जिसमें एक का खाना ह़लाल है और दूसरे का खाना ह़राम है जैसे सिम्अ़ अर्थात भेड़िया से बिज्जू का जन्म लेने वाला बच्चा तो यह भी ह़राम है। पर यदि दो ऐसे जानवरों से जन्म लिया हो जिन्हें खाना मुबाह़ है जैसे नील-गाय और घोड़े से जन्म लेने वाला खच्चर तो यह ह़राम नहीं है। और इनके अतिरिक्त जो पशु हैं वह ह़लाल हैं जैसे भेड़, बक्रा, ऊँट, गाय और घोड़ा, और जंगली जानवर जैसे ज़राफ़ा, ख़र्गोश, वबर (बिल्ली से छोटी डील का एक जानवर), यर्बूअ़ (चूहा समान एक जानवर जिस की अगली टांगें छोटी, पिछली बड़ी, और पोंछ लम्बी होती है), गोह और हिरन। और पक्षी यों में शुतुर मुर्ग, मुर्गा मुर्गी, मोर, त़ोता, कबूतर, गौरैया, बतख़, मुर्ग़ाबी और समुन्दर की सम्पूर्ण पक्षियां। और समुन्दरी जानवर सिवाय मेंडक, शर्प और घड़ियाल के। और जिस खेती या फल पर नापाक पानी पटाया गया हो, या खाद डाला गया हो, तो उस की उपज को खाना जायज़ है यदि उस में गन्दगी या उस की बदबू का प्रभाव न हों। और कोइला, मिट्टी या गारा को खाना मकरूह है, इसी प्रकार बिना पकाए कच्ची पियाज़ और लहसुन खाना मकरूह है, और यदि भूक के कारण मज्बूर होगया तो जान बचाने के लिए कुछ भी खा सकता है।

✸ काफ़िरों के तेहवारों में जाना या उन पर उन्हें मुबारकबादी देना, और सलाम करने में पहल करना ह़राम है। और यदि वे हमें सलाम करें तो जवाब में “व अलैकुम” कहना वाजिब है। उनकी और इसी तरह बिद्अ़तियों की स्वागत के लिए खड़ा होना ह़राम है। उनसे मुसाफ़ह़ा करना मकरूह है, परन्तु उनकी ताज़ियत करना, या बीमारपुर्सी करना धार्मिक मसलह़त की ख़ातिर जायज़ है।

शरई झाड़-फूक

अल्लाह तआला की सुन्नतों पर ध्यान रखने वाले व्यक्ति को इस बात की जानकारी बहुत अच्छी तरह है कि परीक्षा अल्लाह तआला की कौनी क़द्री सुन्नत है, उसका फ़रमान है : ﴿ وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ ٱلْخَوْفِ وَٱلْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ ٱلْأَمْوَٰلِ وَٱلْأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِ ۗ وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴾ "**और हम किसी न किसी तरह ज़रूर तुम्हारा परीक्षा लेंगे, शत्रु के डर से, भूक प्यास से, माल तथा जान और फलों की कमी से, और सब्र करने वालों को खुश्ख़बरी दे दीजिए।**"। और जो व्यक्ति इस भ्रम में है कि नेक लोगों का परीक्षा नहीं होता तो वह उसकी गलती है, बल्कि परीक्षा तो ईमान की निशानी है। नबी ﷺ से पूछा गया : "**वह कौन व्यक्ति है जिसका परीक्षा सब से अधिक होता?**" तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "**अम्बिया, फिर नेक लोग, फिर अच्छे अच्छे लोग। इन्सान का परीक्षा उसके धर्म (दीन) के आधार पर होता है, यदि उसके धर्म में मज़्बूती है तो उसका परीक्षा अधिक होता है, और यदि उसके दीन में कमी है तो उसका परीक्षा हल्का होता है**"। और यह बन्दे से अल्लाह तआला की महब्बत की निशानी है, नबी ﷺ का फ़रमान है : "**अल्लाह तआला जब किसी क़ौम से महब्बत करता है तो उनका परीक्षा लेता है**"। (अहमद और तिर्मिज़ी) इसी तरह यह उसके लिए भलाई चाहने की निशानी है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "**अल्लाह जब अपने बन्दे के लिए भलाई चाहता है तो वह उसे संसार में सज़ा दे देता है, और जब बुराई चाहता है तो उसकी सज़ा को रोके रखता है ताकि क़ियामत के दिन पूरा बदला ले**"। (तिर्मिज़ी) और परीक्षा गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा है चाहे थोड़ा ही क्यों न हो, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "**जिस मुस्लिम व्यक्ति को भी तक्लीफ़ पहुँचती है, चाहे काँटा चुभे या उस से बड़ी मुसीबत में मुब्तला हो, तो अल्लाह तआला उसके ज़रीए उसके गुनाहों को मिटा देता है, जिस तरह पेड़ अपने पत्तों को झाड़ देता है**"। (बुख़ारी एवं मुस्लिम) चुनांचि मुसीबत में ग्रस्त व्यक्ति यदि नेक है तो परीक्षा उसके पिछले गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा है, या उसके दर्जे में बुलंदी का कारण है, और यदि पापी है तो यह उसके गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा है और उसके भयानकपन को याद दिलाने का ज़रीआ है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ ظَهَرَ ٱلْفَسَادُ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِى ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ ٱلَّذِى عَمِلُوا۟ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴾ " **खुश्की और तरी में फ़साद फैल गया लोगों के कुर्मों के कारण; इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फ़ल अल्लाह तआ़ला उन्हें चखा दे, अधिक सम्भव है कि वे रुक जाएं**"।

परीक्षा की क़िस्में : भलाई द्वारा परीक्षा, जैसे धन की बढ़ौतरी। बुराई द्वारा परीक्षा, जैसे डर, भय, भूक, धन दौलत की कमी, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَنَبْلُوكُم بِٱلشَّرِّ وَٱلْخَيْرِ فِتْنَةً ﴾ "**हम परीक्षा के लिए तुम में से प्रत्येक को बुराई तथा भलाई में डालते हैं**"। और बीमारी और मौत का शुमार भी इसी में होता है, जिसका बड़ा कारण हसद के कारण लगने वाली नज़र और जादू है। नबी ﷺ का फ़रमान है : "**अल्लाह की क़ज़ा और क़द्र के बाद मेरी उम्मत के अधिक्तर लोगों की मौत नज़र लगने के कारण होगी**"। (तयालसी)

जादू और नज़र से बचाव : बचाव इलाज से बेहतर है, इसलिए बचाव के कारणों को अपनाना ज़रूरी है, कुछ महत्वपूर्ण कारणों का चर्चा नीचे किया जा रहा है : ✸ तौहीद द्वारा नफ्स को शक्ति पहुँचाना, यह ईमान रखते हुए कि संसार में हेर फेर करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और अधिक नेकी के काम करना। ✸ अल्लाह तआला के बारे में उत्तम धारणा रखना, और उसी पर भरोसा करना, किसी बदलाव के कारण बीमारी या बूरी नज़र का वहम न करना, क्योंकि वहम स्वयं एक रोग है।[1] ✸ जिस व्यक्ति के बारे में जादूगर होना या बुरी नज़र वाला होना मश्हूर हो

---

[1] डाक्टर्स और विशेषक लिखते हैं कि सेक्स सम्बन्धित बिमारियां वहम के कारण होती हैं। वास्तव में बीमारी नहीं होती।

उससे दूर रहना बचाव के तौर पर न कि उससे डर कर। ✸ किसी अच्छी भली चीज़ को देख कर अल्लाह का ज़िक्र करना और बर्कत की दुआ करना। नबी ﷺ का फ़रमान है : **"जब तुम में से किसी को अपनी नफ़्स या धन, या अपने भाई की कोई चीज़ पसन्द आजाए, तो वह बर्कत की दुआ करे, क्योंकि नज़र सत्य है"**। बर्कत की दुआ यह है : "बारकल्लाह" (अल्लाह तआला बर्कत अता करे)। इस जगह "तबारकल्लाह्" कहना सहीह नहीं है। ✸ बचाव के कारणों में से यह भी है कि सवेरे मदीनतुन्नबी ﷺ की सात अज्वा ख़जूरें खाए। ✸ अल्लाह तआला की ओर लौटना, उस पर भरोसा करना, उसके बारे में अच्छी धारणा रखना, नज़र और जादू से उसकी पनाह में आना, और सवेरे शाम अज़्कार और मुऔविज़ात की पाबन्दी करना,[1] अल्लाह तआला के इरादे से 2 चीज़ों के कारण इन अज़्कार के प्रभाव में कमी बेशी होती है : ❶ इस बात पर ईमान रखना कि यह अज़्कार हक़ और सत्य हैं, और अल्लाह तआला के इरादे से लाभ-दायक हैं। ❷ ज़ुबान से कहे, कान धरे रहे, और दिल को हाज़िर रखे; क्योंकि यह दुआ है और ग़ाफ़िल लापर्वाह दिल की दुआ स्वीकार नहीं होती। जैसा कि नबी ﷺ से प्रमाणित है।

अज़्कार और मुऔविज़ात के समय : सवेरे के अज़्कार फ़ज्र की नमाज़ के बाद कहे जाएंगे, और शाम के अज़्कार अस्र की नमाज़ के बाद, और यदि भूल जाए तो जिस समय याद आजाए ज़िक्र कर ले।

नज़र इत्यादि लगने की निशानी : मेडीकल और शरई रुक्या के बीच कोई विरोध नहीं है, चुनांचि क़ुर्आन जिस्मानी और रूहानी रोगों के लिए शिफ़ा है, और जब इन्सान जिस्मानी बीमारी से निरोग हो, तो उसकी शारीरिक बदलाव आम तौर पर रियाही दर्द के रूप में होता है, चेहरे का पीला पड़ जाना, अधिक मात्रा में पेशाब या पसीना आना, ख़ाहिश कम हो जाना, किनारों में गर्मी ठंडी या चुभन होना, दिल धड़कना, कंधों और पीठ के नीचे दर्द का घूमना, रात में नींद न आना, डर या ग़ुस्सा के कारण ग़ैर फ़ित्री तनाव पैदा होना, बहुत डिकार आना, लम्बी सांस लेना, तन्हाई पसंद करना, सुस्ती होना, सोने की चाहत करना, और दूसरी स्वास्थ से जुड़ी परेशानियां जो किसी बीमारी के कारण न हों। और बीमारी की शक्ति और कमज़ोरी के लिहाज़ से यह सारी निशानियां या इन में से कुछ पाई जाती हैं।

मुस्लिम व्यक्ति का मज़्बूत दिल और ईमान वाला होना ज़रूरी है, वह वसवसों से अपने आप को दूर रखे, मात्र इस तरह की किसी बदलाव के कारण स्वयं को रोगी होने के भ्रम में न डाले, क्योंकि भ्रम का इलाज करना सब से कठिन है, और कभी कभार ऐसा भी होता है कि कुछ लोगों के अन्दर इस तरह के बदलाव पाए जाते हैं लेकिन वह निरोग होते हैं, और कभी इस तरह के बदलाव का कारण जिस्मानी रोग होता है, और कभी इसका कारण ईमान की कम्ज़ोरी होती है, जैसे सीने की तंगी, ग़मी, सुस्ती, तो ऐसे व्यक्ति पर वाजिब है कि अल्लाह तआला से अपना सम्पर्क जोड़े।

यदि बीमारी नज़र लगने के कारण हो तो अल्लाह के कृपा से इन दो में से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है :[2] ❶ यदि बुरी नज़र वाले व्यक्ति की जानकारी हो जाए तो उसे स्नान करने का आदेश दो और इस पानी से या जिस पानी को उसने पिया है उस बचे हुए पानी से स्नान करो

---

[1] देखिए सवेरे-सांझ की दुआएं।

[2] नज़र लगना। जिन्न की ओर से पहुंचने वाली तक्लीफ़ है जो अल्लाह तआला की अनुमति से नज़र लगने वालों को पहुंचती है, जब कि शैतान के होते समय उसे देख कर कोई खुश होता है, और नज़र से बचाने वाला कोई सबब भी नहीं होता, जैसे नमाज़ और ज़िक्र इत्यादि। और इस की दलील नबी ﷺ की हदीस है : "नज़र लगना हक़ है"। बुख़ारी। और दूसरी रिवायत में है : "नज़र के अन्दर शैतान और इन्सान का हसद मौजूद होता है"। अहमद। आँख स्वयं तक्लीफ़ नहीं पहुंचाती पर इसे ऐन (नज़र) इस लिए कहा गया है कि इस के द्वारा सिफ़त ब्यान की जाती है, वरना अंधे की भी नज़र लग जाती है।

और उसे पीओ।[1] ❷ और यदि उस व्यक्ति की जानकारी न हो सके तो शिफ़ा के लिए रुक़्या, दुआ और पछना का सहारा लो।

और यदि बीमारी जादू[2] होने के कारण हो तो अल्लाह की कृपा से इनमें से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है : ❶ जादू के स्थान की उसे जानकारी होजाए, तो मुऔवज़तैन (सूरतु-ल्-फ़लक़ और सुरतु-न्-नास) पढ़ते हुए उसके बंधन को खोल दे, फिर उसे जला दे। ❷ क़ुर्आनी आयतों के द्वारा दम करके ख़ासकर मुऔवज़तैन, सूरतुल् बक़्रः और दूआएं पढ़ कर।

❸ नुश्रः करे, और यह दो प्रकार के हैं, ① यदि जादू का खात्मा जादू द्वारा किया जाए, और इससे छुटकारे के लिए जादूगर का सहारा लिया जाए तो यह तरीक़ा ह़राम है। ② दूसरा नुश्रः जायज़ है, और इसका तरीक़ा यह है कि बैर की 7 पत्ती ले, उसे पीस दे, फिर उस पर तीन तीन बार सूरतु-ल्-काफ़िरून, सुरतु-ल्-इख़्लास, सूरतु-ल्-फ़लक़ और सुरतु-न्-नास पढ़े, फिर उसे पानी में डाल दे, फिर उसे पीए और उससे स्नान करे, अल्लाह की मर्ज़ी से शिफ़ा मिलने तक इस अमल को बार बार करता रहे।

❹ जादू को निकाल फेंके, यदि जादू पेट में है तो इस्हाल वाली चीजों के द्वारा उसे निकाले, और यदि पेट के अलावा किसी दूसरे स्थान पर है तो पछना[3] द्वारा उसे निकाल बाहर करे।

रुक़्या अर्थात शरई झाड़-फूंक : इसकी शरतें : ❶ रुक़्या क़ुर्आनी आयतों और शरई दुआओं के द्वारा किया जाए। ❷ रुक़्या अरबी भाषा में किया जाए, दूसरी भाषा में दुआ करना जायज़ है। ❸ यह आस्था और अक़ीदा रखा जाए कि स्वंय रुक़्या का प्रभाव नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआ़ला शिफ़ा देता है।

और उसके अधिक प्रभाव की ख़ातिर शिफ़ा की नियत से और इन्सान एवं जिन्नात की हिदायत की नियत[4] से क़ुर्आन पढ़ना चाहिए; क्योंकि क़ुर्आन हिदायत एवं शिफ़ा के लिए नाज़िल हुआ है। और जिन्न को क़तल करने की नियत से क़ुर्आन न पढ़े, हाँ यदि इसके बिना उसका निकलना असम्भव हो तो ऐसा कर सकता है।

राक़ी अर्थात रुक़्या करने वाले व्यक्ति के लिए शर्तें : ❶ मुस्लिम हो, नेक और मुत्तक़ी हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उतना ही अधिक उसके रुक़्या का प्रभाव होगा। ❷ रुक़्या करते समय सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर ध्यान लगाए रहे, इस तरह कि दिल ज़ुबान के मुवाफ़िक़ हो, और उत्तम यह है कि इन्सान स्वंय अपने को रुक़्या करे, क्योंकि दूसरे व्यक्ति का दिल आम तौर पर व्यस्त होता है, और इसलिए भी कि उसकी ह़ाजत और परेशानी का अन्दाजः उसकी तरह दूसरा व्यक्ति नहीं लगा सकता, और अल्लाह तआला ने परेशान हाल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करने का वचन दिया है।

---

[1] जिस की नज़र लगी हो उस की बची हुई कोई भी चीज़ जैसे पानी या खाने का बक़ाया, या छूई हुई चीज़ का बक़ाया लें और उसे पानी में डाल कर उस से बीमार व्यक्ति को नहलाएं और कुछ को पिलाएं।

[2] गांठ लगाने, फुंकने या भनभनाने का अमल है जिससे मस्हूर के शरीर, दिल या अक़्ल पर असर पड़ता है, और यह ह़क़ है, चुनान्चि कुछ जादू जान ले लेता है, कुछ बीमार कर देता है, कुछ पति को पत्नि से सम्भोग करने से रोक देता है, कुछ दोनों के बीच जुदाई करा देता है, और इस में से कुछ शिर्क और कुफ़्र होता तो कुछ की गिन्ती कबीरः गुनाह में होता।

[3] नबी ﷺ ने फ़र्माया : "सब से उत्तम इलाज पछना लगाना है"। और इस द्वारा अल्लाह तआला ने लिंग की कितनी बिमारीयों से शिफ़ा दिया, और इसी प्रकार नज़र और जादू के कारण होने वाले केन्सर से भी शिफ़ा बख़्शा।

[4] दीन की ओर दावत, भलाई के कर्म करने और बुराई से रुक्ने की नियत से क़ुर्आन पढ़ना, और इस नियत से क़ुर्आन पढ़ने का असर बहुत ज़्यादा है, अध्क्तिर बहुत जल्द जिन्न इस से प्रभावित होजाता है और अपनी बुराई रोगी से रोक लेता है, इस के बर ख़िलाफ यदि क़तल की नियत से पढ़ा जाए तो सर्कशी पर उतर आता है, और रोगी और पढ़ने वाले दोनों को हानी पहुंचाता है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : "अल्लाह तआ़ला नर्म है और नर्मी को पसन्द करता है, और नर्मी पर वह चीज़ें अ़त़ा करता है जो कि कठोरता के कारण नहीं देता"। मुस्लिम।

मर्क़ी अर्थात जिस व्यक्ति को रुक़्या किया जा रहा है उस के लिए शर्तें : ❶ मुस्तह़ब है कि वह नेक और मोमिन हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उसी क़दर उसे लाभ होगा। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴾ **"यह क़ुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रह़मत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फ़ायदा नहीं होता"**। ❷ शिफ़ा के लिए सच्चे दिल के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहे। ❸ शिफ़ के लिए जल्दी न करे, क्योंकि रुक़्या दुआ है, और यदि उसने जल्दी मचाई तो सम्भव है कि स्वीकार न हो, नबी का फ़रमान है : "तुम में से किसी की दुआ उस समय तक स्वीकार होती है जब तक वह जल्दी न मचाए, यह न कहे मैंने दुआ की परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई"। (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

रुक़्या के तरीक़े : ❶ हल्की थुक्थुकाहट के साथ रुक़्या करना। ❷ बिना थुक्थुकाहट के रुक़्या करना। ❸ उँगली पर थुक लगाना, फिर उसमें मिट्टी मिलाना, और दर्द की जगह को उस से छूना। ❹ दर्द की जगह पर हाथ फेरे और रुक़्या करे।

कुछ आयतें और ह़दीसें जिन से रोगी को रुक़्या किया जाए : सूरतु-लू-फ़ातिहा :

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴾[1]

﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ ۚ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا ٱكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۖ وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَآ ۚ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴾[2]

﴿ فَسَيَكْفِيكَهُمُ ٱللَّهُ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴾[3]

﴿ يَـٰقَوْمَنَآ أَجِيبُوا۟ دَاعِىَ ٱللَّهِ وَءَامِنُوا۟ بِهِۦ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴾[4]

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ ٱلظَّـٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴾[1]

---

[1] आयतु-लू-कुर्सी : "अल्लाह तआला ही सत्य माबूद है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊँघ आए न नींद। उसकी मिलकियत में ज़मीन और आस्मान की तमाम चीज़ें हैं। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है, और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता (घेरा) नहीं कर सकते मगर जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी की वुसूअ़त (परिधि) ने ज़मीन व आस्मान को घेर रखा है। और अल्लाह तआला उनके हिफ़ाज़त से न थकता और न उकताता है। वह तो बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।" {सूरह अल्‌बक़राः २५५}

[2] सुरतु-लू-बक्रः की आख़िरी दोनों आयतें : "रसूल ईमान लाया उस चीज़ पर जो उसकी तरफ़ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मुमिन भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी में हम तफ़्रीक़ नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और इताअ़त (अनुकरण) की। हम तेरी बख़्शिश (क्षमा) तलब करते हैं ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है। अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। जो नेकी वह करे वह उसके लिए और जो बुराई वह करे वह उस पर है। ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गए हूँ या ग़लती की हो तो हमें न पकड़ना। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त न हो, और हमसे दरगुज़र फ़रमा, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़ल्बा प्रदान कर।" {सूरह अल्‌बक़राः २८५-२८६}

[3] "अल्लाह तआला उनसे अ़न्क़रीब किफ़ायत करेगा, और वह ख़ूब सुनने वाला और जानने वाला है।" {सूरह अल्‌बक़राः १३७}

[4] "ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह के बुलाने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ तो अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से पनाह देगा।" {सूरह अल्‌अह्क़ाफ़ः ३१}

[3] ﴿ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴾ [2] ﴿ أَمْ يَحْسُدُونَ ٱلنَّاسَ عَلَىٰ مَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ ﴾
[5] ﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ هُدًى وَشِفَآءٌ ﴾ [4] ﴿ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ﴾
[7] ﴿ فَٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ﴾ [6] ﴿ لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُۥ خَٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ ٱللَّهِ ﴾
[8] ﴿ وَإِن يَكَادُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَٰرِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا۟ ٱلذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُۥ لَمَجْنُونٌ ﴾
﴿ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوا۟
هُنَالِكَ وَٱنقَلَبُوا۟ صَٰغِرِينَ ﴾ [9]
﴿ قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ أَلْقُوا۟ ۖ فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن
سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾ فَأَوْجَسَ فِى نَفْسِهِۦ خِيفَةً مُّوسَىٰ ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾ وَأَلْقِ مَا فِى
يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوٓا۟ ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا۟ كَيْدُ سَٰحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴾ [10]
[11] ﴿ ثُمَّ أَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴾
[12] ﴿ فَأَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُۥ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا ﴾
[13] ﴿ فَأَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ ٱلتَّقْوَىٰ ﴾
[14] ﴿ لَّقَدْ رَضِىَ ٱللَّهُ عَنِ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ ٱلشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَٰبَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴾
[15] ﴿ هُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ فِى قُلُوبِ ٱلْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوٓا۟ إِيمَٰنًا مَّعَ إِيمَٰنِهِمْ ﴾

---

1 ''यह क़ुर्आन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रह़मत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फ़ायदा नहीं होता।'' {सूरतु बनी इस्राईलः ८२}

2 ''या यह लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया है।'' {सूरतुन्निसाः ५४}

3 ''और जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है।'' {सूरतुश्शुअ़राः ८०}

4 ''और मुसलमानों के कलीजे ठंडे करेगा।'' {सूरतुत्तौबाः १४}

5 ''आप कह दीजिए कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफ़ा है।'' {सूरतु फ़ुस्सिलतः ४४}

6 ''अगर हम इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह पस्त होकर टुकड़े टुकड़े हो जाता।'' {सूरह अल्ह़श्रः २१}

7 ''दोबारा (नज़्रें डाल कर) देख ले क्या कोई शिगाफ़ (चीर) भी नज़र आ रहा है?'' {सूरह अल्मुल्कः ३}

8 ''और क़रीब है कि काफ़िर अपनी तेज़ निगाहों से आपको फुसला दें, जब कभी क़ुर्आन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो ज़रूर दीवाना है।'' {सूरह अल्क़लमः ५१}

9 ''और हमने मूसा (عليه السلام) को हुक्म दिया कि अपनी लाठी डाल दीजिए! सो लाठी का डालना था कि उसने उसके सारे बने बनाए खेल को निगलना शुरू किया। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा। पस वह लोग इस मौक़े पर हार गए और ख़ूब ज़लील होकर फिरे।'' {सूरह अल्आराफ़ः ११७-११९}

10 ''कहने लगे कि ऐ मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें। जवाब दिया कि नहीं तुम ही पहले डालो। अब तो मूसा (عليه السلام) को यह ख़्याल गुज़रने लगा कि उनकी रस्सियाँ और लकड़ियाँ उनके जादू के ज़ोर से दौड़ भाग रही हैं। पस मूसा (عليه السلام) ने अपने दिल ही दिल में डर मह़सूस किया। हमने फ़रमायाः कुछ डर न कर, यक़ीनन तू ही ग़ालिब और बर्तर (बढ़ कर) रहेगा। और तेरे दायें हाथ में जो कुछ है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को निगल जाए, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह सिर्फ़ जादूगरों के कर्तब हैं, और जादूगर कहीं से भी आए कामियाब नहीं होता।'' {सूरतु ताहाः ६५-६९}

11 ''फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) अपने नबी पर और मुमिनों पर उतारी।'' {सूरतुत्तौबाः २६}

12 ''पस अल्लाह तआ़ला ने अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) उस पर नाज़िल फ़रमा कर उन लश्करों से उसकी मदद की जिन्हें तुमने देखा ही नहीं।'' {सूरतुत्तौबाः ४०}

13 ''सो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर और मुमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) नाज़िल फ़रमाई, और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को तक़्वे (संयम) की बात पर जमाए रखा।'' {सूरह अल्फ़त्हः २६}

14 ''यक़ीनन अल्लाह तआ़ला मुमिनों से खुश हो गया जबकि वह दरख़्त (वृक्ष) तले तुझसे बैअ़त कर रहे थे, उनके दिलों में जो था उसे उसने मालूम कर लिया और उन पर सुकून व इत्मीनान नाज़िल फ़रमाया और उन्हें क़रीब की फ़तह इनायत फ़रमाई।'' {सूरह अल्फ़त्हः १८}

15 ''वही है जिसने मुसलमानों के दिलों में सुकून डाल दिया, ताकि अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें।'' {सूरह अल्फ़त्हः ४}

सूरतु-ल्-काफ़िरून सूरतु-ल्-इख़्लास सूरतु-ल्-फ़लक़ सूरतु-न्-नास और यह आयतें और यह ह़दीसें :

أَسْأَلُ اللهَ العَظِيْمَ رَبَّ العَرْشِ العَظِيْمِ أَنْ يَشْفِيَكَ "अस्अलुल्लाह-ल्-अ़ज़ीम, रब्ब-ल्-अर्शि-ल्-अ़ज़ीम, ऐंयशिफ़यक" 7 बार।

أُعِيْذُكَ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لامَّةٍ "ओईज़ुक बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मः मिन कुल्ले शैतानिन व हाम्मः व मिन कुल्ले ऐनिन् लाम्मः" 3 बार।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ البَأْسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِيْ لا شِفَاءَ إِلا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لايُغَادِرُ سَقَمًا "अल्लाहुम्म रब्बन्नासि अज़्हिबिल्बास वशिफ़ अन्तश्शफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउक शिफ़ाअन् ला युग़ादिरु सक़मा"। 3 बार।

اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا "अल्लाहुम्म अज़्हिब अन्हु ह़र्रहा व बर्दहा व वसबहा"। 1 बार।

حَسْبِيَ اللهُ لا إِلَهَ إِلا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ العَرْشِ العَظِيْمِ "ह़स्बियल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल् अ़र्शिल्अ़ज़ीम"। 7 बार।

بِسْمِ اللهِ أَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ، اللهُ يَشْفِيْكِ بِسْمِ اللهِ أَرْقِيْكَ "बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक मिन कुल्लि दाइन यु'अ्ज़ीक व मिन शर्रि कुल्लि नफ़्सिन् औ ऐनिन् ह़ासिदिन्, अल्लाहु यश्फ़ीक बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक"। 3 बार।

दुःख दर्द की जगह तुम अपने हाथ को रख्खो और 3 बार بِسْمِ اللهِ"बिस्मिल्लाह्"। कहो और 7 बार यह दुआ पढ़ो : أَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ "अऊ़ज़ो बिइ़ज़्ज़तिल्लाहि व क़ुद्रतिहि मिन शर्रि मा अजिदु व उह़ाज़िरु"।

नोट :

❶ आइन् (बूरी नज़र वाले) के बारे में प्रसिद्ध खुराफ़ात की पुष्टि करना जायज़ नहीं है। जैसा कि उस का पेशाब पीना या यह कहना कि यदि उसे जानकारी होजाए तो इसका प्रभाव नहीं होगा।

❷ किसी व्यक्ति को बूरी नज़र से बचाने के लिए चमड़े की ता'वीज़ पहनाना, या उसे कंगन या डोरे वग़ैरः का हार पहनाना जायज़ नहीं है। नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिस ने कोई चीज़ लटकाई तो वह उस के ह़वाले कर दिया जाता है"। (तिर्मिज़ी) और यदि क़ुरआनी ता'वीज़ हो तो इसके बारे में मतभेद है, परन्तु इससे दूर रहना ही बेहतर है।

❸ बूरी नज़र से बचने के लिए माशाअल्लाह्, तबारकल्लाह् लिखने, या तल्वार, या छूरी, या आँख वगैरः का फोटो बनाने, या गाड़ी में क़ुर्आन रखने, या घरों में क़ुर्आनी आयतों का कुत्बा लटकाने का कोई फ़ाइदा नहीं है, इस से बुरी नज़र टाली नहीं जा सकती बल्कि ऐसा करना ह़राम ता'वीज़ के चपेट में भी आ सकता है।

❹ रोगी पर वाजिब है कि रुक़्या स्वीकार होने पर विश्वास रख्खे, और शिफ़ा के लिए जल्दी न मचाए, यदि उस से यह बात कही गई होती कि निरोग होने के लिए जीवन भर दवा खाना है तो उसे उकताहट न होती, जब्कि कुछ ही दिनों के रुक़्या से वह उकता जाता है, हालांकि हर ह़र्फ़ की तिलावत के बदले उसे एक नेकी मिलती है, और नेकी भी दस गुना इज़ाफ़ा के साथ, लिहाज़ा वह दुआ करे, अल्लाह से माफ़ी मांगे, और अधिक सद्क़ा करे; क्योंकि इन चीज़ों से भी शिफ़ प्राप्त की जाती है।

❺ इज्तिमाई रूप में पढ़ना सुन्नत के ख़िलाफ है, इसके बारे में आई हुई रिवायत ज़ईफ़ है, और इसी तरह रुक़्या की ख़ातिर मात्र कैसेट द्वारा तिलावत सनना भी सह़ीह़ नहीं है, क्योंकि इसमें नियत नहीं हो पाती है; जब्कि राक़ी के लिए नियत शर्त है। और निरोग होने तक बारबार रुक़्या करना

मस्नून है, परन्तु परेशानी होती हो तो कम मात्रा में करे ताकि उकताहट न हो। और यह बात भी ध्यान में रहे कि किसी आयत या दुआ को बिना प्रमाण के खास संख्या में पढ़ना जायज़ नहीं है।

❻ कुछ निशानियां ऐसी होती हैं जिन से रुक़्या की ख़ातिर राक़ी का क़ुरआन के बजाए जादू से सहारा लेने की पुष्टि होती है; लिहाज़ा ऐसे व्यक्ति की जाहिरी दीनदारी से धोके में न आना, वह रुक़्या को क़ुरआन द्वारा आरम्भ तो करता है लेकिन बीच में ही पटरी बदल लेता है, वह लोगों को धोके में रखने के लिए मस्जिद भी जाया करता है, उनके सामने अधिकतर ज़िक्र भी करता है, मगर यह मात्र दिखलावा होता है; लिहाज़ा ऐसे लोगों से होश्यार रहना।

जादूगरों और नज़रबाज़ों की निशानियां : ✸ रोगी से उसका नाम या उसकी मां का नाम पूछना; क्योंकि नाम की जानकारी का प्रभाव इलाज पर नहीं पड़ता है। ✸ रोगी का कपड़ा मांगना, जैसे उसकी बनियान या कुर्ता आदि। ✸ कभी वह रोगी से किसी ख़ास प्रकार का जानवर जिन के लिए ज़बह़ करने की मांग करता है। और कभी कभार उसी जानवर के ख़ून को रोगी के शरीर पर लगाता है। ✸ ऐसे तलासिम लिखना या पढ़ना जो समझ में न आएं और न ही उनका कोई अर्थ हो। ✸ रोगी को ऐसी ता'वीज़ देना जिसमें खानों के अन्दर ह़र्फ़ और नम्बर लिख्खे गए हों, जिसे ह़िजाब कहा जाता है। ✸ रोगी को कुछ समय के लिए अंधेरे रूम में अकेले रहने का आदेश देना, और इसे ह़ज्बा बोलते हैं। ✸ रोगी को कुछ समय के लिए पानी छूने से रोक देना। ✸ दफ़न करने के लिए रोगी को कोई चीज़ देना, या जलाकर धूईं लेने के लिए काग़ज़ देना। ✸ रोगी की कुछ ऐसी निजी बातें बताना जिसके बारे में रोगी के सिवा कोई दूसरा न जानता हो, या उसके कुछ कहने से पहले उसके नाम गाँव और बीमारी के बारे में बताना। ✸ मात्र रोगी के आने, या उस से टेलीफ़ोन द्वारा बात करने, या उस की चिट्ठी पढ़ने से रोगी की ह़ालत का अन्दाज़ः लगाना।

❼ अहले सुन्नत का मज़्हब यह है कि जिन्नात इन्सान पर सवार हो जाते हैं, जैसा कि उसका चर्चा कुर्आन की इस आयत में है :

﴿ٱلَّذِينَ يَأْكُلُونَ ٱلرِّبَوٰا۟ لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ ٱلَّذِى يَتَخَبَّطُهُ ٱلشَّيْطَـٰنُ مِنَ ٱلْمَسِّ﴾ **"सूद खाने वाले लोग उसी तरह खड़े होंगे जिस तरह शैत़ान का छूया हुवा मद्होश व्यक्ति खड़ा होता है।"** इस आयत के बारे में मुफ़स्सिरीन का इज्मा'अ् है कि आयत में मस्स से मुराद शैतानी दीवानापन है जो इन्सान पर शैतान के सवार होने के कारण तारी होता है।

जादू : जादू मौजूद है, और क़ुरआन और ह़दीस द्वारा इसका प्रभाव साबित है, यह ह़राम है, और बड़े गुनाहों में इसका शुमार है, नबी ﷺ का फ़रमान है : " सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा : यह गुनाह कौन से हैं? तो आप ने फ़रमाया: "अल्लाह के साथ शिर्क करना, और जादू ···"। बुख़री और मुस्लिम। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَلَقَدْ عَلِمُوا۟ لَمَنِ ٱشْتَرَىٰهُ مَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ مِنْ خَلَـٰقٍ﴾ **और वे अवश्य यह जानते हैं कि उसे अपनाने वाले का आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं"**। और इस की दो क़िस्में हैं : गांठ लगा कर और फूंक कर जादूगर का मस्ह़ूर (जिसे जादू किया गया हो) को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए शैत़ान को प्रयोग करना। ऐसी दवाएं जो मस्ह़ूर के शरीर, अक़्ल, इरादे और मैलान को प्रभावित करे, और इसे सर्फ और अ़त्फ़ कहाजाता है, चुनान्चि इस के कारण मस्ह़ूर को ऐसा लगने लगता कि यह चीज़ पलट गई, या हिल रही है, या चल रही है इत्यादि। तो पहली क़िस्म शिर्क है इसलिए कि शैत़ान उस समय तक जादूकर की नहीं मानता जब तक कि वह शिर्क न करे, और दूसरी क़िस्म हलाकत में डालने वाला बड़ा गुनाह है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की अनुमती से होती है।

दुआ

सारी मख़्लूक़ अल्लाह की और उन नेमतों और कृपाओं का मुह्ताज है जो अल्लाह के पास हैं, और अल्लाह सब से बेनियाज़ है, वह किसी का भी मुह्ताज नहीं, उसने अपने बन्दों पर दुआ वाजिब किया है। उसका फ़रमान है : **"मुझ को पुकारो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करुंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से (अर्थात मुझे पुकारने से) सर्कशी करेंगें वह जल्द ही अपमानित होकर जहन्नम में पहुंच जाएंगे"**। और नबी ﷺ ने फ़रमाया : " **जो व्यक्ति अल्लाह से नहीं मांगता है तो अल्लाह उससे नाराज़ हो जाता है**"। इसके साथ यह भी जान लीजिए कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सवाल से ख़ुश होता है, और आजिज़ी और मिन्नत करने वालों को पसन्द करता और उन्हें अपने क़रीब कर लेता है, सहाबए किराम इस वास्तविक्ता को अच्छी तरह जानते थे, इसी लिए वह छोटी से छोटी चीज़ भी अल्लाह तआला से मांगते थे। और किसी मख़्लूक़ के सामने मांगने के लिए हाथ नहीं फैलाते थे, और ऐसा मात्र इस कारण था कि उनका सम्बन्ध अपने रब से था, वह उसके क़रीबी थे, और वह उनका क़रीबी था, और जब बात ऐसी थी तो क्योंकर ऐसा न होता, अल्लाह तआला का फ़रमान है : **"ऐ नबी! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो मैं क़रीब हूँ"**।

अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ की बहुत अहमियत है, दुआ अल्लाह के नज़दीक सर्वाधिक सम्मानित है, दुआ कभी कभी क़ज़ा को भी फेर देती है, और मुसलमान की दुआ ज़रूर स्वीकार की जाती है, बशर्तेकि दुआ क़बूल किए जाने के अस्बाब पाए जाएं और कोई चीज़ उसे क़बूल होने से न रोके, और उसे तीन बातों में से कोई न कोई एक चीज़ ज़रूर दी जाती है, जैसा कि तिर्मिज़ी और अह्मद की रिवायत है : "जो भी मुस्लिम व्यक्ति ऐसी दुआ करता है जिसमें गुनाह और रिश्ते तोड़ने की बात न हो तो अल्लाह तआला उसे तीन में से एक चीज़ अ़ता करता है : या तो उसकी मांगी हूई चीज़ उसे दुनिया ही में दे दी जाती है। या आखिरत में ज़खीरा के तौर पर उसके लिए इकट्ठा कर देता है। या उसी की तरह कोई मुसीबत उस से टाल देता है" सहाबए किराम ने कहा : फिर तो हम अधिक से अधिक दुआ किया करें, तो नबी ﷺ ने फ़रमायाः "अल्लाह उस से भी अधिक देने वाला है"।

दुआ की क़िस्में : दुआ की दो क़िस्में हैं : ❶ दुआए इबादत, जैसे नमाज़, रोज़ा। ❷ दुआए ह़ाजत और त़लब।

आमाल की आपस में एक दूसरें पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) : क्या क़ुर्आन पढ़ना अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है या ज़िक्र व अज़्कार या दुआ? उत्तर : कर्मों में सब से उत्तम कर्म क़ुर्आन मजीद की तिलावत है, फिर ज़िक्र व अज़्कार, फिर दुआ, यह एक इज्माली जवाब है, और कभी-कभार कम-तर चीज़ कुछ साधनों के कारण अपने से श्रेष्ठ से भी उत्तम होजाती है, जैसे अरफ़ा के दिन की दुआ क़ुरआन की तिलावत से उत्तम है, और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ह़दीसों में आए हुए ज़िक्र व अज़्कार करना क़ुरआन की तिलावत से उत्तम है।

दुआ स्वीकार होने के अस्बाब : दुआ क़बूल होने के दो साधन हैं :

① **ज़ाहिरी अस्बाब** : जैसे दुआ से पहले सद्क़ा, वुज़ू और नमाज़ जैसी कोई नेक काम करना, या क़िब्ला की तरफ चेहरा करके दुआ करना, या दोनों हाथों को उठाकर दुआ करना, या दुआ से पहले अल्लाह तआला की ऐसी ता'रीफ़ करना जिसका वह ह़क़्दार है, या उसके अस्माए हुस्ना व सिफ़ाते उला (ऐसे नामों और गुणों) से दुआ करना जो दुआ की जाने वाली चीज़ के मुनासिब हों, जैसे जन्नत मांगने की दुआ हो तो गिड़गिड़ा कर उसकी रह़मत और कृपा के माध्यम से दुआ करे, और किसी अपराधी पर बद्-दुआ हो तो उसके नामों में रह़मान और रह़ीम के बजाए जब्बार, क़ह्हार, और अज़ीज़ इत्यादि नामों से दुआ करे। इसी तरह इन ज़ाहिरी साधनों में से यह भी हैं : दुआ के आरम्भ, बीच और अन्त में नबी पर दरूद भेजना,

गुनाहों को स्वीकारना, अल्लाह की ने'मतों पर उसका शुक्रिया अदा करना, फ़ज़ीलत के प्रमाणित समय को ग़नीमत जानना, जो कि बहुत हैं, जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है।
✷ **रात और दिन में :** रात में पिछले पहर की दुआ जिस समय अल्लाह तआला संसार वाले आकाश पर उतरता है। इसी तरह अज़ान और इक़ामत के बीच की दुआ, वुज़ू के बाद, सज्दे में, नमाज़ में सलाम से पहले और सलाम के बाद, क़ुर्आन ख़तम करते समय, मुर्ग़ के बाँग के समय, यात्रा के समय की दुआ, मज़्लूम तथा परीशान ह़ाल की दुआ, वालिदैन की अपनी औलाद के लिए दुआ, मुस्लिम व्यक्ति का अपने भाई के लिए दिल की गहराई से की जाने वाली दुआ, और युद्ध में से लड़ते समय की दुआ। ✷ सप्ताह में : जुम्आ के दिन की दुआ, और खास कर अन्तिम पल में की जाने वले दुआ। ✷ महीने में रम्ज़ान में सहरी और इफ़्तार के समय की दुआ, शबे क़द्र की दुआ, अरफा के दिन की दुआ। ✷ पवित्र स्थान पर की जाने वाली दुआ : मस्जिदों में की जाने वाली दुआ, का'बा, और ख़ासकर मुल्तज़म और मक़ामे इब्राहीम के पास की दुआ, सफ़ा और मर्वा पर, और ह़ज्ज के दिनों में अरफ़ात, मुज्दलिफ़ा, और मिना की दुआ, और ज़म्ज़म् पीते समय की दुआ .... इत्यादि।
② अन्दरूनी (भीत्री) अस्बाब : जैसे दुआ से पहले सच्चे दिल से सच्ची तौबा करना, किसी की नाहक़ ली हूई चीज़ लौटा देना, खाने, पीने, पहनने, और रिहाइश इत्यादि में पवित्रता का ध्यान देना, और इनके लिए ह़लाल कमाई प्रयोग करना, अधिकतर नेकी और फ़र्माबर्दारी के काम करना, ह़राम चीज़ों से बचना, और शक और शहवत वाली चीज़ों से दूर रहना। और दुआ करते समय : दिल ह़ाजिर करके अल्लाह की ओर ध्यान देना, अल्लाह पर भरोसा करना, उससे आशा करना, और उसी की ओर पनाह पकड़ना, उसके सामने गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना, अपने सारे काम उसी के हवाले करना, और दूसरों की ओर से ध्यान हटाकर उसी की तरफ़ ध्यान स्थिर करना, और दुआ क़बूल होने का विश्वास रखना।
दुआ के क़बूल होने से रोकने वाली चीज़ें : कभी-कभार इन्सान दुआ करता है परन्तु उसकी दुआ क़बूल नहीं होती, या देरी से क़बूल होती है, इसके भी बहुत से कारण हैं जिन्में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : ✷ दुआ में अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी करना। ✷ बिला वजह की तफ़सील करना, जैसे जहन्नम की गर्मी, उसकी तंगी, और उसके अन्धेरों से पनाह मांगना, जब्कि मात्र जहन्नम से पनाह मांगना काफी है। ✷ मुसलमान का अपने ऊपर या नाहक़ किसी दूसरे को शाप देना। ✷ पाप और नातेदारी तोड़ने की दुआ करना। ✷ दुआ को चाहत पर छोड़ना, जैसे यूं कहना : ऐ अल्लाह यदि तेरी चाहत हो तो मुझे माफ़ कर। या इस तरह के शब्दों द्वारा दुआ करना। ✷ दुआ स्वीकार होने में जल्दी करना, जैसे यह कहना कि मैंने दुआ की लेकिन मेरी दुआ क़बूल नहीं हूई। ✷ थक और उकता कर दुआ करना छोड़ देना। ✷ बिना मन के लापर्वाही के साथ दुआ करना। ✷ जल्दबाज़ी और अल्लाह के सामने बे-अदबी के साथ दुआ करना, नबी करीम ﷺ ने एक व्यक्ति को नमाज़ में दुआ करते सुना, उसने न तो अल्लाह का प्रशंसा किया और न ही नबी ﷺ पर दरूद भेजा, तो आप ﷺ ने फ़रमायाः उसने जल्दबाज़ी से काम लिया, फिर आप ﷺ ने उसे बुलाया और उससे फ़रमाया : **"जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह की तारीफ़ और सना करे, फिर नबी ﷺ पर दरूद भेजे, फिर जो चाहे दुआ करे"**। (अबू दाऊद और तिर्मिज़ी)
✷ किसी ऐसी चीज़ की दुआ करना जिसका फ़ैसला होचुका है : जैसे हमेशा दुनिया में रहने की दुआ करना। ✷ इसी तरह दुआ में काफ़ियादार मुसज्जअ् इबारत का कष्ट करना : अल्लाह तआला का फ़रमान है : **"तुम अपने रब से दुआ किया करो गिड़गिड़ाकर भी और चुपके चुपके**

भी वास्तवमें अल्लाह तआला ऐसे लोगों को नापसन्द करता है जो सीमा पार कर जाएं"। और इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया : **"सजअ् और क़ाफ़िया बन्दी देखो तो उससे बचो, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ और आपके साथियों رضي الله عنهم को उससे बचते हूए ही पाया है"।** (बुख़ारी) ✸ और बहुत ऊँची और बहुत धीमी आवाज़ में दुआ करना। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا ﴾ " न तो तू अपनी नमाज़ बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ और न ही एकदम धीमी"। आइशा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है।

मुस्तहब है कि आदमी इस तरतीब के साथ दुआ करे : ❶ पहले अल्लाह तआला की तारीफ़ करे। ❷ फिर नबी ﷺ पर दरूद भेजे। ❸ फिर अपने पाप से तौबा करे, और उन्हें स्वीकार करे। ❹ अल्लाह की ने'मतों पर उसका शुक्रिया अदा करे। ❺ फिर जामे'अ् और नबी ﷺ से प्रमाणि दुआओं द्वारा दुआ करे। ❻ नबी ﷺ पर दरूद भेज कर दुआ ख़तम करे।

कुछ अहम दुआएं

दुआ की मुनासबत	नबी صلى الله عليه وآله وسلم की दुआएं :
सोने से पहले और बाद की दुआ	**यह दुआ पढ़ कर सोऐं :** « بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا » "बिस्मिकल्लाहुम्म अमूतो व अह्या"।[1] **और जगने के बाद यह दुआ पढ़ें :** « الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ » "अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बा'द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर"।[2]
जो व्यक्ति नींद में घबरा जाए	« أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ، وَمِن شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ، وَأَنْ يَحْضُرُونِ » "अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् ग़ज़बिही, व मिन् शर्रि इबादिही, व मिन् हमज़ातिश्शयातीनि व ऐंयह्ज़ुरून्"।[3]
जब सपना देखे	"जब तुम में से कोई व्यक्ति अच्छा सपना देखे तो यह अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर अल्लाह की तारीफ़ करे, और लोगों को इसे बताए, और यदि अप्रिय सपना देखे तो उस की बुराई से पनाह मांगे, और इसे किसी को न बताए; तो वह उसे हानि नहीं पहुंचा सकता"।
घर से बाहर निकलते समय	« بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ إلا بِاللهِ » "बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अ़लल्लाहि ला ह़ौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह्"।[4] « اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ، أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ، أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ، أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ » "अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक अन् अज़िल्ल औ उज़ल्ल, औ अज़िल्ल औ उज़ल्ल, औ अज़्लिम औ उज़्लम, औ अज्हल औ युज्हल अ़लैय्य"।[5]
मस्जिद में प्रवेश करते समय	**मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले अपना दायां पैर बढ़ाए और कहे :** بِسْمِ اللهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ "बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अब्वाब रह़्मतिक"।[6]
मस्जिद से निकलते समय	**मस्जिद से निकलते समय पहले अपना बायां पैर निकाले और कहे :** بِسْمِ اللهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ "बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली ज़ुनूबी वफ़्तह् ली अब्वाब फ़ज़्लिक"।[1]

---

[1] (ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम के साथ मरता और जीता हूँ)
[2] (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने हमें मारने के बाद जीवित किया और उसी की ओर पलट कर जाना है)
[3] (अल्लाह के परिपुर्ण कलिमात की पनाह में आता हूँ उस के क्रोध से, उस के बन्दों की बुराई से, और शैतान के वस्वसों से और इस बात से कि वे मेरे पास आएं)।
[4] (अल्लाह के नाम के साथ घर से बाहर निकलता हूँ, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, उस की तौफ़ीक़ के बिना न तो कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने की ताक़त है)।
[5] (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं गुम्राह हो जाऊं या मुझे गुम्राह किया जाए, या मैं फिसल जाऊं या मुझे फिसलाया जाए, या मैं अत्याचार करूं या मुझ पर अत्याचार हो, या मैं जिहालत करूं या मुझ पर जिहालत की जाए)।
[6] (अल्लाह के नाम के साथ मैं प्रवेश करता हूँ, और सलामती हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ़ कर दे, और मेरे लिए अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे)।

नौ विवाहित के लिए	«بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ» "बारकल्लाहु लक, व बारक अ़लैक, व जमअ़ बैनकुमा फी ख़ैर्"। [2]
जिस ने मुर्ग़ की बाँग या गधे की रींक सुनी	जब तुम गधे की रींक सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह चाहो क्योंकि उस ने शैतान देखा है, और जब मुर्ग़ की बाँग सुनो तो अल्लाह से उस का फ़ज़्ल चाहो; क्योंकि उसने फ़रिश्ता देखा है"। "जब रात में कुत्ते की भूंक या गधे की रींक सुनो तो अल्लाह की पनाह चाहो ..."।
"मैं तुम से अल्लाह के लिए मह़ब्बत करता हूँ" के जवाब में	अनस ﷺ बयान करते हैं एक व्यक्ति नबी ﷺ के पास था कि एक दूसरा व्यक्ति वहाँ से गुज़रा तो उस ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल मैं अवश्य इस से मुह़ब्बत करता हूँ, तो नबी ﷺ ने कहा : "क्या तुम ने उसे बताया है?"। उस ने कहा नहीं। आप ने फ़रमायाः "उसे बता दो"। तो उस के पीछे गया और कहा : "इन्नी उहि़ब्बुक फ़िल्लाह" मैं अल्लाह के लिए तुझ से मुह़ब्बत करता हूँ। तो उस ने जवाब दिया : "अह़ब्बकल्लाहुल्लज़ी अह़्बब्तनी लहू"। अल्लाह तुझ से मुह़ब्बत करे जिस के लिए तू ने मुझ से मुह़ब्बत की है।
किसी को जब छींक आए	"जब तुम में से किसी को छींक आए तो कहे : "अल्ह़म्दु लिल्लाह" (सारी प्रशंसा अल्लाह तआ़ला के लिए है)। और उस का भाई या साथी उसे कहे : "यर्ह़मुकल्लाह" (अल्लाह तुझ पर दया करे)। और "यर्ह़मुकल्लाह" के जवाब में छींकने वाला व्यक्ति कहे : "यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम्" अल्लाह तूझे हिदायत दे और तेरी ह़ालत को बेहतर कर दे। और जब किसी काफ़िर व्यक्ति को छींक आए और वह "अल्ह़म्दु लिल्लाह" कहे, तो उस के जवाब : "यर्ह़मुकल्लाह" न कहो बल्कि : "यह्दीकुमुल्लाहु" कहे।
परीशानी की घड़ी में	«لا إِلَهَ إِلا اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لا إِلَهَ إِلا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لا إِلَهَ إِلا اللهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ» "लाइलाह इल्लल्लाहुल्अ़ज़ीमुल्ह़लीम्, लाइलाह इल्लल्लाहु रब्बुल्अर्शिल्अ़ज़ीम्, लाइलाह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल्अर्ज़ि, व रब्बुल्अ़र्शिल्करीम्"। [3] «اللهُ اللهُ رَبِّي، لا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا» "अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिही शैआ"[4] «يَا حَيُّ يا قَيْومُ برحمتكَ أَسْتَغِيثُ» "या ह़ैयु या क़ैय्यूमु बिरह़्मतिक अस्तग़ीसु"[5] «سبحَان اللهِ الْعَظِيم» "सुब्ह़ानल्लाहिल्अ़ज़ीम" [6]
दुश्मन पर श्राप	«اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ ومُجْرِيَ السَّحَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ اهْزِمْ الأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ» "अल्लाहुम्म मुज्रियस्सह़ाबि मुन्ज़िलल्किताबि सरीअ़ल्हि़साबि इह्ज़िमिल्अह़्ज़ाब्, अल्लाहुम्मह्ज़िम्हुम् व ज़ल्ज़िल्हुम"। [7]
नींद से जागने की दुआ	जो व्यक्ति रात में नींद से जगे और पढ़े : لا إِلَهَ إِلا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللهِ وَلا إِلَهَ إِلا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ إِلا بِاللهِ "लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्ह़म्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर् सुब्ह़ानल्लाहि, वल्ह़म्दु लिल्लाहि, व लाइलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बर्, व ला ह़ौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह्"। [8] **फिर** "अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली" कहे : "हे अल्लाह मुझे बख़्श दे"। या दुआ करे तो उसकी दुआ क़बूल कर ली जाती है। और यदि वुज़ू करके नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ स्वीकार होती है।

---

[1] (अल्लाह के नाम के साथ मैं बाहर निकलता हूँ, और सलामती हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ़ कर दे, और मेरे लिए अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे)।

[2] (अल्लाह तेरे लिए बर्कत करे और तुझ पर बर्कत करे और तुम दोनों को भलाई के साथ इकट्ठा करे)।

[3] (अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, महान माफ़ करने वाला है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, महान अर्श का रब है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, आकाशों का, धरती का और करीम अर्श का रब है)।

[4] (अल्लाह अल्लाह मेरा रब है मैं उस के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाता)।

[5] (ऐ जिन्दा और सभों को थामने वाले! मैं तेरी रह्मतों द्वारा फ़र्याद करता हूँ)।

[6] (महान अल्लाह प्रत्येक प्रकार के ऐब से पाक है)।

[7] (ऐ अल्लाह! बादल को चलाने वाले, किताब को उतारने वाले, जल्द हिसाब करने वाले, जमाअतों को पराजित कर, ऐ अल्लाह! तू उन्हें पराजित कर, और उन्हे हिला कर रख दे)।

[8] "अल्लाह के सिवाय कोई भी सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, उसका कोई साझी नहीं, उसीके लिए राज है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह सभी चीज़ों पर ताक़त रखने वाला है, मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ, अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, नहीं है कुछ करने कि ताक़त और किसी चीज़ से बचने की शक्ति मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से।"

जब मुआमलः कठिन हो जाए	« اللَّهُمَّ لا سَهْلَ إلا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلا وَأَنتَ تَجْعَلُ الحزن إذا شِـئْتَ سَـهْلاً » "अल्लाहुम्म ला सह्ल इल्ला मा जअ़ल्तहू सहला, व अन्त तज्अ़लुल्हज़्न इज़ा शिअ्त सहला"।[1]
क़र्ज़ की अदाइगी के लिए	« اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الهَمِّ وَالحَزَنِ، وَالعَجْزِ وَالكَسَلِ، وَالجُبْنِ وَالبُخْلِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ » "अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल् हम्मि वल् ह़ज़नि, वल्अजज़ि वल् कसलि, वल् जुब्नि वल् बुख़्लि, व ज़लइद्दैनि, व ग़लबतिर्रिजालि"[2]
शौचालय जाते समय	जब शौचालय में जाने का इरादा करे तो कहे : « اللَّهُـمَّ إِنِّي أَعُـوذُ بِـكَ مِـنَ الخُبُـثِ وَالخَبَائِـثِ » "अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल्ख़ुबुसि वल् ख़बाइसि"।[3] और बाहर निकल कर कहे : « غُفْرَانَكَ » "ग़ुफ़्रानक"[4]
नमाज़ में वसवसा आए तो	"वह एक शैतान है जिसे ख़न्ज़ब कहा जाता, जब तुम्हें इसका इह़सास हो तो इससे अल्लाह की पनाह चाहो, और अपनी बाईं ओर 3 बार थूको"।
सज्दे में	« اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلانِيَتَهُ وَسِرَّهُ » "अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली ज़न्बी कुल्लहू दिक़्क़हू व जिल्लहू, व औवलहू व आख़िरहू, व अ़लानियतहू व सिर्रहू"[5] « سُبْحَانَكَ رَبِّي وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي » "सुब्ह़ानक रब्बी व बिह़म्दिकल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली"[6] « اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ » "अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिरिज़ाक मिन् सख़तिक, व बिमुआ़फ़ातिक मिन् उक़ूबतिक, व अऊ़ज़ु बिक मिन्क, ला उह़्सी सनाअन् अ़लैक अन्त कमा अस्नैत अ़ला नफ़्सिक"[7]
सज्दए तिलावत	« اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الخَالِقِينَ » "अल्लाहुम्म लक सजद्तु व बिक आमन्तु व लक अस्लम्तु, सजद वज्हिय लिल्लज़ी ख़लक़हू व सौवरहू व शक़्क़ सम्अ़हू व बसरहू तबारकल्लाहु अह़्सनुल्ख़ालिक़ीन्"[8]
दुआए सना	« اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَينِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدتَّ بينَ المَشْرِقِ والمغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالبَرَدِ » अल्लाहुम्म बाइद् बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअत्त बैनल् मश्रिक़ि वल् मग़्रिबि, अल्लाहुम्म नक़्क़िनी मिन् ख़तायाय कमा युनक़्क़सौबुल् अब्यज़ु मिनद्दनसि, अल्लाहुम्मग़्सिल्नी बिल्माए वस्सल्जि वल् बरद्"।[9]
नमाज़ के अन्त में	« اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ » "अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरन् व ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त फ़ग़्फ़िर्ली मग़्फ़िरतम्मिन् इन्दिक, वर्ह़म्नी इन्नक अनतल् ग़फ़ूरुर्रह़ीम्"।[10]
नमाज़ के बाद	« اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ » "अल्लाहुम्म अइ़न्नी अ़ला ज़िक्रिक व शुक्रिक व ह़ुस्नि इ़बादतिक"[1] ✸ « اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ » "अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल्कुफ़्रि वल् फ़क़्रि व अ़ज़ाबिल्क़ब्रि"[2]

---

[1] (ऐ अल्लाह! वही चीज़ आसान है जिसे तू सहज कर दे, और यदि तू चाहता है तो कठिन को आसान कर देता है)।
[2] (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फ़िक्र और ग़म से, और आजिज़ हो जाने और सुस्ती से, और डरपोकन और बख़ीली से, और क़र्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।
[3] ऐ अल्लाह मैं जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह में आता हूँ।
[4] (तेरी माफ़ी चाहता हूँ)।
[5] (ऐ अल्लाह मेरे छोटे बड़े, पहले पिछले, और खुले छूपे सारे पाप माफ़ कर दे)।
[6] (ऐ मेरे रब! तू पाक है और अपनी ता'रीफ़ के साथ है, ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर दे)।
[7] (ऐ अल्लाह! मैं तेरे गुस्से से तेरे राज़ी होने की पनाह चाहता हूँ, और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी तारीफ़ नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जिस तरह तूने स्वंय अपनी ता'रीफ़ की)।
[8] (ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए सज्दा किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरा फ़र्माबर्दार हुवा, मेरे चेहरे ने उस हस्ती के लिए सज्दा किया जिस ने उसे पैदा किया, और उस की सूरत बनाई, और कान तथा आँख के सूराख बनाए, बर्कत वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है)।
[9] (ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे पाप के बीच दूरी कर दे जिस तरह तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी की है, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे पाप से साफ़ सुथरा करदे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ा सुथरा किया जाता है, ऐ अल्लाह! मूझे पानी से, बरफ से और ओले से धुल दे)।
[10] (ऐ अल्लाह! मैं ने अपने ऊपर बहुत अधिक अत्याचार किया, और मात्र तू ही है जो गुनाहों को माफ़ करता है, तो तू मूझे अपनी ख़ास माफ़ी से बख़्श दे, और मुझ पर दया कर, अवश्य तू ही बख़्शने वाला दयालू है)।

भलाई करने वाले के लिए	जिस के साथ भलाई की गई और उस ने भलाई करने वाले व्यक्ति को : "जज़ाकल्लाहु ख़ैरन्" (अल्लाह तुझे बेहतर बदला दे) कहा, तो उस ने बढ़चढ़ कर उस की प्रशंसा की। और दूसरा व्यक्ति भी "व जज़ाक" या "व इय्याक" (और तुझे भी) कह कर जवाब दे।
जब वर्षा देखे	«اللَّهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا» "अल्लाहुम्म सैय्यिबन् नाफ़िअन्"[3] 2 बार या 3 बार, «مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهِ» "मुतिर्ना बिफ़ज़्लिल्लाहि व रह्मतिही"[4]
जब आंधी चले	«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسأَلُكَ خَيْرَهَا وخير مَا فيْها وخير ما أرسلت به، وأعوذ بكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فيها وشَرِّ ما أرسلت به» "अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरहा व ख़ैर मा फ़ीहा व ख़ैर मा उर्सिलत बिही, व अऊज़ु बिक मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फ़िहा व शर्रि मा उर्सिलत बिही"[5]
जब चाँद देखे	«اللَّهُمَّ أَهلَه عَلَيْنَا باليمنِ والإيمانِ والسَّلامَةِ وَالإِسْلامِ، هِلالَ خيرٍ ورُشدٍ، رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللهُ» "अल्लाहुम्म अहिल्लहू अ़लैना बिल्अम्नि वल् ईमानि वस्सलामति वल् इस्लाम्, हिलालु ख़ैरिन् व रुश्द रब्बी व रब्बुकल्लाह"[6]
जब यात्री को विदा करे	«أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِينَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَواتيمَ عَمَلِكَ» "अस्तौदिउल्लाह दीनक व अमानतक व ख़वातीम अ़मलिक"[7] **और यात्री उस के लिए यह दुआ करे:** «أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِيْ لا تَضِيْعُ وَدَائِعُهُ» "अस्तौदिउकुमुल्लाहुल्लज़ी ला तज़ीउ वदाइउहू"[8]
जब कोई अच्छी या बूरी चीज़ देखे	**नबी ﷺ जब कोई अच्छी चीज़ देखते तो यह कहते :** «الحَمْدُ لِلهِ الذي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالحاتُ» "अल्हम्दुलिल्लाहि-ल्लज़ी बि-निअ़मतिही ततिम्मु-स्सालिहात"[9] **और यदि कोई नापसन्दीदः चीज़ देखते तो कहते** : «الحَمْدُ لِلهِ على كُلِّ حالٍ» "अल्हम्दुलिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल्"।[10]
यात्रा की दुआ	«اللهُ أكبَر، اللهُ أكبَر، اللهُ أكبَر ﴿سُبْحانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ * وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ﴾ اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا واطوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِي الأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالأَهْلِ» "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर सुब्हानल्लज़ी सख्खर लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून्"। अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फ़ी सफ़रिना हाज़ल्बिर्र वत्तक़्वा व मिनल् अ़मलि मा तर्ज़ा अल्लाहुम्म हव्विन् अ़लैना सफ़रना हाज़ा वत्वि अ़न्ना बो'अ़्दह, अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़र वल्ख़लीफ़तु फ़िल् अह्ल्, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् वा'अ़्साइस्सफ़र व कआबतिल् मन्ज़र, व सूइल् मुन्क़लब फ़िल् मालि वल् अह्ल्"[11] **और जब वापस लौटते तो यह इज़ाफ़ा करते :** آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ "आयिबून तायिबून आबिदून लिरब्बिना हामिदून"[12]

---

1 (ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी इबादत पर मेरी सहायत कर)।

2 (ऐ अल्लाह! कुफ़्र, ग़रीबी, और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ)।

3 (ऐ अल्लाह! लाभ-दायक वर्षा बना)।

4 (अल्लाह के फ़ज़्ल और उस की दया से बारिश हुई)। और जो चाहे दुआ करे; क्योंकि वर्षा के समय की दुआ क़बूल होती है।

5 (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का, और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है, और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है, और तेरी पनाह में आता हूँ इस की बूराई से और उस चीज़ की बूराई से जो इस में है, और उस चीज़ की बूराई से जिस के साथ यह भेजी गई है)।

6 (ऐ अल्लाह! तू इसे हमारे लिए निकाल शान्ति, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ, भलाई और हिदायत का चाँद, मेरा और तेरा रब अल्लाह है)।

7 (मैं तेरे धर्म, तेरी अमानत, और तेरे कर्मो के ख़ातमे को अल्लाह के हवाले करता हूँ)।

8 (मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की गई चीज़ बर्बाद नहीं होती)।

9 । सम्पुर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस की नेअ़मत द्वारा नेकियां पूरी होती हैं।

10 हर हाल में अल्लाह ही के लिए सम्पुर्ण प्रशंसा है।

11 (अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, पाक है वह हस्ती जिसने इसे हमारे क़ाबू मे किया हालांकि हम इसे क़ाबू में लाने वाले न थे, और हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह हम अपनी इस यात्रा में तुझ से नेकी और तक़्वा का सवाल करते हैं, और उस कर्म का जिसे तू पसंद करे, ऐ अल्लाह! हमारी यह यात्रा हम पर आसान कर दे, और इस की दूरी हम से तह कर दे, ऐ अल्लाह! तु ही यात्रा में साथी और घर वालों को देख-रेख करने वाला है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ यात्रा की कठिनाई से, धन और घर वालों में देखने की बुराई से, और नाकाम लौटने की बूराई से)।

12 (हम वापस लौटने वाले तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब की ह़म्द करने वाले हैं)।

लेटते समय	«اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ رَهْبَةً وَرَغْبَةً إِلَيْكَ لا مَلْجَأَ وَلا مَنْجَا مِنْكَ إِلا إِلَيْكَ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ» “अल्लाहुम्म अस्लम्तु नफ़्सी इलैक, व फ़व्वज़्तु अम्री इलैक, व अल्जा’अतु ज़ह्री इलैक, रह्बतन् व रग्बतन् इलैक, ला मल्जअ व ला मन्जा मिनक इल्ला इलैक, आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्त व नबीय्यिकल्लज़ी अर्सल्त” [1] «الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لا كَافِيَ لَهُ وَلا مُؤْوِيَ» “अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत्अमना व सक़ाना व कफ़ाना व आवाना फ़कम्मिम्मन् ला काफ़िय लहू व ला मु’अ्वीय” [2] «اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ» “अल्लाहुम्म क़िनी अ़ज़ाबक यौम तब्अ़सु इबादक” [3] «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّي بِكَ وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَاغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ» “सुब्हानकल्लाहुम्म रब्बी बिक वज़अ्तु जन्बी व बिक अर्फ़उ़हू. इन् अम्सक्त नफ़्सी फ़ग्फ़िर् लहा व इन् अर्सल्तहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिही इबादकस्सालिहीन्” [4]
नमाज़ के लिए जाते समय	«اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِن فَوْقِي نُورًا، وَمِن تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِن أَمَامِي نُورًا، وَمِن خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظِمْ لِي نورا، وَعَظِّمْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نوْرَا، وَاجْعَلْنِي نُوْرَا، اللَّهُمَّ أَعْطِنِيْ نُوْرًا، وَاجْعَلْ فِيْ عَصَبِي نُورا، وَفِيْ لَحْمِي نُوْرَا، وَفِيْ دَمِي نُورا، وَفِي شَعْرِي نُوْرَا، وَفِيْ بَشَرِي نُوْرًا» “अल्लाहुम्मज्अ़ल् फ़ी क़ल्बी नूरन्, व फ़ी लिसानी नूरन्, व फ़ी सम्ई नूरन्, व फ़ी बसरी नूरन्, व मिन् फ़ौक़ी नूरन्, व मिन् तह्ती नूरन्, व अ़न् यमीनी नूरन्, व अ़न् शिमाली नूरन्, व मिन् अमामी नूरन्, व मिन् ख़ल्फ़ी नूरन्, वज्अ़ल् फ़ी नफ़्सी नूरन्, व आअ्ज़िम् ली नूरन्, व अ़ज़्ज़िम ली नूरन्, वज्अ़ल ली नूरन्, वज्अ़ल्नी नूरन्, अल्लाहुम्म आ’अ्तिनी नूरन्, वज्अ़ल् फ़ी असबी नूरन्, व फ़ी लह्मी नूरन्, व फ़ी दमी नूरन्, व फ़ी शा’अ्री नूरन्, व फ़ी बशरी नूरन्” [5]
इस्तिख़ारा की दुआ़	जब तुम में से कोई किसी चीज़ का इरादा करे तो फ़र्ज के सिवाय 2 रक्अ़त नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ़ पढ़े : «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلا أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلامُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الأَمْرَ(ثُمَّ تُسَمِّيهِ بِعَيْنِهِ) خَيْرًا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي ـ أَو قال: عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ ـ فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الأمر شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي ـ أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ ـ فَاصْرِفهُ عني واصْرِفْنِي عَنْهُ واقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ» “अल्लाहुम्म इन्नी अस्तख़ीरोक बि-इल्मिक, व अस्तक्दिरुक बिकुद्रतिक, व अस्अलुक मिन् फ़ज़्लिक, फ़इन्नक तक़्दिरु व ला अक़्दिर्, व ता’अ़्लमु व ला आ’अ़्लमु, व अन्त अ़ल्लामुल् गुयूब्, अल्लाहुम्म फ़इन् कुन्त ता’अ़्लमु हाजल्अम्र (अपने मुआमलः का चर्चा करे) ख़ैरल्ली फ़ी दीनी व मआ़शी, व आ़क़िबति अम्री, या कहा : आ़जिलि अम्री व आजिलिही फ़क्दुर्हु ली व यस्सिर्हु ली सुम्म बारिक ली फ़ीहि, व इन कुन्त ता’अ़्लमु अन्न हाजल्अम्र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व मआ़शी, व आ़क़िबति अम्री, या कहा : फ़ी आ़जिलि अम्री व आजिलिही फ़स्रिफ्हु अन्नी वस्रिफ्नी अन्हु वक़्दुर लियल् ख़ैर हैसु कान, सुम्म रज्जिनी बिही”। [6]

---

[1] (ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान को तेरा वफ़ादार बनाया, और अपना काम तेरे हवाले किया, और अपना चेहरा तेरी ओर फेर लिया, तुझ से डरते हुए और तेरी चाहत रखते हुए, न शरण है और न ही तुझ से भागने की जगह मगर तेरी ही ओर, मैं तेरी उतारी हुई किताब और भेजे हुए नबी पर ईमान लाया)।

[2] (सारी तारीफ़ें उस हस्ती के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया, और हमारे लिए काफ़ी हुवा, और हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे हैं जिन के लिए कोई काफ़ी नहीं और न ही कोई ठिकाना देने वाला)।

[3] (ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करना मुझे अपने अ़ज़ाब से बचाना)।

[4] (ऐ अल्लाह मेरे रब! तू हर प्रकार के ऐब से पाक है, तेरे नाम के साथ मैं ने अपना पहलू को रख्खा और तेरे ही नाम के साथ उठाता हूँ, यदि तूने मेरी जान निकाल ली तो उसे माफ़ करना और यदि वापस कर दी तो उन चीज़ों से उस की सुरक्षा करना जिन से अपने नेक बन्दों की सुरक्षा करता है)। अपने दोनों हाथों में थुकथुकाते और कुल् अऊ़जु बिरब्बिल् फ़लक़्, और कुल् अऊ़जु बिरब्बिन्नास् पढ़ते, और पूरे शरीर पर हाथ फेरते। इसी तरह हर रात को सोने से पहले अलिफ़ लाम मीम सज्दा, और सूरतुल् मुल्क पढ़ कर सोते थे।

[5] (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरे कानों में नूर कर द, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरी जान में नूर कर दे, मेरे लिए नूर को महान कर दे, मेरे लिए नूर कर दे, और मुझे नूर कर दे, ऐ अल्लाह! मुझे नूर अ़ता कर, मेरे पट्ठों में नूर कर दे, मेरे गोश्त में नूर कर दे, मेरे खून में नूर कर दे, मेरे बाल में नूर कर दे, और मेरे चमड़े में नूर कर दे)।

[6] हे अल्लाह! मैं तेरे इल्म की बर्कत से तुझ से भलाई चाहता हूँ, और तेरी शक्ति का वास्ता देकर तेरी मदद चाहता हूँ, और तेरे बड़े फ़ज़्ल (कृपा) का सवाल करता हूँ, क्योंकि तू शक्तिमान है, मैं शक्तिवाला नहीं, तू (अच्छा और बुरा) सब जानता है, मैं नहीं जानता,

मैयत के लिए दुआ	« اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ، وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنْ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنْ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلاً خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ومِنْ عَذَابِ النَّارِ ». अल्लाहुम्मग़्फ़िर् लहू वर्हम्हु, व आ़फ़िही व'अ्फ़ु अ़नहु, व अक्रिम नुज़ुलहू, व वस्सि'अ् मुद्ख़लहू, वग़्सिल्हु बिल्माए वस्सिल्जि वल्बरद, व नक़्क़िही मिनल्ख़ता़या कमा नक़्क़ैतस्सौबल्अब्यज़ मिनद्दनसि, व अब्दिलहु दारन् ख़ैरन् मिन् दारिही, व अह्लन् ख़ैरन् मिन् अह्लिही, व ज़ौजन् ख़ैरन् मिन् ज़ौजिही, व अद्ख़िल्हुल्जन्नः, व अइ़ज़्हु मिन् अ़ज़ाबिल्क़ब्रि व अ़ज़ाबिन्नार। [1]
ग़म और फ़िक्र दूर करने की दुआ	जब भी किसी व्यक्ति ने ग़म और फ़िक्र लाहि़क होने पर यह कहा : « اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ أَمَتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَنُورَ صَدْرِي وَجِلَاءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي. إلا أذهَبَ الله هَمَّهُ وَحُزْنَهُ وَأَبْدَلَهُ مَكَانَهُ فَرَحًا ». "अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुक्, वब्नु अब्दिक्, वब्नु अमतिक्, नासीयती बियदिक्, माजिन् फ़िय्या हुक्मुक्, अद्लुन् फ़िय्या क़ज़ाउक्, अस्अलुका बिकुल्लिस्मिन् हुवा लक्, सम्मैत बिही नफ़्सक्, औ अ़ल्लम्तहू अह़दन् मिन् ख़ल्क़िक्, औ अन्ज़ल्तहू फ़ी किताबिक्, अविस्ताअ्सर्त बिही फ़ी इ़ल्मिल्ग़ैबि इ़न्दक्, अन् तज्अ़लल क़ुरूआना रबीआ़ क़ल्बी, व नूरा सद्री, व जिलाआ हु़ज़्नी, व ज़हाबा हम्मी"। [2]

और तू ग़ैब (छुपी हूई बातों) को खूब जानने वाला है, हे अल्लाह् यदि तू जानता है कि यह काम (फिर जिस काम के लिए इस्तिख़ारः कर रहा है उसका नाम ले) मेरे लिए मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूं कहा कि : मेरी दुनिया और आख़िरत के लिहाज़ से- बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुक़द्दर करदे, और इसे पाना मेरे लिए आसान कर दे, और मुझे इसमें बर्कत दे, और यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए बुरा है, मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज़ से, -या यूं कहा किः मेरी दुन्या और आख़िरत के लिहाज़ से- तो इस काम को मुझ से फेर दे, और मुझे इससे बचाले, और भलाई जहाँ भी हो उसे मेरे लिए मुक़द्दर करदे, और मुझे उस पर खुश करदे।

[1] (ऐ अल्लाह! इसे बख़्श दे, इस पर दया कर, इसे आ़फ़ियत दे, इसे मुआ़फ़ कर दे, और इस की मेहमानी प्रतिष्ठा के साथ कर, और इस के जाने की ज़गह चौड़ी कर दे, और इसे पानी, बर्फ और ओलों के साथ धो दे, और इसे गुनाहों से इस प्रकार साफ़ कर दे जिस प्रकार तूने सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ किया, और इसे इस के घर के बदले उत्तम घर, घरवालों के बदले उत्तम घरवाले, और बीवी के बदले उत्तम बीवी अ़ता कर, और इसे जन्नत में दाख़िल कर, और इसे क़ब्र के अ़ज़ाब और आग के अ़ज़ाब से पनाह दे"

[2] (ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बान्दी का बेटा हूं, तेरा आदेश मुझ पर लागू होता है, मेरे बारे में तेरा फ़ैसला इन्साफ़ वाला है, मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम द्वारा सवाल करता हूं जो तूने स्वयं अपना नाम रख्खा है, या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है, या उसे अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है, या अपने इल्मुल्-ग़ैब में उसे छिपाने को बर्तरी दी है, कि तू क़ुर्आन को मेरे दिल की बहार, और मेरे सीने का प्रकाश, और मेरे ग़म को दूर करने वाला, और मेरे फ़िक्र को ले जाने वाला बना दे)।

लाभ-दायक व्यापार

अल्लाह तआला ने हमें अपनी सारी सृष्टि पर फ़ज़ीलत दी है, बोलने जैसी ने'मत को हमारे लिए ख़ास किया, ज़ुबान को बोलने का माध्यम बनाया, जो एक ऐसा उपहार है जिसका प्रयोग भलाई और बुराई दोनों में हो सकता है, अतः जो इसका इस्तिमाल भलाई के लिए करेगा तो उसे इस संसार में नेक बख़्ती प्रदान केरेगी, और जन्नत में ऊँचे दरजे पर फ़ाइज़ करदेगी और जो बुराइयों में इसे प्रयोग करेगा तो यह उसे दुनिया और आख़िरत में तबाही और बरबादी के खड्डे में गिरा देगी। और क़ुरआन मजीद की तिलावत के बाद सर्व-श्रेष्ठ चीज़ जिससे समय को लाभ-दायक काम में इस्तिमाल किया जा सकता है वह है अल्लाह तआला का ज़िक्र।

ज़िक्र की फ़ज़ीलत : ज़िक्र के विषय में बहुत सारी हदीसों चर्चित है, इन्हीं में से नबी ﷺ का यह इर्शाद है : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतर कर्म की ख़बर न दूं ...और आप ﷺ ने फ़रमाया : مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ. " **जो व्यक्ति अपने रब का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता उसकी मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा व्यक्ति जैसी है**"। बुख़ारी और हदीसे क़ुद्सी में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है : أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ بِشِبْرٍ تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا. "**मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक होता हूँ, और मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है, यदि वह अपने दिल में मुझे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, और यदि वह मुझे किसी सभा में याद करता है तो मैं उसकी सभा से बेहतर सभा में उसे याद करता हूँ, और यदि वह मेरी ओर एक बित्ता क़रीब होता है, तो मैं उस से एक हाथ क़रीब होता हूँ**"। (बुख़ारी) और आप ﷺ ने यह भी इर्शाद फ़रमायाः

سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ، قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: الذَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتُ. "**मुफ़र्रिदून आगे निकल गए, लोगों ने पूछा : हे अल्लाह के रसूल! मुफ़र्रिदून कौन लोग हैं? आप ने फ़रमायाः वह मर्द और वह औरतें जो बहुत अधिक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं**"। (मुस्लिम)

और आप ﷺ ने एक सहाबी को वसीयत करते हुए फ़रमायाः لاَ يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ. " **तेरी ज़ुबान अल्लाह के ज़िक्र से हमेशा तर रहे**"। (तिर्मिज़ी इत्यादि)

सवाब की बढ़ौतरी : जिस तरह क़ुरआन मजीद की तिलावत के सवाब में बढ़ौतरी होती है उसी तरह नेक कर्मों के सवाब में भी बढ़ौतरी होती है। और ऐसा दो चीज़ों के कारण होता है : ❶ दिल में मौजूद ईमान, इख़्लास, महब्बत और उसके मातिहत चीजों के कारण। ❷ ज़िक्र के बारे में दिल के व्यस्त रहने और सोचने के कारण, केवल ज़ुबान के द्वारा उच्चारण करके नहीं। और यही कर्म जब कामिल हो तो इसके द्वारा अल्लाह तआला गुनाहों को सिरे से मिटा देता है, और उन पर अमल करने वाले को भरपूर सवाब देता है, और जितना यह कम होता है उसी हिसाब से उसके सवाब में भी कमी आती है।

ज़िक्र के कुछ फ़ायदे : शैखुल् इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया رحمه الله ने फ़रमायाः दिल के लिए ज़िक्र मछली के लिए पानी के समान है, तो जब मछली को पानी से निकाल दिया जाए तो उसका क्या हाल होगा?

✸ ज़िक्र अल्लाह की मुहब्बत, उस से नज़दीकी, उसकी ख़ुशी, उसके मुराक़बे, उससे डरने, और उसकी ओर पलटने का वारिस बनाता है, और उसकी इताअत पर सहायता करता है।

✷ ज़िक्र दिल से सोंच फ़िक्र को दूर करता है, ख़ुशी लाता है, दिल को ज़िन्दगी बख़शता है, और उसे शक्ति और सफ़ाई अता करता है।

✷ दिल में एक रिक्त स्थान होता है जिसे अल्लाह का ज़िक्र ही भरता है, और कठोरपन तथा सख़ती होती है जिसे ज़िक्र ही पिघलाता और नरम करता है।

✷ ज़िक्र दिल के लिए शिफ़ा और दवा है, शक्ति और ऐसा स्वाद है जिस जैसी कोई स्वाद नहीं, और लापर्वाही इस की बीमारी है।

✷ ज़िक्र में कमी निफ़ाक़ की निशानी है, और बढ़ौतरी ईमानी शक्ति और अल्लाह से सच्ची मुहब्बत की दलील है; क्योंकि जो जिस से मुहब्बत करता उसका अधिक चर्चा किया करता है।

✷ बन्दा जब ख़ुश-हाली में अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो अल्लाह उसे तंगी में याद रखता है, ख़ासकर मौत और उस की परीशानी के समय।

✷ ज़िक्र सबब है अल्लाह के अ़ज़ाब से नजात का, शन्ति के उतरने, रहमत के ढांपने, और फ़रिश्तों की बख़्शिश का।

✷ ज़िक्र द्वारा ज़ुबान ग़ीबत, चुग्ली, झूट और दूसरी मकरूह और ह़राम चीज़ों से सुरक्षित रहती है।

✷ ज़िक्र आसान इबादत है, सब से श्रेष्ठ और उत्तम है, और वह जन्नत का पौदा है।

✷ ज़िक्र ज़ाकिर के चेहरे को हैबत, मिठास और ताज़गी का लिबास पहनाता है, और यह संसार, क़ब्र और आख़िरत में रौश्नी है।

✷ ज़िक्र ज़ाकिर पर अल्लाह तआला की रहमत और फ़रिश्तों की दुआ को वाजिब करता है, ज़िक्र करने वालों के द्वारा अल्लाह फ़रिश्तों पर फ़ख़्र करता है।

✷ सबसे बेहतर कर्म करने वाले वे हैं जो उस कर्म में सब से अधिक ज़िक्र करने वाले हों, चुनान्चि सब से बेहतर रोज़ेदार वह है जो रोज़े की अवस्था में सब से अधिक ज़िक्र करता है।

✷ ज़िक्र मुश्किल को सहज बनाता है, सख़्त को आसान करता है, परीशानी को हल्का करता है, रोज़ी लाने का सबब बनता है, और शरीर को शक्ति प्रदान करता है।

✷ ज़िक्र शैतान को भगाता है, उसे रुस्वा और ज़लील करता है।

सवेरे–सांझ की दुआएं

क्र	विर्द	संख्या और समय	प्रभाव और फ़ज़ीलत
1	आयतुल् कुर्सी [1]	सवेरे सांझ, सोने से पहले और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद	शैतान ऐसे व्यक्ति के क़रीब नहीं होता और यह जन्नत में जाने का सबब है।
2	सूरतुल् बक़्रः की अन्तिम दोनों आयतें [2]	सांझ को और सोने से पहले।	हर प्रकार की बूराई से सुरक्षित रखती हैं।
3	**सूरतुल् इख़्लास, सूरतुल् फ़लक़ और सूरतुन्नास।**	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	हर चीज़ से बचाती है।
4	بسم الله الذي لا يضر مع اسمه شيء في الأرض ولا في السماء وهو السميع العليم **"बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअ़स्मिही शैयुन् फ़िल् अर्ज़ि व ला फ़िस्समा'अ् व हुवस्समीउल् अ़लीम"।** [3]	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	अचानक उसे कोई मुसीबत नहीं आएगी, और न ही कोई चीज़ उसे नुक़्सान पहुँचाए गी।
5	أعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق **"अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़्"।** [4]	3 बार सांझ को, और जब किसी जगह पड़ाव डाले।	उन जगहों को हर तरह की बुराई से सुरक्षित कर देगी।
6	حسبي الله لا إله إلا هو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم **"ह़स्बियल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल् अर्शिल् अ़ज़ीम्"।** [5]	7 बार सवेरे और 7 बार सांझ को।	दनिया और आख़िरत के ग़मों से नजात का ज़रीआ है।
7	رضيت بالله ربًا، وبالاسلام دينًا، وبمحمد ﷺ نبيًا **"रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन्, व बिल्इस्लामि दीनन्, व बिमुह़म्मदिन् ﷺ नबीया"।** [6]	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	अल्लाह पर यह हक़ है कि वह उसे राज़ी कर दे।
8	اللّٰهُمَّ بك أصبحنا وبك أمسينا وبك نحيا وبك نموت وإليك النشور **"अल्लाहुम्म बिक अस्बह़्ना व बिक अम्सैना व बिक नह़्या व बिक नमूत् व इलैकन्नुशूर्"** [7] **और शाम को कहे :** اللّٰهُمَّ بك أمسينا وبك أصبحنا وبك نحيا وبك نموت وإليك المصير **"अल्लाहुम्म बिक अम्सैना व बिक अस्बह़्ना व बिक नह़्या व बिक नमूत् व इलैकल् मसीर्"** [8]	सवेरे सांझ	इसे करने पर उभारा गया है।

---

1 ﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ
إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ
وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ٢٥٥ ﴾

2 ﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ
وَقَالُواْ سَمِعۡنَا وَأَطَعۡنَاۖ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ ٢٨٥ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَاۚ لَهَا مَا كَسَبَتۡ وَعَلَيۡهَا مَا ٱكۡتَسَبَتۡۗ
رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَآ إِن نَّسِينَآ أَوۡ أَخۡطَأۡنَاۚ رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَآ إِصۡرٗا كَمَا حَمَلۡتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِنَاۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ
لَنَا بِهِۦۖ وَٱعۡفُ عَنَّا وَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَآۚ أَنتَ مَوۡلَىٰنَا فَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ ﴾

3 शुरू अल्लाह के नाम से जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वह सुन्ने वाला जानने वाला है।

4 अल्लाह तआला के परिपुर्ण कलाम की पनाह में आता हूँ उस चीज़ की बूराई से जिन्हें उस ने पैदा किए हैं।

5 मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवाय कोई सत्य इबादत के लायक़ नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वह महान अर्श का रब है।

6 (मैं अल्लाह पर राज़ी हूँ उस के रब होने में, इस्लाम पर दीन होने में, और मुह़म्मद ﷺ पर नबी होने में)।

7 (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ सांझ किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर उठ कर जाना है)।

8 (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सांझ किया, और तेरे नाम के साथ सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर लौट कर जाना है)।

9	أصبحنا على فطرة الإسلام، وكلمة الإخلاص، ودين نبينا محمد ﷺ وملة أبينا إبراهيم ﷺ حنيفًا مسلمًا وما كان من المشركين **"अस्बह़्ना अ़ला फित्रतिल् इस्लामि, व कलिमतिल् इख़्लासि, व दीने नबीयिना मुह़म्मद ﷺ व मिल्लति अबीना इब्राहीम ﷺ ह़नीफ़म् मुस्लिमँव व मा कान मिनल् मुश्रिकीन्"।** [1]	सवेरे	नबी ﷺ यह दुआ़ किया करते थे।
10	اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أو بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لا شَرِيكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ **"अल्लाहुम्म मा अस्बह़ बी मिन् ने'अ़्मतिन् औ बिअह़दिम्मिन् ख़ल्क़िक फमिन्क वह़्दक ला शरीक लक, फ़लकल्ह़म्दु व लकश्शुक्र।** [2]	सवेरे सांझ	उसने उस दिन और रात का शुक्रिया अदा कर दिया।
11	اللهُمّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلاَئِكَتِكَ وَأَنْبِيَائِكَ وَجَمِيْعِ خَلْقِكَ بِأَنّكَ أَنتَ اللهُ لاَ إِلٰهَ إِلاَّ أَنتَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ **"अल्लाहुम्म इन्नी अस्बह़्तु उश्हिदुक व उश्हिदु ह़मलत अर्शिक व मलाइकतक व अम्बियाअक व जमीअ़ ख़ल्क़िक बिअन्नक अन्तल्लाहु लाइलाह इल्ला अन्त व अन्न मुह़म्मदन् अब्दुक व रसूलुक"** [3] और शाम में **"इन्नी अस्बह़्तु"** के बदले **"इन्नी अम्सैतु"** कहे।	4 बार सवेरे और 4 बार सांझ को।	जिस ने 4 बार कहे तो अल्लाह उसे जहन्नम से आज़ाद कर देगा।
12	اللَّهُمَّ فاطر السموات والأرض عالم الغيب والشهادة رب كل شيء ومليكه أشهد أن لا إله إلا أنت، أعوذ بك من شر نفسي ومن شر الشيطان وشركه وأن أقترف على نفسي سوءًا أو أجرّه إلى مسلم **"अल्लाहुम्म फ़ातिरस्समावाति वल् अर्ज़ि आ़लिमल् ग़ैबि वश्शहादति रब्ब कुल्लि शैइन् व मलीकहु अश्हदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त, अऊज़ु बिक मिन् शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किही, व अन् अक़्तरिफ़ अ़ला नफ़्सी सूअन् औ अजुर्रहू इला मुस्लिम्"** [4]	सवेरे सांझ और सोते समय।	शैतान के वस्वसों से बचाता है।
13	اللَّهُمَّ إني أعوذ بك من الهم والحزن وأعوذ بك من العجز والكسل وأعوذ بك من الجبن والبخل وأعوذ بك من غلبة الدين وقهر الرجال **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् हम्मि वल् ह़ज़्नि, व अऊज़ु बिक मिनल् अज्ज़ि वल् कसलि, व अऊज़ु बिक मिनल् जुब्नि वल् बुख़्लि, व अऊज़ु बिक मिन ग़लबतिद्दैनि व क़हिर्रिजालि "।** [5]	1 बार सवेरे और 1 बार सांझ को	उसका ग़म और चिन्ता समाप्त हो जाती है और क़र्ज़ पूरा हो जाता है।

[1] (हम ने इस्लामी नेचर, कल्मए इख़्लास, अपने नबी मुह़म्मद ﷺ के धर्म, और अपने बाप इब्राहीम ह़नीफ़ मुस्लिम की मिल्लत पर सवेरा किया, और वह मुश्रिकों में से नहीं थे)।

[2] और शाम में "मा अस्बह़ बी" के बदले "मा अम्सा बी" कहे। (हे अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़्लूक़ में से किसी पर जिस नेमत ने भी सवेरा किया वह मात्र तेरी ओर से है, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, अतः तेरे ही लिए प्रशंसा और तेरे ही लिए शुक्र है)।

[3] (हे अल्लाह मैं ने इस हाल में सवेरा किया कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फ़रिश्तों को, तेरे नबियों को और तेरी सारी मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ कि तू ही सत्य उपास्य है, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, और अवश्य मुह़म्मद तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं)।

[4] (हे अल्लाह! आकाश और धरती को पैदा करने वाले, छुपी हुई और खुली हुई को जानने वाले, हर चीज़ के प्रभु और मालिक, मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने नफ़्स की बूराई से, और शैत़ान की बूराई से और उस के शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपने नफ़्स पर बूराई करूं, या किसी मुस्लिम से बूराई करूं)।

[5] (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फ़िक्र और ग़म से, और तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज़ होजाने और सुस्ती से, और तेरी पनाह चाहता हूँ डरपोकन और बख़ीली से, और तेरी पनाह चाहता हूँ क़र्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।

14	"اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، وَوَعْدِكَ، مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ". **"अल्लाहुम्म अन्त रब्बी लाइलाह इल्ला अन्त ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दुक व अना अ़ला अ़हि्दक व वाअ़्दिक मस्ततअ़्तु, अऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रि मा सनअ़्तु अबूओ लक बिने'अ़्मतिक अलैय्य व अबूओ बिज़न्बी, फ़ग्फ़िर्ली फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त"** [1]	यह सैयिदुल् इस्तिग़्फ़ार कहलाता है। सवेरे सांझ	जिस ने इस पर विश्वास रखते हुए दिन में कहा और उसी दिन उस की मौत होगई, या रात में कहा और उसी रात उस की मौत होगई तो वह जन्नती है।
15	يا حي يا قيوم برحمتك أستغيث أصلح لي شأني كله ولا تكلني إلى نفسي طرفة عين **"या हैय्यु या क़ैयुमु बिरह्मतिक अस्तग़ीसु व ला तकिल्नी इला नफ़्सी तरफ़त ऐ़न"** (ऐ अल्लाह जिन्दा रहने वाले और काएनात के निगरां, मैं तेरी ही दया के माध्यम से फ़र्याद करता हूँ, मेरे सारे काम दुरुस्त करदे, एक पलक झपकने के बराबर मुझे मेरे ह़वाले न कर)।	सवेरे सांझ	नबी ﷺ ने फ़ातिमः को इसकी वसीयत की।
16	اللّٰهُمَّ عافني في بدني، اللّٰهُمَّ عافني في سمعي، اللّٰهُمَّ عافني في بصري، اللّٰهُمَّ إني أعوذ بك من الكفر والفقر، اللّٰهُمَّ إني أعوذ بك من عذاب القبر لا إلٰه إلا أنت **"अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म फ़ी सम्ई, अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बसरी, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल् फ़क़्रि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्रि, लाइलाह इल्ला अन्त"** [2]	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को	नबी ने इन शब्दों द्वारा दुआ़ किए हैं।
17	اللهُمَّ إني أسألكَ العَافيَةَ في ديني ودنيايَ وأَهْلي ومالي، اللّٰهُمَّ اسْتُرْ عوْراتي وآمِنْ رَوْعاتي، اللّٰهُمَّ احْفظني مِنْ بين يديَّ ومن خَلْفي وعن يميني وعن شمالي ومن فوْقي وَأَعوذُ بعظمتك أن أُغتالَ من تَحْتي **"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् आ़फ़ियत फ़ी दीनी व दुन्याय व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती व आमिन् रौआ़ती, अल्लाहुम्मह़्फ़ज़्नी मिन् बैनि यदैय्य व मिन् ख़ल्फ़ी, व अ़न् यमीनी व अ़न शिमाली व मिन् फ़ौक़ी व अऊ़ज़ु बिअ़ज़्मतिक अन् उग़्ताल मिन् तह़्ती"** [3]	सवेरे सांझ	नबी ﷺ सवेरे सांझ इन शब्दों द्वारा दुआ़ करना नहीं भूलते
18	سبحان الله وبحمده عدد خلقه، ورضا نفسه، وزنة عرشه، ومداد كلماته **"सुब्ह़ानल्लाहि व बिहम्दिही, अ़दद ख़ल्क़िही, व रिज़ा नफ़्सिही, व ज़िनत अर्शिही, व मिदाद कलिमातिही"** [4]	3 बार सवेरे	फ़ज्र से ज़ुह तक ज़िक्र के लिए बैठे रहने से बेहतर है।

[1] (हे अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवाए कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं अपनी ताक़त भर तेरे प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर जमा हूँ, और अपने किए हुए अमल की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ, मैं उन उपहारों को स्वीकार करता हूँ जो तूने मुझ पर कीं, और मैं अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, तो तू मुझे माफ़ फ़रमा दे अवश्य तेरे सिवाए कोई गुनाहों को माफ करने वाला नहीं)।

[2] (हे अल्लाह मुझे मेरी शरीर में चैन दे, मेरे कानों में चैन दे, ऐ अल्लाह मुझे मेरी आंखों में चैन दे, हे अल्लाह मैं कुफ़्र और फ़क़्र से तेरी पनाह चाहता हूँ, और क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं)।

[3] (हे अल्लाह मैं तुझ से अपने धर्म अपनी दुन्या, अपने घर वाले और अपने माल में चैन का सवाल करता हूँ, हे अल्लाह! मेरी पर्दा वाली वस्तुओं पर पर्दा डाल, और मेरी घबराहटों को शान्त रख, हे अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दाईं ओर से और बाईं ओर से, और मेरे ऊपर से मेरा सुरक्षा कर, और इस बात से तेरी महानता की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊं)।

[4] (हम अल्लाह की पवित्रता उस की तारीफ़ के साथ करते हैं, उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) की संख्या बराबर, और उसकी नफ़्स की खुशी के अनुसार, और उसके अर्श के वज़न के बराबर, और उसके शब्दों की लिखाई के बराबर)।

महान सवाब वाले कथन और कर्म

क्रः	श्रेष्ठ कथन और कर्म	सुन्नत द्वारा प्रमाणित सवाब, नबी ﷺ ने फ़रमायाः
1	"لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ، لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ" कहने का सवाब	जो व्यक्ति एक दिन में 100 बार "लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, लहुलमुल्कु व लहुलहम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् क़दीर"। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कहेगा उसे दस ग़ुलाम (दास) आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उसके लिए 100 नेकियां लिखी जाएंगी, और उसके 100 पाप मिटा दिए जाएंगे, और यह ज़िक्र उसके लिए सांझ तक शैतान से बचने का साधन होगा, और कोई भी व्यक्ति उससे अधिक फ़ज़ीलत वाला कर्म लेकर नहीं आया, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उससे अधिक ज़िक्र किया।
2	سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ कहने का सवाब	जो "सुब्हनल्लाहिलअज़ीम व बिहम्दिही"। -महान अल्लाह पाक है अपनी तारीफ़ों और ख़ुबियों के साथ- कहेगा उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पौदा गाड़ा जाएगा।
3	(سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ) कहने का सवाब	जो व्यक्ति सवेरे सांझ 100 बार "सुब्हनल्लाहि व बिहम्दिही"। -अल्लाह हर प्रकार के ऐब से पाक है, अपनी ता'रीफ़ों और ख़ूबियों के साथ- कहेगा तो उसके पाप माफ़ कर दिए जाएंगे अगरचे वे समुन्दर की झाग के बराबर हों, और क़ियामत के दिन कोई उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी के बराबर या उससे अधिक कहा हो। "दो कल्में हैं, जो ज़ुबान पर हलके हैं, तराज़ू में भारी हैं, और रहमान को बहुत प्यारे हैं, "सुब्हनल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हनल्लाहिलअज़ीम"। -अल्लाह पाक है अपनी तारीफ़ों और ख़ुबियों के साथ, अल्लाह पाक है बड़ाइयों वाला-
4	لَا حَوْلَ وَلاقوة إلا بِاللهِ कहने का सवाब	"ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि"। - अल्लाह की सहायता के बिना न कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने के ताक़त- जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़जाना है।
5	जन्नत का सवाल और जहन्नम से पनाह	"जो व्यक्ति तीन बार अल्लाह से जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह इसे जन्नत में दाख़िल करदे, और जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहता है : ऐ अल्लाह इसे जहन्नम में न डालना"।
6	मज्लिस का कफ़्फ़ारा	जो व्यक्ति किसी ऐसी सभा में बैठे जिस में बेकार की बातें अधिक हो गईं तो उस मज्लिस से उठने से पहले **"सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक, अश्हदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त, अस्तिग्फ़िरुक, व अतूबु इलैक"**। कह ले, "हे अल्लाह तू पाक है अपनी सारी तारीफ़ों के साथ, नहीं है कोई सच्चा इबादत के लायक़ मगर तू ही, और मैं तुझी से माफ़ी चाहता हूँ, और तेरी ही तरफ़ पलटता हूँ" तो उससे उस सभा में जो भी गलतियां हुई हैं माफ़ कर दी जाएंगी।
7	सूरतुल् कहफ़ की कुछ आयतें याद करने का सवाब	जिसने सूरतुल् कहफ़ से शूरू की 10 आयतें याद की वह दज्जाल से सुरक्षित रहेगा।
8	नबी ﷺ पर दरूद भेजने का सवाब	जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें उतारता है, और उसके दस गुनाह माफ़ फ़रमा देता है, और उसके दस दर्जे ऊँचा कर देता है, और एक रिवायत में है उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाती हैं।
9	क़ुरआन की कुछ सूरतें और आयतें पढ़ने का सवाब	जिस व्यक्ति ने दिन और रात में 50 आयतें पढ़ी तो वह ग़ाफ़िलों में नहीं लिखा जाएगा, और जिस ने 100 आयत पढ़ी तो वह क़ानितीन में लिखा जाएगा, और जिस ने 200 आयत पढ़ी तो क़ियामत के दिन क़ुरआन उस से लड़ेगा नहीं, और जिस ने 500 पढ़ी तो उस के सवाबों का ख़ज़ाना लिख दिया जाएगा।"जो व्यक्ति सवेरे-सांझ दस बार ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ पढ़ेगा तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा"। "क़ुल् हुवल्लाहु अहद् एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है"।
10	मुअज़्ज़िन का सवाब	"मुअज़्ज़िन की आवाज़ को पेड़, ढेला, पत्थर, जिन्नात और इन्सान जो भी सुनते हैं वे (क़ियामत के दिन) उसके लिए गवाही देंगे"। "क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन सब से लम्बी गर्दन वाले होंगे"।

11	अज़ान के बाद की दुआ और उसका सवाब	जिस व्यक्ति ने अज़ान सुन कर यह दुआ पढ़ी : "अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दा'अ्वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइमति आति मुहम्मदनिल्वसीलत वल् फ़ज़ीलत वब्अस्हु मक़ामम्महमूदनिल्लज़ी वअत्तहू"। (ऐ अल्लाह इस कामिल दुआ और हमेशा क़ायम रहने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसीलः (जन्नत के दर्जों में से एक दर्जे का नाम है जो मात्र नबी ﷺ के लिए ख़ास है) और फ़ज़ीलत (वह ऊँचा मक़ाम जो नबी को ख़ुसूसियत के साथ सारी सृष्टि पर प्राप्त होगा) अता फ़र्मा, और आप को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ कर, जिसका तूने वादा किया है) तो क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शफ़ाअत हलाल होजाएगी।
12	अच्छी तरह से वुज़ू करने का सवाब	जिस व्यक्ति ने वुज़ू किया और अच्छे से वुज़ू किया तो उसके बदन से गुनाह निकल जाते हैं, यहाँ तक कि उसके नाख़ुनों के नीचे से भी।
13	वुज़ू के बाद की दुआ।	तुम में से जो व्यक्ति भी कामिल वुज़ू करे, फिर यह दुआ पढ़े : **"अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदनु अब्दुल्लाहि व रसूलुहू"।** (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं) तो उसके लिए जन्नत के सभी दरवाज़े खोल दिए जाएंगे वह जिससे चाहे प्रवेश करे।
14	वुज़ू के बाद दो रक्अतें पढ़ना	जो भी व्यक्ति वुज़ू करता है, और अच्छी तरह वुज़ू करता है, और दिल और चेहरे से ध्यान लगाकर दो रक्अतें नमाज़ पढ़ता है तो उसके लिए जन्नत वाजिब होजाती है।
15	मस्जिद की तरफ ज़्यादा चलकर जाने का सवाब	जो जमाअत वाली मस्जिद की तरफ़ जाए तो आते जाते जितने भी क़दम उठाता है, उनमें से एक के बदले एक गुनाह माफ कर दिया जाता है और दूसरे के बदले उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है।
16	जुम्ए की तैयारी और उस के लिए जल्दी जाना	जो व्यक्ति जुम्ए के दिन अपनी पत्नि को नहाने का सबब बने, और नहाए, और सवेरे चल कर मस्जिद जाए, सवारी पर न जाए, और इमाम से क़रीब बैठे, और ध्यान से ख़ुत्बा सुने, और कोई गलत काम न करे, तो हर क़दम के बदले उसे एक साल के रोज़े और एक साल के क़ियाम का सवाब मिलेगा। जो व्यक्ति भी जुम्ए के दिन नहाए, शक्ति भर पाकी हासिल करे, अपने तेल में से तेल लगाए, या अपने घर का ख़ुश्बू लगाए, फिर मस्जिद के लिए निकले और दो लोगों के बीच फ़र्क न डाले, फिर जितना लिख्खा हो नमाज़ पढ़े, फिर जब इमाम ख़ुत्बा दे तो चुप रहकर सुने, तो उस के इस जुम्आ और अगले जुम्आ के बीच का गुनाह माफ़ कर दिया जाएगा।
17	40 दिन तक इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा न छूटने का सवाब	जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआला के लिए 40 दिन तक जमाअत से नमाज़ पढ़ी इस तरह से कि उस ने इमाम के साथ तक्बीरे तहरीमा पाई तो उसके लिए दो चीजों से आज़ादी लिख दी जाती है, एक जहन्नम से आज़ादी और दूसरी निफ़ाक़ से आज़ादी।
18	फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब	जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से 27 दर्जे बेहतर हैं।
19	इशा और फ़ज्र को जमाअत के साथ पढने का सवाब।	जिस व्यक्ति ने जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी तो उसने जैसे आधी रात क़ियाम किया (अल्लाह की इबादत में नमाज़ पढ़ता रहा) और जिसने फज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी तो उसने जैसे पूरी रात क़ियाम किया।
20	नमाज़ में पहली सफ़ में हाज़िर रहने की फ़ज़ीलत	यदि लोग उस फ़ज़ीलत को जान लें जो अज़ान देने और पहली सफ़ में है, तो फिर उसे पाने के लिए वह क़ुर्आ-अन्दाज़ी के बिना कोई चारा न पाएं तो अवश्य वह उस पर क़ुर्आ-अन्दाज़ी करें।
21	रातिबा सुन्नतों की पाबन्दी का सवाब।	जो व्यक्ति फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावः हर दिन 12 रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है : 4 रक्अतें ज़ुह्र से पहले और 2 रक्अतें उसके बाद, 2 रक्अतें मग़्रिब के बाद, 2 रक्अतें इशा के बाद, और 2 रक्अतें फ़ज्र की नमाज़ से पहले।
22	अधिक नफ़्ल नमाज़ पढ़ने और	"अधिक सज्दे करना लाज़िम करलो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दे करते हो, हर सज्दे के बदले वह तुम्हारा एक दर्जा ऊँचा कर देता है, और तुम्हारा एक गुनाह

	उन्हें छुपाकर पढ़ने का सवाब	माफ़ कर देता है"। "व्यक्ति का लोगों की नज़र से हट कर अधिक नफ़्ल नमाज़ पढ़ना, लोगों की नज़रों के सामने पढ़ी जाने वाली नमाज़ से 25 दर्जे उत्तम है"।
23	फ़ज्र की दो रक्अत सुन्नत, और फ़र्ज़ की फ़ज़ीलत	फ़ज्र की दो रक्अत सुन्नतें संसार और इसमें पाई जाने वाली चीज़ों से बेहतर है। "जिस ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी तो वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में है"।
24	चाश्त की नमाज़ का सवाब	तुम में से हर व्यक्ति इस हालत में सवेरा करता है कि उसके हर जोड़ पर सद्क़ा होता है, तो हर बार "सुब्हानल्लाह्" कहना सद्क़ा है, और हर बार "अल्हम्दुलिल्लाह्" कहना सद्क़ा है, और हर बार "लाइलाह इल्लल्लाह्" कहना सद्क़ा है, और हर बार "अल्लाहु अक्बर" कहना सद्क़ा है, नेकी का हुक्म देना सद्क़ा है, और बुराई से रोकना सद्क़ा है, और इन सारी चीजों के बदले चाश्त की 2 रक्अत नमाज़ काफ़ी हो जाती हैं।
25	अपने नमाज़ की जगह में बैठ कर ज़िक्र करने का सवाब।	फ़रिश्ते तुम्हारे उस व्यक्ति के हक़ में दुआ करते रहते हैं जब तक कि वह अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह पर बैठा रहे, बशर्तिकि उसका वुज़ू न टूटे, फ़रिश्ते दुआ में कहते हैं : ऐ अल्लाह! उसे माफ़ करदे, ऐ अल्लाह! उस पर दया कर।
26	बाजमाअ़त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद सूरज निकलने तक ज़िक्र करना फिर 2 रक्अ़त नमाज़ पढ़ना	जिस ने बाजमाअ़त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी फिर सूरज निकलने तक बैठे ज़िक्र करता रहा, फिर 2 रक्अ़त नमाज़ पढ़ी तो उस के लिए हज्ज और उम्रः का सवाब मिलेगा पूरा पूरा पूरा।
27	जो रात में क़्याम करने के लिए जगे और अपने घर वालों को जगाए	जो रात में जगा और अपनी बीवी को जगाया और दोनों ने एक साथ 2 रक्अ़त नमाज़ पढ़ी तो बहुत अधिक अल्लाह को याद करने वाले मर्दों और औरतों में लिख दिए जाते हैं।
28	जिस ने रात में नमाज़ पढ़ने की नियत की परन्तु नींद नहीं खुलि	जिस व्यक्ति की भी रात में नमाज़ की आ़दत होती है, परन्तु उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए नमाज़ का सवाब लिख देता है, और उस की ये नींद सद्क़ा हो जाती है।
29	बाज़ार में जाने कि दुआ	"लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु युह्यी व युमीतु व हुब हैयुन् ला यमूतु बि यदिहिल् ख़ैरु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर"। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, वही जिलाता है और वही मारता है, और वह जिन्दा है मरेगा नहीं, उसी के हाथ हर प्रकार की भलाई है, इस दुआ़ के पढने से अल्लाह तआ़ला पढ़ने वाले के लिए एक लाख नेकी लिख देता है, एक लाख गुनाह मिटा देता है, और एक लाख उस के दर्जे बुलन्द कर देता है"।
30	**फ़र्ज़ नमाज़ के बाद** سُبْحَانَ اللهِ،وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَاللهُ أَكْبَرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَحْدَهُ، لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ **कहने की फ़ज़ीलत**	जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद 33 बार "सुब्हनल्लाह" 33 बार "अल्हम्दुलिल्लाह" और 33 बार "अल्लाहु अक्बर" कहे, और "लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर"। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कह कर 100 की गिन्ती पूरी करे, तो उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, अगरचे वे समुन्दर के झाग के बराबर हों।
31	**आयतुल् क़ुर्सी पढ़ने का सवाब**	जिस व्यक्ति ने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल् क़ुर्सी पढ़ी तो उसे जन्नत में जाने से कोई चीज़ रोक नहीं सकेगी सिवाय मौत के।
32	**बीमार की तीमार-दारी करने का सवाब**	जो मुसलमान किसी मुसलमान रोगी की सवेरे के समय तीमार-दारी करता है तो सांझ तक 70 हज़ार फरिश्ते उसके लिए ख़ैर की दुआ करते हैं, और यदि सांझ को मिलने जाता है तो सवेरे तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं, और जन्नत में उसके लिए चुने हुए फल होते हैं।
33	पिड़ित व्यक्ति को देख कर यह दुआ़ करे	जिस ने किसी पिड़ित व्यक्ति को देख कर यह दुआ़ की : (**अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तलाक बिही, व फ़ज़्ज़लनी अ़ला कसीरिम्-मिम्मन् ख़लक़् तफ़्ज़ीला**) अर्थात : "सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे उस मुसीबत से बचाए रखखा जिस में तुझे मुब्तला किया, और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर मुझे फ़ज़ीलत बख़्शी" तो उस पर वह मुसीबत नहीं आएगी।

34	दुःखी की ता'ज़ियत का सवाब	"जिस व्यक्ति ने किसी दुःखी की ता'ज़ियत की तो उसे उसी की तरह सवाब मिलेगा"। "जो मोमिन व्यक्ति भी किसी मुसीबत में अपने भाई की ता'ज़ियत करता है तो अल्लाह उसे करामत के जोड़ों में से पहनाएगा"।
35	जनाज़े की नमाज़ पढ़ने और मैयत दफ़न करने तक साथ रहने का सवाब	"जो व्यक्ति किसी के जनाजे में मौजूद रहा यहाँ तक कि जनाज़े की नमाज़ पढ़ ली गई तो उसके लिए एक क़ीरत़ सवाब है, और जो व्यक्ति मैयत दफ़न किए जाने तक मौजूद रहा, उसके लिए दो क़ीरात़ सवाब है, पूछा गया : क़ीरात़ क्या है? तो जवाब मिला : दो बड़े पहाड़ों की तरह"। इब्ने उमर رضي الله عنهما कहते हैं : हम ने बहुत अधिक क़ीरात़ खो दिए।
36	अल्लाह के लिए मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत	"जिस ने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई चाहे वह पक्षी के घोंसले ही की तरह क्यों न हो, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।"
37	अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का सवाब	"कोई ऐसा दिन नहीं है जिस में बन्दा सवेरा करता है मगर उस में दो फ़रिश्ते नाज़िल होता है, उनमें से एक कहता है : ऐ अल्लाह तू खर्च करने वाले को अच्छा बदला दे, और दूसरा कहता है : ऐ अल्लाह जिस ने हाथ रोक रखा है उसको बर्बाद कर दे"।
38	सद्क़ा	सद्क़ा किसी माल को घटाता नहीं है, और माफ़ करने के कारण अल्लाह तआला इज़्ज़त और प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए झुकता है तो अल्लाह उसे ऊँचाई और बुलन्दी अता करता है। एक दिर्हम लाख पर भारी होगया, लोगों ने पूछा : अल्लाह के रसूल! ऐसा कैसे हुवा? आप ﷺ ने फ़रमायाः एक व्यक्ति के पास दो दिर्हम था जिस में से एक दिर्हम सद्क़ा कर दिया, और एक के पास बहुत अधिक धन था वह अपने धन के एक किनारे गया जिस में से एक लाख सद्क़ा किया"। "जो मुस्लिम व्यक्ति भी कोई पौदा गाड़ता है, या खेती करता है, जिस में चरा, इन्सान या जानवर खा लेते हैं तो वह उस के लिए सद्क़ा होजाता है"।
39	बिना किसी फ़ायदे के क़र्ज़ देने की फ़ज़ीलत	जो मुसलमान व्यक्ति किसी मुसलमान को दो बार क़र्ज़ दे तो यह उसके लिए एक बार सद्क़ा करने के बराबर है।
40	तंगहाल पर सबर करना	जिस व्यक्ति ने किसी कंगाल को मुहलत दी तो क़र्ज़ की अदाइगी का समय आने से पहले तक हर दिन के बदले सदक़ा मिलता है, और समय होजाने के बाद यदि मुहलत दे तो हर दिन के बदले दोगुना सद्क़ा मिलता है"।
41	अल्लाह के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखने का सवाब	जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रख्खेगा तो अल्लाह तआला उस एक दिन के बदले उसके चेहरे को जहन्नम से 70 वर्ष (के फ़ासले जितनी) दूरी पर करदेगा।
42	हर महीने में तीन दिन के रोज़े, अरफ़ा का रोज़ा और आशूरा के रोज़े का सवाब	"हर महीने तीन दिन रोज़ा रखना, उम्र भर रोज़ा रखने की तरह है।" और अरफ़ा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमायाः पिछले और अगले वर्ष के गुनाहों का कफ़्फ़ारः होता है, और आशूरा (दस मुहर्रम) के रोजे के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमाया : पिछले वर्ष के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है।"
43	शव्वाल के 6 रोज़ों का सवाब	"जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े रख्खे, उसके बाद शव्वाल के 6 रोज़े रखे तो यह साल भर रोज़ा रखने जैसे है।"
44	इमाम के साथ अन्त तक तरावीह़ पढ़ने का सवाब	"अवश्य जिस व्यक्ति ने इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी यहाँ तक कि वह लौट जाए तो उस के लिए पूरी रात का क़ियाम शुमार किया जाता है।"
45	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब	रमज़ान में उम्रः करने का सवाब ह़ज्ज के बराबर है, या मेरे साथ ह़ज्ज करने के बराबर है। "और जिसने का'बा का सात चक्कर त़वाफ़ किया और त़वाफ़ की दो रक्अत नमाज़ पढ़ी तो उसे गर्दन आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है"।
46	मक़्बूल ह़ज्ज का सवाब	"जिस व्यक्ति ने ह़ज्ज किया, और उस ने ह़ज्ज में गाली नहीं बके और न कोई गुनाह के काम किए तो वह ह़ज्ज से वापस होता उस दिन की तरह जिस दिन उस की मां ने उसे जन्म दिया था।" "और स्वीकार्य ह़ज्ज का सवाब तो जन्नत ही है।"

47	ज़ुल्हिज्जा के पहले अश्रा में नेकी करने का सवाब	कोई भी ऐसा दिन नहीं जिस में नेकी करना अल्लाह को इन दस दिनों में नेकी करने से ज़्यादा पसंदीदा हो, सहाबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं, मगर हाँ कोई व्यक्ति अपनी जान और माल ले कर निकला और कुछ भी लेकर वापस न आया।"
48	कुर्बानी	"सहाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह कुर्बानी क्या है? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः यह तुम्हारे पिता इब्राहीम की सुन्नत है, उन्होंने कहा : इस में हमें क्या सवाब मिलेगा? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः प्रत्येक बाल के बदले एक नेकी मिलेगी, उन्होंने पूछा : ऊन का क्या हुक्म है? तो आप ﷺ ने फ़रमायाः प्रत्येक ऊनी बाल के बदले एक नेकी मिलेगी।
49	आ़लिम का सवाब और उस की फ़ज़ीलत	"आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर उसी तरह है जिस तरह मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक कम्तर व्यक्ति पर है।" फिर अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "अवश्य अल्लाह, उस के फ़रिश्ते, आकाश वाले, धरती वाले, यहाँ तक कि चिंवटी अपनी बिल में और मछली भी लोगों को भलाई की शिक्षा देने वाले के लिए रह्मत की दुआ़ करते है"।
50	सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगने का सवाब	जिस व्यक्ति ने सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगी तो अल्लाह उसे शहीदों के मुक़ाम पर पहुँचा देगा, चाहे उस की मौत अपने बिछौने पर ही क्यों न हूई हो।
51	अल्लाह के डर से रोने और पहरा देने का सवाब	दो तरह की आँखों को जहन्नम की आग नहीं छूएगी, उस आँख को जो अल्लाह के डर से रोई, और उस आँख को जिस ने रात अल्लाह के रास्ते में पहरादारी में गुज़ारी।
52	कुछ काम न करने पर जन्नत में बिना हिसाब-किताब प्रवेश करना	नबी ﷺ को सपना में सारी उम्मतें दिखाई गईं, आपने अपनी उम्मत को देखा कि उनमें से 70 हज़ार ऐसे लोग हैं जो बिना हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल किए जाएंगे, उन्हें कोई अज़ाब नहीं होगा, और यह वह लोग होंगे, जो न दागकर इलाज कराते हैं, न झाड़-फुंक कराते हैं, न बुरा-शगून लेते हैं, और मात्र अपने रब पर भरोसा रखते हैं।
53	जिनके नाबालिग़ बच्चों की मृत्यु होगई हो	जिस मुसलमान के तीन बच्चों की मृत्यु जवानी से पहले हो जाए, तो अल्लाह तआला इसको इन बच्चों पर अपनी रहमत की बर्कत से जन्नत में ले जाएगा।
54	आँख खोने पर सब्र करने का सवाब	"अवश्य अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः जब मैं ने अपने बन्दे का परीक्षा उस की दोनों प्रिय चीजों (अर्थात उस की दोनों आँखे) में लिया, और उस ने उस पर सब्र किया, तो उन्के बदले में मैं ने उसे जन्नत दी।"
55	अल्लाह तआ़ला से डरते हुए किसी चीज़ को छोड़ देना।	"अवश्य तुम किसी चीज़ को अल्लाह तआ़ला से डरते हुए नहीं छोड़ोगे, मगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें उस से उत्तम चीज़ देगा।"
56	शरमगाह और ज़ुबान को सुरक्षित रखने का सवाब	जो व्यक्ति मुझे दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (ज़ुबान) की और दोनों पैरों के बीच की चीज़ (शरमगाह) की हिफ़ाज़त की गारन्टी दे दे, तो मैं उसे जन्नत की गारन्टी देता हूँ।
57	घर में घ़ुसते समय और खाते समय ज़िक्र करने का सवाब	"जब आदमी अपने घर में घ़ुसता है, और घ़ुस्ते समय और खाते समय अल्लाह का ज़िक्र करता है। तो शैतान कहता है : न तो तुम्हारे लिए सोना है और न ही खाना। और जब आदमी घर में घ़ुसता है और घ़ुसते समय अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना पा लिया, और जब खाने के समय ज़िक्र नहीं करता है तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना भी पा लिया और खाना भी।"
58	खाने पीने और नया कपड़ा पहनने के बाद अल्लाह का	जिस व्यक्ति ने खाना खाया फिर यह दुआ पढ़ी : "अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़अ़मनी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन् ग़ैरि ह़ौलिम्मिन्नी व ला क़ुव्वः"। "सभी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हर्कत और ताक़त के बिना मुझे खिलाया, और मुझे यह रोज़ी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं। **और जब नया कपड़ा पहन ले तो कहे :** "अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़क़नीहि मिन् ग़ैरि ह़ौलिम्मिन्नी व ला क़ुव्वः"।

	शुक्र अदा करना	"सभी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हर्कत और ताक़त के बिना मुझे यह कपड़ा पहनाया, और मुझे यह रोज़ी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं।
59	जो व्यक्ति यह चाहता हो कि अल्लाह उसके काम की कठिनाई को आसान कर दे	फ़ातिमा رضي الله عنها ने नौकर मांगा तो आप ﷺ ने उन्हे और अ़ली को कहा : तुम दोनों ने मुझ से जो मांगा है क्या मैं इससे बेहतर चीज़ तुम्हें न बता दूं? जब तुम अपने बिछौने पर जाओ तो 34 बार **अल्लाहु अक्बर** और 33 बार **सुब्हानल्लाहु** और 33 बार **अल्हम्दु लिल्लाहु** कह लिया करो, यह तुम्हारे लिए नौकर से बेहतर है।
60	सम्भोग करन से पहले की दुआ	यदि तुम में से कोई अपनी पत्नि के पास हम-बिस्तरी के लिए आए और यह दुआ पढ़े : **"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब्नश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मा रज़क़्तना"।** "हे अल्लाह! हमें शैतान से बचा, और इस सुहबत द्वारा जो औलाद हमें दे उसे भी शैतान से बचा, तो उनके बीच जो औलाद भी मुक़द्दर होगी उसे शैतान घाटा नहीं पहुँचा सकेगा।
61	पत्नि के अपने पति को ख़ुश रखने की फ़ज़ीलत	जो औरत इस हाल में मरी हो कि उसका पति उससे ख़ुश हो तो वह जन्नत में जाएगी।
62	वालिदैन के साथ नेकी करने और नातादारी निभाने का सवाब	"अल्लाह की मर्ज़ी वालिद की मर्ज़ी में है"। "जिसे यह बात ख़ुश करती हो कि उस की रोज़ी बढ़ाई जाए, और उस की उम्र बढ़ाई जाए तो वह अपनी नातेदारी को निभाए।"
63	यतीम की किफ़ालत	मैं और यतीम को देख-भाल करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे, और आप ﷺ ने अपनी शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली से इशारा किया। और उन दोनों उँगलियों को फैलाया।
64	हुस्ने अख़्लाक़ का सवाब	मोमिन अपने हुस्ने अख़्लाक़ (सु-स्वभाव) के कारण दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात में क़ियाम करने के दर्जे को पालेता है, क़ियामत के दिन मोमिन बन्दे के तराज़ू में हुस्ने अख़्लाक़ से अधिक भारी कोई चीज़ नहीं होगी।
65	नरमी और शफ़क़त करने का सवाब	"अल्लाह अपने बन्दों में से रह़म करने वालों पर रह़म करता है, तुम धरती वालों पर रह़म करो आकाश वाला तुम पर रह़म करेगा।"
66	मुसलमानों के लिए भलाई चाहने का सवाब	"तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए भी वही चीज़ पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।"
67	लाज शरम	"ह़या और शरम से मात्र भलाई ही आती है।" "ह़या ईमान का एक ह़िस्सा है।" "चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : ह़या करना, ख़ुश्बू लगाना, मिस्वाक करना और निकाह़ करना।"
68	सलाम से आरम्भ करना	एक व्यक्ति नबी ﷺ की सेवा में ह़ाज़िर हुवा, और उसने कहा : السَّلَامُ عَلَيْكُمْ आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमायाः इसके लिए 10 नेकियां हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमायाः इसके लिए 20 नेकियां हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ आप ﷺ ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमायाः इसके लिए 30 नेकियां हैं।
69	मुलाक़ात के समय मुसाफ़ह़ा करने का सवाब	जो दो मुसलमान व्यक्ति आपस में मुलाक़ात करें, और मुसाफ़ह़ा करें तो इससे पहले कि वह अलग-अलग हों बख़्श दिए जाते हैं।
70	मुस्लिम व्यक्ति की इ़ज़्ज़त का बचाब करने का सवाब	"जिस ने अपने मुस्लिम भाई की इ़ज़्ज़त का बचाव किया अल्लाह तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन जहन्नम से उस के चेहरे का बचाव करेगा।"
71	नेक लोगों के साथ मुह़ब्बत करना और उनके साथ बैठना	"तुम उनके साथ होगे जिस से तुम ने मुह़ब्बत की।" अनस رضي الله عنه कहते हैं : सह़ाबए किराम किसी चीज़ से उस क़दर ख़ुश नहीं हुए जिस क़दर इस ह़दीस से ख़ुश हुए।
72	अल्लाह की बड़ाई के लिए मुह़ब्बत करने वालों का सवाब	"अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः मेरी बड़ाई के लिए मुह़ब्बत करने वालों के लिए नूर के मेंबर होंगे, हाल यह होगा कि उन पर नबी और शहीद भी रश्क करेंगे।

73	अपने भाई के लिए दुआ करने वाले का सवाब	"अपने भाई के लिए उस की ग़ैर मौजूदगी में दुआ क़बूल होती है, उस के सर के पास फ़रिश्ता नियुक्त होता है, और वह जब जब भी अपने भाई के लिए दुआ करता है तो उस पर नियुक्त फ़रिश्ता आमीन कहता है, और कहता है तेरे लिए भी इसी के तरह हो।"
74	मोमिन मर्दों और औरतों के इस्तिग़फ़ार करने का सवाब	"जिस ने मोमिन मर्दों और औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह तआला उस के लिए प्रत्येक मोमिन मर्द और औरत के बदले एक नेकी लिखता है।"
75	कष्टदायक चीज़ को रास्ते से हटाने का सवाब	"मैं ने एक आदमी को जन्नत की नेमतों से लाभ उठाते देखा एक गाछ को काटने के कारण जो बीच रास्ते में था और लोगों को तक्लीफ़ पहुंचा रहा था।
76	झगड़ा लड़ाई और मज़ाक़ में भी झूट से बचने और अच्छे स्वभाव वालों का सवाब	मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के किनारे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए भी जन्नत के बीच में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने मज़ाक़ में भी झूट नहीं बोला, और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के बालाई दरजे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों।
77	ग़ुस्सा पी जाने का सवाब	जो व्यक्ति ग़ुस्सा पी जाए और वह उसे कर गुज़रने की शक्ति रखता हो, तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा, और बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों में से जिसे चाहे चुन लेने का अधिकार देगा।
78	किसी की भलाई या बुराई की साक्ष्य देना	"जिस के लिए तुम ने भलाई की साक्ष्य दी उस पर जन्नत वाजिब हो गई, और जिस के लिए तुम ने बुराई की साक्ष्य दी उस पर जहन्नम वाजिब हो गई, तुम धरती पर अल्लाह के गवाह हो।"
79	मुसलमान के ऐब को ढकना	"जो व्यक्ति किसी मुस्लिम से दुनिया की कठिनाइयों में से किसी एक कठिनाई को दूर करता है तो अल्लाह तआला उस से क़ियामत की कठिनाइयों में से एक कठिनाई दूर करेगा, और जो व्यक्ति किसी तंगहाल पर आसानी करता है तो अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उस पर आसानी करेगा, और जिस ने किसी व्यक्ति की बुराई को संसार में छुपाया, तो अल्लाह तआला दुनिया में और क़ियामत के दिन उस पर पर्दा करेगा, और अल्लाह तआला बन्दे की सहायता में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।
80	आख़िरत को प्रधानता देना	"जिस की फ़िक्र आख़िरत की हो तो अल्लाह तआला उस के दिल में बेनियाज़ी (निःस्पृहता) पैदा कर देता है, और उस की बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठी कर देता है, और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आती है।"
81	वे अमल जिनसे अल्लाह के अर्श के नीचे साया नसीब होगा, जिस दिन उसके सिवाए कोई साया नहीं होगा।	सात क़िसिम के व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अपने अर्श के साए के नीचे जगह देगा, उस दिन उस साए के सिवाए कोई और साया नहीं होगा : ❶ आदिल इमाम (न्याय-शील शासक), ❷ वह नौजवान जो अल्लाह तआला की इबादत में पला-बढ़ा हो, ❸ वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिद के साथ लटका हुवा हो (अर्थात मस्जिद की ख़ास महब्बत उसके दिल में हो, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तज़ार में बे-क़रार रहता हो) ❹ वे दो व्यक्ति जो मात्र अल्लाह के लिए महब्बत करते हों, उसी पर वे आपस में इकट्ठे हुए हों, और उसी पर एक दूसरे से बिछड़े हों। ❺ वह व्यक्ति जिसे कोई सुन्दरी और ऊँचे खानदान वाली औरत पाप करने के लिए बुलाए, लेकिन वह उसके जवाब में कहे : मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। ❻ वह व्यक्ति जिसने कोई सदक़ा किया और उसे छिपाया यहाँ तक उसके बाएं हाथ को भी जानकारी नहीं कि उसके दाएं हाथ ने क्या खर्च किया है। ❼ वह व्यक्ति जिसने एकान्त में अल्लाह को याद किया और उसके डर से उसकी आँखों से आँसू उमड पड़े।
82	मग़्फ़िरत तलब करना	जिस व्यक्ति ने इस्तिग़्फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया तो अल्लाह तआला उस की हर तंगी को दूर कर देता है, और हर ग़म और फ़िक्र को ख़तम कर देता है, और जहां से उस के गुमान में भी नहीं होता उसे रोज़ी देता है।

ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है

क्र	निषिद्ध कर्म	नबी ﷺ का फ़रमान
1	लोगों की खातिर कर्म करना	“अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है : मैं साझी बनाने वाले के शिर्क से बेनियाज़ (निःस्पृह) हूँ, जिस ने कोई कर्म किया जिस में मेरे साथ किसी दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसे और उस के कर्म को उस के मुंह पर मार देता हूँ।”
2	बाहिरी अच्छाई और भित्री बिगाड़	“मुझे ऐसी क़ौम के बारे में अवश्य जानकारी है जो क़ियामत के दिन तिहामा के सफ़ेद पहाड़ों जैसी नेकियां लेकर आएंगे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला खाई हुई भूस की तरह कर देगा”। सौबान ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप उनकी सिफ़त हमें बता दिजिए, ताकि हम अवज्ञा के कारण उन में से न हो जाएं, तो आप ने फ़र्माया : “सुन लो! वे तुम्हारी ही चम्ड़ी वाले तुम्हारी बिरादरी के लोग हैं, और जिस प्रकार तुम रातों में क़ियाम करते हो वे भी करते हैं, लेकिन वे ऐसे लोग हैं कि जब अकेले में होते हैं तो पाप किया करते हैं”।
3	घमंड	“जन्नत में ऐसा व्यक्ति नहीं जाएगा जिस के दिल में कण बराबर भी घमंड हो” किब्र का अर्थ है : हक़ का इन्कार करना और लोगों को हक़ीर समझना।
4	कपड़ा नीचे तक पहनना	पाजामा, कमीज़ और पगड़ी इन सभों में इस्बाल का ऐतिबार होता है, और जिस ने कोई चीज़ घमण्ड करते हुए नीचा करके पहना तो अल्लाह तआ़ला उस की ओर क़ियामत के दिन नहीं देखेगा।
5	ह़सद	“तुम ह़सद से बचो; क्योंकि ह़सद नेकी इस तरह से मिटा देता है जिस तरह आग लकड़ी को राख बना देती है। या कहा : घास भूस को।”
6	सूद	“नबी ﷺ ने सूद लेने वाले और सूद देने वाले पर ला’नत की है।” “सूद का एक दिर्हम जिसे आदमी जानते हुए खाता है 36 औरतों से बलात्कार करने से बढ़कर है।”
7	शराबी	“हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में नहीं जाएगा, और न ही मोमिन व्यक्ति जादू के कारण, और न ही नाता तोड़ने वाले जन्नत में जाएंगे।”
8	झूट	“बर्बादी हो उस के लिए जो लोगों को हंसाने के लिए बातें करता है, तो झूट बोलता है, उसका सत्यानास हो, उसका सत्यानास हो”।
9	जासूसी	“जिस ने लोगों की बातें सुनी जब कि लोग उसे नापसंद करते हों या उस से दूर रहते हों तो क़्यामत के दिन उस के कान में पिघलाया हुवा शीशा डाला जाएगा”।
10	फ़ोटो	“क़ियामत के दिन सारे लोगों में सब से कठिन अ़ज़ाब फ़ोटोग्राफरों को होगा”। “जिस घर में कुत्ता या फोटो हो उसमें फ़रिश्ते नहीं जाते”।
11	चुग़ली	“चुग़ली करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा”। नमीमः का अर्थ है : फूट डालने के लिए लोगों की बातें फैलाना।
12	ग़ीबत	“आप ﷺ ने पूछा : जानते हो ग़ीबत क्या है? लोगों ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, तो आप ﷺ ने फ़रमायाः तुम्हारा अपने भाई का चर्चा ऐसी चीज़ द्वारा करना जिसे वह नापसंद करता हो। पूछ गया : यदि मेरे भाई में वह कमी हो तो? आप ने फ़रमायाः यदि उसमें कमी है तो तूने उसकी ग़ीबत की, नहीं तो उस पर इल्ज़ाम लगाया”।
13	ला’नत	“मोमिन को लानत करना उसकी हत्या करने जैसे है”। “ला’नत करने वाले क़्यामत के दिन सिफ़ारिशी या गवाह नहीं होंगे”।
14	राज़ फैलाना	“क़ियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूरा वह व्यक्ति होगा जो अपनी बीवी के पास जाए और बीवी उस के पास फिर वह उस की राज़ को फैला दे”।
15	बुरा कर्म	“क़ियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बूरा व्यक्ति वह है जिसे लोगों ने उस की बूराई से बचने के लिए छोड़ दिया हो”। और “आदम के सन्तान की अधिकतर गलतियां उस की ज़ुबान द्वारा होती है”।
16	मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़्र की तुहमत लगाना	“जिस किसी ने भी अपने भाई को कहा : ऐ काफिर! तो वह बात उन में से किसी एक की ओर पलटती है, यदि मुआमलः वैसा नहीं है तो कहने वाले की ओर बात पलट आती है”।

17	दूसरे की ओर निस्बत करना	"जिसने जानबूझकर अपने पिता के बजाय दूसरे की ओर अपनी निस्बत की तो उस पर जन्नत ह़राम है"। "जिस ने अपने बाप से बेज़ारी की तो यह कुफ़्र है"।
18	मुसलमान को डराना	"किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि वह किसी दूसरे मुस्लिम भाई को डराए।" "जिस ने किसी मुस्लिम की ओर धार-दार चीज़ से इशारा किया तो फ़रिश्ते उस पर ला'नत करते रहते हैं यहाँ तक कि उसे छोड़ दे"
19	इस्लामी देश में मुस्तामन की हत्या	"जिस ने मुआहद (ग़ैर मुस्लिम जिस के साथ ऐग्रिमेंट हो) का नाहक़ हत्या कर दिया तो वह जन्नत की ख़ुश्बू तक नहीं पाएगा जब कि एक साल की दूरी से ही उस की महक पाई जाये गी।"
20	औलिया के साथ दुश्मनी	"अल्लाह तआ़ला कहता है : जिस ने मेरे वली से दुश्मनी की तो मैं उस के साथ जंग का एलान करता हूँ।"
21	मुनाफ़िक़ और फ़ासिक़ को सरदार बनाना	"मुनाफ़िक़ को सरदार न कहो; क्योंकि यदि वह सरदार हो जाए तो तुम ने अपने रब को नाराज़ कर दिया।"
22	प्रजा के साथ धोकाधड़ी	"अल्लाह जिसे भी प्रजा की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी देता है, और जिस दिन भी मरता है इस ह़ाल में मरता है कि उसने अपने प्रजा के साथ धोका किया होता है तो अल्लाह उस पर जन्नत को ह़राम कर देता।"
23	बिना जानकारी के फ़त्वा देना	"जिसे बिना ज्ञान के फ़त्वा दिया गया तो ग़ुनाह फ़त्वा देने वाले के ऊपर होता है।"
24	सुस्ती में जुम्अ़ा या अस्र की नमाज़ छोड़ देना	"जिस ने तीन बार लापर्वाई के कारण जुम्अ़ा छोड़ दिए तो अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है।" "जिस ने अस्र की नमाज़ छोड़ दी उस के कर्म बर्बाद हो गए।"
25	नमाज़ में कोताही करना	"हमारे और काफ़िरों के बीच सीमा नमाज़ है; तो जिस ने नमाज़ छोड़ दी वह काफ़िर हो गया।" "इन्सान और शिर्क के बीच फ़ासला नमाज़ छोड़ना है।"
26	नमाज़ी के सामने से जाना	"नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को यदि यह पता चल जाए कि उस पर कितना ग़ुनाह है, तो उस के लिए 40 तक बैठे रहना उस के आगे से जाने से बेहतर है।"
27	नमाज़ियों को तक्लीफ़ देना	"जिस ने पियाज़ लहसुन और क़ुर्रास खाई वह हमारी मस्जिद के क़रीब न आए क्योंकि फ़रिश्तों को उन चीज़ों से तक्लीफ़ होती है जिन से आदम की औलाद को तक्लीफ़ होती है।"
28	ज़मीन हड़प करना	"जिस ने अत्याचारी में एक वित्ता ज़मीन हड़पा तो अल्लाह तआ़ला क़्यामत के दिन सात तह ज़मीन का तौक़ उस के ग़ले में डालेगा।"
29	अल्लाह को नाराज़ करने वाली बातें करना	"आदमी अल्लाह की नाराज़गी की बात करता है जिस की वह पर्वा नहीं करता जब कि उस के कारण 70 साल तक जहन्नम में गिरता चला जाता।"
30	बेमतलब की बातें करना	"ऐसी बातें अधिक न करो जो अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली हो, क्योंकि ज़िक्र के सिवाय अधिक बातें दिल की सख़्ती का कारण हैं।"
31	बनावटी बातें करना	"अवश्य मेरे पास तुम में से सब से अधिक मब्ग़ूज़ और मेरी बैठक से दूर वे होंगे जो बनावटी बातें करते हैं, गप हाँकते हैं, और घमंड करते हैं।"
32	अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहना	जो लोग भी किसी सभा में बैठते हैं और उस में अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते और अपने नबी ﷺ पर दरूद नहीं भेजते तो यह सभा उन के लिए अफ़सोस का कारण बनता है, यदि अल्लाह तआ़ला चाहे तो उन्हें अ़ज़ाब दे या माफ़ कर दे।
33	किसी मुसलमान की मुसीबत पर ख़ुश होना।	अपने मुस्लिम भाई के दुःख पर ख़ुश न हो, कि अल्लाह उस पर रह़म कर दे और तुम्हे मुसीबत में डाल दे"। और जो कोई किसी को किसी पाप पर जिस से तौबा कर लिया हो शर्मीन्दा करता है तो जब तक उस पाप को न करले उसे मौत नहीं आएगी।
34	मुसलमानों से बातें न करना	किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात न करे, यदि तीन दिन से अधिक बात नहीं करता है और उसी अवस्था में उस की मौत होजाती तो जहन्नम में जाएगा।

35	सरे आम गुनाह करना	मेरी उम्मत के सारे लोग माफ़ कर दिए जाएंगे सिवाय सरे आम पाप करने वाले के।
36	बूरी आ़दत	बूरी आ़दत कर्मों को उसी तरह बर्बाद कर देती है, जिस तरह सिर्का शहद को।
37	हदृया देकर वापस लेना	"हदृया देकर वापस लेने वाला व्यक्ति कुत्ते की तरह है जो उल्टी कर के उसे चाट लेता है।" "किसी व्यक्ति के लिए यह जायज़ नहीं कि वह हदृया देकर उसे वापस ले।"
38	पड़ोसी का अत्याचार	किसी व्यक्ति का दस औरतों से बलात्कार करने का पाप अपने पड़ोसी की बीवी से बलात्कार करने से कम है, और किसी व्यक्ति का दस घरों से चोरी करने का पाप अपने पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम है।
39	ह़राम चीज़ें देखना	"आदम की संतान पर ज़िना का ह़िस्सा लिख दिया गया है जिसे वह हर हाल में पा कर रहेगा, आँखें ज़िना करती हैं और उनका ज़िना देखना है, और कानों का ज़िना सुनना है, और ज़ुबान का ज़िना बोलना है, और हाथ का ज़िना पकड़ना है, और पैर का ज़िना चल कर जाना है, और दिल चाहत करता है और तमन्ना करता है, और शरमगाह उसे सत्य कर दिखाती है या झुटला देती है।"
40	किसी व्यक्ति का अजनबी औरत को छूना	किसी व्यक्ति के सर में सूई को चुभाना उस के लिए इस बात से बेहतर है कि किसी अजनबी औरत को छुए जो कि उस के लिए जायज़ नहीं है"। "मैं औरतों से मुसाफ़ह़ा नहीं किया करता"।
41	निकाहे़ शिग़ार करना	"नबी ﷺ ने शिग़ार से रोका है।" शिग़ार यह है कि आदमी अपनी बेटी की शादी इस शर्त़ पर करे कि दूसरा व्यक्ति अपनी बेटी की शादी करे और दोनों के बीच महर न रखी जाए।
42	मातम करना	"जिस पर मातम किया जाता है वह क़्यामत के दिन अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण अ़ज़ाब दिया जाता है।" "मुर्दा अपनी क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण"
43	ग़ैरूल्लाह की क़सम खाना	''जिस ने ग़ैरूल्लाह की क़सम खाई उसने कुफ़्र किया या शिर्क किया।'' ''जिसे क़सम खानी हो, वह अल्लाह की क़सम खाए या खामोश रहे।''
44	झूटी क़सम खाना	"जिस ने ऐसी क़सम खाई जिस से नाह़क मुसलमान व्यक्ति का माल हड़प करे तो अल्लाह से इस ह़ाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर ग़ुस्सा होगा।"
45	सौदा में क़सम खाना	"तुम सौदा में अधिक क़सम खाने से बचो; क्योंकि यह सौदे को बेचवाती है, फिर बर्कत मिटा देती है।" "क़सम सौदा बेचवाती है, पर बर्कत मिटा देती है।"
46	काफ़िरों का रूप अपनाने वाला	"जिस ने किसी क़ौम की रूप अपनाई तो वह उन में से है।" "वह हम में से नहीं जिस ने दूसरों का रूप अपनाया।"
47	क़ब्र पर ता'मीर करना	"नबी ﷺ ने क़ब्रों को चूना लगाने, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से रोका।"
48	धोका और ख़्यानत	"अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन जब अगलों और पिछलों को इकट्ठा करेगा, तो हर धोकेबाज़ के लिए एक झंडा गाड़ा जाएगा, और कहा जाएगा : यह फ़लां बिन फलां का धोका है।"
49	क़ब्र पर बैठना	"यदि तुम में से कोई अंगारे पर बैठे जो उस का कपड़ा जलादे, और उस के चमड़े तक पहुंच जाए, यह उस के लिए बेहतर है क़ब्र पर बैठने से।"
50	जो अपनी स्वागत में लोगों का खड़ा होना पसन्द करता हो	जो व्यक्ति अपने स्वागत में लोगों का खड़े होना पसन्द करता हो तो अपना स्थान नरक बना ले।
51	बिना ज़रूरत के मांगना	"तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन पर मैं क़सम खाता हूँ, और मैं तुम्हें ह़दीस सुनाता हूँ उसे याद करलो ... और न ही किसी बन्दे ने मांगने का दर्वाज़ा खोला मगर अल्लाह उस पर फ़क़ीरी का दर्वाज़ा खोल देता है।"

52	सौदे में दलाली करना	“अल्लाह के रसूल ने इस बात से रोका है कि शहरी देहाती के लिए बेचे, और दलाली मत करो, और न ही कोई अपने भाई के सौदे पर सौदा करे।”
53	खोई हुई चीज़ की तलाश के लिए मस्जिद में एलान करना	“जो मस्जिद में किसी व्यक्ति को खोई हूई चीज़ का एलान करता सुने, तो कहे : अल्लाह उसे तुम्हें वापस न मिलाए; इसलिए कि मस्जिदें इस के लिए नहीं बनाई गई हैं।”
54	शैतान को गाली देना	“शैतान को गाली मत और उस की बुराई से पनाह चाहो”। एक सहाबी कहते हैं कि मैं नबी ﷺ के पीछे सवार था, आप की सवारी फ़िसली तो मैं ने कहा : शैतान हलाक हो, जिस पर नबी ﷺ ने कहा : यह मत कहो कि शैतान हलाक हो; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह फूल कर घर जैसा होजाता है, और कहता मेरी शक्ति से ऐसा हुवा, पर यह कहा करो : बिस्मिल्लाह; क्योन्कि तुम्हारे यह कहने से वह अपमान हो कर मक्खी जैसा हो जाता है।
55	बुख़ार को ग़ाली देना	बुख़ार को ग़ाली मत दिया करो; क्योन्कि वह इन्सान के पाप को वैसे ही खतम कर देता है जिस प्रकार भट्टी लोहे की जंग को।
56	गुम्राही की ओर बुलाना	“जिस ने गुम्राही की ओर बुलाया तो उसे उस के अनुसार पाप करने वाले के बराबर गुनाह मिलता है, दोनों के गुनाहों में कुछ भी कमी नहीं होती।”
57	पीने में निषिद्ध चीज़ें	“नबी ﷺ ने मश्कीज़ः या पानी के बर्तन के मुंह से पानी पीने से रोका है।” “नबी ﷺ ने खड़े होकर पानी पीने से डांटा है।”
58	सोने या चाँदी के बर्तन में पानी पीना	“सोने या चाँदी के बर्तन में पानी न पीओ, और न ही पतले या मोटे रेशम का कपड़ा पहनो, इसलिए कि यह दुनिया में काफ़िरों के लिए है और आख़िरत में तुम्हारे लिए है।”
59	बायां हाथ से पानी पीना	“हरगिज़ तुम में से कोई बाएं हाथ से खाना न खाए और न पानी पिए; क्योंकि शैतान बायां हाथ से खाता पीता है।”
60	रिश्ते काटना	“नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।”
61	नबी ﷺ पर दरूद न भेजना	“उस आदमी की नाक मिट्टी में मिले जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दरूद नहीं भेजी।” “बख़ील व्यक्ति वह है जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दरूद नहीं भेजी”
62	कुत्ता पालना	“जिस ने कुत्ता पाला सिवाय शिकारी कुत्ता, और जानवर की सुरक्षा करने वाले कुत्ता के तो उस की नेकी में से प्रत्येक दिन दो क़ीरात की कमी होती है।”
63	जानवरों को सताना	“एक औरत को बिल्ली के कारण अ़ज़ाब हुवा, उस ने उसे क़ैद किए रख्खा यहाँ तक कि मर गई तो उस के कारण वह अ़ज़ाब दी गई।” “जानदार का निशाना न साधो”
64	जानवरों के गले में घंटी लटकाना	“रह़मत के फ़रिश्ते उन लोगों के साथ नहीं होते जिन के साथ कुत्ता या घंटी हो।” “घंटी शैतान की बांसूरी है।”
65	पापी को यदि अल्लाह की नेमत मिले	यदि तुम ऐसा देखो कि अल्लाह तआ़ला किसी को उस के पाप पर संसारिक सुविधाएं दिए जा रहा है, तो वास्तव में यह उसे ढील देना है, फिर इस आयत की तिलावत की : ﴿فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ﴾ **“फिर जब वह लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिन की उन्हें नसीह़त की जाती थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दर्वाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उन को मिली थीं खूब मचल गए तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया, फिर तो वह बिल्कुल मायूस हो गए”**।
66	दुनिया को तर्जीह़ देना	“जिस की फ़िक्र मात्र दुनिया की हो तो अल्लाह तआ़ला उसे लोगों का मुह़ताज बना देता है, और उस की इकट्ठी चीज़ों को बिखेर देता है, और दुनिया से मात्र उसे उतनी ही चीज़ प्राप्त होती है जो उस की तक़्दीर में है।”

सदा के लिए जन्नत या जहन्नम की ओर

●●● **क़ब्र :** क़ब्र परलोक का पहला ठिकाना है, काफ़िर और मुनाफ़िक़ के लिए आग के गढ़े के रूप में, और मोमिन के लिए कियारी होगी। कई एक पाप के कारण वहाँ अ़ज़ाब होगा : जैसे पेशाब से न बचना, चुगली करना, ग़नीमत के माल में ख़यानत करना, झूठ बोलना, नमाज़ के समय सोए रहना, क़ुरआन के अनुसार कर्म न करना, बलात्कार करना, बालमैथुन करना, सूदी कारोबार करना, क़र्ज़ वापस न लौटाना इत्यादि। और क़ब्र के अ़ज़ाब से निम्न चीज़ें बचा सकती हैं : नेक कर्म जो कि अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ालिस हो, क़ब्र के अ़ज़ाब से शरण चाहना, सूरतुल् मुल्क की तिलावत करना। और इसके अ़ज़ाब से शहीद, जिहाद में पहरा देने वाले, जुम्आ़ के रोज़ मरने वाले, और पेट की बीमारी में मरने वाले सुरक्षित रखे जायें गे।

●●● **सूर में फूंक मारना :** वह एक बड़ा क़र्न है, जिसे इस्राफ़ील ने मुंह से लगा रखा है, और इस इन्तिज़ार में हैं कि कब उसमें फूंक मारने का आदेश मिले, घबरा देने वाली फूंक : ﴿وَنُفِخَ فِى ٱلصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا مَن شَآءَ ٱللَّهُ﴾ **"और सूर में फूंक दिया जाएगा तो आकाशों और धरती वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।"** जिस के बाद पूरी दुनिया बर्बाद हो जाएगी। और 40 दिन के बाद उठाए जाने के लिए सूर में फूंक मारा जाएगा : ﴿ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُم قِيَامٌ يَنظُرُونَ﴾ **"फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो वह यकदम खड़े होकर देखने लग जाएंगे।"**

●●● **दोबारा जीवित किया जाना :** फिर अल्लाह तआ़ला एक तरह की बारिश बर्साएगा जिस से जिस्म हरे भरे होजाएंगे (रीढ़ की हड्डी से)। और एक नई जीवन होगी जिस में मौत नहीं आएगी। सब नंगे पैर होंगे, शरीर पर कपड़ा न होगा, फ़रिश्तों और जिन्नों को देख सकेंगे, और अपने अपने अमल के साथ दोबारा जीवित किए जाएंगे।

●●● **एकट्ठा किया जाना :** अल्लाह तआ़ला हिसाब किताब के लिए सभों को एक ऐसे बड़े दिन में जो कि 50 हज़ार साल के बराबर होगा इकट्ठा करेगा, लोग घबराए हुए और मदहोश होंगे, उन्हें ऐसा लगेगा कि वे संसार में कुछ क्षण ही रहे थे, सूरज एक मील की दूरी पर कर दिया जाएगा, लोग अपने अपने कर्तूत के अनूसार पसीना में डूब जाएंगे। उस दिन कमज़ोर और घमण्डी लोग लड़ेंगे, काफ़िर अपने साथी, शैतान और उसके एलचियों को अदालत के कटहरे में ला खड़ा करेगा, एक दूसरे को शराप रहे होंगे, अत्याचारी मारे ग़म के अपने हाथों को चबा रहे होंगे। और जहन्नम को 70 हज़ार लगाम के साथ खींचा जाएगा, हर लगाम को 70 हज़ार फ़रिश्ते खींच रहे होंगे। काफ़िर उसे देख कर अपनी जान के बदले छुटकारा की तमन्ना करेगा, या फिर वह मिट्टी हो जाने की आर्ज़ू करेगा। और पापी लोगों का हाल यह होगा: ज़कात के इन्कारियों के धन को आग की तख़्ती बना दी जाएगी, जिस से उन्हें दाग़ा जाएगा। घमन्डियों को चिंवटियों की तरह इकट्ठा किया जाएगा, धोके बाज़, खाइन और ग़ासिब रुस्वा किए जाएंगे। चोर अपनी चोरी के धन को ला हाज़िर करेंगे, सारी भेदें खुल जाएंगी। पर नेक लोगों को घब्राहट नहीं होगी। वह दिन उन पर ज़ुह्र की नमाज़ की तरह बीत जाएगा।

●●● **शिफ़ाअ़त :** महान शफ़ाअत नबी ﷺ के लिए ख़ास है, यह शफ़ाअत आप मह़शर के दिन लोगों से कष्ट दूर करने और उनका हिसाब करने के लिए करेंगे। और साधारण शफ़ाअत दूसरे नबी और सदाचारी व्यक्ति करेंगे जो कि मोमिनों को जहन्नम से निकालने और उनके दरजे उच्च करने के लिए होंगे

●●● **हिसाब** : लाइन के लाइन लोगों की पेशी उनके रब के सामने होगी, वह उन्हें उनके कर्मों को देखाएगा और इसके बारे में पूछेगा, उन की उम्र, जवानी, धन, ज्ञान, वचन के बारे में सवाल करेगा, और आंख, कान तथा दिल की नेमतों के बारे में प्रश्न करेगा। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का हिसाब उन्हें डांट पिलाने और उन पर दलील क़ायम करने के लिए सरे आम लोगों के सामने होगा, और उन के विरोध में लोग, धरती, दिन, रात, धन दौलत, फ़रिश्ते, और स्वंय उन के साक्षि देंगे, यहाँ तक कि उन का अपराध प्रमाणित हो जाएगा और वे इक़्रार कर लेंगे। और मोमिनों के साथ अल्लाह तआला अकेले में सोध पूछ करेगा, और उन से इक़रारे ज़ुर्म कराएगा, यहाँ तक कि जब वह यह सोचने लगेगा कि बर्बाद हो गया तो अल्लाह तआ़ला कहेगा : "मैं ने संसार में तुम्हारे इन पापों पर परदा डाल दिया था, और आज तुम्हारे लिए इन्हें क्षमा कर देता हूँ। और सब से पहले मुहम्मद ﷺ की उम्मती का हिसाब होगा, और सब से पहले नमाज़ का हिसाब होगा, फिर खून के बारे में फ़ैसला होगा।

●●● **सहीफ़ों का उड़ना** : फिर सहीफ़े उड़ेंगे, और लोग अपने अपने कर्मपत्र लेंगे, जो कि हर छोटी बड़ी चीज़ को घेरे होगी। ﴿لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصَىٰهَا﴾ **मोमिन अपने कर्मपत्र को दाएं हाथ से लेगा, जबकि काफ़िर पीठ पीछे अपने बाएं हाथ में लेंगे।**

●●● **तराज़ू** : फिर लोगों को बदला देने के लिए हक़ीक़ी तराज़ू में उनके कर्मों को तौला जाएगा, जो कि बहुत ही बारीकबीं होगा, उसके दो पलड़े होंगे। उन कर्मों को भारी कर देगा जो ख़ालिस अल्लाह के लिए शरीअ़त के अनुकूल होंगे। जिन कर्मों को वह वज़नी करेगा वह हैं : लाइलाह इल्लल्लाह्, अच्छे आचरण, और ज़िक्र जैसे : अल्हम्दु लिल्लाह, और सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अ़ज़ीम। और लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों का निर्णय करेगा।

● **हौज़** : फिर मोमिन हौज़ के पास आएंगे, जो उस में से एक बार पानी पी लेगा कभी पियासा न होगा, और हर नबी का हौज़ ख़ास होगा, पर उसमें सब से बड़ा हमारे नबी ﷺ का होगा, उस का पानी दूध से उजला होगा, मधु से मीठा होगा, उस की सुगन्ध कस्तूरी से अधिक होगी, उसके बर्तन सोने और चाँदी के होंगे सितारों की संख्या में। उस की लम्बाई जार्डन में ऐला नामक जगह से लेकर अदन से अधिक होगी, और उस का पानी कौसर से आएगा।

●● **मोमिनों का परीक्षा** : हशर के अन्तिम दिन काफ़िर अपने भगवानों के पीछे हो लेंगे जिन्हें उन्होंने पूजा था, तो वे उन्हें झूंड के झूंड जानवरों के गोल की तरह पैरों के बल या चेहरों के बल जहन्नम में पहुंचा देंगे। और मात्र मोमिन और मुनाफ़िक़ बच जाएंगे, तो उनके पास अल्लाह तआला आएगा और पूछेगा : "किसके इन्तिज़ार में हो?" वे कहेंगे : "हम अपने रब का इन्तिज़ार कर रहे हैं"। तो जब वह अपनी पिंडली खोलेगा तो उसे पहचान लेंगे। और सारे सज्दे में गिर पडेंगे सिवाय मुनाफ़िक़ों के, अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है : ﴿يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى ٱلسُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ﴾ **"जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सज्दे के लिए बोलाए जाएंगे तो सज्दा न कर सकेंगे"**। फिर वे अल्लाह के पीछे पीछे चलेंगे, वह सिरात् (पुल) लगाएगा, और उन्हें नूर देगा, पर मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ जाएगा।

● **सिरात् (पुल)** : यह पुल है जो कि जहन्नम पर बना होगा, ताकि मोमिन इस से पार करके जन्नत की ओर जाएं, इस की सिफ़त में नबी ﷺ का फ़रमान है : "यह माएल होने और फिसलने की जगह है, जिस पर कांड़े और टेढ़े सर वाली लोहे की सलाई होंगे, सादान के कांटे की तरह, जो कि बाल से पतला, और तलवार से तेज़ होगा।" और उस जगह प्रत्येक मोमिन को अपने अपने कर्म के हिसाब से नूर दिया जाएगा, सब से ऊँचा पहाड़ की तरह होगा, और सब से कम इन्सान के अंगूठे के किनारे में होगा। उनके लिए रौशनी होगी तो अपने कर्मों के हिसाब से पार कर ले जाएंगे। कुछ मोमिन पलक झपकते ही पार कर जाएंगे, और कुछ बीजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ पक्षी की तरह, कुछ अच्छे घोड़े और सवारी

की तरह, तो कुछ लोग सहीह सालिम बच जाएंगे, और कुछ छोड़ दिए जाएंगे और उन्हें खरोच लगे होंगे और कुछ जहन्नम में गिरे पड़े होंगे। परन्तु मुनाफ़िक़ों के पास रौशनी न होगी, वह लौटेंगे फिर उनके और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी, फिर वे पुल पार करना चाहेंगे तो जहन्नम में गिर जाएंगे।

●● **जहन्नम** : इसमें काफ़िर जाएंगे, फिर कुछ पापी मुसलमान, फिर मुनाफ़िक़, हर 1000 में से 999 जहन्नम में जाएंगे, उसके 7 दर्वाज़े होंगे, संसार की आग से 70 गुना अधिक होगी। अधिक सज़ा के लिए काफ़िर की डील बढ़ा दी जाएगी, उसके दोनों मोंढों के बीच की दूरी 3 दिन की होगी, और दांत उहुद पहाड़ की तरह, चम्ड़ा मोटा होजाएगा और उसे बदला जाएगा ताकि अ़जाब चखे, उनके लिए जल गरम पानी होगा, जो अंतड़ियों को काट देगा, और खाना थूहड़, पीप और ख़ून होगा, सब से कम सज़ा वाला व्यक्ति वह होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे अंगारे होंगे जिस से उस का दिमाग़ खौल रहा होगा। उसमें उनके चमड़े पकेंगे, गलेंगे, चेहरे झुलसेंगे, घसेटे जाएंगे, पैरों में बेड़ीयां होंगी, गले में तौक़ होंगे। उस की गहराई बहुत अधिक होगी यदि उस में कोई बच्चा डाला जाए तो उस की तह तक पहुंचने में 70 साल लगेगा। उसके इंधन काफ़िर और पत्थर होंगे, हवा गरम होगी, काले धूंए का साया होगा, पोशाक आग का होगा, वह प्रत्येक वस्तु को खा जाएगा किसी को छोड़ेगा नहीं, वह क्रोध से झिंझलाएगा और चिल्लाएगा, चमड़ो को जला देगा, और हड्डियों और दिलों तक पहुंच जाएगा।

● **क़न्त़र** : आप ﷺ ने फ़रमायाः “मोमिन जहन्नम से छुटकारा पाएंगे तो जन्नत और जहन्नम के बीच क़न्त़रः पर रोक लिए जाएंगे, और उस अत्याचार का तस्फ़िया किया जाएगा जो उन्हों ने संसार में किया था, यहाँ तक कि जब अपने सारे पाप से साफ़ सुथरा होजाएंगे तो उन्हें जन्नत में जाने की अनुमति दे दी जाएगी, तो उस हस्ती की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है उन में से हर कोई अपने दुनिया के घर से अधिक जन्नत के घर के बारे में जानता होगा।”

● **जन्नत** : मोमिनों का ठिकाना, उसकी ईंट सोने और चाँदी की होगी, और गारा कस्तूरी का, उस की कंकरियां मोती और लाल के होंगे, उस की मिट्टी ज़ा'अ़फ़रान की होगी। उस के 8 गेट होंगे, प्रत्येक गेट की चौड़ाई 3 दिन की मसाफ़त बराबर होगी, जो कि भीड़ के कारण तंग पड़ जाएंगे। उस में 70 दर्जे होंगे हर 2 दर्जे के बीच की दूरी आकाश और धरती जितनी होगी। फ़िर्दौस सब से ऊपरी मंजिल होगी, और यहीं से नहरें बहेंगे, उस की छत रहमान का अर्श होगा, उस की नहरें शहद, दूध, शराब और पानी की होंगी, जो बिना खोदाई के बहेंगी, मोमिन जिस तरफ़ चाहेगा उसे बहा लेजाएगा। उसके मेवे हमेशगी के लिए हैं, क़रीब और झुके होंगे। उस का ख़ेमा मोती का होगा, उस की चौड़ाई 60 मील होगी, उस के हर कोने में रहने वाले होंगे, जो सुन्दर होंगे जिन की शरीर और चेहरे पर बाल न होगा, आँख सुर्मई होंगी, न उनकी जवानी ढलेगी न कपड़े पुराने होंगे, उन्हें न तो पेशाब आएगा, न पाखाना न थूक और खकार, उनकी कंघी सोने की होगी, और पसीने की महक कस्तूरी जैसी होगी, जन्नती औ़रते ह़सीन कुंवारी कन्या होंगी, जो कि महबूबा और हम उम्र होंगी, सब से पहले नबी ﷺ जाएंगे और सारे नबी। कम्तर दर्जे के जन्नती को उस की ख़्वाहिश से दस गुना अधिक दिया जाएगा। उनके नौकर लड़के होंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, बिखरे हुए मोतियों की तरह। और जन्नत की सब से महान नेमत होगी अल्लाह तआ़ला को देखना, उस की ख़ुशी और उस में हमेशा रहना।

नोट : यह महान घटनाएं जिन से होकर ●मोमिन, ●मुनाफ़िक़ और ●काफ़िर गुज़रेंगे, लगातार होंगे यहाँ तक कि हर कोई अपने अन्तिम ठिकाने तक पहुँच जाएगा।

वुज़ू का तरीक़ा



वुज़ू के बिना नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती, वुज़ू के लिए पाक पानी का होना ज़रूरी है, पाक पानी वह जो अपनी असली हालत पर बाक़ी हो, जैसे समुन्दर का पानी, कुंवा, चश्मा और नहर का पानी।
नोटः थोड़ा पानी मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक हो जाता है, अलबत्ता ज़्यादा पानी जो कि 210 लिटर से अधिक हो, तो जब तक नापाकी पड़ने के कारण उसके रंग, या मज़ा या बू में परिवर्तण न आजाए वह नापाक नहीं होता।



बिस्मिल्लाह कह कर वुज़ू शुरू करे, वुज़ू करते समय दोनों हथेलियों का धोना मुस्तहब है, अलबत्ता ऐसे व्यक्ति पर जो रात की नींद से जगे तो उस पर इन्हें 3 बार धोना ज़रूरी हो जाता है।
नोट : वुज़ू के अंगों में से किसी भी अंग को तीन बार से अधिक धोना मकरूह है।



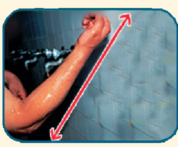
फिर वाजिबी रूप से 1 बार कुल्ली करे, जब्कि 3 बार करना अफ़ज़ल है।
नोट : 1- मात्र मुंह में पानी डालने और निकालने से कुल्ली नहीं हो जाती, बल्कि मुंह में पानी को घुमाना ज़रूरी है।
2- कुल्ली करते समय मिस्वाक करना मुस्तहब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार नाक में पानी डाले। पर 3 बार डालना अफ़ज़ल है।
नोट : मात्र नाक में पानी डाल लेना काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि सांस द्वारा पानी खींचे और सांस द्वारा ही झाड़ कर निकाले। ऐसा 1 बार करना वाजिब है, और 3 बार करना अफ़ज़ल है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार चेहरा धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है। चेहरा धुलने की वाजिबी सीमा यह है : चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक, और लम्बाई में ठुड्डी से लेकर आम तौर पर सर के बाल निकलने की जगह तक।
नोट : घनी दाढ़ी का ख़िलाल करना मुस्तहब है, और यदि हल्की हो तो वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर कोहनियों तक धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।
नोट : बायां हाथ से पहले दायां हाथ को धुलना मुस्तहब है।



फिर पूरे सर का मसह़ करे, और शहादत की उगँलियों को दोनों कानों में डाले, और अंगूठे से कान के बाहरी भाग का मसह़ करे। यह सब कुछ मात्र 1 बार करे।
नोट : 1- चेहरे की सीमा से लेकर गुद्दी तक सर का मसह़ करना वाजिब है। 2- गुद्दी से नीचे के बालों का मसह करना वाजिब नहीं है। 3- सर पर बाल न हों तो चम्ड़े का मसह़ करेंगे। 4- दोनों कानों के पीछे की सफ़ेदी का मसह करना वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार टख्ने समेत दोनों पैर धोए, पर 3 बार धोना अफ़ज़ल है।

चेतावनियाँ :

❶ वुज़ू के अंग 4 हैं : 1- कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और चेहरा धोना। 2- दोनों हाथों को धोना। 3- सर और दोनों कानों का मसह़ करना। 4- टख्ने समेत दोनों पैरों को धोना। इन अंगों के बीच तरतीब वाजिब है, और इसमें आगे पीछे करने से वुज़ू बातिल होजाता है।
❷ लगातार धोना वाजिब है, यदि एक अंग के बाद दूसरा अंग धोने में इतनी देरी होजाए कि पहला अंग सूख जाए तो वुज़ू बातिल होजाएगा।
❸ वुज़ू के बाद यह दुआ पढ़ना सुन्नत है : अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू, व अश्हदु अन्न मुह़म्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

नमाज़ का तरीक़ा



जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ने की इच्छा करे तो सीधे खड़े होकर तक्बीरतुल् एहराम الله أكبر **"अल्लाहु अक्बर"** कहे, मुक़्तदी को सुनाने के लिए इमाम तक्बीरतुल् इह्राम और बाक़ी सारी तक्बीरों को ज़ोर से कहे, और बाक़ी नमाज़ी धीमी आवाज़ से कहें। तक्बीर कहते हुए दोनों कन्धों तक रफ्उल् यदैन करे, उंगलियाँ आपस में मिली हुई हों। इमाम के तक्बीर कह लेने के बाद मुक़्तदी तक्बीर कहे।

नोट : अरकान और वाजिबी अक़्वाल को जिस क़दर नमाज़ी अपने आप को सुना सके उतनी मिक़्दार में जह्र यानी जोर से कहना वाजिब है, चाहे सिर्री ही नमाज़ क्यों न हो। और कमतर जह्र ये है कि दूसरा व्यक्ति सुन ले। और कमतर सिर्र ये है कि स्वयं सुन ले।



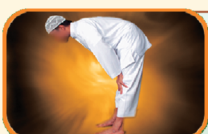
दाहने हाथ द्वारा बायां हाथ की हथेली या कलाई पकड़े, और उसे अपने सीने पर बांध ले, नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, फिर धीमी आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلا إِلَهَ غَيْرُكَ **"सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बिह़म्दिक व तबारकस्मुक व तआ़ला जद्दुक व लाइलाह ग़ैरुक"** फिर अऊज़ु बिल्लाह् पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-ल्-फ़ातिह़ा पढ़े, जह्री नमाज़ों में मुक़्तदी पर क़िराअ़त करना वाजिब नहीं है, पर इमाम के सकतों में, और जिन में जह्र से क़िराअ़त नहीं है उनमें फ़ातिह़ा पढ़लेना मुस्तह़ब है, (सह़ीह़ ह़दीस की रू से हर नमाज़ की हर रक्अत में फ़ातिह़ा पढ़ना वाजिब है मुतर्जिम) फिर कोई और सूरत मिलाए, इमाम फ़ज्र की नमाज़ में और मग़्रिब और इशा की पहली दोनों रक्अ़तों में जह्र से क़िराअ़त करे बाक़ी नमाज़ो में सिर्री क़िराअ़त करे।

नोट : सूरतों को क़ुर्आन की तर्तीब के मुताबिक़ पढ़ना मुस्तह़ब है, जब्कि तर्तीब को उलट देना मक्रूह है। और कल्मे की तर्तीब को पलट देना या एक ही सूरत की आयतों की तर्तीब को पलट देना ह़राम है।



फिर **"अल्लाहु अक्बर"** कहे, तक्बीरतु-ल्-इह्राम में रफ्उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़्उ-ल्-यदैन करे, और रुकूअ़ में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर इस तरह रखे गोया कि उन्हें पकड़े हुए है, उँगलियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार **"सुब्ह़ान रब्बिय-ल्-अ़ज़ीम"** कहे, यह बात ध्यान में रहे कि रुकूअ़ मिल जाने से रक्अ़त मिल जाती है।

नोट : तक्बीराते इन्तिक़ाल और तस्मीअ़ अर्थात : "अल्लाहु अक्बर" और "समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह्" कहने का समय एक रुक्न ¼अवस्था½ से दूसरे रुक्न ¼अवस्था½ के लिए जाने के बीच है न कि उस से पहले या बाद में, और यदि कोई जानबूझकर इन्हें कहने में देरी करे तो उसकी नमाज़ बातिल हो जाएगी।



फिर **"समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह्"** कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-ल्-एहराम में रफ्उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़्उ-ल्-यदैन करे, जब सीधा खड़ा हो जाए तो **"रब्बना व लक-ल्-ह़म्दु ह़म्दन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-स्-समावाति व मिल्अ-ल्-अर्ज़ि व मिल्अ माबैनहुमा व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइ-म्-बा'द्"** पढ़े।

नोट : "रब्बना व लक-ल्-ह़म्द् ..." कहने का समय सीधे खड़े होजाने के बाद है न कि रुकु'अ् से उठने के बीच में।



फिर **"अल्लाहु अक्बर"** कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाज़ुओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखे, हाथ और पैर की उँगलियों को काबे की ओर करे, फिर 3 बार **"सुब्ह़ान रब्बिय-ल्-आअ़्ला"** कहे।

नोट : इन सात अंगों पर सज्दा करना वाजिब है : दोनों पैरो के किनारे, दोनों घुटने, दोनों हथेलियां और नाक के साथ पेशानी। जानबूझकर बिना उज़्र के किसी भी एक अंग पर सज्दा न करने से नमाज़ बातिल होजाती है।



फिर **"अल्लाहु अक्बर"** कहते हुए सर उठाए, और बैठे, दोनों सज्दों के बीच बैठने का 2 सहीह़ तरीक़ा है : ❶ अपना बायां पैर बिछा कर उस पर बैठ जाए, दायां पैर खड़ा रखे, और उँगलियां काबे की ओर मोड़ ले। ❷ दोनों पैरों को खड़ा ले, उँगलियों को काबा की ओर मोड़ ले, और ऐड़ी पर बैठे, और 3 बार **"रब्बिग़्फ़िर्ली"** कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, **"वर्ह़म्नी, वज्बुर्नी, वर्फ़अ्नी, वर्ज़ुक़्नी, वन्सुर्नी, वह्दिनी, व आ़फ़िनी, वअ़्फ़ु अन्नी"**, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर **"अल्लाहु अक्बर"** कहते हुए सर उठाए, और दोनों पैरों के पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाए, और पहली रक्अत की तरह दूसरी रक्अत पढ़े।

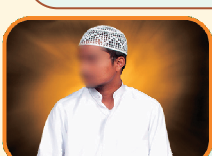
नोट : सुरतुल् फ़ातिह़ा को क़्याम में पढ़ा जाएगा, यदि पूरी तरह से खड़ा होने से पहले पढ़ना शुरू कर दिया, तो खड़े होने के बाद उसे दोहराना ज़रूरी है नहीं तो नमाज़ बातिल होजाएगी।



दूसरी रक्अत पढ़ कर तशह्हुद के लिए उसी तरह बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर, और दाएं को दाएं जांघ पर रखे, दाएं की दोनों किनारे वाली उँग्लियों को मोड़ले, अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल घेरा बना ले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तह़ीयात पढ़े : التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ. أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَهَ إِلا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ **"अत्तह़ियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्नबियु व रह़्मतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालिह़ीन्, अश्ह़दु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्ह़दु अन्न मुह़म्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू"**। फिर तीसरी और चौथी रक्अ़त वाली नमाज़ में **"अल्लाहु अक्बर"** कहते हुए तीसरी रक्अत के लिए उठे, और रफ़उ-ल्-यदैन करे, और चौथी रक्अत के लिए उठते हुए रफ़उ-ल्-यदैन न करे, पह्ली रक्अत ही की तरह तीसरी और चौथी रक्अत भी पढ़े, लेकिन इन्में पस्त आवाज़ से मात्र स़ूरतुल् फ़ातिह़ा पढ़े।



फिर अन्तिम तशह्हुद के लिए तवर्रुक करके बैठे, तवर्रुक के कई एक तरीक़े हैं जो कि सहीह़ हैं : ❶ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को खड़ा रखे, और धरती पर बैठे। ❷ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को सुलादे, और धरती पर बैठे। ❸ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के नीचे से पिंडली और जांघ के बीच से निकाल ले, और धरती पर बैठे। मात्र अन्तिम तशह्हुद में तवर्रुक करना सुन्नत है, फिर तह़ीयात पढ़े : التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ ... **"अत्तह़ियातु लिल्लाहि ..."**, फिर दरूद पढ़े : اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ **"अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुह़म्मद्, कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदुम्मजीद्, अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुह़म्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुह़म्मद्, कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक ह़मीदुम्मजीद्,"** और यह दुआ पढ़े : اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَشَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ **"अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् अ़ज़ाबिल्क़ब्रि व अ़ज़ाबिन्नारि व फ़ित्नति-ल्-मह्या वल्ममाति व शर्रि-ल्-मसीह़िद्दज्जालि"** और दूसरी साबित दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है।



फिर दोनों ओर सलाम फेरे, पहले दाएं ओर चेहरे को करते हुए السَّلامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ "अस्सलामु अ़लैकुम व रह़्मतुल्लाह्" कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। जब सलाम फेर ले तो अपनी जगह पर बैठे हुए नबी ﷺ से साबित दुआएं पढ़े।

ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता

वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न हो, अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों के यहाँ निंदित है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ أَن تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴾

"हे मोमिनो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, तुम जो करते नहीं उस का कहना अल्लाह को सख्त नापसंद है"। अबू हुरैरः رضي الله عنه कहते है : **"वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न किया जाए उस ख़ज़ाने की तरह है जिसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न किया जाए"**। और फ़ुज़ैल रहिमहुल्लाह कहते हैं : **"ज्ञानी उस समय तक जाहिल रहता है जब तक उसके अनुसार कर्तव्य न करे"**। और मालिक बिन दीनार कहते हैं : **"तुम ऐसे व्यक्ति से मिलोगे जो एक अक्षर में भी गलती नहीं करता, लेकिन उसका सम्पुर्ण कर्म ग़लती से भरा होगा"**।

मुसलमान भाईयो
और बहनो !

अल्लाह तआ़ला ने आप के लिए इस लाभ-दायक किताब को पढ़ना आसान कर दिया, पर इस पढ़ाई का फल अभी बाक़ी है, और वह है इसके अनुसार कर्म करना।

■ इस किताब में आप ने क़ुरआनी आयतें और उनकी तफ़सीर पढ़ीं, आप ने इन से जो कुछ भी सीखा है उस के अनुसार कर्म करने की कोशिश करें; क्योंकि सहाबए किराम رضي الله عنهم "नबी ﷺ से दस आयतें सीखा करते थे, फिर दूसरी दस आयतें उस समय तक नहीं सीखते जब तक कि पहली आयतों का ज्ञान न होजाए और उनके अनुसार कर्म न कर लें, वह कहते हैं : हम ने ज्ञान और कर्म दोनों को एक साथ सीखा"। जैसा कि शरीअ़त ने हमें इस पर उभारा है, इब्ने अब्बास इस आयत : ﴿ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ﴾ "वे उसे पढ़ने के ह़क़् के साथ पढ़ते हैं" की तफ़सीर में कहते हैं : जैसा अनुसरण करना चाहिए वे वैसा ही उसका अनुसरण करते हैं। और फ़ुज़ैल कहते हैं : क़ुरआन कर्म करने के लिए उतरा लेकिन लोगों ने उस की तिलावत को कर्म बना लिया।

■ आप ने नबी ﷺ की ह़दीसें भी पढ़ीं, जिन्हें अपनाने और उनके अनुसार कर्म करने के लिए आप जलदी कीजिए; क्योंकि इस उम्मत के नेक लोग जो कुछ भी पढ़ते थे उसके अनुसार अपनी जीवन को ढालने और उसकी ओर बुलाने में जल्दी करते थे आप ﷺ की इस ह़दीस की पैरवी करते हुए : "यदि मैं तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दूँ तो शक्ति भर उसे बजा लाओ, और किसी चीज़ से रोकूं तो उस से रुक जाओ"। ¼बुख़ारी एवं मुस्लिम½ और अल्लाह तआ़ला की सज़ा से डरते हुए जैसा कि उसने फ़रमाया :

﴿ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴾ "सुनो जो लोग उसके ¼अल्लाह के रसूल के½ आदेश का विरोध करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े, या उन्हें कोई दुःख की मार न पड़े।" और यह हैं इस के कुछ उदाहरण :

▶ उम्मुल् मोमिनीन उम्मे ह़बीबा رضي الله عنها नबी ﷺ की यह ह़दीस रिवायत करती हैं : "जिस ने दिवा तथा रात्री में 12 रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, तो इनके बदले उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है"। उम्मे ह़बीबा رضي الله عنها कहती हैं जब से मैं ने यह ह़दीस सूनी इन्हें नहीं छोड़ा।

▶ इब्ने उमर رضي الله عنهما इस ह़दीस को : "मुसलमान का कोई भी ह़क़् न हो जिस की वह वसीयत करना चाहता हो, तो उस पर तीन रातें न आएं मगर उस की वसीयत लिख्खी हुई हो"।